3261

फ्रांस की राज्यक्रांति

(French Revolution)

241
E

लेखक
बा० प्यारे लाल गुप्त

W,81.53
152J0

प्रकाशक
तरुण भारत ग्रन्थावली
दारागंज प्रयाग

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

W,81:53 2663
152JO
Guplā, Pyarelal.
Franch kirajya kranti

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

SHRI JAGADGURU VISHWARADHYA JNANAMANDIR
W,81:53 (LIBRARY) 2663
L52J0 JANGAMAWADIMATH, VARANASI
******
Please return this volume on or before the date last stamped
Overdue volume will be charged 1/- per day.

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

W,81:53 2663
152J0
Guplā, Pyarelal.
Franch ki rajya kranti

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

फ्रांस की राज्यक्रान्ति

(French Revolution)

लेखक

बाबू प्यारेलाल गुप्त

प्रकाशक

तरुण-भारत ग्रन्थावली

दारागंज प्रयाग

ठवीं आवृत्ति] १९५० [मूल्य ३)

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

प्रकाशक
सोमदेव बाजपेयी
प्रोप्राइटर
तरुण-भारत-ग्रन्थावली
दारागंज-प्रयाग

W,81,53
15276

मूल्य तीन रुपया

SRI JAGADGURU VISHWARADHYA
JNANA SIMHASAN JNANAMANDIR
LIBRARY.
Jangamwadi Math, VARANASI,
Acc. No. ....3324.
2663

मुद्रक
संगमलाल जायसवाल,
संगम प्रेस, प्रयाग ।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

निवेदन

यह पुस्तक विद्वद्वर पण्डित विनायक कोंडदेव ओक की मराठी पुस्तक के आधार पर लिखी गई है। हमारी प्रार्थना पर बाबू प्यारेलाल गुप्त जी ने यह कार्य किया। उसके बाद हमने भी इस पर बहुत परिश्रम किया है। स्वर्गीय पण्डित विनायक कोंडतेव ओक मराठी के मार्मिक लेखक थे। वे बम्बई प्रान्त के एक छोटे से अध्यापक के पद से स्कूलों के असिस्टेण्ट इन्सपेक्टर के पद तक पहुँचे थे। गत वर्ष ८० साल से अधिक अवस्था पाकर उनका स्वर्गवास हुआ। वे सच्चे साहित्यसेवी थे। "बाल-बोध" नामक मासिक पत्र का उन्होंने ३० वर्ष से अधिक सम्पादन किया। इसमें खूबी यह थी कि सब प्रकार के लेख और कविताएँ केवल सम्पादक ही की लिखी हुई होती थीं। बड़ा सर्वप्रिय मासिक पत्र था। ओक महाशय ने अपनी मातृ-भाषा में अनेक पुस्तकें लिखीं और सब देशहित का भाव रखकर। साहित्य-विषयक उनका अनुभव बहुत बढ़ा-चढ़ा हुआ था। इन पंक्तियों का लेखक उनके विषय में बड़ा आदर-भाव रखता है।

प्रस्तुत पुस्तक ओक महाशय ने अंगरेज़ी के अनेक ग्रन्थों के आधार पर तैयार की। पुस्तक उन्होंने इस ढंग से लिखी कि सर्वसाधारण जनता और शिक्षा-विभाग ने भी इसका खूब आदर किया। अँगरेज़ी में फ्रांस की राज्यक्रान्ति का इतिहास यूनिवर्सिटी के विद्यार्थियों को पढ़ाया जाता है। अब आगे से हमारी सरकार ने हिन्दी में इतिहास इत्यादि की पढ़ाई का कुछ कुछ विचार किया है। सो हिन्दी में यह पुस्तक हमने तैयार कर दी है; और हम ऊपर यह भी बतला चुके हैं कि यह पुस्तक इस ढंग से तैयार की गई है के जो हमारे नवयुवक विद्यार्थियों के लिए भी बहुत उपयोगी है।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

आशा है कि राष्ट्रीय भाषा हिन्दी के द्वारा इतिहास की शिक्षा देने वाली संस्थाएँ इस पुस्तक का अवश्य आदर करेंगी।

इतिहास वास्तव में अनुभवरत्नों का भांडार है। इसके रत्न देश का अभ्युदय होने में बहुत काम देते हैं। चाहे किसी देश का भी, किसी समय का, इतिहास आप लीजिए, यह विचारशील मनुष्य के लिए मनोरंजक और उपदेशक अवश्य होगा। फिर "फ्रांस की राज्यक्रान्ति" का यह इतिहास इतनी विचित्र और चमत्कारपूर्ण बातों से भरा हुआ है कि उनसे न सिर्फ साधारण मनुष्य को ही, किन्तु बड़े बड़े राष्ट्रों को भी, अनेक प्रकार का उत्तम उपदेश मिलेगा। संसार के अर्वाचीन इतिहास में इसका बड़ा महत्व है। हिन्दी में यह पुस्तक अभी तक तैयार नहीं हुई। परन्तु इसमें कोई आश्चर्य नहीं; क्योंकि इतिहास की ओर अभी तक हमारे, हिन्दी-मातृभाषी "विद्वान्" कहलाने वालों का पूरा पूरा ध्यान ही नहीं गया। इतिहास ही की ओर क्यों किन्तु साहित्य सेवा मात्र को उन्होंने अन्य सेवाओं के सामने तुच्छ समझ रक्खा है, और अपनी विद्वता के समुद्र का एक बूँद भी इस कार्य में नहीं देना चाहते। ऐसी दशा में हम अर्द्धदग्ध जड़ जीव ही जो कुछ प्रयत्न इधर-उधर से कर सकते हैं, करते हैं। अस्तु। "फ्रांस की राज्यक्रान्ति" की प्रस्तुत भी इसी प्रकार का प्रयत्न है। इस पुस्तक के अवलोकन से हमारे विचारशील नवयुवकों को राज्य-व्यवहार, अर्थशास्त्र, नीतिशास्त्र, इत्यादि के मुख्य मुख्य सिद्धान्तों का ज्ञान होगा, उनका चित्त देशोद्धार की ओर चलेगा; और इससे हमारे देश का परम कल्याण होगा। परमात्मा हमारा मनोरथ पूर्ण करें।

कानपुर
व्यास-पूर्णिमा सं० १९७३ } लक्ष्मीधर वाजपेयी

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

फ्रांस की राज्यक्रान्ति

—:❀o❀:—

पहिला अध्याय

———

विषय-प्रवेश

संसार के इतिहास में फ्रांस की राज्यक्रान्ति एक बड़े महत्व की घटना है। यह राज्यक्रान्ति अठारहवीं शताब्दी में हुई। इसके कारण यूरप के सब देशों की राज्यप्रणाली और जनस्थिति में बहुत परिवर्तन हो गया। ऐसी महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटना का वर्णन करने के पहले यह बतलाना आवश्यक है कि इस राज्यक्रान्ति के चालीस-पचास वर्ष पहले फ्रांस देश की क्या दशा हो गई थी।

विद्वानों का मत है कि देश के सब लोगों को लिखना, पढ़ना आना चाहिए। यह सुधार का मुख्य साधन है। यह मत ठीक है। परन्तु यह भी ध्यान में रखना चाहिए कि सब लोगों को लिखना-पढ़ना आने से जैसे देश के हित की आशा है वैसे ही अहित होने का भी बड़ा डर है। अर्थात् साधारण लिखने-पढ़नेवाले पुरुषों को जैसे भले कामों में लगा सकते हैं, वैसे ही वे बुरे कामों में भी प्रवृत्त किये जा सकते हैं। यह अच्छे और बुरे ग्रन्थकारों पर निर्भर है। इस राज्यक्रान्ति के समय बुरे कामों ही की ओर लोगों को प्रवृत्त किया गया था।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

अठारहवीं शताब्दी में कुछ वर्षों में बाल्टेर, आवीरैनल,
डियालोम्बर्ट हेलिविशस, डिडिरो इत्यादि
नास्तिक ग्रन्थकार कई प्रसिद्ध ग्रन्थकार फ्रांस में हुए। वे बड़े
और उनके ग्रन्थों बुद्धिमान थे। अपने विषय का उत्तम रीति
का परिणाम से प्रतिपादन करके लोगों के हृदय में उसे
अंकित कर देने की शक्ति इन ग्रन्थकारों में
थी। इनके लिखने की शैली भी बड़ी भली थी। इनकी लिखी पुस्तकों को लोग बड़े चाव से पढ़ते थे और उनमें लिखी हुई बातों का विचार भी करते थे। परन्तु ये सारे ग्रन्थकार नास्तिक थे। इस कारण लोगों से ईश्वर और धर्म का विश्वास उठने लगा। लोक-पर-लोक, पाप पुण्य का विचार लोग छोड़ने लगे। जहाँ-तहाँ इस प्रकार के भयंकर विचार फैलने लगे कि कोई कर्ताधर्ता नहीं, सब बातें स्वाभाविक रीति से पदार्थ-संयोग से होती हैं। जो सहज वही अच्छा और जो कठिन वही बुरा। इस तरह के नाना प्रकार के विचित्र विचारों से लोगों का मन बिलकुल बिगड़ गया था और किसान की छोटी सी झोपड़ी से लेकर राजा के विस्तृत-सुशोभित रङ्गमहल तक, सब जगह, इन्हीं बातों की चर्चा होने लगी थी। इस अधर्म की प्रवृत्ति को दूर करने के लिए कुछ धार्मिक पुरुष उद्योग करते भी थे; पर ऐसे लोग बहुत थोड़े थे। इसके सिवा मनुष्यों का मन भी सद्गुणों की अपेक्षा दुर्गुणों की ओ अधिक जाता है। इस कारण उनके प्रयत्न निष्फल हुए। इ से यह मालूम हो जायगा कि धर्मनिष्ठा, जो सारे सुखों जननी है, उसके विषय में फ्रांस के लोगों की क्या दशा गई थी।

यूरप के सभ्य देशों में सदा अपने अपने अधिकारों लिए राजा और प्रजा में झगड़ा हुआ करता है। कभी तो रा

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

अधिक अधिकार छीनकर प्रजा पर अपना प्रभाव जमाता और उसे अपनी इच्छा के अनुसार चलाता है और

पूर्व-स्थिति। कभी प्रजा अधिक अधिकार अपने हाथ में लेकर राजा को मनमाना नाच नचाती है। ये दोनों बातें फ्रांस में क्रमशः देखी गईं। सन् १७७४ की ग्यारहवीं मई को राजा सोलहवां लुई फ्रांस के सिंहासन पर बैठा। इसके पहले जो राजा हो गये थे वे प्रायः स्वेच्छाचारी और प्रजा की विशेष परवाह न करते हुये, उसके धन को मनमाना उड़ानेवाले थे। इस कारण प्रजा उनसे बड़ी हैरान हो गई थी। राजा की विलास-वासनाओं और व्यर्थ लड़ाइयों के लिए अनेक प्रकार के कर देते देते उनके नाक में दम आ गई थी। यहाँ तक कि राजा—वह नहीं चाहती थी। ऐसी दशा में सोलहवां लुई गद्दी पर बैठा। यह राजा सीधे स्वभाव का सदाचरणी और अपनी प्रजा का हित चाहने वाला था। उसका निजी खर्च बहुत थोड़ा था। अपनी प्रजा का हित करना ही उसका मुख्य कर्तव्य है, यह वह हृदय से समझता था कि और इसके लिए वह प्रयत्न भी बहुत करता था। परन्तु मंत्रि-मंडल, सभासद लोग और प्रजा की दशा बहुत ही अधिक बिगड़ी हुई थी। ये सब स्वच्छन्द हो गये थे। अतएव वह निरुपाय हुआ।

राज्यक्रान्ति होने के पहले फ्रांस को कैसी दशा थी, सो ठीक तौर से ध्यान में आने के लिए उस समय

विलक्षण कायदे के कुछ रीति रवाज बतलाने चाहिए। जंगली सुअरों से झुंड खेतों में घुसकर, फसल का सत्यानाश कर डालते; उनको मारने का जमींन्दार की आज्ञा के बिना किसानों को अधिकार न था, और जो कोई बिना आज्ञा के उन दुष्ट ज़ीवों को मारता उसे बहुत समय के लिए काल-कोठरी में डाल देते। एक जगह लिखा है कि इस चाल के कारण एक प्रान्त

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

में, एक वर्ष में ७७००० रुपये का माल ख़राब हो गया था। एक ऐसा नियम भी था कि जमीन को सुधारने, अथवा अच्छी पैदावार होने के लिए, अमुक प्रकार का खाद डालना चाहिए और अमुक प्रकार का न डालना चाहिए। इस कायदे का उद्देश्य यह बताया गया था कि अमुक प्रकार का खाद डालने से जो पैदावार होगी उसके दाने अथवा फल के खाने से जंगल के पशु पक्षियों के मांस का स्वाद विगड़ जाता है। एक नियम यह भी था कि अमुक समय तक खेतों की घास न निकाली जाय जिससे तीतर पक्षियों को तकलीफ़ न हो। एक यह भी कानून था कि साधारण घास भी अमुक समय के भीतर न काटी जाय। ऐसे ही विचित्र नियमों के कारण लोग खेती से घबड़ा गये थे और बहुत सी जमीन पड़ती हो रही थी। एक नियम था कि देश की सड़कें तैयार करने में जो बहुत सा धन लगे, वह अमुक एक प्रान्त के अमुक लोगों पर कर लगाकर वसूल किया जाय। लारेन की दर्री पूरने के लिए इसी तरह से धन वसूल किया गया। इसमें करीब तीन सौ धनवान काश्तकार बिलकुल भिखारी हो गये। ऐसे अन्याय-पूर्ण नियमों के कारण खेती बिलकुल बिगड़ गई। खेती से बिगड़ जाने से देश में अन्न बहुत कम उत्पन्न होने लगा और अन्न कम होने के कारण हर साल अकाल पड़ने लगा। नमक, जिसकी राजा से लेकर रङ्क तक सब को जरूरत होती है, उस पर भारी कर लगा था और वह देश के एक विशेष प्रान्त पर लगा था। इस कारण वहाँ के लोग बिलकुल त्रस्त हो गये थे। ऐसे आवश्यक पदार्थ पर इतना भारी कर जब न अदा होने लगा तब लोग बेईमानी से कर चुकाने का प्रयत्न करने लगे। इस अपराध के कारण प्रति वर्ष स्त्री, पुरुष और लड़के मिलाकर करीब तीन साढ़े तीन हजार

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

मनुष्य जेल में जाने लगे। भिन्न-भिन्न पदार्थों पर भिन्न-भिन्न परिमाण से कर लगे थे; और नियम था कि अमुक दो प्रान्तों में इसका माल उसमें और उसका माल इसमें आने-जाने न पावे।

राज्यक्रान्ति के पहले फ्रांस देश का कानून बहुत अन्याय पूर्ण था। फौजदारी मुकद्दमे में आरोपी का घात राजा के विलक्षण करने की स्वतन्त्रता थी; पंद्रहवें लुई के समय में तो फ्रांस देश की भूतदया बिलकुल नष्ट हो गयी थी। उस समय मनुष्य को कष्ट देने की नवीन युक्ति निकालना एक चातुर्ययुक्त अविष्कार समझा जाता था। किसी एक पागल मनुष्य पर राजवध के प्रयत्न करने का अपराध लगाया गया। उसके शरीर का मांस धकधकाती हुई तप्तसँड़सियों से नोचा गया। उसके घावों में सीसे का अति तप्त रस भरा गया और चार जंगली घोड़ों से कुचलवाकर वह मरवा डाला गया।

अधिकार जुल्म

राजा के हाथ में एक कानून 'लेटर्स दा क्याचे' नाम का था। इसके जोर से वह किसी भी मनुष्य को, बिना कुछ तहकीकात किये, एकदम पकड़कर और उसकी सारी जायदाद जप्त कर जन्म भर के लिये काल-कोठरी में रख सकता था। ऐसे हुक्म के लिये कायदा था कि पार्लीमेन्ट की मंजूरी होनी चाहिये। परन्तु जो कोई सभासद राजा की इच्छा के विरुद्ध बोलता, उस पर कोई न कोई दोष लगा उसे देश-निकाला दे दिया जाता। इसलिये हुक्म यदि अन्यायपूर्ण भी होता तो भी कोई उसके विषय में चूँ तक नहीं करता था। इस अधिकार के कारण पन्द्रहवें लुई के राजत्वकाल में बड़े अनर्थ हुए। ऐसे भयङ्कर हुक्म इस राजा के समय में बीस हजार बार निकले और इसके कारण बड़े बड़े विद्वान्, बुद्धि-

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

मान् और सम्पत्तिवान् पुरुष, निरपराधी होकर भी, प्रतिबन्ध में पड़ गये। ऐसे अनर्थों का कारण केवल राजा ही नहीं था। किन्तु उसके दरबारीगण भी इतने बुरे और दुराचारी थे कि उन्होंने ईर्षा, द्रव्यलोभ द्वेष आदि दुर्गुणों के वश होकर ऐसे बहुत से हुक्म राजा से निकलवाये थे।

घूस और व्यभिचार

उस समय घूस और व्यभिचार की भी पराकाष्ठा हो गई थी। न्यायसभा में न्याय की खुल्लमखुल्ला विक्री होती थी। बड़े बड़े न्यायाधीशों को नियुक्त करने का अधिकार राजा और उसके मंत्री को था। वे वेधड़क लाखों रुपये लेकर, गुणावगुण पर खयाल न कर, चाहे जिस मनुष्य को उक्त पद पर नियुक्त कर देते थे। वे न्यायाधीश भी, अपने खर्च किए हुए रुपयों को वसूल करने के लिए तथा अपना खजाना भरने के लिए वादीप्रतिवादियों से जितना रुपया वसूल कर सकते, करते थे। यही हाल व्यभिचार का भी था। यदि यह कहा जाय कि कुछ समय के लिए फ्रांस देश से पातिव्रत धर्म का देश निकाला हो गया था, तो भी कोई अत्युक्ति न होगी। पन्द्रहवां लुई अत्यन्त स्त्रीलम्पट राजा था। आखिर में तो वह अपनी वेश्या के अत्यन्त वशीभूत हो गया था। जो वह कहती, वही होता था। मन्त्री भी आप को वैसे ही मिले थे। कहना न होगा कि शेष दरबारीगण भी आप ही के अनुरूप हो गये थे। उमराव लोगों की विलासिनी स्त्रियां पहले मध्यम श्रेणी के युवा पुरुषों से सम्बन्ध रखतीं; और फिर कहीं वे उनसे राजी न रहते, तो दरबार में प्रयत्न कर उन्हें जन्म भर के लिये काल कोठरी में रहने का दंड दिला देती थी। अब इससे बढ़ कर क्या हो सकता है?

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

सरदारो के आन-यन्त्रित अधिकार और पक्ष

फ्रांस के बड़े आदमियों की इस समय बड़ी विलक्षण दशा हो गई थी। इनके दो पक्ष थे। पहिले पक्ष के लोग प्राचीन और वंश-परम्परा के उमराव या रईस थे और दूसरे पक्षवालों ने द्रव्य और दुराचरण के जोर पर नाना प्रकार के षड्यन्त्र रचकर उच्च पद प्राप्त किया था। दोनों पक्षों का परस्पर बड़ा द्वेष-भाव था। इनके दो भेद और थे। अर्थात् कुछ रईस तो सतत रूप से राजधानी में रह कर दरबार में काम काज करते थे और कुछ अपनी जमींदारियों में निवास कर वहाँ का काम देखते थे। ये दो प्रकार के रईस भी एक दूसरे को नीच मानते थे। इनमें से किसी को भी सरकार में कुछ टैक्स देना नहीं पड़ता था। जमींन का सारा महसूल और अन्य कर सब का सब ये हजम कर बैठते थे। सरदार-गण जो राज्य के स्तम्भ थे, अपनी स्वेच्छाचारिता और निरंकुशता के कारण, राजा की बहुत कम परवाह करते थे। मूर्खता का इतना साम्राज्य फैला हुआ था, फिर भी बिना यह साबित किए कि उसका जन्म ऊँचे घराने में हुआ है, किसी को सरकारी नौकरी नहीं मिलती थी। और ऐसा साबित करना कोई कठिन कार्य न था, न इसमें कुछ देर ही लगती थी। लगभग अस्सी हजार कुटुम्बों ने ऐसे सबूत पेश किये थे। अत्यन्त हलकी नौकरी से लगाकर भारी से भारी जवाबदेही की जगह तक, सर्वत्र ये ही लोग भरे हुये थे। कहना नहीं होगा कि ये सब के सब बड़े अन्यायी और अत्याचारी थे। इनके कारण प्रजा को घोरतर कष्ट भोगना पड़ता था।

इस तरह फ्रांस देश की उक्त स्थिति का जितना वर्णन किया जाय, थोड़ा है। अधिक क्या कहें, धर्मोपदेशक पादरी

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

लोग भी, जिनका कि लोगों में धर्मज्ञान फैलाकर परमात्मा पर प्रेम उत्पन्न कराने का मुख्य कर्तव्य कर्म था, वे भी अत्यन्त दुराचारी हो गये थे। उन भजन-मन्दिरों में, जहाँ पवित्र सदुपदेश के सिवा कोई दूसरी बात न होनी चाहिए थी, घोर अनुचित कार्य होते थे। उस समय देश में रोमन कैथलिकों का बड़ा जोर था। अतएव प्रोटेस्टैन्टों के साथ बड़ अन्याय किया जाता था। कहते हैं, चौदहवें और पन्द्राहवें लुई के राजत्वकाल में प्रोटेस्टैन्टो पर इतने घोर अत्याचार किये गये थे कि उनके रक्त की धाराएँ वह निकली थीं।

धर्म-ग्लानि

राज्यक्रान्ति होने के पहले फ्रांस-देशवासी बड़े अधर्मी हो चले थे। उन्हें रोकने वाला कोई नहीं था। उनके अधर्मत्व की सीमा यहाँ तक बढ़ गई थी कि बहुतेरे लोग क्राइस्ट के गिरजा-घर तक को समूल खोद बहाने की फिक्र में थे। जो कोई धर्ममार्ग पर आरूढ़ था उसकी वे निन्दा करते थे। धर्मोपदेशकों को पागल बताते थे। "ईश्वर कोई चीज नहीं है", यह बात वे जहाँ पाते वहाँ कहते फिरते थे और बड़े मोटे मोटे अक्षरों में लिखकर चिपकाते भी थे। मतलब यह है कि खुल्लम-खुल्ला नीति-अनीति, पाप-पुण्य की रत्ती भर भी परवा न करते हुए, जैसा जी चाहता, वैसा वर्ताव करते थे। ऐसे मौके में उपर्युक्त ग्रन्थकारों की पुस्तकों ने आग में घी डालने का जैसा काम किया। इस कारण उन अधर्मियों के मत और आचरण के प्रचार होने में कुछ भी देर न लगी।

फ्रांस में नास्तिकता का इस समय इतना प्राबल्य था कि प्रशिया और रूस के राज्यकर्ता, चतुर और बुद्धिमान् मनुष्य तक, उसमें शामिल हो गये थे। प्रुशिया का राजा फ्रेडरिक दी ग्रेट,

नास्तिको को राज्यकर्ताओ की

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

ओर से आश्रय

जिसकी बराबरी के राजा इस संसार में बहुत थोड़े हुए हैं, वालटेर आदि ग्रन्थकारों से इस विषय में बहुत पत्रव्यवहार रखता था और उन्हें नास्तिकता प्रसार के काम का खूब बढ़ाने के लिए बड़ा उत्तेजित करता था। रूस की रानी कैथेराइन द्रव्य द्वारा इन नास्तिकों की सहायता करती थी। बड़े आश्चर्य की बात है कि ऐसे विचारवान् मनुष्य भी नास्तिकता के भ्रांतिमूलक जाल में कैसे फँस गये थे। इन नास्तिक विद्वानों का प्रधान मत यह था कि पदार्थ और उनके धर्म, बस ये ही इस जगत् में सप्रमाण सत्य हैं और शेष सब अज्ञान मूलक हैं। फ्रेडरिक दी ग्रेट ने यह बात भली भाँति समझ ली थी कि ऐसे तत्वज्ञानी संसारोपयोगी किसी काम के लायक नहीं हैं और इसीलिए वह बारंबार कहता था कि "मेरा इरादा जिस प्रान्त को नष्ट करने का होगा, उसे मैं ऐसे ही तत्वज्ञानियों के अधीन कर दूँगा।" इतना होने पर भी, अत्यन्त आश्चर्य की बात है कि वह फ्रांस के नास्तिकत्व-प्रसारक मंडली को आश्रय देता था।

पूर्वस्थिति से भविष्य का अनुमान

इस तरह फ्रांस देश के राजा, प्रजा, मन्त्री, सरदार, कृषक इत्यादि प्रायः सभी लोगों की स्थिति अत्यन्त बिगड़ गई थी। परमेश्वर, नीति, धर्म इत्यादि विषयों पर लोगों के भाव में बड़ा परिवर्तन हो गया था; और जहाँ तहाँ दुराचार और अत्याचार का प्रचार हो चला था। जिस तरह चतुर वैद्यों को क्षय, पांडु आदि महाघातक रोगों का लक्षण बहुत दिन पहले ही से दिखने लगता है, उसी तरह लोक-व्यवहार-शास्त्रज्ञों ने फ्रांस की इस स्थिति को देखकर पहले ही से जान लिया कि ये सब बातें फ्रांस में होनेवाले भयंकर अनर्थों की सच्ची सूचनाएँ हैं। इस विषय में उन्हें बड़ी फिक्र भी हो रही

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

थी। इसी बात को लेकर सन् १७५३ ई० में एक अंगरेज रईस लार्ड चेस्टरफील्ड ने अपने पुत्र को पत्र लिखा था उसका सारांस इस प्रकार है—"बेटा, वर्तमान समय में फ्रांस की जो दशा हो रही है, उससे तुम्हें खूब परिचित होना चाहिए। मेरी राय में तो इस समय उसकी अत्यन्त बुरी दशा है और लक्षणों से ज्ञात होता है कि दिन पर दिन उसकी हालत और खराब होती जायगी। लोग बिलकुल ग़रीब हो गये हैं और इस कारण उनके हृदय में बड़ी उदासी छा रही है। नास्तिकों का यहाँ पर बड़ा जोर है। कुछ लोग ऐसे भी हैं जो धर्म का अनुसरण कर चल रहे हैं; किन्तु उनमें भी मतभेद के कारण नाना प्रकार के पंथ हो गये हैं। जिससे वैमनस्य इतना बढ़ गया है कि वे, निरंतर एक दूसरे के नाश के लिए अत्यन्त उत्सुक रहते हैं। पार्लीमेंट सभा और धर्माध्यक्ष में मेल नहीं है। आपस में दोनों का बड़ा वितण्डावाद होकर झगड़ा खड़ा होता है। इस कारण सैनिकों में भी फूट फैल रही है और दलबंदियाँ हो रही हैं। राजसत्ताक राज्य में राजा का सारा भरोसा सेना पर रहता है; परन्तु राजा और प्रजा में परस्पर विरोध होने से सेना भी—जैसी हवा बहती है वैसी पीठ देती है। फरासीसियों के विचार उच्छृङ्खल से हो गये हैं। ऐसा पहले कभी नहीं हुआ था। धर्म और राजा के अधिकार, इन दोनों विषयों में प्रजा का 'मन बिलकुल बहक ,गया है। इन दोनों के कारण उनके उच्छृङ्खल विचारों में बहुत बाधा आती है। अतएव वे खुल्लमखुल्ला कहते फिरते हैं कि इनका समूल नाश हो जाना चाहिए। राजकर्मचारियों के हृदय का भी यही हाल है। सारांश यह है कि भयंकर राज्यक्रान्ति होने के जो चिन्ह मुझे इतिहास के पढ़ने से मालूम हुए हैं, वे सब चिन्ह वर्तमान समय में विद्यमान हैं और दिन पर दिन उनकी

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

वृद्धि हो रही है।"

यह पत्र राज्यक्रान्ति होने के तीस-बत्तीस वर्ष पहिले लिखा गया था। इससे मालूम हो जायगा कि विद्वान् और दूरदर्शी पुरुषों ने किस तरह राज्यक्रान्ति का हाल पहिले ही के लक्षणों से जान लिया था। राज्यक्रान्ति होने के जितने कारण ऊपर बतलाये गये हैं वे मुख्य हैं। उनके सिवाय विद्वान् लोगों ने और बहुत से कारण ढूंढ़ ढूंढ़कर लिख रक्खे हैं। विस्तारभय से उनका वर्णन यहाँ नहीं किया जाता। इङ्गलैण्ड और अमेरिका के इँगलिश लोगों में जो घोर युद्ध हुआ था, उसमें बिना कारण के फ्रान्स-नरेश ने अमेरिका वासियों की सहायता के निमित्त अपनी सेना भेज दी थी। उन सेना ने अमेरिका जाकर उसका प्रजासत्ताक राज्य देखा और बड़ी खुश हुई। उसको वहाँ के राज्यप्रबन्ध का यह ढंग बड़ा उत्तम मालूम हुआ। वह भी अपने देश में इसी तरह का प्रजासत्ताक राज्य स्थापित करने के विषय में बड़ी उत्तेजित हुई। एक ग्रन्थकार लिखता है कि यही सबब है कि राज्य-क्रान्ति होने के पहिले सेना बिलकुल बिगड़ गई थी। कोई कोई कहते हैं कि इङ्गलैण्ड और अमेरिका के युद्ध में तट-स्थता धारण न कर फ्रांस ने नाहक अपनी शेखी दिखलाई थी। यही कारण है कि उसे राज्यक्रान्तिरूपी यथायोग्य दंड मिला। इस तरह के जितने कारण बतलाये जाँय उतने ही थोड़े है। राजा द्रव्यलोभी और दुराचारी निकलते गये, सर-दार और रईसों ने अपना कर्तव्यकर्म बिसार दिया, धर्म का लोप हो गया, लोग दारिद्र्य और अज्ञान में डूब गये, न्याय का नाश हो गया, नास्तिकता फैल गई, नीति रसातल चली गई और देश के कल्याण का मुख्य आधार जो धर्म-मत और राज्य-व्यवहारमत हैं उन्हें किसी के अन्तःकरण में जगह

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

नहीं मिली, ये सब कारण भी राज्यक्रान्ति होने के बतलाये जाते हैं। इन सब कारणों से कैसे कैसे भयंकर कार्य हुए; और उनके योग से फ्रान्स के सर्वसाधारण लोग, रईस, राजकुल और सर्व सम्पत्ति का कैसे कैसे नाश होता गया, इन सब का वर्णन अगले अध्याय से होगा।

दूसरा अध्याय

पन्द्रहवें लुई का दुराचार और उसका दुःखद अन्त

फ्रान्स की राज्यक्रान्ति के होने में जो पुरुष कारणी-भूत हुये, उन सब में वहाँ का राजा पन्द्रहवाँ लुई मुख्य है। वह बड़ा दुर्व्यसनी, दुराचारी और सिंहासनारूढ़ होने के अत्यन्त अयोग्य था उसकी सारी उम्र विषयोपभोग और अज्ञानावस्था में बीती। उसके पापकर्मों को गाथा गाने का न हमें अवकाश है, न इससे सुनने से किसी को लाभ ही है। अतएव हम इस झंझट में नहीं पड़ते। किन्तु उसका अन्त अत्यन्त दुःखद, भयंकर और मनुष्य की आंखों को खोलने वाला है। इसलिए उसके विषय में कुछ निवेदन कर, फिर सोलहवें लुई के समय में कैसे राज्यक्रान्ति हुई, इसके कथा का आरम्भ करेंगे। पन्द्रहवाँ लुई एक तो पहले ही से शरीर का बिलकुल कमजोर, अत्यन्त अशक्त था, फिर उसे नाना प्रकार के दुर्व्यसनों की चोट लग गई थी। अतएव, इन्हीं कारणों से वह अत्यन्त कृश हो गया था। उसके अवयव उसके वश

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

में नहीं रहे थे। फिर भी उसकी विषयवासना तृप्त नहीं हुई थी। एक बार एक चौदह वर्ष की सुस्वरूपा युवती स्त्री पर उसका मन आकर्षित हुआ। उसे हाल ही में माता निकली थी। अतएव उसके साथ मिलाप होने से राजा को भी माता निकल आई। इस सबब से उसकी जो दुर्दशा हुई, उसका वर्णन करने में यह लेखनी असमर्थ है। वह राजा था। यह आशा भी न थी कि वह इतनी जल्दी मर जायगा। तिस पर सब लोगों को यह भी मालूम था कि उसे खुश रखने से खूब द्रव्यलाभ होगा। फिर भी, अन्तकाल में, उसके शरीर से इतनी दुर्गन्धि फैली कि जिस कमरे में वह रहता था उसके आसपास की कोठरियों में रहने वाले नौकर वहां से निकल भागे। जब राजा को पूर्ण रूप से यह निश्चय हो गया कि मैं इस बीमारी से बचने का नहीं, तब उसे अपने सारे पापकर्मों की स्मृति हो आई और नरक का भयानक दृश्य उसकी आंखों के सामने नाचने लगा। उन लोगों को, जो एक दिन उसका थूक तक उठाने में अपने को सौभाग्यशाली मानते थे, अब कपड़े से नाक दबाकर भागते देख उसे परम दुःख हुआ। वह इस संसार के क्षणिक वैभव का माहात्म्य पूर्ण रूप से समझ गया।' केवल उसकी दो पुत्रियाँ ही ऐसी थीं जो सदा उसके पास बैठी रहती थीं और उसकी सेवा-शुश्रुता किया करती थीं। इस प्रकार कुछ दिन शय्या पर पड़े पड़े और सड़-गलकर सन् १७७४ के मई मास की दसवीं तारीख को फ्रांस के राजा पन्द्रहवें लुई का देहांत हो गया। इस राजा के विषय में एक जगह लिखा है कि यह राजा अपने ऐश-आराम और विषयोपभोग में मग्न रहते समय अथवा कोई भी अन्य कार्य करते समय भी, पाप-पुण्य, मृत्यु, लोक-परलोक इत्यादि के विषय में किसी को

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

एक शब्द तक नहीं बोलने देता था। उसने ऐसा प्रबन्ध कर रक्खा था कि उसके कान में कभी मृत्यु का नाम ही न पड़े। अर्थात् वह मृत्यु को भूल जाने का प्रयत्न करता था। किन्तु उस बेचारे को यह नहीं समझ पड़ा कि चाहे जो करें, मृत्यु हमें कभी भूलेगी ही नहीं। जङ्गल में एक किस्म का मृगा होता है, जिसे शाहमृग कहते हैं। जब शिकारी उसके पीछे लगता है तब वह आंखों को बन्द कर लेता है और रेती में मुँह डालकर बैठ जाता है। वह समझता है कि जैसे इस समय मैं किसी को नहीं देखता उसी प्रकार शिकारी भी नहीं देखता। मृत्यु के विषय में ठीक ऐसी ही समझ पन्द्रहवें लुई की हो गई थी। जो हो, जिसने अपनी सारी उम्र पाप और मूर्खावस्था में व्यतीत की उसका अन्त किस तरह होता है, इसकी शिक्षा लोगों को इस घटना से लेनी चाहिए।

पन्द्रहवें लुई की मृत्यु का समाचार जब उसके पुत्र ने

पन्द्रहवें लुई के गुण-दोष

सुना तब उसे बड़ा दुःख हुआ। वह तत्काल ही सोलहवां लुई नाम धारण कर सिंहासनारूढ़ हुआ। उसकी स्त्री का नाम मेरी एन्टोनेट था। इन दोनों में परस्पर बड़ा प्रेम था। जब उन्हें राजासन प्राप्त हुआ, तब उन्होंने घुटने टेककर परमेश्वर से प्रार्थना की कि "परमात्मा' हमारी उम्र बहुत थोड़ी है। हम राज्यशासन के अत्यन्त अयोग्य हैं। अतएव तू हमारी रक्षा कर।" इसका पिता पन्द्रहवां लुई दुर्गुणी और विषयी था और उसके दरबारी गण भी तदनुरूप ही थे, फिर भी उसने एक काम यह बहुत अच्छा किया था कि उसने अपने लड़के को अपने से बहुत दूर रक्खा था। यही कारण है कि सोलहवाँ लुई दुर्गुणों से बचा हुआ था। वह छुटपन ही से बड़ा उद्योगी और अध्ययनशील था। उसका हृदय भी बड़ा

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

सरल था। इसके ये गुण राजपदारूढ़ होने पर भी ज्यों के त्यों बसे रहे। रानी का स्वभाव भी ठीक राजा ही के स्वभाव के समान था। वह राजा, देश की सुदशा के समय गद्दी पर बैठा होता तो इसमें सन्देह नहीं कि इसके हाथ से प्रजा को बड़ा सुख मिलता। परन्तु जिस समय प्रजा के पाप का घड़ा भर रहा था, उसी समय वह राजा हुआ। यही कारण है कि उसका मनोरथ सफल नहीं हुआ। प्रजा सुखी नहीं हुई। इसके लिए वह क्या करे, लाचार था। वह स्वभावतः बड़ा शांत और सीधा था। साथ ही दयालु, सादा और खाने-पीने में नियमित था। प्रजा को सुख देना ही उसका मुख्य कर्तव्य कर्म है, इस बात को वह अच्छी तरह से समझता था। उसे विद्याभ्यास का भी बड़ा भारी व्यसन था। वह घन्टों अपने कमरे में अकेला बैठकर भिन्न भिन्न विषयों पर विचार किया करता था, प्रत्येक वस्तु की प्रतीत कर देखता था, और पुस्तकावलोकन करता था। उस भूगोल विद्या का बड़ा शौक था। वह उत्तम नकशे बनाता था। वह अपनी दूरबीन लेकर राज महल की छत पर से पेरिस शहर और आकाश के पदार्थों का निरीक्षण करने में पहरों बिता देता था। उसके अध्ययन का कमरा बिलकुल साफ़ सथुरा और सुसज्जित था। उसे ताला बनाने की कला बहुत भाती थी। गैमीन नामक एक निपुण लुहार पर उसकी बड़ी कृपा थी। उसके साथ वह क़िस्म क़िस्म के ताले बनाते हुए बैठा रहता था। उसने अपने बनाये कितने ही ताले अपने बैठक-खाने में शोभा के लिए रक्खे थे। यह व्यसन कुछ बुरा नहीं, अच्छा ही है; किन्तु उसने यह नहीं समझा कि मेरा मुख्य काम राज्यशासन है; उसे एक ओर रख सारा समय इसी कार्य में व्यतीत करना मेरे लिए अच्छा नहीं।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

सोलहवें लुई की रानी एन्टोनेट बड़े शान-शौकत से रहने और ऐशो-इशरत में समय बितानेवाली थी।

रानी का स्वभाव उसे लड़कपन ही से अच्छी शिक्षा नहीं मिली थी। अतएव उसे नाना प्रकार के कल्पित किस्सा-कहानियों के पढ़ने का बड़ा शौक हो गया था। उसका मन सिवा ऐहिक सुख भोगने के किसी दूसरी ओर नहीं जाता था। द्रव्य का तो वह बिलकुल परवा नहीं करती थी। संसार में आकर खाना-पीना और मजा उड़ाना, इसी को वह सार समझती थी। एक पुस्तक में लिखा है कि आठ वर्ष के अन्दर उसने चवतीस करोड़ रुपये सिर्फ अपनी शान-शौकत में फूंक डाले थे। परमात्मा की याद वह सपने में भी नहीं जानती थी। राजा उसे बहुत प्यार करता था। अतएव उसे भी कभी कभी उसी के सदृश चलना पड़ता था। राज्यक्रान्ति के समय, जो राजा-रानी फ्रांस की गद्दी पर थे, वे इस किस्म के थे।

सोलहवें लुई के जो गुण-दोष ऊपर बतलाये जा चुके हैं उनको छोड़कर एक और भारी दोष उसमें था।

सोलहवें लुई की भूल इस दोष के कारण उनकी राजव्यवस्था में बहुत कुछ गड़बड़ी हुई। वह दोष यह था कि वह कान का बड़ा कच्चा था और उसकी बुद्धि में स्थिरता नहीं थी—अर्थात् क्षणिक बुद्धि का था। उसके विचार और आचरण में कभी स्थिरता नहीं देखी गई। जब वह सिंहासनारूढ़ हुआ तब उसने देखा कि खजाने में पैसा नहीं है, देश में अशांति फैल रही है, अत्याचार का बाजार खूब गरम है और प्रजा में नाना प्रकार के दुर्विचार फैल रहे हैं और वह बिलकुल बहक गई है। देश की इस दशा को देख कर उसे बड़ा दुःख हुआ। उसने निश्चय किया कि चाहे जो हो, खूब

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

प्रयत्न करके राज्य का सुधार करना ही होगा। यह विचार कर कि पहले इस कार्य के लिए कोई अच्छा बुद्धिमान और चतुर मनुष्य प्रधान मंत्री बनाया जाय, उसने यह बात दरबार में निकाली। दरबार में कई नलबंदियाँ थीं। अतएव कोई किसी की सिफ़ारिश करता, कोई किसी की। राजा को सभी की सिफ़ारिश एक बार सच मालूम होती एक बार झूठ। अतएव उसे सूझता ही नहीं था कि किसका चुनाव किया जाय। अन्त में निश्चय हुआ कि एमडी माशो नाम के एक पुराने अनुभवी पुरुष को यह जगह दी जाय। बस, तत्काल ही उसके नाम से आज्ञापत्र लिखा गया और सील-मुहर के पश्चात् वह हल्कारे के मार्फत उसके पास भेज दिया गया। हल्कारा दरबार से बाहर हुआ ही था कि उसके सम्बन्ध की कोई बात निकली और राजा का मन बदल गया। उसने तुरन्त ही हल्कारे को बुलवा कर आज्ञापत्र फड़वा दिया। इसी पर से आप उसके मन की अस्थिरता का अनुमान कर लीजिये। इस अस्थिरता के कारण माशो का निर्वाचन नहीं हुआ। यह फ्रांस देश का दुर्भाग्य समझना चाहिए। क्योंकि माशो एक बड़ा विचारवान्, नीतिज्ञ, चतुर और अनुभवी व्यक्ति था। यद्यपि यह सच है कि राज्य क्रान्ति का होना वह नहीं रोक सकता था, फिर भी इसमें सन्देह नहीं कि उसने ऐसी कुछ तजवीज की होती कि उसका परिणाम इतना भयंकर कभी न होता।

एमडी माशो का निर्वाजन न कर राजा ने मोर्पा नाम के एक व्यक्ति को प्रधान मंत्री की जगह दी। यह

मोर्पा की धूर्तता

मनुष्य इस पद के लिये सर्वथा अयोग्य था। इसने पहले के राजाओं के समय में कुछ ऐसा भारी अपराध किया था कि जिसके कारण उसे कई वर्ष तक

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

देश निकाले का दंड भोगना पड़ा था। यथार्थ में मोर्पा बहुत ही बुरा मनुष्य था। उसके पेट में दांत थे। वह कपटी तो बहुत दिनों से प्रसिद्ध था। परन्तु राजा ने समझा कि यह बीस वर्ष तक बनवास भोग चुका है और उम्र भी ज्यादा हो गई है, अतएव इसके हृदय की कुटिलता अब दूर हो गई होगी और इसका अन्तःकरण अब सरल और शुद्ध हो गया होगा। पर वास्तव में यह बात न थी। वह पहले की अपेक्षा अब अधिक कपटी और स्वार्थी हो गया था। चापलूसी तो वह हद दरजे की करना जानता था। स्वामी से विरुद्ध एक शब्द भी मुँह से निकालना उसके गुरू ने कभी उसे सिखाया ही नहीं था! 'जी हुजूर' उसका मूलमन्त्र था। इसी गुण के कारण उसने राजा को बिलकुल अपने वश कर लिया। यहां तक हो गया कि बिना उसकी अनुमति के दरबार का एक पत्ता भी नहीं हिलता था। जब कभी उसके मन में ऐसी बात करने को होती जो लोगों की इच्छा के प्रतिकूल हो, तब वह पहले ही से राजा को समझा कर उसके हृदय में वह बात इस तरह जमा देता कि राजा तत्काल ही उस विचार को कार्य्य रूप में परिणत करने का हुक्म दे देता। मोर्पा फिर अपने को बड़ी युक्ति के साथ उस हुक्म से अलग कर लेता और हुक्म की कड़ाई पर बड़ा आश्चर्य और दुःख प्रकट करता। इस तरह वह लोगों का मन हरता था।

लुई की लोकप्रियता

सोलहवें लुई को यह अच्छी तरह से मालूम था कि मुझसे पहले जो राजा हो गये हैं, उनके राजत्वकाल में प्रजा ने बड़ा कष्ट उठाया है और दरबारी गणों ने बिगड़कर कई दल बना लिये हैं। अतएव उसकी प्रबल इच्छा थी कि मेरी प्रजा निरन्तर सुखी रहे और राज्यरूपी इमारत के स्तम्भ जो मन्त्री

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

और सरदार गण हैं वे मुझसे सदा संतुष्ट रहें; और मुझ पर उनकी पूज्य बुद्धि हो। इसके लिए वह रात-दिन सच्चे अन्तः करण से परिश्रम भी करता था। लोकप्रीति सम्पादन करने के लिये उसने गद्दी पर बैठते ही ८०,००० रुपये पेरिस नगर के भिखारियों में बँटवा दिये। इसी तरह उसने अपने भाई से कह दिया कि तुम मुझे अन्य मनुष्यों के सदृश 'महाराज, सरकार, हुजूर' आदि महत्तासूचक शब्दों से संबोधन न किया करो। क्योंकि मुझे 'राजा' कहलाने की अपेक्षा 'भैय्या' कहलाना अधिक पसन्द है। इसके सिवा उसने वह कर, जो नये राजा के गद्दी पर बैठने पर छोटे-बड़े सब प्रजाजनों से लिया जाता था, नहीं लिया। उसकी देखादेखी उसकी स्त्री मेरी एन्टोटेन ने भी वह भेंट लेना अस्वीकार कर दिया जो नई रानी को सारी प्रजाओं की ओर से 'कमरपट्टा का कर' कहकर दिया जाता था। राजा और रानी के इन सद्कृत्यों को देखकर प्रजा बड़ी सन्तुष्ट और हर्षित हुई। उसे आशा होने लगी कि इस राजा के समय में अवश्य हमारा कष्ट-निवारण होगा। परन्तु हाय! राजा के क्षणिक बुद्धि होने के कारण उसकी आशा दुराशा में परिणित हो गई।

मोर्पा की कार्रवाई

पन्द्रहवें लुई ने पार्लीमेन्ट के जिन मेम्बरों को देश निकाले का दंड दे दिया था, उनके कुटुम्बियों ने जब यह देखा कि यह राजा लोकहित में ध्यान देता है, तब उन्होंने राजा से प्रार्थना की कि उक्त मेम्बर अब दण्डमुक्त किये जायँ। प्रार्थी दरबार के कुछ सम्भ्रांत व्यक्ति भी थे। अतएव राजा उनकी बात टाल नहीं सकता था। इधर उसके भाई और दोनों बहनें उसे ऐसा करने से मना करती थीं इनका कथन था कि ऐसा करना हमारे और राज्य के लिये हानिकारक होगा। राजा को

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

इनका कथन भी सत्य मालूम हुआ। अतएव वह बड़े शशोपंज में पड़ा। मंत्रि-मण्डल का बहुमत उन्हें न छोड़ने के पक्ष में था और प्रधान मन्त्री मोर्पा की राय इसके विरुद्ध थी। किन्तु बहुमत के आगे उसे भी हार माननी पड़ी। तब उसने अपनी युक्ति चलाई। उसने राजा को बहका-बहका कर विरुद्ध पक्ष के मन्त्रियों को उनके काम से निकालना शुरू किया और उनकी जगह उन लोगों को दिलाने लगा जिनकी राय उसके अनुकूल थी। अन्त में फिर उसने बाजी मार ली। पार्लीमेंट में यह प्रस्ताव बहुमत से पास हो गया कि पार्लीमेंट के वे सदस्य जो आज कल देशनिकाले का दण्ड भोग रहे हैं, वापस बुला लिये जायँ। प्रस्ताव के अनुसार वह वनवासी मण्डली आ पहुँची और मोर्पा के पक्ष में शामिल हो गई। विरुद्ध पक्ष के मन्त्रियों को निकालकर मोर्पा ने जिन नये नये मन्त्रियों को नियुक्त किया था, उनमें मालजेर्ब और टर्गो, ये दो पुरुष भी थे। इनमें टर्गो बड़ा बुद्धिमान, नीतिज्ञ और देश का सच्चा शुभचिन्तक था। राजा ने उसे प्रधान खजाँची की जगह दी।

टर्गो का प्रबन्ध

टर्गो को अपने काम की जिम्मेदारी पर कितना खयाल था, वह उसके पत्र से, जो उसने उस समय राजा को लिखा था, मालूम होता है। गवर्नमेंट के ऊपर उस समय बहुत सा कर्ज हो गया था। उससे किस तरह छुटकारा हो सकता है, इस विषय पर उसने उस पत्र में अपना मत प्रकट किया है। उस पत्र का तात्पर्य इस प्रकार है—"इस हेतु को सिद्ध करने का एक उपाय है। वह यह कि राज्य की आमदनी की अपेक्षा उसका खर्च कम किया जाय। इतना कम कि बचत से थोड़ा बहुत कर्ज जरूर अदा हो जाय। यदि ऐसा नहीं किया जायगा तो कह नहीं सकते कि

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

मौक़ें पर न जाने क्या हो जायगा। आमदनी जो होती है, बहुत थोड़ी है। प्रत्येक मुहकमे के अधिकारी कहते हैं कि अभी और अधिक प्रव्य की जरूरत है। यदि ऐसे मौक़े में मैं खर्च में कमी कर दूँ तो मेरे बहुत से शत्रु उत्पन्न हो जायँगे, यह मैं अच्छी तरह से जानता हूँ। फिर भी, मुझ को आपका पूर्ण आश्रय है। इसलिए उस पर भरोसा रखकर मैंने अपना काम करने का निश्चिय किया है।" इस तरह उससे अपना काम बड़ी मेहनत के साथ अठारह उन्नीस महीने चलाया। इस अवधि में उसने पिछले चार वर्ष का व्याज स ठ लाख रुपये, जो देने से रह गया था, देकर और चालीस लाख रुपया कर्ज का अदा किया। यह कार्य टर्गो के लिए अत्यन्त ही भूषणप्रद है।

टर्गो का मत था कि बिना राज्य-शासन-प्रणाली में भारी परिवर्तन किये और बिना उसको नया स्वरूप दिये प्रजा को सुख और राजा को शान्ति प्राप्त होना कठिन है। वह यह भी कहता था कि देश में जो अच्छे विद्वान् तत्वज्ञानी हैं उनकी राय लेकर नये कानून बनाये जांय और तदनुसार राज्य-व्यवहार चलाये जांय, तब सारा मनोरथ सफल होगा। किन्तु उसका यह मत भ्रान्तिमूलक था। क्योंकि ऐसे तत्वज्ञानी विद्वान् होते हैं, उनका सारा समय ग्रन्थावलोकन में व्यतीत हुआ करता है। उन्हें सांसारिक व्यवहार की बातें बिलकुल मालूम नहीं रहतीं। अतएव उनके विचार राज्य-शासन के कार्य में कुछ सहायता नहीं दे सकते। तथापि टर्गो का मुख्य हेतु देश का हित-साधन करने का था। इसमें कुछ भी भ्रांति नहीं है। यदि उसके सारे विचार कार्य्य में परिणित हुए होते तो इसमें संदेह नहीं कि राज्यक्रांति के समय जो जो अनर्थ हुए उनमें बहुत कुछ कमी हुई होती।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

अत्याचार क़ायदों को बन्द कर देना, छोटे बड़े सब से सिर्फ़ उनकी हैसियत के मुवाफ़िक टैक्स लेना, दीवानी, फ़ौजदारी दोनों मुहक्मों का सुधार कर सब कामों का नियम से होना, अभियुक्त को कष्ट देने की चाल बन्द कर देना, राजा के हाथ में "लेटर्स दी क्याचे" नाम का जो कानून है उसको अलग कर देना, और प्रोटेस्टेंटो के हक़ देने में जो पत्तपात किया गया था, जो भेद किया गया था, उसे दूर कर देना, ये ही उसके विचार थे। यथार्थ में ये विचार बड़े ही अच्छे थे और राजा भी इनका पूर्ण रूप से अनुमोदन करता था। उन लोगों को, जो पहिले के राज्यकर्त्ताओं के द्वारा, बिना किसी सबल कारण के, आज कितने ही वर्षों से किलों में रख दिये गये थे, वर्त्तमान राजा ने, टर्गो की सम्मति से छुड़ा दिया। इस तरह उसने खच में और भी कमी की। इसके सिवा, उसने दरबार-सम्बन्धी कितने ही निरुपयोगी मुहकमो को एक दम बन्द कर दिया। इस कारण बहुत से लोगों की नौकरी चली गई और वे सब टर्गो के नाम से दांत पीसने लगे। साथ ही राजा की पराधीनता और च्णिक-बुद्धि-विषयक चर्चा लोगों में खूब फैल गई और ,वे उसको बदनाम करने लगे। पहिले कायदा था कि अमुक प्रांत क माल अमुक सीमा से बाहर न जाय, इससे बहुतेरे लोगों को बड़ा लाभ होता था। किन्तु टर्गो ने इसे भी बन्द कर दिया। इसी प्रकार, धर्मोपदेशकों के खर्च के लिए प्रजा से एक कर लिया जाता था। टर्गो ने उसे भी रद्द करने और धर्म-सम्बन्धी खर्च इच्छानुसार देने का कायदा बनाने का विचार किया। अब तो धर्मोपदेशक गण भी इस पर रूठ गये। इस तरह के काम करके उसने दरबार और देश में अपने बहुत से दुश्मन पैदा कर लिये दुश्मनों ने अब उसे निकालने के लिए कमर कसी। उन्होंने

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

राजा के घर जा कर उसकी इतनी शिकायतें कीं कि राजा का मस्तक संतप्त हो उठा और उसे टर्गो और उसके साथी मालजेर्ब को मंत्रिमंडल से निकाल ही देना पड़ा। अब लोगों को खुशी को क्या पूछना था। ये दोनों ही पुरुष बड़े अच्छे स्वभाव के और देश के सच्चे शुभाकांक्षी थे। परन्तु इनके विचार पुस्तकीय ज्ञान से उत्पन्न हुए थे। अतएव सांसारिक अनुभव कम होने के कारण इनके हाथों से बड़ी बड़ी गलतियां हुईं और अन्त में मंत्रिमंडल से निकलना पड़ा। इस विषय पर खुद मालजेर्ब ने सन् १७९० ई० में इस प्रकार कहा कि "हम और टर्गो दोनों ही ईमानदार आदमी थे। हमें तजरबा भी बहुत कुछ था और हमारी बड़ी इच्छा थी कि हम यथाशक्ति प्रयत्न करके देश की भलाई करें। यह बहुत से लोगों को मालूम था। इसलिए राजा की हमारी सलाह से चलना लोगों को बहुत अच्छा मालूम होता था। किन्तु हमें अब अपनी ग़लती स्पष्ट मालूम हो रही है। उस समय हम केवल पुस्तकपाठी थे। मनुष्य के स्वभाव का ज्ञान हमें पूर्ण रूप से नहीं था। और तब हमें यह भी नहीं ज्ञात था कि बिना इस ज्ञान के हुए राज्यशासन में सफलता प्राप्त नहीं हो सकती। यही कारण है कि उस समय हमारे हाथ से बहुत सी भूलें हुईं। उस समय फ्रेंचों की स्थिति का अनुभव करके हम लोग उन पर शासन नहीं करते थे; किन्तु अपने अनुमान से उनकी स्थिति का अंदाज बांधकर उन पर शासन करते थे। उस समय हमें में जोश की मात्रा बहुत अधिक थी। अतएव हमारे हाथ से बहुत से अविचार-पूर्ण काम हुए।...हम अपने को बहुत अधिक अंशों में राज्य-क्रान्ति होने का कारण समझते हैं।" पुस्तकीय ज्ञान के अभिमानियों को मालजेर्ब के उपरोक्त कथन पर विचार करना चाहिये। अस्तु।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

टर्गो के मन्त्रि-मण्डल से निकल जाने पर मोर्पा ने उसकी जगह क्लून्यी नाम के एक मनुष्य को दी।

नेकर की नियुक्ति

यह मनुष्य अत्यन्त अप्रबुद्ध था। उसे काम करना आता ही न था। अतएव छः महीने के बाद उसे निकालकर उसकी जगह नेकर नाम के एक अच्छे बुद्धिमान और चतुर पुरुष को दी गई। यह काम के लायक था। अपने घर का बड़ा श्रीमान् था। इस जगह के बदले उसे जो मिलकियत मिली, उसकी उसे बिलकुल परवा नहीं थी। उसका आचरण शुद्ध था। उसका बहुत सा पैसा ग़रीब-गुरबों को दान देने में खर्च होता था। वह बड़े अच्छे दिल का और देश के कल्याण के निमित्त परिश्रम करने वाला था। उसके ये गुण लोगों को मालूम थे। अतएव किसी ने उसकी नियुक्ति के विरुद्ध अपनी राय प्रगट न की। किन्तु उसके प्रोटेस्टेंट होने के कारण दरबार के रोमन कैथलिक धर्मोपदेशकों से उसका यह उत्कर्ष नहीं देखा गया। वे उससे द्वेष रखने लगे और उसे बरखास्त कराने के लिए प्रधान मन्त्री मोर्पा के पास उसकी शिकायत पेश करने लगे। इस पर मोर्पा ने जो उत्तर दिया, वह सुनने लायक है। उसने कहा—"यदि तुम राज्य का कर्ज चुकाने को तैयार हो तो मैं अभी उसे तुम्हारे अधीन कर देता हूँ।" यह उत्तर सुन धर्मोपदेशकगण चुप हो रहे।

नेकर का प्रबन्ध और इस्तीफा

फ्रान्स की आर्थिक स्थिति इस समय बहुत बिगड़ी हुई थी। उसे सुधारने के लिए नेकर ने बहुत से प्रयत्न किये। राज्य का मामूली खर्च टैक्स की आमदनी से चलाया जाय, विशेष प्रकार के कार्यों के लिये ही ऋण लिया जाय, सरकारी ऋण का ब्याज समय पर चुका दिया जाय, राज्य की आमदनी

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

और खर्च का ब्यौरा समय-समय पर छापकर प्रकाशित किया जाय, कर लगाने और कर्ज लेने का कार्य प्रान्तीय पार्लीमेंटों की सलाह और अनुमोदन से किया जाय, आमदनी की अपेक्षा खर्च अधिक न किया जाय और निरर्थक खर्च एकदम बन्द कर दिया जाय—ये ही नेकर के विचार थे। नेकर के इन विचारों की हम हृदय से प्रशंसा करते हैं। इनमें से कई विचारों को उसने कार्य के रूप में परिणत भी कर दि। था। इस कारण बहुतेरों की बड़ी हानि हुई। इन लोगों ने राजा के पास इसकी झूठी झूठी शिकायतें करना शुरू कर दिया। इधर प्रान्तीय पार्लीमेंटों की शक्ति बढ़ी देख, पेरिस की मुख्य पार्लीमेंटों में भी नाराजी फैली। अतएव दरबार में अनेक टंटे-बखेड़े शुरू हो गये। लाचारी अब नेकर को इस्तीफा देना पड़ा।

कालोनी की निष्फलता और नेकर का पुनर्निर्वाचन

नेकर के इस्तीफ़ा देने पर राजा ने उसकी जगह पर कालोनी नाम के एक मनुष्य को मुकर्रर किया। यह भी अच्छा चतुर मनुष्य था। किन्तु उसके विचार कुछ निराले ही थे। वह उद्योग और कला-कौशल के द्वारा देश की सम्पत्ति बढ़ाना चाहता था। सरकारी कर्ज का ब्याज समय पर देकर सरकार की साख बढ़ाना और खर्च कम करने के बदले कुछ नये कर और बैठाल कर आमदनी और खर्च का हिसाब दुरुस्त रखना, ये ही उसके विचार थे। लोगों ने इसे पसन्द किया और वे उसकी बड़ी प्रशंसा करने लगे। उसने ब्याज के दर चढ़ा दिये थे। अतएव लोग बड़ी उत्सुकता के साथ लाखों रुपये का कर्ज सरकार को देने लगे! कुछ दिनों के भीतर खजाने में इतना द्रव्य एकत्र हो गया कि "राज्य के ऊपर बहुत सा ऋण है और आमदनी खर्च के

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

लिए काफ़ी नहीं है"—यह शिकायत बिलकुल भूल सी गई। और देश में कई भारी खर्च के काम आरम्भ कर दिये गये। राजा के निजी खर्च के लिए कुछ अधिक द्रव्य की आवश्यकता नहीं पड़ती थी। किन्तु रानी बड़ी विलासप्रिय थी। अतएव उसे ऐश आराम के लिए लाखों रुपये लगते थे। उसे हुक्म देते देर थी कि कालोनी तड़ातड़ रुपयों के तोड़े गिन देता। वह हद दरजे का चापलूस था। वह कहा करता—"सरकार, यदि कभी आपके हृदय में ऐसी बात आ जाय जो एक बार बिलकुल ही अनहोनी हो, तो भी यह दास उसे हर तरह से प्रयत्न करके सिद्ध करेगा। और जो बात होने लायक है, उसके लिये, यह देखिये, सेवक हाथ जोड़े हरदम तैयार है।" किन्तु यह फिजूलखर्ची बहुत दिनों तक नहीं चली। खजाने का सारा द्रव्य स्वाहा हो गया और बाहर से मांग एक के ऊपर एक आने लगी। अब कालोनी घबड़ाया। उसने जब देखा कि बात छिपी नहीं रह सकती तब उसने सारा वृत्तान्त राजा से निवेदन कर दिया और साथ ही सलाह दी कि देश के रईस और धर्मोपदेशकों पर बिलकुल कर नहीं है, अतएव साधारण जनों के सदृश उन पर भी कर विठाया जायं, तब आमदनी बढ़ेगी और मांग पूरी होगी। राजा को यह बात ठीक जँची। उसने तत्काल ही रईसों की एक बड़ी सभा की और वहाँ सारे जमा खर्च का हिसाब पढ़ सुनाया। साथ ही उसने आमदनी बढ़ाने का उपाय भी स्पष्ट रीति से कह दिया। सुनते ही रईस और धर्मोपदेशकगण संतप्त हो उठे। वे खुल्लमखुल्ला इस प्रस्ताव का विरोध करने लगे। तब राजा के भाव का फिर परिवर्तन हुआ। परिणाम में कालोनी को इस्तीफा देना पड़ा और उसके स्थान पर आर्च बिशप लोमिनी नियुक्त हुआ। इसने भी जमा और

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

खर्च का झगड़ा ठीक करने के लिए नाना प्रकार के प्रयत्न किये, पर सब व्यर्थ हुए। अन्त में उसका जी ऊब उठा और नेकर की फिर नियुक्ति हुई।

नेकर की भूल

नेकर ने जिस समय दुबारा काम को अपने हाथ में लिया, उस समय राज्य की आर्थिक स्थिति अत्यन्त खराब थी। इतनी खराब कि उस समय सरकारी खजाने हैं सिर्फ १,१०,००० रुपये बाकी थे। ऐसी दशा में सब लोगों ने विचार किया कि 'स्टेट्स जनरल' नाम की एक बड़ी सभा बिठाई जाय और उसमें राजा, रईस, सर्वसाधारण, सबको एकत्र करके देश की स्थिति सुधारने का उपाय सोचा जाय। विचार पक्का हो गया। जब यह खबर लोगों ने सुनी तो उन्हें बड़ा आनन्द हुआ। सभा में किन किन बातों पर विचार किया जाय, इस विषय की चर्चा चारों ओर होने लगी। और हजारों पुस्तिकायें छाप-छापकर बाँटी जाने लगी। उस समय फ्रान्स देश में जो तत्ववेत्ता थे, उन्हें अपने अपने विचार सभा में लिख भेजने की सूचना दी गई। सभा की सारी व्यवस्थाओं का भार नेकर के ऊपर था। बहुत से विद्वानों का कथन है कि उसने एक बड़ी गलती की। ऐसी सभायें पहले जितनी हो चुकी थीं, उनमें जितने सर्वसाधारण शामिल किये गये थे, उससे दूने मनुष्य इस बार नेकर ने बुलाये। इससे उसका मतलब यह था कि राज्यशासन के कार्य में सर्वसाधारण की जो कमी है, वह पूरी कर दी जावे। किन्तु सर्वसाधारण में उस समय इतनी योग्यता नहीं थी कि राज्य-साशन कार्य में इतने अधिकार पाकर उनका सदुपयोग कर सकें। इसका कारण यह था कि उन लोगों में विद्या का प्रचार बहुत ही अल्प था। इतना कि सैकड़ों में दो मनुष्य भी लिखे-पढ़े नहीं थे। इसके सिवा उनमें नास्ति-

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

कता और अनीति भी खूब फैली हुई थी। परन्तु इन बातों पर नेकर का ध्यान नहीं गया। आखिर जब मित्रों ने उसे इस बात की सूचना दी तब उसने उत्तर दे दिया कि "मनुष्य के अन्तःकरण के सद्गुणों पर मेरा पूरा भरोसा है।" उसका इरादा था कि लोगों को पहले पूर्ण स्वतत्रता दे दी जाय, फिर उनसे देशहित के काम कराये जायँ। उसके इन विचारों की हम तारीफ करते हैं। किन्तु उसे इस बात का ध्यान रखना था कि जो लोग स्वतन्त्रता का उचित रीति से उपयोग नहीं कर सकते, उनके हाथ से उसका अनुचित उपयोग हुए बिना नहीं रहता।

सब लोगों को यह मालूम था कि नेकर किस लिए 'स्टेटस
जनरल' नाम की सभा कर रही है। धर्मो-
धर्मोपदेशक और पदेशक और रईसगण समझते थे कि जिस
रईसों का विरोध तरह जनसाधारण पर कर बिठाया गया है
उसी तरह नेकर का विचार हम लोगों पर भी
कर बिठाने का है। इस कारण वे और उनके पक्ष के लोग क्रोध से अत्यन्त संतप्त हो उठे। उन्होंने निश्चय किया, चाहे जो हो, हर तरह से प्रयत्न करके हम लोग नेकर का मनोरथ कभी न सिद्ध होने देंगे। तदनुसार वे लोग इस विषय में गुप्त रीति से प्रयत्न भी करने लगे। परन्तु नेकर ने, मालूम होता है, जानबूझकर भी, इसकी परवा न की और बड़ी शीघ्रता के साथ सभा होने की तैयारी करने लगा।

---:o:---

तीसरा अध्याय

लोगों को पहिले से सूचना दे दी गई कि सभा पांच मई

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

सन् १७८९ को होगी। इसके पहिले दिन, सभा की तैयारी अर्थात् चौथी तारीख को, पेरिस नगर के निकट वर्सेल्स में एक बड़े धर्मोपदेशक ने धर्म-सम्बन्धी एक उत्कृष्ट व्याख्यान दिया। इस व्याख्यान को सुनने के लिये, राजा-रानी, रईस, धर्मोपदेशकगण और जन-साधारण के राजप्रतिनिधि, सभी लोग बड़े ठाट से आये थे। उस समय मन्द मन्द वायु चल रही थी। भजनालयों के बाजे बड़े गम्भीर स्वर से बज रहे थे और सब लोग आनन्द में तल्लीन हो रहे थे। उस धर्मोपदेष्टा ने जो व्याख्यान दिया, लोगों ने बड़ी शान्तिपूर्वक सुन लिया। किन्तु उसका एक शब्द भी उनके हृदय में अंकित हुआ हो, तो कसम है! "इस कांन से सुना, उस कान से बाहर", यह कहावत स्पष्टतः चरितार्थ होती दिखलाई दे रही थी। लोग बड़े ठाटबाट से आये और उसी तरह वापस गये। यह सब देखते हुए, निकट ही, नेकर की लड़की खड़ी हुई थी। उसकी मुखचर्या से यह स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रहा था कि हृदय में ये विचार उठ रहे हैं कि पिता के प्रयत्न से जो कल सभा होगी, उसी पर फ्रान्स देश का भावी कल्याण अवलम्बित है। पास ही एक स्त्री और खड़ी थी। वह उसके हृदय का भाव समझ गई। उसने कहा—"बहन, तुम इस बात का आनन्द मत मनाओ। इससे हमें सुख नहीं होगा, प्रत्युत हम, और हमारा सारा देश, इससे बड़े सङ्कट में पड़ेगा।" इस स्त्री का भविष्य-कथन अक्षरशः सत्य हुआ। राज्यक्रान्ति की हलचल में इस स्त्री (मांटमारिन) और इसके कुटुम्ब के सारे मनुष्यों का बड़ी भयङ्कर रीति से वध किया गया।

राजा ने, यह जानकर कि यह स्टेट्स् जनरल सभा बड़े महत्व की है और इससे देश का सुधार होगा, उससे अधिवेशन के लिये एक बहुत बड़ा सुशोभित दरबार-हाल तैयार

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

कराया। उसकी सामग्रियाँ बहुमूल्य और आँखों में चकाचौंध करनेवाली थीं। दो हज़ार से भी अधिक मनुष्य वहाँ, बिना किसी तरह के कष्ट के, बैठ सकते थे। दरबार-हाल के मुख्य दरवाजे के सामने ही, दीवाल से लगा हुआ सिंहासन बनाया गया था, जिसमें राजा-रानी के बैठने की तजबीज की गई थी। पास ही नीचे की तरफ़ प्रधान मन्त्री और अन्य मन्त्रियों के बैठने के लिए कुर्सियां रक्खी गई थीं।

सभा का अधिवेशन

इसी तरह सारी तैयारियों के हो चुकने पर, नियत समय पर, सभासद्गण एकत्र होने लगे। इनमें विशेष करके तीन प्रकार के मनुष्य थे। धर्माधिकारी, रईस और, जनसाधारण के प्रतिनिधि। धर्माधिकारीगण सिंहासन के दाहिनी ओर, रईस लोग बाईं तरफ़ और प्रजा के प्रतिनिधि सामने बिठाये गये। इन सब के बीच में, एक बड़े अंडाकृत टेबल के चारों तरफ़ मंत्रि-मण्डल ने अपना आसन ग्रहण किया। इन सब के बैठ चुकने पर, बड़े ठाटबाट से राजा ने रानी के साथ प्रवेश किया। इन के आते ही सारी सभा उठ खड़ी हुई और जब वे दोनों अपने सिंहासन पर बैठ गये, तब सभा ने भी अपना आसन ग्रहण किया। इस समय की एक बात ध्यान में रखने लायक़ है। यूरोपियन रिवाज के अनुसार राजा ने जब सभामंडप में प्रवेश किया तब लोगों के सन्मानार्थ उसने सिर से टोपी उतार ली साथ ही लोगों ने भी राजा के सन्मानार्थ टोपी निकाल ली। इसके बाद राजा ने सिंहासन पर बैठकर अपनी टोपी अपने सिर पर रख ली. यह देखकर सभासदों ने भी अपनी टोपियां पहन लीं। इस समय राजा ने जो टोपी पहन ली, इसमें कुछ विशेषता नहीं थी; क्योंकि यह हमेशा का कायदा ही था। किन्तु जनसाधारण के प्रतिनिधियों के लिए

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

बहुत प्राचीन काल से नियम था कि राजा की मौजूदगी में टोपी न पहिनें। यह नियम इस वक्त टूट गया और लोगों को इसके विषय में कुछ भी संकोच न मालूम हुआ! इससे समझ लेना चाहिए कि जन साधारण के हृदय में राजा के लिये कितनी पूज्य-बुद्धि थी। सभासदों के बैठ जाने पर फिर सब की आंखें बड़ी उत्सुकता पूर्वक राजा के मुख की ओर लग गईं। क्योंकि सब लोग यही समझ रहे थे कि इस मुख से जो बचन निकलेंगे, उन्हीं पर देश का हिताहित अवलम्बित है। यह बात बहुत अंशों में सत्य भी थी। कुछ समय के बाद राजा ने बड़े उद्वेगपूर्वक कहा—

राजा का भाषण

"सज्जनो, बहुत दिनों से मैं जिस दिन की बाट, बड़ी उत्कंठा-पूर्वक देख रहा था, वह आज आ उपस्थित हुआ। यह बात मेरे लिए बड़ी ही गौरव-शालिनी है कि जिस महान् राष्ट्र का मैं राज्य कर रहा हूँ, उस राष्ट्र की भलाई चाहनेवाले प्रतिनिधियों के बीच में आज मैं उपस्थित हुआ हूँ। ऐसी सभा बहुत दिनों से नहीं हुई थी। इससे बहुतेरों ने यह समझ रक्खा था कि इस का आस्तित्व ही नाश हो गया। किन्तु यह समझ कर कि इस सभा की सहायता से हमारे राष्ट्र की बहुत सी भलाइयाँ होंगी, हमने इसे फिर से स्थापित करने का प्रयत्न किया और बड़े सन्तोष की बात है कि हमें इस प्रयत्न में सफलता हुई। आप लोगों को यह मालूम ही है कि इस राज्य पर पहले ही से बहुत सा ऋण है। खेद की बात हैं कि मेरे शासनकाल में यह ऋण और बढ़ गया है और इस ऋण-वृद्धि का कारण आप का वह युद्ध है जिसमें आपने अपनी अपूर्व वीरता का परिचय दिया था और जिसके कारण आप की कीर्ति सारे संसार में फैल गई है। इस ऋण के कारण मुझे रैयतों पर

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

अधिक कर लगाना पड़ा है और कर लगाने में समदृष्टि नहीं रही, इसके लिए मुझे अत्यन्त दुःख है। लोगों का मन अशान्त हो गया है और वे यह बात समझ चुके हैं कि बिना किसी तरह की नई राज्यव्यवस्था हुए, देश की दशा का सुधार नहीं हो सकता। उनको सन्तुष्ट करने के लिए हमने थोड़े से प्रयत्न किये। यह अच्छा हुआ। नहीं तो आज तक अवश्य कुछ अनर्थ हुआ होता। महाशयो, आज आप लोगों को कष्ट देने का मुख्य उद्देश्य यही है कि इस विषय पर भली भाँति विचार करके कोई ऐसी युक्ति सोचिये, जिससे भावी विघ्न का नाश हो जाय। मुझे पूरी आशा है कि मेरा मनोरथ आज अवश्य पूर्ण होगा। अन्य जनों की अपेक्षा रईश और धर्माधिकारियों पर बहुत ही कम कर है। अतएव सब पर एक समान कर लगाने का हमारा हेतु जानकर उक्त दो प्रकार के लोगों ने अपना विशेष हक छोड़ देने की इच्छा प्रदर्शित की है। यह मैं जान चुका हूँ। मैं कह सकता हूँ कि इसीलिए यह सभा लोगों को बहुत पसन्द आई है। मुझे बहुत आशा है कि सब मेरी राय से राय मिलाकर, देश के हित के लिए, जो मैं तजवीज करनेवाला हूँ, उसे अन्त तक निबाहने में मुझे सहायता देंगे..................................मैंने खर्च कम करने के लिए सख्त हुक्म दिये हैं। इसके सिवा इस विषय पर यदि आप लोग कोई बात और बतावेंगे तो मैं खुशी के साथ उस पर विचार करूँगा। किन्तु मैं सोचता हूँ कि ऐसे चाहे कितने ही उपाय किये जायँ; पर मेरी इच्छानुसार मेरी प्रजा कर-भार से शीघ्र मुक्त न हो सकेगी। अब मैं शीघ्र ही आप लोगों के सम्मुख राज्य के जमाखर्च का हिसाब उपस्थित करूँगा। उससे आपको मालूम हो जायगा कि सच्ची स्थिति कैसी है। मुझे विश्वास है कि आप लोग

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

भली भाँति विचार करके मुझे सूचित करेंगे की वे कौन कौन से उपाय हैं जिनके अवलम्बन से राजव्यवस्था ठीक चलेगी और राज्य का ऋण कम होगा। पहले तो राज्य के विषय में जो अविश्वास लोगों के हृदय में जम गया है, वह दूर हो जाना चाहिए। वर्तमान समय में लोगों के हृदय में बड़ी हल चल मची हुई है। परन्तु मुझे पूरा भरोसा है कि राजा और प्रजा के सच्चे शुभचिन्तक प्रतिनिधिगण उन्हीं बातों पर विचार करेंगे जो योग्य और अच्छी हैं तथा उनको छोड़ देंगे जिनसे झगड़ा पैदा होता है। यह आप लोग जानते ही हैं कि राजा पर प्रजा का प्रेम रहने से उसका कितना वैभव बढ़ता है और साथ ही देश का भी कितना कल्याण होता है और इसी कारण फ्रांस देश आज इतनी बड़ी योग्यता के स्थान पर पहुँचा हुआ है। जिस प्रकार मुझ पर मेरी प्रजा का अपरिमित प्रेम है, उसी प्रकार मैं भी सब तरह से उसकी रक्षा करना अपना मुख्य कर्तव्य समझता हूँ। सज्जनो, आप लोगों की समझ में प्रजा के कल्याण के निमित्त राजा को जो कुछ करना चाहिए, वह मैं करने के लिये मन-वच-काय से तैयार हूँ। प्रिय प्रजागण आप सब मिलकर एक चित्त से देश का हित-साधन कीजिए, जिससे मेरी यह इच्छा कि यह वर्ष देश के इतिहास में चिरकाल तक प्रसिद्ध रहे, पूरी हो। यदि मेरा मनोरथ सफल हुआ तो इसमें सन्देह नहीं कि मैं अपने को कृतकृत्य मानूँगा।"

लोक-क्षोभ

भाषण करते समय राजा खड़ा था और रानी उसके बगल में खड़ी थी। सारी सभा उनकी ओर बड़ी उत्सुकतापूर्ण दृष्टि से देख रही थी और बाट जोह रही थी हमारे प्रभु के मुख से राज्यशासन-प्रणाली के विषय में कैसे वचन निकलते हैं। परन्तु

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

उनकी इच्छा पूर्ण नहीं हुई। राजा राज्य के जमाखर्च का हिसाब समझाकर बैठ गया। उसके बाद बारेंटिन नामक एक मंत्री की वक्तता हुई। उसने भी सभासदों को संतुष्ट करने लायक कोई बात नहीं कही। उसके बैठ जाने पर सब की दृष्टि नेकर पर पड़ी इसकी वक्तृता अनुमान तीन घंटे तक हुई। नेकर सर्व-साधारण दल का था। अतएव उस पक्ष के सभासदों का अनुमान था कि नेकर के मुख से अवश्य ऐसी कोई बात निकलेगी, जिसका आशय यह होगा कि राज्यशासन में सहायता देने के लिए जो प्रतिनिधि जनसाधारण की ओर से चुने जाय उनका चुनाव बहुमत से हो। किन्तु उनकी भी आशा सफल नहीं हुई। नेकर के व्याख्यान में तमाम राज्य का जमा-खर्च भरा हुआ था और अब किस तरह द्रव्य की व्यवस्था रक्खी जाय, इस विषय में कुछ सूचनाएँ थीं। इसके सिवा और कोई बात नहीं थी। इससे जनसाधारण के प्रतिनिधियों को बड़ी निराशा हुई। मारे क्रोध के वे आगबबूला हो गये। इनका दर्जा रईस और धर्माधिकारियों के नीचे था। इसलिए राजा के आगे टोपी पहिने रहने का नियम इनके लिए नहीं था और उपरोक्त दो प्रकार के सभासद इस नियम के अनुसार राजा के समक्ष टोपी लगा सकते थे। किन्तु यह भेद इन क्रोधित सभासदों ने इस मौक़े पर बिलकुल मिटा दिया और उपरोक्त दो प्रकार के सभासदों के सदृश, राजा की मौजूदगी में, इन्होंने टोपियाँ पहिन लीं।

जनसाधारण के प्रतिनिधियों ने इतनी उतावली और बेअदबी की, इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है। क्योंकि वे मनुष्य ही वैसे थे। एलिसन नामक ग्रन्थकार ने उनका इस तरह वर्णन किया है—"उस प्रतिनिधि-समूह में कालेज से तुरन्त निकले हुए कुछ युवा लड़के थे। कुछ ऐसे वकील थे

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

जो अपने पेशे के द्वारा अपना पेट तक नहीं भर सकते थे। जिन पर किसी की पूज्यबुद्धि नहीं थी, ऐसे धर्माधिकारी थे। जिन्होंने कभी रोगियों का मुख तक नहीं देखा था, ऐसे डाक्टर थे। और कहाँ तक कहें, अज्ञानी, मूर्ख, दुराचारी, लावारिस गुंडे इत्यादि, ऐसे ही लोग उस सभा में राज्य के उद्धार के निमित्त एकत्र हुए थे!" यह वर्णन बहुत ही यथार्थ है।

मिराबो का कपट

प्रजा-पक्ष के बहुत से नेता थे। उनमें सब का मुखिया मिराबो था। यह अव्वल दर्जे का धूर्त था। छुटपन ही से बुरे काम कर इसने बहुत वर्षों तक जेलखाने की हवा खाई थी। जैसी इसकी करतूतें बुरी थी, वैसा ही इसका रूप भी बड़ा भयंकर था। एक जगह लिखा है—किसी बड़े विकराल बाघ के माता निकल आने से, छोटे छोटे घावों के कारण, जैसा उसका मुख चित्र विचित्र दिखाई देने लगे, ठीक उसी तरह की मुखचर्या मिराबो की थी। जैसा इसका रूप बिलक्षण था, वैसी ही उसकी बुद्धि विलक्षण थी वह साहस का मूर्तिमत अवतार था। दूसरे के मन को वश में कर लेने की विद्या उसे बहुत अच्छी आती थी। इन गुणों के कारण यह जिस पक्ष को पकड़ता, उसका मुखिया ही बन बैठता। इस समय उसने प्रजापक्ष पर अपना श्रेष्ठत्व स्थापित किया था और आप उसका मुखिया बना हुआ जैसा जी चाहता, वैसा उसको नचाता था। अस्तु।

विरोध

राजा ने पहिली सभा की जिसका वर्णन ऊपर किया जा चुका है। उसमें स्पष्ट रूप से किसी बात का कुछ निश्चय नहीं हुआ। केवल लेक्चर-बाजी होकर ही वह सभा विसर्जित हो गई। लोगों को यह पसन्द नहीं आया। इस सभा में विचार करने का मुख्य विषय यही निकला था कि फ्रान्स की राज्यव्यवस्था भली

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

भांति चलाने के लिए तीनों प्रकार के सभासद् और राजा को एकत्र कर कमेटी बनाई जाय अथवा इङ्गलैंड के सदृश सर्वसाधारण की सभा अलग—इस तरह दो सभायें बनाई जायँ। राजा ने इस पर अपना निश्चित मत कुछ भी नहीं दिया। उसका कथन था, जिससे देश की भलाई हो वही किया जाय। अर्थात् वह किसी मत के अनुकूल अथवा प्रतिकूल नहीं था। सब एकत्र बैठकर, बहुमत के अनुसार राज्य-शासन का कार्य करें—यह बात रईस और धर्माधिकारियों को पसन्द नहीं थी। क्योंकि वे पहिले ही से जानते थे कि जनसाधारण के प्रतिनिधियों की संख्या हमारी अपेक्षा अधिक है और उनके विचार हमारे विचार से भिन्न हैं। अतएव हमारे श्रेष्ठत्व में कमी आवेगी। एका से काम करने के लिए दोनों पक्षों की आपस में बात-चीत चल रही थी; पर निष्कर्ष कुछ नहीं निकलता था और न राजा का स्पष्ट अभिप्राय ही ज्ञात होता था। अन्त में प्रजापक्ष को ऐसा ज्ञात होने लगा कि यदि हम लोग ऐसे ही चुप रहेंगे तो निर्णय होने में ज्यों ज्यों विलम्ब होगा त्यों त्यों हमारे इष्ट कार्य में अधिकाधिक विघ्न आवेंगे। अतएव १७वीं जून को उन्होंने अपने पक्ष की एक सभा की और यह जानकर कि इनमें रईस और धर्माधिकारीगण हरगिज़ शामिल न होंगे, उस सभा का नाम उन्होंने 'लोकसभा' रक्खा। सभा में निश्चिय हुआ कि देशकल्याण के जो काम समझे जायँ वे अब शीघ्र ही आरम्भ कर दिये जायँ। उनका यह साहस देख द्वितीय पक्ष को बड़ा आश्चर्य हुआ और साथ ही भय भी उत्पन्न हुआ। राजा को तो कुछ सूझता ही न था। उपाय दो थे—या तो किसी उपाय से लोकसभा का नाश कर दिया जाय अथवा द्वितीय पक्ष के लोगों को भी उसमें शामिल कर लें। परन्तु राजा ने इन दोनों उपायों का अवलम्बन न कर एक तीसरा ही उपाय ढूँढ़

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

निकाला वह इस प्रकार था—

राजा ने विज्ञापन वितरित कराया कि जिस कारण से स्टेट्स जनरल सभा में फूट फैल गई है उस कारण पर विचार करने के लिए हम खुद तारीख तेईस को एक भारी दरबार करेंगे। इतने में ही लोकसभा को खबर मिली कि राजा अपने अधिकार के जोर से लोकमत का अनादर कर, अपने चुने हुये मंत्रियों के अभिप्राय के अनुसार, राज्य व्यवस्था करनेवाला है। यह सुनते ही उसे अधिक जोश आगया और उसने अपना काम जितनी जल्दी हो सके उतनी जल्दी आरम्भ करने का निश्चय किया। उस समय उसका अध्यक्ष बेली नाम का एक मनुष्य था। वह इक्कीस तारीख को लोकसभा होने के समय अपने सभागृह के पास गया। उसे यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि, सभागृह के दर्वाजे बन्द हैं और चारों ओर सिपाहियों का पहरा है। यह वहाँ खड़ा ही था कि उसके शेष सभासद् भी वहाँ आकर जमा होगये। एक तो पहिले ही से नाराज थे, अब दुबारा ऐसा अपमान हुआ देख उनके क्रोध का ठिकाना न रहा। वे तत्काल ही एक दूसरी जगह पर जा एकत्र हुए और हर एक ने शपथ की कि चाहे जो हो, फ्रान्स देश को स्वतन्त्र प्रकार की राजसत्ता प्राप्त कराये बिना हम अपना उद्योग नहीं छोड़ेंगे।

राजदरबार

इस तरह लोकसभा का प्राबल्य कम करने के लिए जो उपाय राजा ने सोचा, वह उल्टा उसके बढ़ाने के लिए कारण हुआ। तथापि विज्ञापन के अनुसार राजा ने सदा के सभागृह में तेईस तारीख को एक बड़ा दरबार किया। वहाँ रईस, धर्माधिकारीगण और प्रजा के प्रतिनिधि सभी उपस्थित थे। राजा ने जो वक्तृता दी उसमें लोकसभा के लिए बहुत सी धमकियाँ थीं।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

उसके भाषण का तात्पर्य यही था कि जन-साधारण के प्रतिनिधियों का आचरण बहुत स्वतन्त्र हो गया है। वे बड़े उच्छृङ्खल हो गये हैं! उनका बर्ताव अब बहुत दुःसह हो रहा है। यदि वे हमारी इच्छा के अनुसार, देश-हित के कार्यों में, हमें सहायता देंगे तब तो अच्छा, नहीं तो उनके साथ सख्ती का बर्ताव किया जायगा। वक्तृता समाप्त कर राजा चला गया। साथ ही हुक्म दे गया कि सदा के अनुसार सब लोग शांति-पूर्वक चले जावें। तदनुसार रईस और धर्माधिकारीगण तो तत्काल ही चले गये; किन्तु लोकसभा के सभासदों ने अपना स्थान नहीं छोड़ा। वे ज्यों के त्यों बैठे ही रहे। कुछ देर तक बिलकुल सन्नाटा रहने के बाद मिराबो एकाएक खड़ा हो गया और सब को सम्बोधन कर कहने लगा—

मिराबो का विद्रोह

"सज्जनों, स्वेच्छाचारी राजा का प्रसाद तक बड़ा भयंकर होता है। यदि यह बात सत्य न होती तो राजा के मुँह से जो कुछ लोगों ने सुना है उससे देश का कल्याण अवश्य हुआ होता। सचमुच क्या ही अपमानास्पद भाषण है! अजी; जिसको तुम्हारी सलाह से चलना उचित है, वही क्या तुम से धमकी की बातें कहे? ओफ! क्या तुम्हारे बोलने की स्वतंत्रता तक छीन ली जाय और क्या तुम्हारे सभागृह के चारों ओर सिपाहियों का पहरा रहे। भाइयो, उस दिन आपने जो हाथ पर हाथ मार कर प्रतीज्ञा की थी कि फ्रांस की राज्य-व्यवस्था का कोई अच्छा इन्तिज़ाम किये बिना हम अपना उद्योग नहीं छोड़ेंगे, उसका मैं फिर से स्मरण दिलाता हूँ। उसे भूलना मत।"

राजा की आज्ञा के अनुसार लोकसभा के सदस्यों को, सभागृह छोड़कर जाते हुए न देख, उस जगह का अधिकारी

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

भीतर आया और उन्हें निकल जाने को कहने लगा। इस पर मिराबो ने उसके पास जाकर चिल्लाकर कहा—"अरे जा, अपने स्वामी से कह कि हम जो यहाँ पर एकत्र हैं प्रजा की आज्ञा से एकत्र हैं। संगीन की मार से बाहर निकाले बिना हम यहाँ से हिलने के नहीं।"

राजा के मन की दशा और नेकर से अनबन

राजा का उपरोक्त भाषण क्या हुआ, कहना चाहिये कि फ्रांस देश की राजसत्ता की समाप्ति हो गई। क्योंकि उसी वक्त से धीरे धीरे प्रजा के स्वेच्छाचार का प्रारम्भ हुआ। मिराबो का कथन और प्रजा के मन की स्थिति जब राजा को मालूम हुई तब उसे अत्यन्त खेद हुआ। उसे यह नहीं सूझा कि क्या करना चाहिये। कोई उसे एक तरह की सलाह देता, कोई दूसरी तरह की। उसके मन का झुकाव प्रजा के हित की ओर अधिक था। अतएव सब का कथन वह सत्य समझता था। किन्तु उसके अनुसार, दबाव के कारण, वह चलने से लाचार था। लोक सभा की उच्छृङ्खलता के विषय में किसी ने उसे सलाह दी कि यदि वे लोग आपकी आज्ञा नहीं सुनते हैं तो सिपाही भेज कर उन्हें पकड़ मँगवाइये और सुनने के लिए लाचार कीजिए। इस पर राजा ने बड़ी नम्रतापूर्वक उत्तर दिया—"नहीं, ऐसी सलाह मुझे मत दो। मेरे कारण किसी का जी न दुखे, यही मेरी इच्छा है।" राजा का मन तो इस तरह दुबिधा में पड़ा था। उधर एक दूसरी बात हो गई। मुख्य मन्त्री नेकर तेईस तारीख के विरुद्ध था। अतएव वह दरबार में उपस्थित नहीं हुआ। इससे राजा सख्त नाराज हुआ। उसने उसे निकालना चाहा। परन्तु रानी ने यह जानकर कि वह बड़ा लोकप्रिय है, अतएव उसका निकालना अनुचित होगा, राजा से उसे बने रहने देने के लिए बिनती

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

की। राजा ने मंजूर कर लिया। किन्तु अब खुद नेरक का हृदय राजपक्ष से उचट गया। उसके हृदय का झुकाव लोकसभा की ओर था। अतएव वह उस पक्ष में जाकर मिल गया। राजपक्षपातियों को बड़ा बुरा मालूम हुआ।

विलक्षण आन्दोलन और लोक प्राबल्य

लोकसभा हमारी सुनती नहीं, अतएव राजा ने सोचा कि उसकी राय के अनुसार राज्य शासन करें। राजा ने अपना यह विचार रईस और धर्माधिकारियों के हृदय में भरकर शांति-स्थापन की चेष्टा की; पर सब व्यर्थ हुआ। क्योंकि उस समय सब प्रकार के मनुष्यों के मनकी बड़ी विलक्षण स्थिति हो गई थी। नेकर सरीखे बुद्धिमान और विचारवान् मनुष्य को राजपक्ष छोड़कर प्रजापक्ष में मिलते देख बहुतेरे ने उसका अनुसरण किया। सैंतालीस रईस लोक सभा में जाकर शामिल हो गये। उनमें ड्यूक आर्लीन्स राजा का कुटुम्बी था। पेरिस में, पास ही के वर्सेल्स शहर में, और उसके निकटवर्ती बहुत से प्रान्तों में बड़ी हलचल मच गई। सब लोग यही कहने लगे कि वर्तमान समय की राज्यव्यवस्था बहुत बुरी है। इसका परिवर्तन बहुत शीघ्र होकर नया प्रबन्ध होना चाहिए। नहीं तो प्रजा को सुख प्राप्त नहीं होगा। दासत्व के दिन अब गये। स्वतन्त्रता चाहिए। समाचारपत्र और छोटी छोटी पुस्तिकाओं ने तो और भी घोर आन्दोलन मचाया। इनके द्वारा लोगों में नाना प्रकार के विचार फैलते थे। लोगों को यह नहीं मालूम होता था कि कौन विचार अच्छा और कौन बुरा है। जगह जगह पर हज़ारों मनुष्य एकत्र होते थे और उनमें राजसत्ताक राज्य, प्रजासत्ताक राज्य और राजप्रजासत्ताक राज्य के गुणावगुण-विषयक बहुतसा वितण्डावाद होता था। लोगों में कई दल हो गये थे। प्रजा की ऐसी बिगड़ी

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

हुई दशा देखकर बेचारा सीधे स्वभाव का राजा सोलहवां लुई घबड़ा उठा। हलचल मिटाने के लिए, जो कोई उससे जो उपाय बतलाता, वही वह कर देखने के लिए तैयार हो जाता।

बोस्टील के किले पर अधिकार

लोकसभा में बहुत से लोगों को शामिल होते देख और क्षण क्षण में उसका प्राबल्य बढ़ते देखकर किसी ने राजा को सूचना दी कि बिना फौज का उपयोग किये यह हलचल मिटने की नहीं। राजा ने उसका कहना मान लिया और अपनी पल्टन के बहुत से सिपाहियों का पहरा पेरिस और वर्सेल्स में स्थान स्थान पर रख दिया। साथ ही डौंड़ी पिटवा दी कि लोकसभा को जो सहायता देगा, उसे सख्त सजा दी जायगी। यह समय ऐसी सख्ती का न था। राजा में कितनी सामर्थ्य रह गई है, यह सारी प्रजा जान चुकी थी। लोग उसको कंटक-स्वरूप समझते थे। राजा का सारा प्रयत्न व्यर्थ गया। ऐसे बन्दोबस्त के लिए उसके सिपाही कम पड़ गये। इधर लोकसभा में बहुतेरे लोग अपने हथियारों के सहित शामिल होने लगे। फिर भी राजपक्ष की सेना अधिक थी। अतएव लोकसभा ने भी उसका सामना करने लायक सेना रखना आरम्भ कर दिया। थोड़ ही समय में उसे बहुत से मनुष्य मिल गये। परन्तु मुश्किल यह पड़ी कि उन्हें हथियार लाकर कहाँ से दिये जावें। इसके लिए लोकसभा ने तोप, बन्दूक, तलवार, संगीन इत्यादि बनाने के जितने कारखाने थे, उन्हें जप्त कर लिया और जितने हथियार वहाँ तैयार मिले, उन्हें लेकर उनकी वाजिब कीमत कारखाने के मालिकों को दे दी! इस तरह हथियार मिलते ही, जुलाई मास की तेरहवीं तारीख को, करीब चार घंटे के अन्दर, एक बड़ी सभा कर, लोकसभा ने

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

अपने आगे के काम के विषय में विचार किया। कुछ नियम निश्चित किये। उन्हें छपाकर चारों ओर बँटवा दिया और यह निश्चय किया कि पेरिस शहर में अड़तालीस हज़ार फ़ौज, शहर और उसके आसपास के प्रदेशों के संरक्षण के निमित्त, बहुत जल्दी रक्खी जाय। यह सब बातें पेरिस नगर के वासियों ने बहुत पसंद कीं। इतना ही नहीं, बहुत से प्रांतों की प्रजा ने लोकसभा को इस मतलब का अभिनन्दपत्र भेजा कि आपने जो कार्य उठाया है, वह बहुत ही अच्छा है। हम इसका हृदय से समर्थन करते हैं और हम से जो सहायता बन पड़ेगी, यथाशक्ति देने को तैयार हैं। लोकसभा को इससे बड़ी उत्तेजना मिली। कुछ समय के बाद उसने बोस्टील नाम के एक मजबूत किले पर दखल करने के लिए कुछ सेना भेज दी। सेना ने किले को चारों ओर से घेर लिया और क़िले के अधिकारी के पास क़िला छोड़ देने के लिए नाना प्रकार के संदेश भेजे। किन्तु सब व्यर्थ हुए। क्योंकि क़िलेदार राजपक्ष का था और उसने निश्चय कर लिया था कि यथाशक्ति क़िले की रक्षा करूँगा। परन्तु जब उसने देखा कि मेरी इच्छा पूर्ण होने के कोई लक्षण नहीं हैं तब उसने बारूद में आग लगा देने का विचार किया। यह बात उसके मातहतों को पसन्द नहीं आई। उन्होंने उसे ऐसा नहीं करने दिया। बाहर की सेना की दृढ़ता देखकर, अन्त में, यह बचन लेकर कि भीतर के कनुष्यों की जान नहीं ली जावेगी, क़िले का दरवाजा खोल दिया गया। किन्तु बाहर की सेना भीतर घुसते ही अपना वचन भूल गई। उसने क़तलेआम शुरू कर दिया। क़िलेदार बहुत ही वृद्ध और अच्छे स्वभाव का था। उस पर भी सेना को दया नहीं आई। उसने उसकी बड़ी दुर्दशा करना आरंभ कर दिया। बेचारा कष्ट से घबड़ाकर, बिकल होकर कहता—

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

"मेरे मित्रो, कृपा कर मेरा प्राण जल्दी ले लो।" इस तरह की मौत पाना बड़े दुर्भाग्य की बात है। वास्तव में उस निरपराधी मनुष्य की दुष्टों के हाथ से इस तरह की मृत्यु देखकर अत्यन्त खेद होता है। परन्तु किया क्या जाय, जो बात वश की नहीं, उसके इसलिए "ईश्वर जो कुछ करता है, हमारे भले के लिए ही करता है", ऐसा समझकर और विश्वास रखकर शांति-पूर्वक चुपचाप दुःख सह लें, यही विचारवान् पुरुषों के लिए उचित है।

बोस्टील का किला ❋ लोकसभा के अधिकार में आने के कुछ दिन बाद पेरिस का एक मनुष्य उसे बोस्टील-किले का देखने गया था। उसने उसका इस तरह हाल वर्णन किया है—"बहुत दिनों से मेरी इच्छा थी कि बोस्टील और उसकी कालकोठरियों को एक बार सुभीते से जाकर देख आऊँ। इस मौके को अच्छा समझकर मैं वहाँ गया। देखता हूँ तो हजारों मनुष्य वहाँ एकत्र हुए हैं। कोई कालकोठरी देख रहा है, कोई बुरुज की ऊँचाई माप रहा है, कोई खंदक की गहराई जानने के लिए रस्सी डाले हुए है और कोई एकत्र बैठकर गप्पें हाँक रहे हैं। मैं और भीतर घुसा तो देखता हूँ कि चारों ओर की दीवालें इतनी ऊँची हैं कि वहाँ सूर्य की किरणों का स्पर्श कभी हो ही नहीं सकता। वहाँ की कालकोठरियाँ बड़ी भयानक थीं। उनके दरवाजे बड़े ही विलक्षण थे। उनमें लोहे के बड़े मोटे मोटे छड़ लगे हुए थे। प्रकाश तो वहाँ नाम को न था। सील हद से जियादा थी। हवा अत्यन्त ख़राब। मोटे मोटे खम्भों में लोहे की मोटी जंजीरें बँधी हुई थीं। उन्हें देख कर मेरे शरीर पर रोंगटे उठ आये। मनुष्यों को कष्ट देने के वहाँ बहुत से

❋ राजनीतिक अपराधी यहीं रक्खे जाते थे।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

यंत्र थे। एक यंत्र लोहे का वहां पर ऐसा था, जिसका कील दबाते ही अंग अंग में ऐसी वेदना होती की उसकी अपेक्षा तत्काल ही प्राण का निकल जाना अच्छा मालूम होता। उस इमारत में कितने मनुष्यों को कितने प्रकार के कष्ट भोगने पड़े होंगे, कितने व्यक्तियों का रक्तस्राव हुआ होगा, कितने अनाथों का शिर धड़ से जुदा हुआ होगा, और न जाने कितने घोर कर्म वहाँ हुए होंगे, इसकी गिनती ही नहीं हो सकती, वर्णन करना तो दूर रहा। निर्दयता भी यदि मानवरूप धारण कर के आई होती तो उसे भी उस यमयातना के सदन का विध्वंस देख परम सुख प्राप्त हुआ होता। अस्तु।

राजा भयभीत हुआ

बोस्टील किले का हाल जिस समय राजा ने वर्सेल्स के महलों में सुना, उस समय आधी रात हो गई थी। उस समय वह खान-पान और ऐशआराम में तल्लीन था। एक रईस ने राजा से उस कहा—"महाराज, बोस्टील किले की सचमुच ऐसी ही दुर्दशा हो गई है, इसमें जरा भी सन्देह नहीं"। तब उसने उत्तर दिया—"नहीं जी, यह बात ठीक न होगी। कुछ योंही थोड़ा बहुत गड़बड़ हुआ होगा"। इस पर उस रईस ने कहा—"नहीं सरकार, यह छोटी-मोटी गड़बड़ नहीं, राज्य-क्रान्ति है"। तो भी राजा ने उसकी बात अनसुनी कर दी। परन्तु जब उसे पूरा हाल मालूम हुआ, तब दूसरे दिन सबेरे तत्काल ही वह लोकसभा में गया। पहले तो उसका हेतु सभा को मालूम नहीं हुआ, पर राजा ने जब वहाँ जाकर कहा कि तुम्हारी इच्छानुसार नेकर को मैं फिर अपना प्रधान मंत्री नियुक्त करता हूँ और तुम जो कहते हो उसे बड़े संतोष के साथ स्वीकार करता हूँ", तब तो लोकसभा और जनसाधारण को बहुत हर्ष हुआ। जो राजा थोड़ी देर पहिले लोगों को भार

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

रूप हो रहा था, वह अब बहुत पसन्द आने लगा। इतना ही नहीं, लोग उसकी बड़ी प्रशंसा करने लगे। इस तरह राजा सोलहवाँ लुई, पेरिस शहर में लोकप्रीति सम्पादन कर के, फिर अपने वर्सेल्स के महलों में आ गया। जिस समय वह वहाँ गया। और वहाँ से वापस आया, रास्ते में हजारों सिपाही हथियारबन्द खड़े दृष्टिगोचर हुए। जाते वक्त तो उसने सिपाहियों के मुख पर उदासी और क्रूरता के चिह्न देखे; पर लौटते समय उसने सब को खूब प्रफुल्लित पाया।

रईसों की भगदड़

राजा भयभीत हो लोकसभा की इच्छा के अनुसार चलने को तैयार हुआ। यह देख दर्बारी रईसों का साहस छूटा! उन्होंने देखा कि अब हमारी श्रेष्टता रहने की नहीं। अतएव वे उसे छोड़ विदेश भागने लगे। एक प्रसिद्ध ग्रन्थकार ने इन रईसों के सम्बन्ध में लिखा है—"इन पुरुषों के नाम इस लायक नहीं है कि इतिहास में लिखे जांय। इन्हीं लोगों के कहने में आकर राजा ने उपर्युक्त भारी साहस के कार्य में हाथ लगाया—अर्थात् तलवार के जोर से लोकसभा का प्राबल्य कम करने के लिए प्रयत्न किया और जब उसका परिणाम भोगने का अवसर आया तब वे सब राजा को अकेले छोड़ भागने लगे। यह बात उनके लिए अत्यन्त लांछनास्पद है"। उस ग्रन्थकार का यह कथन अक्षरशः सत्य है। इन रईसों के भाग जाने पर भी राजा ने अपना बचन सत्य किया। उसने नेकर को पुनर्वार प्रधान मंत्री की जगह दी और लोकसभा की सेना के इन्तिज़ाम के लिए जो उसने पेरिस और वर्सेल्स में स्थान स्थान पर पल्टन मुकर्रर की थी, उसे उठा लिया।

राज्यक्रांति की धुनि केवल राजधानीवासियों में ही नहीं थी; किन्तु भिन्न भिन्न प्रांत के निवासियों ने

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

देश में राज्यक्रांति जब पेरिस और वर्सेल्स के निवासियों की
का आतंक करतूतों का हाल सुना तो उनमें भी बड़ी
- हलचल मच गई। वे लोग एकत्र होकर, हाथ में नाना प्रकार के अस्त्र ले वहाँ के जमीन्दार और जागीरदारों पर घोर अत्याचार करने लगे। उनके घर लूट लिये गये। उनके कुटुम्बी जनों की बड़ी दुर्दशा की गई। उनकी छाती पर तलवार रख, गले में फाँसी डाल, उनसे जमीन की सनदें छीन ली गई। बहुतेरे मनुष्यों के टुकड़े टुकड़े कर, उनके कटे हुए अंग, रास्ते में फेंक दिये गये। एक जागीरदार बहुत प्रसिद्ध था। उसे मार डालें या जीता रक्खें, इस विषय पर विचार करने के लिए बलवाइयों की सभा करीब चार घंटे तक होती रही। तब तक वह बेचारा जागीरदार कुएँ में अधर लटका कर रक्खा गया। उसकी यह दुरदशा वहीं के एक मनुष्य से नहीं देखी गई! उसने उसे छोड़ देने के लिए सभा से प्रार्थना की उस समय उस पर लोगों को इतना क्रोध आया कि उस निरपराधी को ही उन्होंने एक जलती हुई भट्टी में डाल दिया! इससे अनुमान कर लेना चाहिए कि उस समय लोगों की कैसी स्थिति हो गई थी। वे लोग यह भयंकर उद्योग स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिए कर रहे थे। परन्तु इससे उनका इष्ट हेतु पूर्ण होना तो दूर रहा, खुद उनको बड़ा नुकसान उठाना पड़ा जो आगे की कथा से मालूम हो जायगा।

व्यापारियों ने जब देखा कि पेरिस, वर्सेल्स और प्रायः सब कस्बे और देहातों में दंगा हो रहा है और प्रजा बिगड़ रही है तब उन्होंने अपने अपने काम धन्धों से हाथ खींच लिया। रोजगार बिलकुल बन्द हो गया। किसी पर किसी का विश्वास न रहने से कारण और गवर्नमेंट की भावी अवस्था का कुछ अंदाजा न बँधने के कारण, देना-लेना सब

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

बन्द होगया। दुकानों के दर्वाजे तक बन्द हो गये। ग़रीबों ने समझा कि घोर दुर्भिक्ष का आगमन हुआ। अतएव वे अपने प्राणों की परवा न कर, अन्न अन्न करते हुए, जहाँ, तहाँ दौड़-धूप मचाने लगे। इधर, आगे हम लोगों को खाने के लिए कुछ मिलेगा या नहीं—यह संदेह कर लोकसभा के गुमाश्ता हज़ारों-लाखों मन अन्न संग्रह करने के उद्योग में लगे थे। इस तरह सारे फ्रान्स देश में बड़ी गड़बड़ और हलचल मच रही थी। लोगों का मन एक तो यों ही अशान्त हो रहा था, फिर राज्यक्रान्ति से सम्बन्ध रखनेवाली छोटी छोटी पुस्तिकाओं ने और भी गजब ढा दिया। उस समय वे इतनी प्रकाशित हो रही थी कि कहने से कोई सच नहीं मानेगा। उस समय एक अङ्गरेज सज्जन पेरिस में रहते थे। उन्होंने अपने एक मित्र को इसके बाबत लिखा है—"राज्य-क्रांति से सम्बन्ध रखने वाली तेरह पुस्तिकायें आज नई प्रकाशित हुईं। कल सोलह प्रकाशित हुई थी। और गत सप्ताह में सब मिलाकर बानवे छपी थीं"। कुछ ठिकाना है! फिर इन पुस्तकों के लिखनेवाले भी कैसे थे—बड़े बड़े विद्वान, जिनके लिखने का असर लोगों में इतना होता था कि क्षण क्षण में उनके राज्य-व्यवस्था विषयक मतों का परिवर्तन होता था और सच झूठ उन्हें समझ न पड़ता था। इस कारण जिस विचार पर दस मनुष्य चलते थे उसी पर ग्यारहवाँ भी अपना पग रखता था। इस तरह सारी प्रजा में बड़ा अविचार फैल रहा था। देश से सारे मनुष्यों को लिखना-पढ़ना आने में लाभ तो अनन्त हैं, परन्तु हानि भी कुछ कम नहीं। मुख्य हानि तो यह है कि कोई प्रभावशाली लेखक यदि लोगों के हृदय में कुछ विशेष बात भरना चाहता है तो उसे तत्काल ही सफलता प्राप्त होती है। इसका उदाहरण उस समय फ्रांस देश में स्पष्ट

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

रीति से देखने में आया है।

सोलहवें लुई के हाथ में तो अब राजसत्ता बिलकुल ही नहीं रह गई थी। लोकसभा जो कुछ करती, राजा को मंजूर और पसन्द करना पड़ता था। अतएव अब उस पर देश की अशान्ति की जवाबदेही बिलकुल नहीं रह गई थी।

मनुष्य के अधिकारों का घोषणा-पत्र

अब लोकसभा को यह फ़िक्र पड़ी कि किस तरह देश को शान्त करें और अपनी राज्यक्रान्ति का काम आसानी से चलावें। सभा के मुखियों ने गड़बड़ करनेवालों को बहुत समझाया; पर देश में शान्ति नहीं हुई। जहाँ देखो वहीं स्वाधीनता का मंत्र जपा जा रहा था। सुनार, दर्जी, लुहार, चमार तक अपने अपने लोगों की सभा कर राजनैतिक विषयों पर वाद-प्रतिवाद कर रहे थे। इतने लोगों को अब किस तरह ठीक रास्ते पर लावें, यह बड़ा बेढब सवाल उठ खड़ा हुआ। ख़ास पेरिस की यह हालत थी कि न कोई किसी का मालिक था न कोई किसी का नौकर। खजाना खाली होगया। लोगों से किसी क़िस्म का कर वसूल नहीं होता था। सारे सरकारी काम, जो निहायत ज़रूरी भी थे, द्रव्य के अभाव से उनके बन्द होने का मौका आगया था। नेकर का इरादा था कि सरकार साहूकारों से कुछ कर्ज ले ले। पर कोई एक पैसा कर्ज देने को तैयार न था; क्योंकि सब को सन्देह था कि न जाने भविष्य में राज्य की क्या अवस्था हो। इस तरह चारों ओर गड़बड़ी फैली हुई थी। अतएव लोकसभा ने निश्चित किया कि सब लोगों के समाधानार्थ एक घोषणापत्र प्रकाशित किया जाय और उसमें मनुष्य के अधिकारों का जिक्र रहे। इसके लिए अगस्त मास की चौथी तारीख को रात्रि के समय एक बैठक हुई और घोषणापत्र तैयार करने के लिए चुने हुए मेम्बरों का

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

एक कमीशन नियुक्त हुआ। कमीशन के एक मेम्बर ने इस विषय में एक जगह लिखा है—"घोषणा-पत्र तैयार करते समय बहुत वितण्डावाद हुआ। यह शब्द लिखो, वह शब्द कटु है, उसे निकालो, इसे रक्खो—इस तरह करते हुए हम बिलकुल थक गये। आखिर ले-दे-कर बड़ी मुश्किल से मनुष्य के अधिकारों का घोषणापत्र तैयार हुआ।" अगस्त की आठवीं तारीख को यह घोषणापत्र प्रकाशित हुआ। उसमें जितनी बातें लिखी गई थीं, उनमें से कुछ तो ऐसी स्पष्ट और सत्य थी कि उन पर किसी को सन्देह हो ही नहीं सकता। परन्तु कुछ ऐसे भी थीं कि यदि उन्हें लोग सत्य और निर्विवाद समझकर उनके अनुसार चलने लगते तो परिणाम में बहुत से भयंकर अनर्थ हुए होते। उन सब बातों के लिखने का यहाँ अवकाश नहीं है। परन्तु उनकी मुख्य मुख्य बातें ये हैं—"सब मनुष्य समान हैं। प्रत्येक मनुष्य की स्वाधीनता रखना, उनकी रक्षा करना और उन पर अन्याय न होने देना, यही मनुष्यों के एकत्र रहने का मुख्य उद्देश है। 'सत्ता' सब लोगों की है और इसलिए 'राजत्व' भी उन्हीं के पास है। जिन कामों के करने से किसी को कष्ट नहीं होता, उन कामों के करने का अधिकार प्रत्येक को रहना चाहिए! यही 'स्वाधीनता' है। सब लोगों की इच्छा ही "न्यायशास्त्र" है। सार्वजनिक कामों का खर्च प्रत्येक मनुष्य को अपने सामर्थ्यानुरूप करना चाहिये। राज्यशासन के लिए जो सज्जन चुने जाँय, उनके विषय में प्रत्येक मनुष्य को अपना मत देने का अधिकार है, इत्यादि।" लोकसभा ने इस बात को नहीं समझा कि सब प्रकार की समानता का तत्व ऐहिक व्यवहार में नहीं चल सकता, प्रत्युत परमेश्वरीय सम्बन्ध ही से यह ठीक है। इसी तरह और भी कितनी ही बातों का विचार लोकसभा के हृदय में नहीं आया। यह खेद

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

की बात है। किन्तु वह समय नास्तिकता का था। अतएव इसमें आश्चर्य मानने की आवश्यकता नहीं। इस घोषणापत्र की हज़ारों प्रतियाँ जनसमूह में वितरण की गईं और स्थान स्थान पर चिपकाई गईं इसके पश्चात् लोकसभा में राज्यव्यवस्था के विषय में जो जो कारंवाइयां हुईं, उनका वर्णन आगे के अध्याय में किया जायगा।

चौथा अध्याय

लोक सभा में मतभेद

इतना सब हुआ; पर अब आगे क्या करना चाहिए, इस विषय पर लोकसभा कुछ निश्चित न कर सकी। सभा बराबर एकत्र होती, नाना प्रकार के तर्क निकाले जाते; और वाद-विवाद भी होता; परन्तु निश्चय कुछ नहीं होता था। कोई कहता; राजा को एक दम निकालकर प्रजासत्ताक राज्य स्थापन किया जाय। कोई कहता, नहीं फ्रांस देश को इतने दिनों तक राजसत्ता में रहने की आदत पड़ गई है—अब उसे प्रजासत्ताक राज्य पसंद नहीं होगा, अतएव वह नहीं चाहिए। किसी का आग्रह था, जैसे इङ्गलैण्ड में राजा और प्रजा की सत्ता एकत्र होकर राज्य कर रही है, उसी तरह का इन्तज़ाम फ्रांस में भी किया जाय। मिराबो का मत भी इसी अंतिम मत के सदृश्य था। उसका कहना था—"यद्यपि यह बात सत्य है कि सब प्रकार के अधिकारों को राजा के हाथ में रखना और उसके बनाये हुए क़ायदों के अनुसार चलना अच्छा नहीं है; तथापि हमारा यह विचार कि राजा की सम्मति के बिना, केवल प्रजा की ही सम्मति से बने हुए

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

Jangamawadi Math, Va...
Acc. No. 2663

क़ायदों में हमें सुख होगा, सो भी ठीक नहीं है। मेरी राय में तो राजा की अनुमति लेकर जो क़ायदे बनाये जाँयगे, उन्हीं से अधिक सुख प्राप्त होगा। यदि यहाँ राजा की अनुमति के बिना क़ायदे बनने लगेंगे तो मैं फ्रांस में रहने की अपेक्षा कान्स्टेंटिनोपल में रहना अधिक अच्छा समझूँगा।" इसी तरह उपरोक्त दोनों पक्ष के अनुयायीगण भी अपने अपने मत की पुष्टि के लिए सभा में लम्बी लम्बी वक्तृताएं देते, पुस्तकें लिखते और वितण्डावाद करके जनसाधारण का हृदय अपने पक्ष की ओर आकर्षित करने का प्रयत्न करते थे।

इसी तरह की गड़बड़ी में सारा अगस्त मास और सितम्बर
के चौदह दिन और बीत गये। इतने दिनों
राष्ट्र की अधिक तक लोग समझते थे कि किसी प्रकार से शांति
दुर्दशा और उस होकर व्यापार उद्यम-धन्धा फिर चलने लगेगा
पर नेकर का मत और हम लोग फिर पूर्ववत् निर्वाह करने
लगेंगे। पर दिनों दिन यह हल चल और
बढ़ती हुई देख उन्हें बड़ी निराश हो गई, पेरिस का सरकारी खज़ाना खाली पड़ गया, और खर्च की माँग दिन पर दिन बढ़ने लगी। किसी किस्म के कर या जमीन के लगान तक की वसूली में एक कौड़ी नहीं आती थी, कारखाने बन्द हो गये। लोग बेकार हो गये। उनके निर्वाह का कुछ ठिकाना नहीं रह गया। कोई किसी को एक पैसा कर्ज नहीं देता था। लोगों को भय होने लगा कि हमारे पास जो थोड़ा बहुत है, वह भी बच सकेगा या नहीं। नेकर ने सूचना दी कि सरकारी कारबार चलाने के लिए ३,००,००,००० फ्रांक्स लोगों से सूद पर ले लिये जाँय। लोकसभा ने इस पर अनुमति भी दे दी। पर एक पैसा भी कर्ज देने को कोई राजी नहीं हुआ। फिर एक बार सूद की दर बढ़ाकर ८,००,००,०००

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

फ्रांक्स कर्ज लेने का नोटिस नेकर ने दिया। उसका भी कुछ परिणाम नहीं हुआ। तब नेकर ने हार मानी। उसे यह नहीं सूझ पड़ता था। कि किस तरह कहाँ से द्रव्य लाकर राज्य-कारबार चलावें। उसने एक सभा में उस समय की परिस्थिति का बहुत ही हृदयद्रावक वर्णन किया था। उसका सारांश इस प्रकार है—"हमारी आर्थिक दशा दिन पर दिन बुरी हो रही है। गत अगस्त मास से गवर्नमेंट के ऊपर से भी लोगों का विश्वास उठ रहा है। द्रव्य-सम्बन्धिनी सब प्रकार की अड़चने एकदम आ उपस्थित हुई हैं। विदेश से अन्न की आमद बंद हो गई है। राज्य के लिए विदेश में अन्न खरीदने का काम हो रहा है। इस लिए देश के लोगों में द्रव्य का बड़ा अभाव हो गया है। लोगों का परस्पर विश्वास भी हट गया है। पैसा तो कहीं दिखाई ही नहीं देता। जिनके पास थोड़ा बहुत है, वे उसे घर में संग्रह कर छिपाने के उद्योग में हैं। हमने दो बार ब्याज से रुपया लेने का प्रयत्न किया—दूसरी बार तो ब्याज की दर भी खूब बढ़ा दी—फिर भी एक पैसे की प्राप्ति नहीं हुई। प्रजा में भय बढ़ रहा है और विपत्ति तो मानो हाथ धोकर पीछे पड़ गई है। खजाने में खर्च का काम तो खूब आ रहा है, पर आमदनी के नाम से शून्य। अब यह मौका नहीं रह गया है कि खजाने में द्रव्य न रहने की बात छिपा दी जावे। राजा भी इस बात को गुप्त रखने में कुछ लाभ नहीं समझते। राजा और रानी को हमारी दुर्दशा के साथ सच्ची सहानुभूति है। अधिक क्या कहें, रानी ने अपने चाँदी के बर्तन आदि टकसाल में भेज दिये हैं; और उनके सिक्के ढलवाकर राज्य का खर्च चलाने में पूर्ण सहायता दी है। इसी तरह राजा ने भी बहुत सा द्रव्य खजाने में भेज दिया था। यह रकम कुल मिलाकर ९,००,००० फ्रांक्स रहे

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

होंगे। इतने से क्या होता है। अब शीघ्र ही बहुत सा धन मिलना चाहिये। नहीं तो फौज की तनख्वाह, सरकारी ऋण का ब्याज और राज कर्मचारियों का वेतन देना एक दम बन्द हो जायगा।"

मिराबो की सम्मति और सूचना

नेकर की राय यह थी कि यदि किसी तरह कर्ज न मिले तो एक कानून ऐसा बनाया जाय, जिससे प्रत्येक मनुष्य को अपनी आमदनी का चौथा हिस्सा सरकार में तत्काल ही दाखिल करना पड़े! राष्ट्र की ऐसी आर्थिक दुर्दशा का हाल सुनकर लोगों को बड़ी चिन्ता हो गई और वे इसे दूर करने का उपाय सोचने लगे। मिराबो का मत था कि दरबार के रईस और देश जमीदार बड़े धनवान हैं और उन्होंने आज तक किसी किस्म का भारी कर नहीं दिया है। अतएव, ऐसी विपत्ति के समय में, उन्हें साधारण जनो की अपेक्षा अधिक अंशो में द्रव्य द्वारा सरकार की सहायता करनी चाहिए। बहुतों के हित के लिये थोड़े से लोगों को जो कष्ट भोगना पड़े, उसे वे शांतिपूर्वक सहन करें। इसी आशय का उसने उस अवसर पर एक बहुत ही चित्ताकर्षक व्याख्यान दिया। उसने कहा—"आज दो सौ वर्ष से इस देश की राज्यव्यवस्था से बड़ी गड़बड़ी मची हुई है। उसका घड़ा भरता आ रहा है। अब वह शीघ्र ही भरेगा और हमारा सारा देश उसमें डूब कर नाश पावेगा। ऐसा होने में यद्यपि कुछ संदेह नहीं है, फिर भी कुछ प्रयत्न कर देखना चाहिए। सरकार की द्रव्य-सम्बन्धी आवश्यकता जिनकी सम्पत्ति के एकत्र करने से पूरी हो सकती है; ऐसे दो सहस्र श्रीमानों को चुन लेना चाहिये और आये हुये संकटो का निवारण करना चाहिये। हमारे इतने बड़े देश के संरक्षण के लिए यदि दो हजार मनुष्यों की हानि हो तो उसे कुछ अधिक

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

नहीं समझना चाहिये। सज्जनों, मेंरी बात सुनकर आपके रोंगटे खड़े हो गये होंगे। परन्तु क्षण भर आपने इसका भी विचार किया है कि—फ्रांस देश की प्रजा राज्यव्यवस्था चलाने के निमित्त पैसा नहीं पहुँचा सकती—जब यह बात प्रसिद्ध हो जायगी तब हमारी क्या दुर्दशा होगी और सारा संसार हमें क्या कहेगा।"

प्रजा में अविविश्वास

इस तरह इधर दरबार में मतभेद हो रहा था और नेकर तथा अन्य मन्त्रीगण इस विवेचना में पड़े थे कि आगे क्या करना चाहिये; और उधर पेरिस शहर में घोर अशान्ति के बादल घिर रहे थे। मजदूरों के दल के दल रास्ते में 'अन्न अन्न' चिल्लाते हुए घूम रहे थे। कितनी ही दीन स्त्रियाँ अपने छोटे बच्चों के साथ भूक के मारे रो रही थीं। कितने ही विचारवान् पुरुष, चिन्ता से भरे हुए, जहाँ-तहाँ बैठे दृष्टिगोचर हो रहे थे। और कितने ही अविचारी दंगेखोर मनुष्य—जो होगा, सो होगा, पर हम हर तरह की कोशिश कर अन्न प्राप्त करेंगे या मर जायँगे—ऐसा खुल्लमखुल्ला कहते हुए, हाथ में लाठी-सोंटा लेकर, सड़क पर यहाँ से वहाँ और वहाँ से यहाँ घूम रहे थे। इनमें तीसरे प्रकार के मनुष्यों की संख्या अधिक थी। इनमें यह बात फैली हुई थी कि रईसों ने फसल पकने के पहले ही खेत किसानों के द्वारा कटवा डाले हैं। व्यापारियों को उन्होंने घूस देकर दुकानें बन्द करवा दी है और शहर का सारा अन्न गल्लेवालों से लेकर इन्होंने नदी में डलवा दिया है। यही कारण है कि आज हम लोग एक दाना के लिए मोहताज हैं—तरस रहे! कहना नहीं होगा कि ये सब बातें बिलकुल निराधार गप्पें थीं। परन्तु समय के प्रभाव से लोगों को ये सब सच्ची ज्ञात हुईं और वे बिगड़ उठे। उन्हें निश्चय हो गया कि देश

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

की इस दुर्दशा के कारण राजा और उसके दर्बारीगण हैं। अतएव वे इसका बदला लेने के लिए स्पष्ट रीति से अपना विचार प्रकट करने लगे। कई साहसी दंगेखोरों ने तो 'राज-महल पर हमला करना' इसको अपने व्याख्यान का मुख्य विषय बनाया। अधिक क्या कहें, राजा और रईसों के विषय में क्या कहना चाहिए और क्या न कहना चाहिए, इसकी कुछ मर्यादा नहीं रह गई। कूचे और गलियों तक में, जहाँ देखो वहाँ, इन बलवाइयों के दल चक्कर काटते थे! पेरिस की इस भयंकर स्थिति का समाचार जब वर्सेल्स में राजा और रईसों ने सुना तो उन्हें बड़ी फ़िक्र पैदा हुई। उन्हें अपनी इज्जत और कुटुम्ब का संरक्षण करना कठिन जान पड़ा। फिर भी वे अपने बचाव के उद्योग में लगे।

राजा भतभीत, राजमहल का बन्दोबस्त

वर्सेल्स में राजमहल की रक्षा के लिए दो सौ सिपाही पहिले ही से मुकर्रर थे। पर यह अनुमान कर कि ऐसे संकट के समय में उतने काफ़ी नहीं होंगे, राजा ने पल्टन एवं कुछ सवार अपने पास और बुलवा लिये। जब यह ख़बर पेरिस के दंगेखोरों को मिली, उन्हें गजब का गुस्सा चढ़ आया। इतने में एक अफ़वाह और उड़ी कि राजा इतनी सेना को लेकर गड़बड़ मिटाने के लिए पेरिस आ रहा है। अब तो लोग आपे में न रहे। इतने में एक घटना और हुई। राजा ने जिस नई पल्टन को, अपनी रक्षा के लिए, अपने महल के पास ला रक्खा था, उसको उसने अक्टूबर की पहिली तारीख को भोजन का निमंत्रण दे दिया। उत्सव भारी था और रात्रि भर होता रहा। राजा के आदर सत्कार से वे सैनिक बड़े प्रसन्न हुए और राजा-रानी का गुण गाकर उनकी कुशल मनाने लगे। उनकी चर्चा सेस्पष्ट दृष्टिगोचर होने लगा कि वे अपने स्वामी

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

के संरक्षणार्थ चाहे जो करने को तैयार हैं। सोलहवें लुई और उसकी रानी को, बहुत वर्षों से, ऐसी राजनिष्ठा दिखाई नहीं दी थी। अतएव उन सैनिकों की उस वृत्ति को देखकर उन दोनों को अतीव हर्ष हुआ। इतना कि उनकी आँखों से आनन्दाश्रु की धारा बह निकली। उन्हें विश्वास हो गया कि जब तक ये हमारे निकट रहेंगे, तब तक हमें किसी बात का भय नहीं। वह सारी रात्रि बड़े सुख से व्यतीत हुई। इसका परिणाम क्या होगा, यह किसी ने नहीं सोचा।

जब पेरिस में ख़बर पहुँची कि राजा ने नई पल्टन के सिपाहियों को बड़े ठाटबाट के साथ न्योता

राजा के विरुद्ध धावा दिया था, तब वहाँ के लोगों को अतिशय सन्ताप चढ़ आया। उनका हृदय ऐसा होने लगा कि कब वर्सेल्स पहुँचे और हम सब लोगों को भूखे मार-कर सैनिकों को माल खिलानेवाले सोलहवें लुई से इसका बदला लें। सारे शहर में भारी हलचल मच गई। चारों ओर से यही शब्द कानों में पड़ने लगे कि 'वर्सेल्स चलो, वर्सेल्स !' तमाम सड़क, पुरुष, स्त्री और बच्चों से भर गई! चारों ओर—सर्वत्र—बलवा होने के चिह्न दृष्टिगोचर होने लगे। सबों को बड़ा जोश चढ़ आया और "अन्न, अन्न" इस शब्द से दशों दिशाएं गूंज उठीं। राजमहल पर हमला करने का विचार पुरुषगण तो कर ही रहे थे; पर इधर पेरिस की स्त्रियों को भी गजब का जोश चढ़ा हुआ था। पांचवी अक्टूबर के बिलकुल सवेरे एक युवा स्त्री ने क्या किया कि हाथ में ढोलक ले उसे बजाती हुई वह 'अन्न अन्न, चिल्लाती हुई पेरिस की सड़कों में घूमने लगी। देखते देखते उसके संग में दो सौ स्त्रियाँ और जुड़ गईं और रास्ते में जिस किसी स्त्री से मुलाक़ात होती, साथ में ले ली जाती। स्त्रियों का यह दल सीधे हथियारखाने में गया और

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

वहा के सारे अस्त्र-शस्त्र लेकर आगे बढ़ा। ये स्त्रियाँ हथियार-खाने में आग लगा रही थीं; पर किसी के बीच-बिचाव करने से हथियार खाने की इमारत जलने से बच गई। इनका दल बड़ा होते ही ये एक जगह सब खड़ी हो गईं और फौजी बाजा बजाने लगीं। बाजे की आवाज़ सुनते ही जितने उतावले और अविचारी दंगेखोर हाथ में शस्त्र ले वर्सेल्स जाने को तैयार हुए थे, वहाँ एकत्र हो गये। बाद को हर्ष-पूर्वक जयध्वनि करके वे दल के दल वर्सेल्स की ओर रवाना हुए। उन सब की नेता स्त्रियाँ थीं। यह बात याद रखने लायक है।

इन सब बातों की सच्ची खबरें वर्सेल्स में नहीं पहुँची।

बलवाइयों की सभा और राजा के प्रति उनका सन्देशा

सिर्फ उड़ती खबरें राजा और उसके अनुयायियों को मिली थीं अतएव उन्हें यह ज्ञात न था कि एकाएक ऐसा भयंकर उपद्रव उठ खड़ा होगा। इसी से वे चुप बैठे हुए थे। वर्सेल्स की ओर कूच करनेवाले बलवाइयों के के दल की नेता स्त्रियाँ थीं. यह सच है; परन्तु उनके साथ पुरुषों का भी खूब जमाव हो गया था। यह दल, वर्सेल्स पहुँचकर, पहिले एक सभा-गृह में गया। दरवाजे वहाँ के बन्द थे। जबरदस्ती उन्हें तोड़ कर. बलवाइयों ने वहाँ अपनी एक सभा की। सभापति का आसन एक चौदह-पन्द्रह वर्ष की स्त्री को मिला था। कहते हैं. उक्त सभा में बहुत से वाद-विवाद हुए; परन्तु यह कहीं लिखा नहीं मिलता कि सभा का असल उद्देश्य क्या था। जब इस सभा के होने की खबर राजा और उसके अनुयायियों को मिली तब उन्होंने बहुत से हथियारबंद सिपाही सभा भंग करने को भेजे। सभा भग कर दी गई। बलवाईगण वहाँ से भगा दिये गये। तब उन्होंने निश्चय किया कि अपना मनोगत राजा के समीप प्रकट करने के लिए कुछ

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

चुनी हुई स्त्रियों का एक डिपूटेशन भेजना चाहिए। स्त्रियाँ चुनी गईं और गुड़िया बेचने वाली अठारह वर्ष की स्त्री अध्यक्षता में वे राजा के समीप भेजी गईं। उन स्त्रियों ने बड़ी कोशिश करके राजा मिलने का हुक्म हासिल किया। राजा ने उन सबको अपने बैठकखाने में बुलाया और पूछा कि तुम्हारे आने का तत्पर्य्य क्या है ? जवाब में उस अध्यक्ष स्त्री से कुछ नहीं बन पड़ा। वह राजा का मुख देखते ही घबड़ा कर जमीन पर गिर गई। बड़ा गड़बड़ मचा। राजा से वार्तालाप करने का काम वहीं रह गया। शेष स्त्रियाँ अपनी अध्यक्ष को उठाकर बाहर लायीं तब कहीं उसे होश आया। यह घटना पांचवीं अक्टूबर को हुई। इसके सम्बन्ध में एक विस्मय जनक बात कही जाती है। वह स्त्री जो घबड़ाकर गिर पड़ी, वास्तव में नहीं घबड़ाई थी; किन्तु उसने राजा को देखकर घबड़ाने और गिरने का सिर्फ़ बहाना किया था! उसके साथ की स्त्रियों ने उस पर यही दोषारोपण किया। अतएव उसके लिए फाँसी की सजा मुकर्रर हुई। उस स्त्री का महद्भाग था, किसी के बीच-बिचाव करने से उसके प्राण बच गये। परन्तु इस घटना से यह बात सहज ही समझ में आ जाती है कि उस समय बलवाइयों के बीच में श्रेष्ठत्व स्थापित करने और प्राण संकट प्राप्त होने में कितना अल्प अवकाश लगता था।

राजमहल पर धावा और राजा का पराजय

बलवाई स्त्रियों का दल जब पेरिस से निकलकर वर्सेल्स के लिए रवाना हो गया, तब कुछ समय के पश्चात् फौजी और अन्य सधारण मनुष्य भी झुंड के झुंड वर्सेल्स की ओर चले। वहाँ पहुँचने पर उनमें इतना जोश चढ़ आया कि शांति पूवक बात चीत करना, और किसी का कुछ कहना सुना लेना उनके लिए मुश्किल हो गया। उन सब

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

का रुख बस राजमहल पर ही था। राज पक्ष वालों ने बहुत से प्रयत्न किये कि उनका प्रवेश राजमहल में न हो। पहले तो उन्होंने नम्रतापूर्वक समझाया। फिर धमकी भी दिखलाई; पर सब व्यर्थ हुआ। छः तारीख की रात तक वे किसी तरह रुके रहे; पर सात तारीख की सुबह को उनसे नहीं रहा गया वे राज-महल के हाते में घुस गये और उपद्रव करने लगे। यह खबर किसी ने जाकर रानी को पहुंचाई। वह तत्काल ही उठ बैठी और उस कमरे में उई जहां राजा सो रहा था। राजा को उसने जगाया और सारा हाल कह सुनाया, वह भी घबड़ा उठा और क्या करना चाहिए, इस फिक्र में पड़ गया उसे कुछ सूझता ही न था। इतने में बलवाइयों की ओर से बात-चीत करने के लिये एक डेपूटेशन भीतर आया। उसका मुख्य आग्रह था कि लोकसभा ने जो व्यवस्था सोची है, उसे राजा स्वीकार करे और सपरिवार पेरिस में आकर रहे। राजा ने पहली बात कुबूल की किन्तु दूसरी बात के लिए, यह अनुमान कर कि इस तरह बिगड़ी हुई प्रजा के बीच से निकल कर वर्सेल्स से सपरिवार पेरिस जाना कदाचित् भयप्रद होगा, उसने यह विचार निकाला कि रानी बच्चों के सहित पहिले चली जावे, राजा पीछे जावे। यह विचार रानी को पसद नहीं आया। उसने साफ साफ कह दिया—"चाहे जो हो, ऐसे संकट के समय में महाराज के पास से क्षण भर को भी दूर न हूँगी। मैं जानती हूँ कि ये सब लोग, मेरी जान लेने की फिक्र में हैं। परन्तु कोई हर्ज नहीं। मैंने मेरी थेरीसा के पेट से जन्म लिया है और सच्चे धैर्य का क्या अर्थ है, यह मैंने सीख रक्खा है। अतएव मै मृत्यु से नहीं डरती।" रानी अपना आग्रह नहीं छोड़ती थी और लोग अपनी बात से नहीं हटते थे। अंत में भीतर की ऐसी हालत

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

देखकर, बलवाइयों में और अधिक उत्तेजना फैल गई। वे अपना मनोरथ पूर्ण करने के लिए बड़ी उतावली करने लगे। यह देखकर सीधे-सादे राजा ने स्पष्ट रीति से लोकसभा की सारी बातें स्वीकार कर लीं और बचन भी दिया कि हम सपरिवार पेरिस आकर रहेंगे।

रानी का धैर्य

राजा ने सारा अभिमान छोड़ दिया। लोकसभा की इच्छा के अनुसार चलने के लिये वह तैयार भी हो गया। फिर भी बलवाइयों में हलचल नहीं मिटी। उनका झगड़ा उसी तरह चल रहा था। वे राजमहल की दीवाल और खिड़कियों पर पत्थर और गोलियों की वर्षा कभी कभी कर ही देते थे। इतने में एका-एक उन्होंने यह शोर किया कि "रानी कहां है, रानी ?" यह सुनते ही रानी अपनी एक लड़के को लेकर, एक बड़ी खिड़की के पास इस तरह खड़ी हो गई, जिससे सब लोगों की दृष्टि उस पर पड़े। बलवाइयों ने उसे देखते ही यह शोर मचाया कि "अरे, उसके साथ यह लड़का कौन है !" तब रानी लड़के को दूसरी जगह रख आ अकेली शांतिपूर्वक वहां जा खड़ी हुई और पूछने लगी कि मेरे विषय में किसका क्या कथन है। उस समय रानी के मुख पर भय का एक भी चिन्ह न था। उसके धैर्य को देख लोगां को बाड़ा आश्चर्य हुआ और वे क्षणभर उसकी ओर एकटक देखते रह गये। रानी का यह साहस सचमुच उसके लिये अत्यन्त भूषणप्रद है। लोगों के शोरगुल और जोश को देखकर उसे विश्वास हो गया था कि मुझे देखते ही वे लोग मार डालेंगे और यह जानकर भी वह अबला, वी पुरुषों की अपेक्षा भी अधिक धैर्य धारण कर, उनके सन्मुख आई, यह बात उसके विलक्षण साहस और धैर्य की द्योतक है। इतिहास में स्त्रियों के धैर्य-विषयक जितने

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

उत्कृष्ट उदाहरण हैं उनमें इसकी भी गणना होना उचित है।

राजा पेरिस आता है

बलवाइयों ने समझ रक्खा था कि वर्सेल्स के राजमहल को चारों ओर से घेर लेने पर और थोड़ी सी गड़बड़ मचा देने पर राजा भयभीत होकर भाग जायगा; और फिर सहज ही हमारा उद्देश्य सिद्ध हो जायगा। परन्तु इस निश्चय के अनुसार कार्य नहीं हुआ। यह देखकर उन्हें कुछ निराशा सी हुई। तो भी अब उन्हें आशा होने लगी कि राजा जहाँ सपरिवार पेरिस आया कि हर तरह से अपना उद्देश्य सिद्ध कर लेंगे। अतएव वे राजा को पेरिस ले जाने के लिए बड़ी उतावली करने लगे। यद्यपि राजा ने लोकसभा की इच्छा के अनुसार चलने के लिए स्वीकार कर लिया था, फिर भी महल के चारों ओर दंगा-फ़िसाद का होना बन्द नहीं हुआ था। राजा ने जब देखा कि मेरे कारण बहुत से लोगों को दुःख सहना पड़ता है, तब उसे बड़ा दुःख हुआ और वह पेरिस जाकर सब संकट दूर करने के लिए बड़ा उतावला हो उठा। बहुत जल्दी की गई, तब अक्टूबर की आठवीं तारीख के तीसरे पहर को जाने की सारी तैयार हुई। राजा, रानी और बच्चे राज-महल से बाहर हुए। बाहर पास ही उनके लिए गाड़ी खड़ी हुई थी। बलवाइयों ने गाड़ी पर उन्हें बैठाने के लिए इतनी जल्दी की कि रात्रि की हलचल में उन्होंने जो दो सिपाही मार डाले थे और उनके रक्त से रास्ते पर जो एक छोटा सा गड्ढा भर गया था उसी गड्ढे में राजा और रानी का पांव पड़ा और उन्हें उसी तरह लोहू भरे पांव से गाड़ी में बैठना पड़ा। इस तरह बैठ चुकने पर सब पेरिस की ओर चले। सब के आगे उन मरे हुए सिपाहियों के दोनों सिर दो भालों की नोक पर रक्खे हुए दो मनुष्य चल रहे थे। उनके पीछे थोड़े से

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

मनुष्यों का एक झुंड था। झुंड के पीछे उन दो ढाई सौ रईसों की गाड़ियां थीं जो पिछली रात को घायल हुए थे। सब के बीच में राजा की गाड़ी थी राजा की गाड़ी को चारों तरफ़ से अनुमान डेढ़-दो सौ सिपाही हाथ में तलवार, भाला, बन्दूक आदि शस्त्र लिये घेरे हुए थे। इस तरह बड़े जोश के साथ नाचते-कूदते और जैसा जी चाहता, वैसा वीभत्स और अपमानास्पद कृत्य करते तथा गीत गाते बलवाईगण चल रहे थे। सब के पीछे अन्न आदि से भरी बहुत सी गाड़ियों थीं। जुलूस का ठाठ इस तरह था। वर्सेल्स से पेरिस कुछ पाच-छः कोस है। तो भी वहाँ पहुँचने में इस समाज को चार-पांच घंटे लगे। कारण स्पष्ट है।

राजा का अपमान

जैसे जैसे यह जुलूस पेरिस के निकट पहुँचने लगा, वैसे वैसे बलवाइयों में अधिकाधिक आवेश बढ़ने लगा। वे सब मिलकर जोर से चिल्लाने लगे—"मित्रो, अब कोई चिन्ता नहीं। धीरज धरो। अन्न का आभाव अब नहीं होगा। क्योंकि हम सब अन्न के हड़प जाने वाले को, उसकी स्त्री को और उसके बच्चों को साथ ला रहे हैं।" कहना नहीं होगा, यह ताना राजकुटुम्ब के लिए था। राजकुलोत्पन्न मनुष्यों के लिए यह बात कितनी अपमान जनक थी। ऐसे उच्च पदवी प्राप्त मनुष्यों को इतनी अप्रतिष्ठा सहन करने का अवसर प्राप्त होना यथार्थ में मृत्यु से भी अधिक दुःखदायी है।

निर्दयता, अत्याचार

बहुतेरे मनुष्यों को यह उम्मेद थी कि राजा पेरिस में आकर लोकसभा से मिलकर राजकाज करने लगेगा। इससे सब फिसाद मिट जायगा। पर वह निष्फल हुई। इसका कारण यह था कि प्रजा में जो असन्तोष और दंगा-फिसाद फैला

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

हुआ था, उसमें समझदार सच्चे देशहिताकांक्षी मनुष्यों की राय बहुत कम थी। सालस्ट नाम के एक प्रसिद्ध ग्रन्थकार ने एक स्थल पर कहा है—"जिन उन लोगों के पास थोड़ी भी ज़मीन अथवा कालयापन करने के लिए अन्य साधन नहीं होते वे सदा जायदादवालों से द्वेष करते उन्हें बुरा बतलाते, उनकी निन्दा करते और नये विचारों का समर्थन कर सदा उपद्रवी मंडलियों में सम्मिलित रहते हैं। इसका कारण यह है कि राज्य में कुछ भी परिवर्तन होने से उन्हें कुछ नुकसान होने का डर नहीं रहता।" ये शब्द बिलकुल सत्य हैं। उस समय प्रजासत्ताक राज्य होने की इच्छा से और अन्न की मँहगाई से लोग कितने असंतुष्ट और पागल के सदृश हो गये थे, इस पर अनेक कथाएँ हैं। पर विस्तार-भय से यहां पर केवल एक ही लिखी जाती है—पेरिस में फ्रांकोइस नामक एक मनुष्य था। उसका रोटी तैयार करके बेचने का एक कारखाना था। वह अभी तक चढ़े हुए दर से रोटी बेचता था। यह देखकर बलवाई अत्यंत कुपित हुए। राजा के शहर में आ जाने पर भी रोटी महँगी बेचने के अपराध में उन्होंने उसे खींचकर घर से बाहर निकाला और दिन-दहाड़े भरे रास्ते में उसे मार डाला। फिर उसका सिर भाले की नोक पर रखकर सारे शहर में घुमाया गया। रास्ते में एक जगह उन्हें फ्रांकोइस की स्त्री मिल गई। उसे उन्होंने पकड़ लिया और उस निर्जीव सिर को उसके मुख पर रख उसका उससे चुम्बन कराया! यह बात हज़ारों मनुष्यों के समाने की गई और लोकसभा के न्यायाधीश ने भी इसे सुना परन्तु उसका निर्वाचन नवीन रीति के अनुसार बहुमत से हुआ था; और इसलिए वह अपने को उस जगह पर बने रखने के लिए सब लोगों को संतुष्ट रखने का प्रयत्न

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

करता था। इन कारणों से उसने अपराधियों को सजा नहीं दी और वे वैसे ही छूट गये। यह बात पेरिस के बड़े आदमियों को बहुत बुरी मालूम हुई। अतएव जनरल लाफयट नामक सरदार ने अपराधियों को पकड़, तहकीकात कर, उन्हें दूसरे ही दिन फांसी दिला दी। अब यह बात अन्य बलवाइयों को नहीं भाई। वे इसके विषय में बहुत सी बातें करने लगे। एक ने चिल्लाकर कहा—"यही क्या हमारी स्वतन्त्रता है? क्या हमें अपनी इच्छा के अनुसार एक-आध मनुष्य को भी मारने का अधिकार नहीं रह गया।?" इससे यह जान लेना चाहिए कि उस समय वे लोग स्वतंत्रता का क्या अर्थ समझते थे। इस तरह फांसी देने से बलवाइयों का कुछ साहस घटा और वे जरा डरकर चलने लगे। इससे यह सिद्ध होता है कि यदि राजा और लोकसभा दृढ़ निश्चय के साथ शांतिपूर्वक कार्य करती तो वे अनर्थ, जो राज्य-क्रांति के समय फ्रांस में हुए, कभी न होने पाते, अथवा कम होते।

राजा पेरिस में आगया। उसका सारा राज चला गया। लोग उसके साथ अब वैसा व्यवहार रखने लगे जैसा कि एक साधारण मनुष्य के साथ। उसका सारा राज्याधिकार छिन गया फिर भी वह लोकसभा के आधीन पूर्ण रूप से नहीं हुआ। यही कारण है कि नगर और देश के बलवाइयों का दंगा-फसाद पहले के सदृश कुछ न कुछ चला ही रहा था। लोकसभा ने एक घोषणापत्र निकाला कि जो प्रजा को कष्ट देगा, उसको कायदे के अनुसार तत्काल ही दंड मिलेगा। बलवाइयों ने यह दिखाने के लिए कि सभा के कहने के अनुसार करतूत नहीं बन पड़ती, दो चोरों को पकड़ा और तत्काल ही फांसी दे दी। तीसरे को भी वे फांसी

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

पर चढ़ाने को तैयार थे कि जनरल लाफयट ससैन्य पहुँच गये और बलवाइयों को भगाकर उसे छुड़ा लिया। शहर के अत्याचारों का यह हाल था।

राजकुटुम्ब की दुर्दशा

जब तक राजा सोलहवाँ लुई वर्सेल्स में था, उसके ठाट-बाट, शान शौकत, ऐशोराम में कुछ फर्क न पड़ा था। रहने को सुन्दर पक्का महल था। सामान भी सब बढ़िया बढ़िया थे। नौकर चाकरों की की कुछ कमी न थी। नित्य नये नये स्वादिष्ट पदार्थ खाने को मिलते थे। पोशाक भी ऊँचे दर्जे की पहनने को मिलती थी। बाहर हवा खाने के लिए सुन्दर गाड़ियाँ थीं। कहाँ तक कहें सारे सुख की सामग्री, जीभ हिलाते ही आ उपस्थित होती थी। परन्तु पेरिस आते ही ये सब पदार्थ छूमंतर हो गये। रहने को एक पुराना सा महल उसे दिया गया। उसके सारे सामान पुराने और टूटे हुए थे। नौकर-चाकर भी इनेगिने मिले; और खाना पीना, कपड़े लत्ते भी बिलकुल हिसाब के साथ। कहाँ तक लिखें राजसुख जिसे कहते हैं उसका लेश-मात्र भी उस कुटुम्ब में नहीं रह गया। राजा रास्ते रास्ते मारा मारा फिरता था। लड़का किसी गरीब के लड़के से समान इधर-उधर भटकता और रानी भी किसी साधारण दूकानदार की स्त्री के समान काम करते हुए दृष्टिगोचर होती थीं। राजकुटुम्ब की यह दशा देखकर राजपक्षपातियों की आँखों से अविरल अश्रुधारा बहती; पर लाचारी थी। कोई उपाय था ही नहीं। राजा का लड़का बहुत छोटा था। उसे इन सब बातों के समझने की शक्ति ही नहीं थी। फिर भी वह पहिले के सदृश खाने को न पाकर और नौकर-चाकरों की संख्या कम देखकर, माँ की गोद में बैठे हुए पूछता—"माँ, यह सब क्या हो गया।" रानी आँखों में आँसू भरकर जवाब

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

देती—"बेटा, राजा को अब सिवा फ्रेंच लोगों के किसी दूसरे का आधार नहीं। वे जैसे रक्खेंगे वैसे रहना पड़ेगा।" पीछे जब राजकुमार को अपनी स्थिति का थोड़ा-बहुत ज्ञान हो गया, तब उसने जान लिया कि हम लोग विपत्ति के दिन काट रहे हैं। एक दफ़े एक स्त्री किसी से वार्तालाप करते हुए बोल उठी—"अजी, उस स्त्री को क्या कमी है? वह तो इन दिनों रानी के समान सुखी है।" इसको राजकुमार ने सुन लिया उसने कहा—"नहीं नहीं, इन दिनों वह रात भर रोया करती है।" राजकुमार के ये बचन सुनकर निकट के मनुष्यों को बड़ा आश्चर्य हुआ और खेद भी हुआ। रानी जब से पेरिस आई थी, उसकी आँखें हमेशा लाल रहती थीं। इसका कारण किसी के ध्यान में नहीं आता था; क्योंकि रानी बड़ी धैर्यशीला और हँसमुख थी। वह लोगों से सदा मिलजुल कर रहती थी। अतएव किसी ने उसकी आँखें लाल रहने का कारण नहीं जान पाया; परन्तु राजकुमार की उपरोक्त बात सुनकर पास के मनुष्यों को रानी के दुःख का निश्चय हो गया। अस्तु।

लोकसभा का राज्यप्रबन्ध

राजा इस तरह परतन्त्र होकर रहने लगा और लोकसभा का अधिकार दिन दिन बढ़ता गया। देश और शहर की हलचल कम होती गई और राज्यव्यवस्था का नया उद्योग शुरू हुआ। पहिले राज्य के बहुत से छोटे-बड़े विभाग हो गये थे। उन्हें तोड़कर सारे राज्य के, बराबर बराबर त्रैरासी और भाग किये गये। फिर उन भागों के छोटे छोटे विभाग करके उन्हें 'प्रांत' का नाम दिया गया; और ऐसी तजबीज की गई कि जिससे अधिकारियों को न्याय तथा शासन करने में सुभीता रहे। प्रत्येक भाग में छत्तीस मनुष्यों की एक व्यवस्थापक सभा

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

नियुक्त की गई। उसे कानून बनाने का अधिकार दिया गया। पांच मनुष्यों की एक और सभा बनाई गई। जिसे उक्त क़ायदों को अमल में लाने का अधिकार दिया गया। इसी तरह 'प्रान्तों' का भी प्रबन्ध किया गया। इस नूतन राजव्यवस्था में इसका विशेष ध्यान रक्खा गया कि सारा कार्य लोकमत के अनुसार हो। इस तरह सारा काम आरम्भ तो होगया; किंतु खजाने में द्रव्य के अभाव के कारण जो गड़बड़ी मच रही थी, वह अभी तक मिटी नहीं थी। इसका सबब यह था कि यद्यपि देश में थोड़ी-बहुत शांति हो गई थी, फिर भी सरकारी पैसा आने के दर्वाजे, जो पहिले से बन्द थे, वे अभी तक बन्द ही थे।

द्रव्य के लिए मिराबो की अपील

नेकर प्रधान मन्त्री था। वह धन के लिए चिल्लाता रहता था पर लोकसभा ने राजव्यवस्था के कार्य में निमग्न रहने के कारण, और इस कार्य को धन की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण समझकर, कुछ समय तक उसकी चिल्लाहट पर बिलकुल ध्यान नहीं दिया। किंतु मिराबो का इस बात पर बड़ा ध्यान था। अतएव उसका कथन था कि इस कार्य के लिए नेकर को कुछ विशेष अधिकार दिया जाय। इस विषय में अनेक सभासदों की अनेक वक्तृताएँ हो चुकने पर अंत में मिराबो उठा और बोला—"सज्जनो, अब विलम्ब करने का समय नहीं है। द्रव्य-प्राप्ति होने के जितने उपाय दृष्टिगोचर होते हैं, उन सब के सफल होने में सन्देह है यह मैं स्वीकार करता हूँ; किंतु यह बात भी निःसन्देह है कि राजव्यवस्था ठीक ठीक चलने के लिए द्रव्य की अत्यन्त आवश्यकता है। इस लिए आप लोगों को द्रव्य प्राप्ति के उपायों को काम में लाने की मंजूरी, बिना किसी आनाकानी के, दे देना चाहिए।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

महाशयो, आप लोग जरा गौर करके देखिये कि द्रव्य के अभाव से राज्य की कैसी बुरी हालत हो रही है। अब थोड़ा विलम्ब करने से जो अनर्थ होंगे, उन सबका कलंक अपने मत्थे समझिये। इस विषय पर फिर से विचार करने के लिए यदि आप लोग मुहलत माँगे तो खूब विचार कर माँगे। अब मुहलत का रास्ता नहीं देखेंगे समस्त राज का दिवाला निकल गया, तो समझ रखिये आप की सम्पत्ति, आप की प्रतिष्ठा और आपका सर्वस्वनाश होने में कोई सन्देह नहीं है। भाइयो, सावधान रहिये! सावधान रहिये!! सावधान रहिये!!! केवल बैठे बैठे विचार करने का समय नहीं रहा।" मिराबो की वक्तृता प्रत्येक सभासद के हृदयपट पर पूर्ण रूप से अङ्कित हो गई। और नेकर ने द्रव्य-प्राप्ति के जो उपाय सुझाये थे उनके लिए उन्होंने तुरन्त ही एकमत होकर मंजूरी दे दी। तदनुसार वे सब उपाय काम में लाये गये; परन्तु तिस पर भी पिछले तीन वर्षों में राज्य के ऊपर जो तीन करोड़ का कर्ज हो गया था उसके व्याज की किस्तें पटाने तथा सरकारी अन्य कार्यों को चलाने के लिए द्रव्य एकत्र नहीं होता था। इसलिए लोकसभा फिर चिंता सागर में गोता खाने लगी और द्रव्य प्राप्ति के उपायों को ढूँढ़ निकालने की चर्चा फिर चली।

धन की तजवीज

यद्यपि फ्रांस देश में इतनी गड़बड़ी फैली हुई थी, फिर भी वहाँ के धर्माध्यक्षों की बड़ी बड़ी रियासतें पूर्ववत् अचल रूप से विराजमान थी। उनके घरों में सम्पत्ति भी पहिले ही की तरह भरी थी। अब लोगों का ध्यान इस ओर आकर्षित हुआ। उन्होंने सोचा कि यदि निर्वाह भर को छोड़कर इन धर्माधिकारियों की शेष सारी सम्पत्ति ले ली जाय तो बहुत कुछ अभाव दूर हो जाय। इधर

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

लोगों में नास्तिकता का भी उस समय बहुत अधिक प्राबल्य था। अतएव इस विचार को सुनकर किसी को आश्चर्य भी नहीं हुआ। किन्तु धर्माधिकारी लोगों के हृदय में यह विचार तीर की तरह सलने लगा। उनमें से कितनों ही ने इस विषय पर इस प्रकार के अनेक भाषण किये कि इस तरह के विचार तक को हृदय में स्थान देना घोर पातक का कार्य है। इसमें आवासाइ नाम का एक उत्तम वक्ता था। उसने लोकसभा में सभासदों को सम्बोधन करके बड़े आवेश के साथ कहा—"आप लोगों का स्वतंत्रता प्राप्त करने की तो बड़ी उत्कट इच्छा है; किन्तु नीति-पथ पर चलना अभी तक आप लोगों ने सीखा नहीं।" इस पर मिराबो ने उत्तर दिया "महाराज! अपने बैल को तो बड़े मजे से खोलकर छोड़ दिया है; परन्तु अब, जब वह सींग भारता है तो घबड़ाते क्यों हैं?"

धर्माधिकारियों की सम्पत्ति ले ली गई

धर्माधिकारियों के पास विशाल सम्पत्ति थी, लोगों की धर्मनिष्ठा नष्ट हो गई थी, और राज्य को द्रव्य की परमावश्यकता थी। अतएव बहुतेरों के बहुतेरा प्रयत्न करने पर भी, निर्वाह भर को कुछ थोड़ा छोड़कर, धर्माधिकारियों की सारी सम्पत्ति जप्त कर ली गई। उनके सारे सामान खुले बाजार नीलाम किये गये और उनकी कीमत सरकारी खजाने में जमा की गई। ऐसी दुर्दशा और अपमान से बचने के लिए धर्माधिकारियों ने कहा कि हमारी जायदाद की बिक्री से जितना धन प्राप्त हो सकता है उतना धन हम उचित व्याज से सरकार को देने की व्यवस्था कर सकते हैं। किन्तु लोकसभा ने उनका यह कथन स्वीकार नहीं किया। क्योंकि उसने यह सोचा कि हम इनकी सम्पत्ति योंही छोड़ कर कर्ज ले लेंगे तो इसमें सन्देह नहीं कि द्रव्य का बहुत कुछ अभाव

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

दूर हो जायगा; किन्तु इनकी सम्पत्ति पर हमने जो सत्ता स्थापित की है वह नहीं रहेगी। अस्तु। जब लोकसभा इस बात पर राजी नहीं हुई तब धर्माधिकारियों ने इस प्रकार लोगों को बहकाने की भी चेष्टा की कि उनकी जायदाद कोई मोल न ले; पर वह समय सिर्फ़ बातों से लोगों को बहका लेने का नहीं था, इसलिए उनका यह प्रयत्न भी व्यर्थ हुआ अन्त में उनकी जायदाद को जो लोकसभा ने खुल्लमखुल्ला नीलाम करने का निश्चय किया था, वह पूरा करके ही छोड़ा इस समय से धर्माधिकारीगण प्रजासत्ता राज्य के स्थापकों के साथ अत्यन्त द्वेषभाव रखने लगे। इस तरह लोकसभा के ये नये शत्रु पैदा हुए।

नवीन राज्य-व्यवस्था और लोकसभा की घोषणाएँ

इधर तो यह सब हो रहा था, उधर लोकसभा अपनी राजा-व्यवस्था का कार्य बड़े झपाटे के साथ कर रही थी। पहले से लोगों की यही समझ थी कि सब प्रकार के अधिकार केवल राजा के हाथ में हैं। अतएव लोकसभा ने घोषणा की कि अब वे सब अधिकार लोकसभा अर्थात् प्रजा के हाथ में आ गये। पहिले नियम था कि न्यायाधीश का पद जिसे एक वार दे दिया गया उससे वह तब तक अलग न किया जाय जब तक वह मर न जाय अथवा इस्तीफ़ा न दे, या किसी अपराध पर स्वयं सरकार उसे न निकाल दे। परन्तु लोकसभा ने यह नियम तोड़ दिया और घोषणा की कि इस तरह के सब अधिकारों की मियाद रहेगी। मियाद पूरी होते ही वह मनुष्य उस पद पर से हटा दिया जायगा और उसके स्थान पर नया मनुष्य जो सब प्रकार से उस पद के योग्य होगा, बहुमत से निर्वाचित होगा इसी तरह से लोकसभा ने एक बात और की। अपराधियों के

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

मामलों की जांच चुने हुए पंचों की राय से होने की जो बहुत पुरानी चाल बन्द हो गई थी, उसे उसने फिर जारी क दिया। सारांश यह कि लोकसभा ने फ्रांस देशवालों को तीन बातों का सुभीता दिया—

(१) प्रजा का पक्ष लेकर बोलने वालों की सभा ही राजा है।

(२) अपराधियों की जाच पंचायत से हो; और—

(३) राज्यशासन बहुमत के अनुसार हो।

राजा-रानी को पेंशन

लोकसभा ने राज्यशासन का जो नया प्रबन्ध किया, वह अच्छी तरह चल निकला। देश की अशांति दूर हुई। दंगा-फसाद बन्द हुए। धर्माधिकारियों की जायदाद बेचने से बहुत अच्छी रकम हाथ आई और उससे द्रव्य का अभाव बहुत कुछ दूर हुआ। लोकसभा को धर्माधिकारियों की जमीन से बहुत द्रव्य मिला। एलिसन नामक एक ग्रन्थकार एक स्थान पर लिखता है—"सारे देश में जितनी उपजाऊ जमीन थी, उसका तीसरा हिस्सा तो इन्हीं महात्माओं के अधिकार में था। यदि उसके बेचने से अच्छी रकम हाथ आई हो तो आश्चर्य ही क्या ?" अस्तु। यह लिखा जा चुका है कि राज्य व्यवस्था सम्यक् रूप से चलाने के लिए द्रव्य की परमावश्यकता थी और राज-परिवार से जनसाधारण की निष्ठा बिलकुल ही हट गई थी; परन्तु फिर भी लोकसभा ने राजा-रानी पर बड़ी कृपा दिखाई, उसने यह तजवीज की कि राजा को एक करोड़ दस लाख रुपया और रानी को ग्यारह लाख साठ हजार रुपया वार्षिक निज के खर्च के लिये दिये जाँय। लोकसभा ने जो कुछ कहा सब राजा-रानी कबूल करते गये। उसी का यह फल है। नहीं तो यदि थोड़ी भी चीं-चापड़ करते तो इतने से भी हाथ

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

धोते। और उल्टा रहने को जगह तक न मिलती। पेंशन की कौन चलावे !

नये प्रबन्ध में दरबारी सरदार और रईसों के लिए कोई
विशेष तजवीज नहीं की गई थी। एक मनुष्य
सरदार और रईसों ने लोकसभा की एक बैठक में वक्तृता दी कि—
का परम्परागत "पीढ़ी दर पीढ़ी से चले हुए मान और पदवियों
अधिकार भी छीन को वर्तमान राज्य-प्रबन्ध में कायम रखना
लिया गया समान अधिकार चाहनेवालों के लिए हानि-
. कारक होगा और इससे यथार्थ गुणी को
योग्य पदवी देने में बाधा पड़ेगी।" यह वक्तृता सभासदों के हृदय में ऐसी चुभी कि वे लोग वंशपरम्परागत उपाधिधारियों को समूल नाश करने पर उतारू हो गये। धर्माधिकारियों और रईस सरदारों ने इस विचार के विरुद्ध बहुत सा आन्दोलन मचाया, बड़ी बड़ी वक्तृताएं दीं और स्पष्ट रूप से बतलाया कि ऐसा करने से बहुत अशांति फैलेगी। किन्तु लोकसभा के पक्षपातियों ने भी उसके विरुद्ध बहुत हलचल की। एम० डी० नोल्स नामक एक महाशय ने इस विषय में इस प्रकार कहा—'इन उपाधियों का हमें समूल नाश कर देना चाहिए। क्योंकि इनसे व्यर्थ ही गर्व, अज्ञान और मूर्खता की वृद्धि होती है। केवल बड़े कुल में जन्म पाने के कारण ही किसी मनुष्य को श्रेष्ठ मान देने की जो चाल चल पड़ी है वह अब हमें नहीं चाहिए। अब तो केवल उन्हीं को उपाधि दी जावे, जो अपने सद्गुणों से योग्यता को प्राप्त हुए हों। मार्क्विस फ्रेङ्कलिन, कौंट वाशिंगटन, बैरन फाक्स ऐसे बड़े बड़े नामों की अब जरूरत ही क्या है ? ये लोग फ्रैंकलिन, वाशिंगटन, फाक्स इत्यादि साधारण नामवालों के नख की बराबरी तो पहिले कर लें। मतलब यह कि इन

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

सारे व्यर्थ के ढोंगों को अब सर्वथा मिटा देना चाहिये । यही मेरा अभिप्राय है।" इस पर आवीमारी नामक एक धर्माधिकारी ने इस तरह तर्क किया—"सच पूछिये तो हमारे राज्य के स्तम्भ ये सरदार गण ही हैं । यदि तुम इन्हीं के नष्ट करने में उतारू हुए तो सच मानिये, इसके साथ ही साथ राजसत्ता का नाश हुए विना कभी न रहेगा।" परन्तु इस कथन पर किसी ने ध्यान नहीं दिया। और वह विचार, जो सरदार और रईसों के अधिकार छीन लेने के विषय में हो रहा था' निश्चय हो गया । इस तरह जितने रईस और सरदार गण आज तक राजा के पक्ष में थे उन सब के मानपान का नाश हो गया; और उनकी जितनी जमीन-जागीरें थीं, सब जब्त हो गईं । उन बेचारों की अवस्था जनसाधारण की अपेक्षा भी अधिक हीन हो गई । अतएव ये लोग उन थोड़े से आदमियों में जाकर मिल गये जो राजा के अनुकूल और प्रजासत्ताक राज्य स्थापित करने के प्रतिकूल थे । इस तरह लोकसभा के शत्रुओं की संख्या इनके मिलने से और बढ़ी । यह घटना सन् १७९० ई० के जून मास में हुई ।

विरोध

इस तरह जब लोकसभा द्रव्य एकत्र करने और नवीन राज्यव्यवस्था के काय में व्यस्त थी, देश में थोड़ी बहुत गड़बड़ मची हुई थी । सारे देश में दो दल हो गये थे । कुछ लोग तो नवीन राज्यव्यवस्था के अनुकूल थे और कुछ प्राचीन पद्धति के पक्षपाती। इनके सिवा राज्य-व्यवस्था में परिवर्तन होने के कारण जिनका सर्वस्व नाश हो गया था, वे लोग अलग दाने-दाने के लिए मोहताज होकर घूम रहे थे सच पूछिये तो इनके हृदय का झुकाव किसी पक्ष की ओर नहीं था। जिस वक्त इन्हें जिस

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

पक्ष की ओर पेट भर खाने को मिल जाता था, उस वक्त वे उसी पक्ष के लिये जान देने को तैयार हो जाते थे। सेना तक में दो दल हो गये थे। इस कारण इन दोनों दलों में कभी कभी झगड़ा हो जाया करता था। प्रांत के सूबेदारों और किले के किलेदारों का हृदय इन बिगड़े हुए सैनिकों के डर से हमेशा काँपता था। क्योंकि उन्हें मालूम था कि न जाने ये सब कब बिगड़ खड़े हों और क्या न कर डालें। उस समय एम-डी ला-टूरडाफिन युद्धमंत्री था। उसने जून मास की चौथी तारीख को एक पत्र लोकसभा के पास भेजा। उसका तात्पर्य इस प्रकार है—"आप लोगों को सूचना देने के लिए राजा ने मेरे पास खबर भेजी है कि सैनिकगण दिन पर दिन बिगड़ रहे हैं। वे लोग अपने अफसरों तक की परवा नहीं करते। सेना में भरती होते समय उन्होंने जिन जिन बातों के लिए शपथ की थी, उन बातों के करने न करने में उन्हें अब बाल भर भी नहीं समझते। कहाँ तक कहा जाय, उनके लिए अब यही बाकी रह गया है कि उन्होंने अपने अफसरों के ऊपर अभी तक हथियार तक नहीं उठाया है। क्या यह बड़े दुःख की बात नहीं है? सेना का मुख्य कर्तव्य यह है कि वह राजा की आज्ञा पालन करे। परन्तु यदि वही सेना सारा अधिकार अपने हाथ में लेकर स्वेच्छाचारी हो जाय, तो राज्य चाहे किसी प्रकार का हो और कितना ही बड़ा हो, उसकी दुर्दशा हुए बिना न रहेगी। इस प्रकार की सेना को राक्षस ही समझना चाहिये।" युद्धमन्त्री का यह कथन अक्षरशः सत्य है। इसमें सन्देह नहीं कि राज्य के रक्षणार्थ सेना का होना परमावश्यक है। किन्तु साथ ही यह भी ध्यान में रखना उचित है कि सेना के बिगड़ खड़े होने से देश के सर्वनाश होने में कुछ भी सन्देह नहीं। इसलिए राज्यकर्ताओं को

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

चाहिये कि वे सदैव इस बात का ध्यान रक्खें कि सेना बिगड़ने न पावे।

ख़ैर, किसी तरह कारबार चलते चलते सन् १७३० ई० का जुलाई महीना आया और राज्य-क्रांति उत्सव की तैयारी के मुख्य आन्दोलन का एक वर्ष पूरा हुआ। इतने ही समय में अपने किये हुये प्रायः सभी प्रयत्नों को सफलप्राय देख आन्दोलनकारियों को अपार हर्ष हुआ। उन्होंने इसके उपलक्ष्य में एक भारी उत्सव करने की ठानी। पेरिस के पास ही चेंप दी मार्स नाम की एक जगह है। यहीं उत्सव मनाने के लिए एक बड़ा स्थान तैयार करने का प्रारम्भ हुआ। इसके विषय में एक पुस्तक में लिखा है—"इस कार्य के लिये करीब २,००,००० मनुष्य फावड़ा कुदाल लेकर, एक बड़ी सेना के सदृश, एकत्र होते और बड़े उत्सव के साथ काम करते। एक बार खुद राजा काम देखने गया था।..... वहाँ तीनों अवस्थाओं के मनुष्य काम करते दृष्टिगोचर होते। युवा पुरुष तो फावड़ा लेकर जमीन खोदते। उनकी स्त्रियाँ मिट्टी निकालतीं। उनके छोटे छोटे बालक उस मिट्टी को अपनी छोटी छोटी गाड़ियों में भरते और उनके वृद्ध पितामह गाड़ी हाँककर दूसरी जगह मिट्टी ले जाकर डालते।........ एक दिन एक मनुष्य बड़े जोश के साथ काम कर रहा था; किन्तु उसका कोट और कमोज उसके कार्य में बड़ी बाधा डालते थे। उसने उन्हें तत्काल ही उतार कर फेंक दिया। साथ ही उनके जेब की कीमती घड़ी भी गिर पड़ी। यह देख कर एक मनुष्य ने कहा—"अजी साहब, पहले आप अपनी घड़ी तो सम्हालिये, फिर काम कीजियेगा।" उसने उत्तर दिया—"जनाब, पड़ी रहने दीजिये—भाई के ऊपर भाई का संदेह नहीं हो सकता।" इस बातचीत से आप

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

अनुमान कर लीजिये कि उस समय लोगों के हृदय की क्या अवस्था थी।"

पांचवां अध्याय

नूतन राज्य-प्रणाली का उत्सव

जैसा कि ऊपर कहा गया है,वह उत्सव का स्थान तैयार हो गया। जुलाई मास की चौदहवीं तारीख़ आई। आज ही उत्सव का होना निश्चित हुआ था। लोगों की ख़ुशी का ठिकाना न रहा। उन्होंने सोचा कि अब बड़ा आनन्द होगा और देशदशा में कोई न कोई अच्छा परिवर्तन होगा। इसलिए सब लोग जल्दी जल्दी घर का काम-काज निपटा, क़ीमती पोशाक पहिन, प्रातःकाल सात बजे से ही उत्सव-स्थान की ओर चल निकले। रास्ता गाड़ी घोड़ों से भर गया। भिन्न भिन्न प्रांत के अधिकारीगण भी, जो इस नई राज्यव्यवस्था के अनुसार नियुक्त हुये थे, इस उत्सव के लिए निमंत्रित हुए थे। इनके सिवा देश के अन्य जन भी उत्सव देखने के लिए दूर दूर से आकर एकत्र थे। इस तरह चार लाख से भी अधिक मनुष्यों से वह स्थान भर गया। इस उत्सव में टेलीरेंड नाम का एक मुख्य धर्माधिकारी अपने दो सौ सहाय धर्माधिकारियों के साथ उपस्थित था इन सब के यथायोग्य स्थान पर बैठ चुकने पर राजा अपनी रानी के साथ आया और अपने योग्य स्थान पर जा बैठा। उसके सभा में उपस्थित होते ह लोगों के मुख मंडल पर कुछ देर तक उसके योग्य आदर भाव देख पड़ा। कुछ देर तक सब लोग उसकी ओर एकटक देखते हुए चित्र के समान देख पड़े। इसके बाद टेलीरेंड ने ईश्वर-प्रार्थना करके उसकी कृपा के लिए याचना

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

की। टेलीरेंड का भाषण लोगों ने शांतिपूर्वक सुना। बाद को लाभयट नामक मुख्य सेनापति, बिलकुल सफ़ेद घोड़े पर चढ़कर, आगे आया और जोरदार शब्दों में इस प्रकार शपथ ली—"अपने राष्ट्र, अपने न्यायशास्त्र और अपने राजा के साथ सच्चाई का बर्ताव करने की हम शपथ लेते हैं और लोकसभा ने राज्य का जो प्रबन्ध किया है, और जिसे राजा ने भी स्वीकार किया है, उसकी रक्षा करने का हम प्रयत्न करेंगे। फ्रांस-देशवासी हमारे भाई हैं, ऐसा समझकर हम उनसे ऐसे प्रेम का बर्ताव करेंगे जो किसी तरह टूट न सके।" पश्चात् लोकसभा के अध्यक्ष ने भी ऐसी ही शपथ की। फिर रानी ने भी अपने लड़के को हाथ से पकड़कर कहा कि इस नवीन राज्य-व्यवस्था को मैं स्वीकार करती हूँ और इसके अनुसार चलने की शपथपूर्वक प्रतिज्ञा करती हूँ। इसके बाद ही तोपों में बत्ता दे दी गई रणवाद्य बजने लगे। जयघोष से दशों दिशा गूंज उठीं। बाहर दर्शकों की इतनी भीड़ थी कि स्थान बहुत भारी होने पर भो तिल धरने का ठौर नहीं था। यह महान् समाज एकत्र ही था कि बिना किसी पूर्व-लक्षण के मेघ गर्जना होकर एकाएक घोर वृष्टि होने लगी। चारों ओर पानी ही पानी दृष्टिगोचर होने लगा। यह जान पड़ता था कि बस अब बाहर के दर्शकगण इस पानी के प्रवाह में अवश्य बह जायेंगे। परन्तु सौभाग्य से वृष्टि शीघ्र ही बन्द हो गई और सब लोग सहर्ष अपने अपने घर गये। शाम को सारे पेरिस शहर में बड़ी भारी रोशनी की गई। सब लोगों ने अपने अपने घर पर दीपावली लगाकर बड़ा आनन्द मनाया। इस उत्सव को, इस खुशी को, और इस उत्साह को देखकर बहुतेरों ने समझा कि बस अब देश के सारे संकट मिट गये और राजा और प्रजा का हृदय एक हो गया। राजा भी यह जान कर कि, प्रजा के साथ उसकी

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

जो शत्रुता हो रही थी, सब दूर हो गई, परम प्रसन्न हुआ। परन्तु सब भारी भ्रम में थे। उनके ये विचार अत्यन्त भ्रांतिपूर्ण थे। भला आप ही बतलाये कि दीवाली के दिन की हँसी खुशी को देखकर कहीं यह अन्दाज बांधा जा सकता है कि सब लोगों के दिन बड़े आनन्द से कट रहे हैं? अस्तु, जो हो। उत्सव समाप्त हो चुकने पर भिन्न भिन्न प्रांत के अधिकारीगण अपने अपने स्थान पर लौट आये।

स्वतन्त्रता के आवेश में ईश्वर की अवहेलना

उस उत्सव के बाद जो रविवार आया, उस दिन भी लोगों ने नाच-गाना कराना नहीं छोड़ा। ईश-प्रार्थना की अवहेलना कर उन्होंने सारा दिन ऐश-आराम में बिता दिया। उन्हें इस बात की याद तक न आई कि आज का दिन ईश्वर की वन्दना में बिताने का है। बोस्टील का किला जिस दिन से उनके हाथ में आया, उसी दिन से उन्होंने समझा कि बस अब हमारी सच्ची स्वतन्त्रता आरम्भ हो गई। उस दिन उन्होंने किले में एक बड़ा भारी झाड़ लगाया और उसका नाम रक्खा 'स्वतन्त्रता की झाड़।" के चारों ओर बड़ी भारी सजावट की गई। यह देखकर सच्चे ईश्वरभक्तों को अत्यन्त खेद हुआ। वे कहने लगे कि इन लक्षणों से जान पड़ता है कि आगे कोई बड़ा भारी अनर्थ होनेवाला है। उनका यह कथन कहाँ तक ठीक उतरा, यह पाठकों को आगे चलकर आप ही मालूम हो जायगा।

सेना में फूट और उसका बन्दोबस्त

यह पहिले ही लिखा जा चुका है कि एक एक नया कानून बनाकर सरदारों की परम्परागत उपाधियाँ तोड़ दी गईं। इसका नतीजा बड़ा बुरा हुआ। इस कानून को अमल में लाने के पहिले, उच्चकुल के जो मनुष्य सेना में थे,

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

उनका किसी प्रयत्न के विना, वेतन बढ़ता जाता था, अर्थात् प्राचीन पदवियों के आधार पर ही उनको तरक्की मिलती थी। किन्तु अब इस नये क़ानून के बनने से यह सब बातें बन्द हो गईं; और सैनिक की योग्यता तथा नौकरी की अवधि के अनुसार तरक्की होने लगी। इससे सिपाहियों और अधिकारियों में वैमनस्य फैला और सेना में अशांति फैलने के चिन्ह दृष्टिगोचर होने लगे। उच्चकुल के अधिकारीगण यह सोच कर कि इन साधारण दर्जे के सिपाहियों के कारण हमारी उन्नति मारी गई, सिपाहियों को तङ्ग करने लगे। इधर सिपाहियों में स्वतंत्रता की धुन समाई हुई थी! अतएव वे भी अपने अधिकारियों के साथ गुस्ताखी से पेश आने लगे। यह हाल देश भर के सिपाहियों का था। नान्सी की सेना में तो इसकी पराकाष्ठा हो गई थी। सिपाही अधिक और आफ़िसर कम थे। अतएव लाचारी में वहां के अफसरों ने सिपाहियों की बहुत सी बातें स्वीकार कर ली इससे सिपाहियों में और जोस फैला। वे पहिले से भी अधिक गड़बड़ मचाने लगे। उनका उत्साह और बढ़ गया। अन्त में इसकी सीमा यहाँ तक पहुँच गई कि उन्होंने अपने अफिसरों को अपनी ही बारिकों में कैदकर रक्खा। यह घटना अगस्त के अन्त में सन् १७९० में हुई।

यह बात जब पेरिस में लोकसभा को मालूम हुई तब उसके सभासदगण किंचित् भयभीत हुए। वे अब इस फिक्र में पड़े कि फ़साद मिटाने के लिये किस उपाय का अवलम्बन किया जाय। क्योंकि वह समय ही वैसा नाजुक था। लोगों का हृदय अत्यन्त अस्थिर हो रहा था और कब क्या होगा. यह कुछ जाना नहीं जाता था। खैर, किसी तरह धैर्य धारण कर लोकसभा ने मेट्ज के सेनापति बौली को दंगा मिटाने के लिए जाने का हुक्म दिया। बौली उच्चवंशी और बड़ा धैर्य-

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

वान् व्यक्ति था। जनसाधारण में उसकी इस बात की बड़ी प्रशंसा थी कि जिस काम को वह हाथ में लेता, पूरा करके ही छोड़ता था। उसका झुकाव राजा की ओर बहुत था। जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है कि प्रायः समस्त फ्रांस के सिपाहियों में लापरवाही और अशांति फैली हुई थी; किन्तु बौली ने अपनी अधीनस्थ सेना का इतना अच्छा प्रबन्ध रक्खा था कि उसके सैनिक गण, हृदय में थोड़ा भी फर्क न लाते हुए, उसकी आज्ञा का पालन प्रसन्नचित्त से करते थे। नान्सी का बलवा दबाने का हुक्म पाते ही बौली वहां के लिए तत्काल ही रवाना तो हो गया; किन्तु उसका चित्त स्थिर न था। वह सोचता था कि नान्सी में बहुत अधिक सेना है और हमारे साथ कम लोग हैं। यदि वे लोग हम पर आक्रमण ही कर बैठें तो क्या करना होगा। इस पर भी उसे भीतर ही भीतर राजा का सन्देशा मिला था कि जहाँ तक हो सके, हथियार चलाने का मौका न आने देना।

अस्तु। अड़चनों की परवा न करते हुए ३१ अगस्त को बौली अपनी सेना के साथ नान्सी पहुँच गया। बलवाइयों ने अपनी रक्षा के लिए एक सुरक्षित स्थान का पहिले से ही प्रबन्ध कर रक्खा था। बौली ने पहुँचते ही उसे घेर लिया। यद्यपि भीतर बलवाइयों की संख्या बहुत थी; पर आपस में उनमें बड़ी फूट थी। ऐसा एक भी अधिकारी उनमें न था, जिस पर सब की श्रद्धा हो। "नाई की बारात में सब ठाकुर ही ठाकुर" — यह कहावत उन पर पूर्ण रूप से चरितार्थ हो रही थी। अतएव वे एकमत होकर कोई कार्य न कर सकते थे। अन्त में उन्होंने निश्चय किया कि बाहर के लोगों पर एकदम तोपों की मार हो। सब से आगे की तोप में बत्ती दी जानेवाली थी फिर इतने में डेसलीस नामक एक युवा अधिकारी आगे बढ़कर

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

अपने सिपाहियों से कहने लगा—"भाइयो, ये हमारे शत्रु नहीं हैं, मित्र हैं, ये हमारे भाई हैं। इन्हें लोकसभा ने भेजा है। क्या राजा की भेजी हुई सेना का अपमान करना तुम्हें उचित जान पड़ता है?" परन्तु सिपाहियों ने उसकी बात पर बिलकुल ध्यान नहीं दिया। उल्टा उसे तोप के पास से हटाकर दूसरी जगह ले जाने का उद्योग करने लगे परन्तु डेसलीस वहाँ से न हटा। तब बलवाइयों ने अत्यन्त क्रोधित होकर अपनी संगीनों से उसे एक ओर हटाया और तोप में बत्ती दे दी। वह बड़े अच्छे मौके पर लगी थी। इस कारण पहिले ही गोले से बाहर के पचास मनुष्यों के प्राण गये। इससे बौली की फौज को बड़ा जोश आया। उन्होंने एक साथ इस जोर का हमला किया कि बलवाइयों को अंत में पीठ दिखानी पड़ी। इस तरह वीरवर बौली ने ५०० बलवाइयों का हनन कर वह स्थान अपने अधिकार कर लिया। बौली का यह कार्य अत्यन्त स्तुत्य है। फिर भी पेरिस के निवासीगण, उसे राजपक्षपाती जान—स्वतंत्रता का बाधक समझ—उससे द्वेष करने लगे; और बिगड़ी हुई सेना के जो कुछ लोग शहर में आये थे उनको सच्चा शूर समझकर लोगों ने बड़ी धूमधाम से उनका स्वागत किया। सच है, जो लोग विचारशून्य होते हैं उनके सामने शुभचिन्तक होते हुए भी अपराधी बनना पड़ता है। परन्तु सच्चे नीतिमान ऐसे मौके पर भी अपना सत्य और शौर्य प्रकट करते हैं।

यह लिखा ही जा चुका है कि रईस और धर्माधिकारियों के सारे अधिकार छीन लिये गये। अतएव इससे उन्होंने अपनी बड़ी मानहानि समझी। फ्रांस देश में इन लोगों की संख्या बहुत अधिक थी और दरबार में भी इन लोगों का

विदेश भागना अपराध है"--इन कानून के विरोध

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

में मिराबो का भाषण

बड़ा गौरव था परन्तु अब ये साधारण दर्जे के मनुष्य समझे जाने लगे। इससे इन्हें स्वदेश अप्रिय हो गया। इन्होंने फ्रांस छोड़ कर विदेश जाना आरम्भ किया। थोड़े ही समय में इनकी ऐसी भगदड़ मची कि संदेह होने लगा कि ऐसे लोगों में से चार-पांच कुटुम्ब भी फ्रांस देश में रहेंगे या नहीं। ये लोग फ्रांस का त्याग कर विदेश में यदि चुपचाप कमाते खाते तो फ्रांस के राज्याधिकारियों को इतनी चिन्ता न होती। परन्तु ये थे बड़े उद्योगी, प्रभावशाली और चतुर मनुष्य। इन्होंने विदेशी दरबारों में प्रवेश कर वहाँ के राजाओं और मन्त्रि-मण्डलों को फ्रांस की इस नई स्थिति का हाल सुनाया और अपनी दीनता प्रकट कर के उनसे सहायता देने की प्रार्थना की। यह बात फ्रांस के राज्यकर्ताओं को अत्यन्त भयप्रद मालूम हुई। वे इस फिक्र में पड़े कि इसके निवारण कैसे हो। लोकसभा के कतिपय सदस्यों की राय हुई की ऐसा एक कानून बनाया जावे कि विदेश भागना अपराध है और इस कानून के भङ्ग करने वाले को सजा की जावे। इस पर बहुतेरे सभासदों ने उत्तर दिया कि हम लोग जो इतनी मेहनत कर रहे हैं वह इसलिये कि प्रत्येक मनुष्य, दूसरों को अड़चन डाले विना, स्वतंत्रता पूर्वक वर्ताव करे। अतएव इस तरह का कानून बनाना हमारे सिद्धन्तों के विरुद्ध होगा। कथन दोनों पक्षों का सच मालूम होता है। इस विषय को लेकर लोकसभा में और अन्यत्र साधारण लोगों में भी बहुत सा वाद-विवाद होने लगा। इधर विदेश गये हुए रईस सरदार फ्रांस के बड़े २ लोगों के पास ऐसे नजराने भेजने लगे कि जिनसे उनका अपमान और उपहास हो। इससे पेरिस-वासियों को बड़ा क्रोध आया और वे यही हठ करने लगे कि विदेश भागना बन्द होना चाहिए। मिराबो इस प्रस्ताव के विरुद्ध था। अतएव इस विषय को लेकर उसने लोकसभा

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

में बड़ा हृदयग्राही भाषण किया। वह इस तरह था—"महाशयो, इस तरह का कानून बनाना क्या अच्छा होगा? क्या इससे लोकसभा की निन्दा न होगी? क्या उसकी नीतिमत्ता में कलंक न लगेगा? अभी इस कानून का आशय सुनते ही जन-साधारण का चित्त ऐसा व्यग्र हो गया और जब यथार्थ कानून ही बन जावेगा, तब न जाने क्या होगा। जन-साधारण वर्तमान समय में आपको जो सम्मति दे रहा, बड़ी भयंकर है। यदि उसे आप कानून के रूप में परिणित करेंगे तो स्मरण रखिये, वे कार्य जो आज आप लोगों को अत्यन्त अधम और क्रूरतापूर्ण जान पड़ते हैं, वे ही कल अत्यन्त दया-पूर्ण भाषित होंगे। फाँसी की सजा तक आप लोग एक कौतुक खेल समझेंगे। इस क़ानून के बनाने के लोग आप पर अविश्वास करने लगेंगे और जिन छोटे-बड़े मनुष्यों से इस देश की शोभा बनी है, वे भी जान लेकर एकदम विदेश भागेंगे। आपका यह मनहूस कानून सच मानिये, ग़रीब, अनाथ, निर्बलों और सीधे-सादे मनुष्यों के लिए काल-रूप हो जावेगा। मेरी राय तो यह है कि यह क़ानून अत्यन्त निर्दयतापूर्ण है। अतएव इसे कभी पास न करिये। इतना स्पष्ट कहने पर भी यदि आप दुराग्रह से इसे पास कर ही डालेंगे तो मैं साफ़ साफ़ कहता हूँ, राज्य और राजा की सेवा करने की जो प्रतिज्ञा मैंने की है, उसे तोड़ डालूंगा। फिर मुझे दोष मत दीजियेगा। आप लोगों को मेरा कथन बुरा मालूम होगा, तो हो; पर मेरा कर्तव्य, जो आप लोगों को सच्ची सलाह देकर सुखी और संतुष्ट रखने का है, वह मैं पूरा करूंगा। इसमें सन्देह नहीं कि लोकप्रियता के सदृश मुझे इस संसार में कोई भी वस्तु प्यारी नहीं है, पर मेरे लिए लोकप्रियता किस काम की, जो किसी निर्बल डाली के समान जरा सी हवा लगते ही टूट जावे। मुझे तो वह लोकप्रियता

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

चाहिए जो बड़े मोटे बटवृक्ष की महान शाखा के समान सुदृढ़ हो और जिसकी उत्पत्ति न्यायरूपी बीज से, एवं पालन स्वतन्त्रतारूपी हवा से हुआ हो।"

मिराबो की बीमारी और उसका अन्त

वन्य पशुओं में जैसा सिंह होता है, वैसा ही फ़रासीसियों के बीच में मिराबो था। यद्यपि उसकी कई बातें लोगों को पसन्द नहीं आती थीं; पर यह किसी की हिम्मत नहीं होती थी कि कोई उसके मुँह पर उसकी बातों का खंडन कर दे। ऊपर लिखी वक्तृता देने के पश्चात् वह खुले तौर से राजपक्षपाती हो गया और उसे दरबार से एक भारी रकम पेंशन में मिलने लगी। अर्थात् राजा ने उसे ८०००) प्रति मास देने का प्रस्ताव किया। किन्तु वह इस पेन्शन का सुख अधिक दिन तक न भोग सका। यों तो पहिले उसका स्वास्थ्य अच्छा था; पर जीवन भर अनेक बुरे-भले कामों में लगे रहने के कारण वह निर्बल हो गया था। ऊपर लिखी वक्तृता देने के पश्चात् कुछ ही दिनों में वह बीमार पड़ा। इससे उसे क्लेश होने लगा। न दिन को चैन और न रात को उसे नींद ही आती थी। फिर भी उसका चित्त दर्बार में लगा रहता था। अनेक राजकर्मचारीगण उसके बिस्तर को चारों ओर से घेरे बैठे रहते थे; और वह सबकी बात सुनकर अपनी राय प्रकट करता था। वह पूरा नास्तिक था। इस बीमारी की दशा में भी उसे परमात्मा की याद नहीं आई। वह हमेशा इन्हीं बातों को विचार करता था कि या तो राजा को उसका सम्पूर्ण अधिकार दे दिया जाय या वह युक्तिपूर्वक यहाँ से निकाल बाहर किया जाय। जब वह किसी से वार्तालाप करता तो इसी विषय पर। धीरे धीरे उसका अंतिम समय निकट आता गया। अकस्मात् एक दिन उसका वचन

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

बन्द हो गया। तब उसने बड़े कष्ट से अपने हाथ से लिखा—"मृत्यु निद्रा है"। बाद कुछ औषधि देने से वह फिर बोलने लगा। परन्तु उसकी वेदना बढ़ती ही गई। अन्त में जब वह उसे न सह सका तब उसने थोड़ी सी अफीम वैद्य से खाने को मांगी। वैद्य ने अफीम का देना उचित नहीं समझा। अतएव उसने झूठ-मूठ, अफीम मिली हुई बतलाकर, थोड़ा सा जल उसे पीने को दिया। वह उसने पी लिया। फिर उसने सिर में सुगंधित तेल लगवाया। नये कपड़े पहिने। सारे बैठकखाने में फूल बिछवा दिये और अपने मित्रों के साथ धीरे धीरे बातचीत करने लगा। उसने कहा—"जब मैं मर जाऊंगा तब लोग मेरी योग्यता को समझेंगे। मेरे मरने पर वे संकट एकदम से फ्रांस देश में आ पड़ें जिन्हें मैंने बड़े प्रयासपूर्वक अभी तक रोक रक्खा है। वे फ़सादी जो मुझे देखकर थरथर कांप रहे हैं, मेरे मरने पर देश को मनमाने कष्ट देंगे। फ्रांस देश पर भविष्य में आनेवाले संकट मेरी आँखों के सामने झूल रहे हैं। लोकसभा का स्थापन कर हमने कितनी बड़ी ग़लती की, यह मुझे स्पष्ट मालूम हो रहा है। इस सभा ने सारे राज्याधिकार अपने हाथ में ले तो लिये; पर उसने अभी तक अपनी कुछ भी करतूत नहीं दिखलाई। राजा के आज्ञानुसार काम करना तो एक ओर रहा, यह सभा जल्द उसी पर हुकूमत करने लगी। इसका परिणाम यह होगा कि राजसत्ता दो पक्षों में से किसी को न मिलेगी और कोई तीसरा हीं उसे मार ले जावेगा। इस देश की बड़ी विलक्षण दशा होगी।" इतना कहकर वह चुप हो गया। आगे बोल न सका। उसे असह्य वेदना होने लगी। अतएव उसने फिर अफीम माँगी। परन्तु अफीम उसे न दी गई। तब अत्यन्त

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

क्षीनवणी से कहने लगा—"भाई, मेरी शक्ति क्षीण हो गई है। मेरा शरीर टूट रहा है। मुझे बड़ी यंत्रणा हो रही है। अतएव ऐसे समय में आप लोग मुझे अफीम न देकर क्या अत्यन्त निर्दयता का कार्य नहीं कर रहे हैं ? अच्छा ! अच्छा !! भला कोई मेरे सिर को तो उठाकर पकड़ लो ! जल्दी आओ। मेरा जी न जाने कैसा हो रहा है। फिर तुम्हें ऐसा सिर उठाकर पकड़ने को कभी न मिलेगा।" पास के लोगों ने उसके सिर को उठाकर पकड़ लिया और उसे आराम देने के बहुत से उपाय किये; पर सब निष्फल ! पहले उसके पैर टेढे हो गये। फिर धीरे धीरे उसका सारा शरीर ठंढा होने लग। तो भी उसका मुंह नहीं बन्द हुआ था। परन्तु थोड़ी देर में शब्द न निकलने लगा। जीभ टेढ़ी पड़ गई; और तुरन्त ही उसके प्राण निकल गये। २ अप्रैल सन् १७९१ ई० में उसकी मृत्यु हुई।

मिराबो की मृत्यु की खबर फैलते ही सारे पेरिस में शोक छा गया। यद्यपि उस समय पेरिस शहर में अनेक दलबंदियाँ थीं और यद्यपि मिरावो ने अपने कपट-चातुर्य से कभी किसी का स्थिर रूप से पक्ष नहीं ग्रहण किया था, फिर भी उसकी मृत्यु का समाचार सुनते ही सबकी आँखों में आँसू भर आये। उन्हें ऐसा ज्ञात होने लगा, मानो उन्हीं का कोई घर का सम्बन्धी मरा हो। यह बात सचमुच बड़ी विलक्षण और ध्यान में रखने लायक है। मिराबो अत्यन्त कपटी, स्वार्थी और लबाड़ था। यह बात सब को मालूम थी। फिर भी दूसरे का चित्त हरण करने की उसमें ऐसी कुछ सामर्थ्य थी कि जिन लोगों के साथ उसने अनेक बार बुराइयाँ की थीं, वे भी उसकी मृत्युवार्ता सुनकर आँखों से आँसू बहाने लगे। चौथी तारीख को उसका अन्त्येष्टि-संस्कार हुआ। एक

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

जगह लिखा है कि उसकी स्मशान यात्रा में एक लाख मनुष्य गये थे।

राजा का पलायन, लोगों में अशांति, लोकसभा का प्रबन्ध

मिराबो जब तक जीवित था, प्रत्येक पक्ष यही विचारता था कि कभी न कभी यह हमारे साथ मिल कर हमारी सहायता करेगा। यहाँ तक कि राजा सोलहवें लुई को भी विश्वास था कि यदि भाग्य से हमें अपना पूर्व-अधिकार मिलेगा तो बस इसी की अनुकूलता से। परन्तु उसके मरने पर सब निराश हो गये, और सब लोग यही कहने लगे कि अब ऐसा पुरुष फ्रांस देश में नहीं होने का। राजा को तो यह भासित होने लगा कि अब विदेश भागे बिना निस्तार नहीं। वह गुप्त रीति से भागने की तैयारियाँ भी करने लगा। इस कार्य के लिए उसे बहुत से सहायक भी मिल गये थे, जिन में बौबौ मुख्य था। परन्तु प्रतिपक्षियों को इसकी खबर नहीं थी। इधर यह भी निश्चित हो गया कि राजा अमुक दिन, अमुक समय, अमुक रास्ता से, राजधानी छोड़कर निकले और अमुक अमुक मुकामों में होकर अमुक दिन अमुक स्थान में पहुँचे।

जून महीने की बीसवीं तरीख़ और मध्यान्ह का समय भागने के लिए मुक़र्रर था। नित्य के नियमासार उस दिन भी ठीक समय पर राजा-रानी और उनके बच्चों ने खाना खाया। पश्चात् अत्यन्त गुप्त रीति से उन सबों ने अपनी पोशाक बदली। फिर चुपचाप गाड़ी में बैठकर, जैसा की ऊपर कहा जा चुका है, निश्चित मार्ग से नियत स्थान के लिए चलते हुए। मार्ग में जगह जगह पर राजविश्वासू लोगों का इन्तिजाम किया गया था। उन लोगों ने जब राजा को कुशल-पूर्वक निकल जाते देखा, तब उन्हें अपार हर्ष हुआ।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

उन्होंने परमात्मा को अनेक धन्यवाद दिये। इधर पेरिस में जब इस बात का पता लगा तब तो लोगों में बड़ी गड़बड़ी मची। स्थान स्थान पर हजारों मनुष्य एकत्र होकर राजा के भागने की चर्चा करने लगे। साथ ही उनके मुख पर भावी अनर्थ-सूचक भय के चिन्ह भी दृष्टिगोचर होने लगे। लोगों की इस दशा को देखकर लोकसभा बड़े विचार में पड़ गई पर विशेष सोच विचार में समय गवाँने का मौका न देखकर उसने तुरन्त ही लोगों को शान्ति करने के उचित उपाय किये। मंत्रि-मंडल को एकत्र कर उसने पहिले ही के सदृश राज-काज चलने देने की ताकीद की। एक घोषणापत्र निकाला कि किसी को अपने जान-माल की फिक्र न करनी चाहिये। सिपाहियों को हुक्म दिया कि किसी स्थान पर मनुष्य एकत्र रहने न पावें। सारी राजसत्ता अपने हाथ में कर ली। कुछ आफिसरों को सेना में इसलिए भेजा कि सैनिकों को बतला दें कि अब से सैनिकगण जो शपथ लें वह राजा के नाम से न लेकर लोकसभा के नाम से लें। कोई विदेश न भागे, यदि भागने का प्रयत्न करेगा तो दंडित होगा। इसी आशय के आज्ञापत्र प्रचारित किये गये और इन इन्तिजामों की सूचना यूरोप के अन्य राजाओं को दे दी गई। एक पुस्तक में लिखा है कि लोकसभा ने ये सब काम चार घंटे में कर डाले और चारों ओर शांति स्थापना कर दी।

राजा पकड़कर फिर पेरिस लाया गया

इधर राजा भागा चला जा रहा था। वह जैसे जैसे राजधानी से दूर होता जाता था, वैसे वैसे समझता था कि मैं विपत्ति से दूर हो रहा हूँ। अतएव बहुत दूर निकल जाने पर अब उसने अपने को छिपाने की उतनी परवा न रक्खी। मार्ग में उसे गाड़ी के टूट जाने से बहुत कष्ट भोगने

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

पड़े। लेकिन किसी तरह ले-देकर वह अपने परिवार-सहित इक्कीसवीं तारीख़ को वारेन पहुँच ही गया। वहाँ राजा के भागने की ख़बर पहले ही से पहुँच गई थी। अतएव वहाँ के अधिकारी सावधान थे। वहाँ से आने-जानेवाली प्रत्येक गाड़ी की वे तलाशी लेते थे। जब राजा की गाड़ी वहाँ पहुँची तब एक कर्मचारी ने सोलहवें लुई को पहिचान लिया। बस फिर क्या पूछना था! गाड़ी से उतारकर सब को वह तत्काल ही मुख्य सेनापति के घर ले गया। उस समय राजा के हृदय की जो अवस्था थी, उसका वर्णन करना हमारी लेखनी की शक्ति से बाहर है। उसने अत्यन्त दीनतापूर्वक सेनापनि से प्रार्थना की—"देखिये, मैं आपका राजा हूँ। पेरिस-निवासियों ने मेरे ऊपर नंगी तलवार लटका रक्खी है। अतएव मैं तंग आकर स्वतंत्रता. शांति और अपनी सच्ची शुभचिन्तक प्रजा की खोज में बाहर निकला हूँ। जरा आप भी गौर कीजिए आप मेरी प्रजाओं में से हैं और मैं आपका राजा होकर भी आपके अधिकार में हूँ। तो भी आप क्या दया न करेंगे? मैं आपसे अत्यन्त नम्रता और दीनतापूर्वक प्रार्थना करता हूँ कि कृपा कर मुझे आप मेरे दुष्ट शत्रुओं के हाथ में न सौंपियेगा। मैं अपने को, अपनी स्त्री को और अपने बच्चों को आपके सिदुर्प करता हूँ। इनकी आप किसी तरह रक्षा कीजिए। आइए, आप और हम साथ ही निकल चलें। यदि कभी दैव मुझ पर अनुकूल होंगे तो आप मेरे दाहिने हाथ होकर रहेंगे और आपका यह शहर राजधानी बना दिया जायगा।" राजा के इस कथन का उस पापाण-हृदयी सेना-पति पर कुछ असर नहीं हुआ। उसने उसकी और उसके परिवार की निगरानी के लिए लोकसभा की सेना का पहरा बैठाल दिया। थोड़ी ही देर में लाफयट की सेना के दो सूबेदार

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

लोकसभा की आज्ञा पाकर, पेरिस शहर से राजा को पकड़ने के लिए वहाँ आ पहुँचे। जब यह खबर राजा ने सुनी तब वह अत्यन्त दुखी हुआ। राजा ने दीर्घ श्वास लेकर कहा—"हाय ! अब लाफयट मुझे कैद करेगा।" इस पर रानी ने उत्तर दिया—"उसे तो अमेरिका जैसी स्वतन्त्रता की धुन लगी हुई है। परन्तु अब उसे शीघ्र ही मालूम हो जायगा। कि फ्रांस देश में प्रजा-सत्ताक राज्य स्थापित करना कितनी कठिन बात है।" इतने ही में एक सिपाही ने आकर राजा के हाथ में लोकसभा का आज्ञापत्र दिया। राजा ने उसे पढ़कर रानी के हाथ में दे दिया। रानी ने उसे देखकर फेंक दिया और आप जाकर वहाँ लेट गई जहाँ उसके बच्चे पड़े सो रहे थे। थोड़े समय के पश्चात् लोकसभा के सैनिकगण राजा को पेरिस वापस चलने के लिए जल्दी करने लगे। इस पर राजा ने कहा—"अजी, मैं कहीं जाता नहीं। न मेरा इरादा देश की सीमा से बाहर जाने का था।"

इस तरह जल्दी मचा कर राजा और उसके परिवार को लोकसभा के सैनिक वारेन से फिर पेरिस लाये। इधर बौली ने जब सुना की राजा स-कुटुम्ब वारेन में पकड़ लिया गया तब वह तत्काल ही अपने विश्वासी सिपाहियों को लेकर उसकी सहायता के निमित्त वहाँ दौड़ता हुआ आया। परन्तु वह बड़े विलम्ब से पहुँचा। राजा के पेरिस चले जाने के चार घन्टे बाद वह आया। यह देर हो गई, सो अच्छा ही हुआ नहीं तो दोनों दलों में मुठभेड़ हुए बिना न रहती। अस्तु। राजा पेरिस में लाकर एक मकान में रक्खा गया और उस घर के चारों तरफ़ पहरे का भारी इन्तिज़ाम किया गया। इस समय शहर में फिर अशांति के लक्षण दृष्टिगोचर होने लगे। राजा के इस तरह पलायन करने से लोकसभा, उसके पक्षपाती और जन-साधारण

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

को बड़ा क्षोभ हुआ। बहुत बुरा लगा। राजा के पक्षपातियों की तो मानो नाक कट गई। प्रायः सब के सब राजा के विरुद्ध बोलने लगे। चाहे जो हो पर प्रजासत्ताक राज्य स्थापित करने के पक्षपातियों को यह मौक़ा खूब हाथ आया। वे बड़े उत्साह के साथ अपने उद्योग में लगे।

राजा की दुर्दशा और कठोर प्रतिबंध

ऊपर कहा जा चुका है कि राजा एक मकान में लाकर रक्खा गया। पर यह नहीं बतलाया गया कि वहाँ उसकी हालत कैसी थी। इसका आद्योपान्त वर्णन हम कहाँ तक करेंगे। नीचे एक उदाहरण दे देते हैं, उसी से आप अनुमान कर लीजिये।

जिस मकान में राजा रक्खा गया था, उसी मकान में ड्यूमोरिज नामक एक सैनिक आफ़िसर भी था। उससे रानी ने एक बार कहा—"इस खिड़की के नीचे सुन्दर बाग है। पर हमारे लिए वह व्यर्थ है। क्योंकि खिड़की से बाहर सिर निकालने का हुक्म नहीं। कल रात को अच्छी मंद मन्द हवा चल रही था। मैंने धीरे से खिड़की खोलकर सिर बाहर निकाला कि एक सिपाही संगीनदार बन्दूक मेरी ओर तानकर क्या कहता है—'इस संगीन की नोक पर यदि मैं तेरा सिर रखने पाता तो मुझे बड़ा सुख होता।" इस बाग के एक ओर कुछ आदमी हमारा नाश करने के लिये ऐसी बातें किया करते हैं कि जो हमारे कानों से सुनी नहीं जातीं। दूसरी ओर देखते हैं तो किसी पुराने सैनिक अथवा धर्मोपदेशक को बलवाई लोग बेतरह घसीट रहे हैं और उन पर लाता घूंसे बरसाते हैं। तीसरी ओर देखते हैं तो बहुत से युवक नाना प्रकार के खेल खेलते हुए आनन्द कर रहे हैं। यह हमारे रहने की जगह देखिये! और यह हमारी प्रजा का हाल देखिये!! खैर, जो है सो सब ठीक है।" वास्तव में राजा

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

की ऐसी दशा होना अत्यन्त दुःख की बात है।

अस्तु। राजसत्ता का सर्वनाश कर प्रजासत्ताक राज्य स्थापित करनेवालों के लिए यह मौका खूब हाथ आया। वे जनसाधारण को इस बात का आन्दोलन करने के लिए बहकाने लगे कि राजा पर चोरी से भाग जाने का अपराध लगाकर उसकी तहक़ीक़ात की जावे और वह पदच्युत किया जावे। इस विषय में पेरिस-निवासियों ने अपनी शक्ति भर खूब प्रयत्न किया; पर सब व्यर्थ हुआ। लोकसभा के कतिपय सदस्य भी इस बात का समर्थन करते थे; पर अधिकांश सभासदों का मत इसके प्रतिकूल था। उनका कथन था कि जो हुआ सो हुआ। राजा को ज्यों का त्यों रहने दो और पूर्ववत् राजकाज चलने दो। राजा ने इस तरह गुप्त रीति से भागने का क्यों प्रयत्न किया, इस बात की कैफ़ियत लेने के लिए एक छोटा सा कमीशन बैठाया गया। इस कमीशन के बार्नेव नामक एक सभासद ने, प्रजासत्ताक राज्य स्थापित करनेवालों को सम्बोधन करके, लोकसभा में एक उत्कृष्ट व्याख्यान दिया। उसने कहा—"राज्य-व्यवस्था का परिवर्तन करने की इच्छा रखने वाले महाशयो! आप अपना प्रयत्न न छोड़िये। आपने अब सारे संसार को दिखला दिया है कि सत्ता का जो असद्व्यय होता था, उसे बन्द करने की सामर्थ्य आप लोगों में है। सब लोगों को अब यह भी मालूम हो चुका है कि आप लोगों में वह शक्ति मौजूद है जिसके द्वारा आप लोग पुरानी बुरी बातों को निकालकर नयी और अच्छी बातें चला सकते हैं। इसलिए अभी तक आप लोगों ने जो कुछ कर दिखाया है उसकी रक्षा करने के लिए अपना पराक्रम दिखलाइये। लोगों में धीरता और वीरता कितनी है, सो अभी हाल ही में मालूम हो चुकी है। अब अपने देश और राज्य की रक्षा

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

भली भाँति कीजिये । सारे संसार की आँखें आप लोगों की ओर लगी है इसलिए सावधान रहिये और प्रत्येक कार्य होशियारी से कीजिये।" इसी तरह के और भी बहुत से व्याख्यान हुए। अंत में लोकसभा ने बहुमत से यह प्रस्ताव पास किया कि राजा ने लोकसभा का आधिपत्य स्वीकार कर जो शपथ, जो प्रतिज्ञा, पहले की थी, यदि वह उसे भंग करेगा, अथवा यदि वह प्रजा के साथ लड़ने के इरादे से किसी सेना का आधिपत्य लेगा, अथवा वैसा करने के लिए वह किसी दूसरे को अधिकार देगा, तो वह पद भ्रष्ट समझा जायगा और उसके साथ एक सहज मामूली आदमी के सदृश व्यवहार किया जायगा। इस प्रस्ताव की एक नकल राजा के पास भेजी गई और उसने भी उसे स्वीकार कर लिया। उसने कहा—"यह व्यवस्था मुझे स्वीकार है और इसको पालन करने का मैं यथाशक्ति प्रयत्न करूँगा।" इस अवसर में लाफयट भी अपने अधीनस्थ कितने ही अपराधी मनुष्यों को क्षमा प्रदान की। सेना में शांति फैलाई और लोग जो बिगड़ रहे थे, उन्हें भी बहुत कुछ शान्त किया।

नवीन सभा और 'जेकोबिन' राज-द्रोही-मंडली

इस गड़बड़ के मिटने पर कुछ दिन तो बड़े मजे में गये। लोग समझने लगे कि अब किसी प्रकार की अशांति न होगी। किन्तु वे भ्रम में थे। देश केवल बनावटी, ऊपरी, शांति बिराजमान थी। परन्तु भीतर प्रजासत्ताक राज्य स्थापना करनेवाले लोगों के प्रयत्न बड़े झपाटे के साथ चल रहे थे। उपर्युक्त नवीन व्यवस्था हो जाने पर यह समझकर कि अब हमारा कर्तव्य पूरा हो गया, लोकसभा भंग हो गई और उसकी जगह पर एक नई नियम-कर्तृ सभा स्थापित हुई। इस सभा के मेम्बर सब

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

नये ही नये थे। क्योंकि इसके लिए यह नियम कर दिया गया था कि वे महाशय, जो लोकसभा के सभासद रह चुके हैं, इसमें न शामिल किये जाँय। अतएव यह नई सभा अनुभव-सून्य मनुष्यों से परिपूर्ण थी। इसका फल यह हुआ कि प्राचीन लोगों के अनुभव का कुछ उपयोग नहीं रहा और नवीन लोगों की मन्दबुद्धि के कारण फ्रांस देश में फिर शीघ्र ही विपत्ति आने के लक्षण दिखाई देने लगे।

इस नई नियम-कर्तृ सभा में अधिकांश सभासद उद्दण्ड थे। विचारवान, दूरदर्शी और सभ्य महाशय उसमें बहुत थोड़े थे। उनका पूरा पूरा ध्येय यही था कि राजसत्ता का नाश हो और प्रजासत्ताक राज्य स्थापित हो। उसी समय के लगभग पेरिस में "जेकोबिन" नामक एक बड़ी मंडली थी। इसमें भी उपद्रवी मनुष्यों की खूब भरमार थी। लोगों पर उनका बड़ा प्रभाव था; और उनका कथन प्रायः सब को सत्य जान पड़ता था। नियम-कर्तृ सभा के भी बहुतेरे सभासद इस मंडली में आते रहते थे। इस जेकोबिन मंडली को आप राजविद्रोही मंडली समझिये। इसका मुख्य उद्देश प्रजा-सत्ताक राज्य स्थापित करना था। इस मंडली की बैठक जिस मकान में होती थी वहाँ क्लेमेंट*और रावेलाक† के चित्र लगे रहते थे और प्रत्येक चित्र के नीचे लिखा हुआ था—"यह पुरुष बड़ा भाग्यशाली था। क्योंकि इसने राजा का वध किया। इसी से आप अनुमान कर लीजिए कि यह मंडली किस किस्म की थी।

---

*यह एक बड़ा राजद्रोही पुरुष था।

†यह फ्रेंच था। कुछ कुछ पागल था। इसने सन् १६१० ई० में फ्रांस के राजा चौथे हेनरी को छुरी से मार डाला था।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

अन्य राष्ट्रों का विचार, फ्रांस की दुर्दशा और राजा की घबड़ाहट

यह पहिले ही लिखा जा चुका है कि नूतन राज्य व्यवस्था से तंग आकर कुछ सरदार और रईसगण देश का परित्याग कर विदेश भाग गये थे। विदेश जाकर वे चुप नहीं बैठे थे; किन्तु वहाँ के दरबारों में उन्होंने फ्रांस का सच्चा हाल बयान किया और राजा की तथा अपनी दीनावस्था दर्शाकर सहायता माँगी। उनका कथन यूरोप के अन्य राजाओं ने स्वीकार किया। क्योंकि पहले तो उन्हें फ्रांस का सारा कार्य अन्यायपूर्ण ज्ञात हुआ, दूसरे उन्हें इस बात का भी भय हुआ कि फ्रांस निवासियों की ऐसी प्रबलता से हमारे देश की राज्य व्यवस्था में भी कुछ गड़बड़ न मचे। अतएव अन्याय के प्रतिबन्ध और अपने राज्य की रक्षा के लिए उन सब ने एक हो जाने का निश्चय किया। सन् १७९१ के अगस्त मास की २७ वीं तारीख को इस विषय पर विचार करने के लिए पिलनिट्ज़ में उनकी एक सभा हुई और कुछ प्रस्ताव पास हुए। इस सभा में राजा सोलहवें लुई का पक्ष अच्छी तरह से ग्रहण किया गया। पिलनिट्ज़ की सभा के प्रस्तावों का सार यह था कि सोलहवें लुई को चाहे जिससे मिलने और चाहे जहाँ जाने की स्वतन्त्रता रहना चाहिए। इसके अतिरिक्त उसका अधिकार पूर्ववत् उसके पास रहना चाहिए। यदि फ्रांस-निवासी इस बात को अस्वीकार करें अथवा इसमें कुछ बाधा डालें तो सब राजा अपनी अपनी सेनाऐं एकत्र करके एक साथ फ्रांस पर हमला करें और युद्ध के अन्त में जैसा कुछ हो, प्रबन्ध किया जाय। अपना यह अभिप्राय उन्होंने स्पष्टरूप से प्रकट कर दिया। इस सभा में प्रुशिया और आस्ट्रिया के राजा प्रमुख थे।

फ्रांस की यह नई सभा देश में शांति रखने का अपनी

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

शक्ति भर प्रयत्न करती थी और राजा भी अपनी प्रजा के सन्तोषार्थ सब कुछ करने को तैयार था। परन्तु राज्यव्यवस्था, जो पहिले ही से बिगड़ी हुई थी, अभी तक वास्तव में सुधरी नहीं थी। फ्रांस की हालत उस समय कैसी थी, इसका अपनी आँखों देखा वर्णन एक विद्वान ने इस तरह लिख रक्खा है—"आजकल देश की बड़ी दुर्दशा हो रही है। जेकोबिन और फुलांट्स नामक मंडलियों का बड़ा जोर है। इनके सभासद एक दूसरे के प्रयत्न की निन्दा करके लोगों को सन्देह में डाल रहे हैं। लोगों की इच्छा के अनुसार राज्यप्रबन्ध हो जाने पर भी उनका चित्त शान्त नहीं हुआ है। देश में प्रतिदिन नाना प्रकार के जुल्म हो रहे हैं। कोई किसी की सुननेवाला नहीं है। लोगों की आफत है। कानून की पद पद पर अवहेलना हो रही है। न्यायाधीश के अधिकार निर्जीव हो रहे हैं। लोग समझते थे कि जनसाधारण की राय से निर्वाचित होने वाले न्यायाधीशों से देश में शांति फैलेगी, सो नहीं हुआ। लोग एक दूसरे का विश्वास नहीं करते। सरकार पर तो उनका भरोसा रत्ती भर भी नहीं रहा। दुर्भिक्ष अभी आँखें निकाल ही रहा है। आगे देश की क्या दशा होगी, कुछ समझ नहीं पड़ता।"

फ्रांस की ऐसी दशा होने पर एक बार वहाँ के दरबार में फिर गड़बड़ी मची। आज यह मंत्री है तो कल दूसरा और परसों तीसरा ही। ऐसा हाल हो गया। राज्य का कोई सम्हालने वाला न रहा। लोग निरंकुश हो गये। राजा बेचारा घबड़ाया और इस विचार में पड़ा कि आगे क्या किया जाय। सलाह देने वाले तो उसके पास बहुतेरे थे; पर उस सलाह को कार्य्य के रूप में परिणित करने की शक्ति किसी में नहीं थी। राजा पराधीन कैदी की भांति बन्द मकान

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

में दिन काट रहा था। देश-भाइयों से उसे सहायता मिलने की आशा बिलकुल नहीं रही। तब उसने अत्यन्त गुप्त रीति से परदेशी राजाओं से पत्र-व्यवहार करना, शुरू किया और अपने छुटकारे के लिए उनसे प्रार्थना की। उसने वीना-राजधानी का, वहाँ के राजा के नाम से एक पत्र देकर, मालेट नामक एक मनुष्य को भेजा। उस पत्र में उसने स्वयं अपने हाथ से लिखा था—"यदि आप हमारे राज्य में आवें तो बड़ी सावधानी से आवें और ऐसा प्रबन्ध करें जिससे प्रजा की सुख सम्पत्ति का नाश न हो। आते ही आप एक ऐसी घोषणा करें जिससे आपकी सदिच्छा लोगों पर भली भांति प्रकट हो जाय और उनका हृदय शांत रहे।" राजा का यह हस्त लेख अभी तक ज्यों का त्यों रक्खा हुआ है। इस पत्र से जहां राजा का चातुर्य प्रकट होता है वहाँ यह भी मालूम होता है कि इतने सताये जाने पर भी वह अपनी प्रजा की भलाई ही चाहता था।

इस तरह राजा यद्यपि अत्यन्य गुप्त रीति से अनेक
विचार कर रहा था, तथापि उनके पूर्ण होने
राजमहल पर धावा में उसे बड़ा सन्देह था। इधर लोगों में अनेक
और राजा रानी फड़-बन्दियाँ होकर तरह तरह की अफवाहें
का धैर्य उड़ने लगीं और उनका हृदय डावा-डोल
होने लगा। नवीन जो प्रबन्ध हुआ था उसमें
कानून पसंद करने का अधिकार राजा को दिया गया। अब इस समय स्वार्थियों के आग्रह से धर्मोपदेष्टाओं के विरुद्ध एक कठोर नियम बनाकर नियन-निर्धारिणी सभा ने उसे पसन्दगी के लिए राजा के पास भेजा। यह जानकर कि यह नियम बड़े अत्याचार और अन्याय का है, राजा उसे पसन्द न करता था। यह बात जब लोगों ने सुनी तब तो यह समझ कर कि आज हमारी स्वतंत्रता नष्ट हो गई, उनके मस्तक

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

फिर गये और सब लोग यही कहने लगे कि ऐसे राजा की हमें क्या जरूरत है जो प्रजा की इच्छा की अवहेलना करता है। राजा को धर्मोपदेशकों का पक्षपात करते देख चारों ओर बड़ी हलचल मची और ऐसी शंका होने लगी कि मानो कोई आपत्ति शीघ्र ही आने वाली है। फिर भी राजा घबड़ाया नहीं वह अपनी बात पर दृढ़ रहा। अन्त में जब विरुद्ध पक्ष के स्वार्थियों ने देखा कि बिना जबरदस्ती किये अपना कार्य सिद्ध नहीं होता तब उन्होंने लोगों के हृदय में नाना प्रकार की सच्ची-झूठी बातें भरकर उन्हें दंगा करने के लिए उभाड़ना शुरू किया। लोग तो इसके लिये तैयार ही थे। २० जून सन १७९२ को तीस-चालीस हजार मनुष्यों ने एकत्र होकर, राजा को गद्दी से उतार देने के लिए, अधिकारियों को अर्जी दी और तुरन्त ही राजमहल को घेर लिया। राजमहल के चारों ओर कड़े पहरे का बन्दोबस्त था। इसलिए जब वे भीतर न घुस सके तब मुख्य दरवाजे के सामने वे एक तोप ले आये और उसे उड़ा देने का विचार किया। यह बात जब राजा को मालूम हुई तब उसने तत्काल ही दरवाजा खोलने का हुक्म दिया। दरवाजा खोल दिया गया और उसके खुलते ही बलवाइगण भीतर घुसने लगे। यह देखकर राजा कुछ सेवकों को साथ लेकर आगे आया। देखते ही जो लोग सबसे आगे थे ठिठक गये। पर पीछे की भीड़ ने उन्हें आगे ढकेला। तब राजा को एक खिड़की के जँगलों में छिपकर अपना बचाव करना पड़ा। परन्तु वह जल्दी ही वहाँ से बाहर निकला। उसको देखते ही बलवाइयों ने चारों ओर से घेर लिया और उस पर गाली-गलौज की इतनी वर्षा की कि जिसका वर्णन नहीं हो सकता। अब पास के नौकरों को राजा का वैसा ही खड़ा रखना भयंकर मालूम होने लगा।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

अतएव उन्होंने वहीं पर एक मेज़ के ऊपर कुर्सी रक्खी और उस पर राजा को बैठाया। इधर राजा के आसपास और सारे महल में बलवाईगण उपद्रव मचा ही रहे थे। कुछ मनुष्यों ने उन्हें समझाने का बहुत सा प्रयत्न किया, पर सब व्यर्थ हुआ। इस मौक़े पर राजा ने जो सहनशीलता और धैर्य दिखलाया; उसकी एक मुख से प्रशंसा नहीं हो सकती। किसी दूसरे मनुष्य पर यदि ऐसा मौक़ा पड़ा होता तो वह अवश्य घबड़ा उठता, पर राजा सोलहवें लुई ने उस वक्त अपने को खूब सम्हाला। सब लोगों की यही चिल्लाहट मच रही थी कि धर्मोपदेशकों के लिये जो क़ानून बन रहा है उसे स्वीकार करो पर राजा का एक ही जवाब था—'उस क़ानून को स्वीकार कराने का न यह समय है, न यह रीति ही है।" इसी गड़बड़ में एक स्त्री ने राजा के हाथ में एक लाल टोपी* दी और उसे लगा लेने को कहा। राजा ने तत्काल ही टोपी रख ली। उस समय राजा के पास उसकी पलटन का एक विश्वासी सिपाही मौजूद था। वह निकट आकर राजा को धैर्य दिलाने लगा। राजा ने उसका हाथ पकड़ अपनी छाती में रख कर कहा—"देखो, क्या मैं डर गया हूँ?" राजा पर गाली-गलौज की पूर्ववत् वर्षा हो रही थी और वह चुप-चाप सिर नीचा कर सब सहन कर रहा था। निकट के सब लोग देख रहे थे। इनमें एक तरुण मनुष्य था। उसको राजा की यह दशा देखकर बड़ा बुरा मालूम हुआ। उसने धीरे से अपने आप कहा—'इन लोगों का यह उपद्रव क्यों मचने दिया है? इसको दूर करने में देर नहीं लगेगी। अभी गोलियाँ चलाकर पाँच सौ मनुष्य उड़ा दिये जाँय तो कोई एक मनुष्य भी यहाँ

---

*फ्रेंच लोग लाल टोपी को स्वतन्त्रता का चिन्ह मानते रहे हैं।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

खड़ा नहीं रह सकता।" ये वचन जिस पुरुष ने कहे उसी के द्वारा उनके पूरे होने का समय ईश्वर लानेवाला था और वह नवयुवक नेपोलियन बोनापार्ट था।

इस गड़बड़ में एक बात बड़ी अद्भुत हो गई। इससे मालूम होता है कि राजा उस समय अपने को कितना सम्हाले हुए था। वह बात इस तरह है—जब से देश में अशांति फैली थी, राजा अपनी रक्षा का बड़ा खयाल रखता था। कहीं जाना होता तो बड़े इन्तिज़ाम के साथ जाता और कुछ खाता-पीता तो खूब देख भालकर। परन्तु इस गड़बड़ के समय एक स्त्री ने उसे एक गिलास पानी दिया और पीने को कहा। उस ने तत्काल ही उसे पी लिया। उस समय उसके हृदय की जो अवस्था हुई होगी उसका वर्णन कठिन है। राजा ने उस समय पानी पीकर बड़ी बुद्धिमत्ता का कार्य किया। यदि नहीं पीता तो उसी समय उसके टुकड़े टुकड़े कर दिये जाते। मनुष्य कैसा ही क्यों न हो, समय पर उसे अपने को सम्हालना ही पड़ता है।

इस भयङ्कर अवसर पर जैसे राजा ने धैर्य दिखलाया वैसे ही रानी ने भी दिखलाया। जब राजा चारों ओर से घिर गया तब निकट के मनुष्यों ने रानी से बिनती की कि ऐसे मौके में आप यहाँ से हट जाइये। पर रानी ने इस पर ध्यान नहीं दिया। वह बिलकुल नहीं घबराई और कहने लगी—"मुझे किसी बात का भय नहीं। मैं मृत्यु से नहीं डरती। जब एक दिन मरना ही है तब क्या आज और क्या कल! वे मुझे मारेंहीगे तो! बस, मैं मरने के लिए तैयार हूँ। मुझे राजा के पास जाने दो। उनके चरण कमलों के पास ही मरूँगी। ऐसी अच्छी जगह मुझे और कौन मिलेगी!" रानी का यह धैर्य सचमुच प्रशंसनीय है। उसी गड़बड़ के समय राजा की बड़ी

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

लड़की राजा का हाथ पकड़कर उसे एक कमरे से दूसरे कमरे को ले जा रही थी। बलवाइयों ने उस लड़की को रानी समझा और लगे गालियों की वर्षा करने! यह देखकर लड़की ने पास के मनुष्यों से कहा—'मैं कौन हूँ सो उनसे मत प्रकट करना।" यह कहकर उसने सारा अपमान चुपचाप सह लिया। अपने पिता पर आये हुए उस बड़े भारी संकट को देखकर वह बेचारी एक कोने में खड़ी रोती रही और उसका बिलकुल छोटा भाई, जो पास ही स्वतन्त्रता की लाल टोपी लगाये खड़ा था, लोगों की भीड़ की ओर देखकर बीच बीच में हँस देता; क्योंकि उस बेचारे अबोध बालक को यह पता कहाँ कि उसके मां बाप पर कैसा भयङ्कर संकट आया हुआ है। सच है, प्राणियों की अज्ञानावस्था भी बड़ी विचित्र होती है।

अस्तु। लोग इतने बिगड़े हुए थे और दंगा भी कर रहे थे फिर भी उनके हाथों से भयङ्कर कार्यों का कराने वाला कोई मुखिया उन्हें नहीं मिला था; और इधर राज-पक्षपातियों का भी सर्वथा अभाव नहीं था। यही कारण है कि कुछ बुद्धिमान और प्रतिष्ठित मनुष्यों की मध्यस्थी के कुछ प्रामाणिक पुरुषों के प्रयत्न से वह दंगा मिट गया और बलवाई लोग अपने अपने घर चले गये। तथापि लोगों का असंतोष भीतर ही भीतर धधकता रहा और इस विचार के लोगों की प्रबलता बढ़ती गई कि राजा बुरा है और इसी कारण हमारा देश सत्यानाश हो रहा है।

——

छटा अध्याय

मनुष्यों का मन बड़ा विचित्र है। उसमें एक बार जो

Jang...
Acc: No. 2663
CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

बात समा जाती है वह फिर सहमा निकलती राजा को पदच्युत नहीं। मनुष्य में शक्ति है जिसके द्वारा करने के लिए वह कार्य और कारण का सम्बन्ध जान उसपर हमला सकता हैं और उसके द्वारा वह इस जगत् में अनेक महत्वपूर्ण कार्य कर सकता है। फिर भी मन आग्रह के कारण कभी कभी उसकी बिलकुल नहीं चलती। यही दशा इस समय फ्रांश देश के निवासियों के मन की राजा लुई के विषय में. हो गई थी। पीछे की बातों से पाठकों को मालूम हो गया होगा कि इस समय राजा के हाथ में कुछ भी नहीं था। राज-कर्मचारीगण उसे जो देते, वह खाता और उनके इच्छानुकूल चल कर चुप बैठा रहता। यह उसकी हालत थी। इसके सिवा अपने प्राणों और अपने कुटुम्बियों के प्राणों का डर भी उसे सदैव लगा रहता था। इतना होने पर भी वह प्रजाकोप का भोजन अभी बना ही हुआ था। वास्तव में यह राजा अत्यन्त सीधा, निरुपद्रवी और प्रजा के हित के लिये अखंड परिश्रम करने वाला था। फिर भी अधिकांश मनुष्यों का यही आग्रह था कि जब तक राजा पदच्युत न हो जायगा, फ्रांस देश से विपत्ति के बादल न हटेगें। इसके लिए वे सिर-तोड़ परिश्रम भी कर रहे थे। मनुष्य का स्वाभाव है कि जो बात उसके मन में बहुत आती है उसे वह कहे बिना नहीं रहता और यदि कहने मात्र से उसे सन्तोष नहीं होता तो वह उसे किये बिना नहीं रहता। बस यही हाल इस समय फ्रेंच लोगों का हुआ। राजा के पदच्युत करने का शोर मचाते मचाते वे इतने उतावले हो गये कि बिना इसके किये उन्हें चैन न पड़ने लगा और अन्त में उन्होंने कर ही के छोड़ा। उसका हाल इस प्रकार है।

अगस्त् सन् १७९२ की सातवीं आठवीं तारीख से पेरिस में

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

फिर अशांति फैलने लगी। लोग स्थान स्थान पर एकत्र होकर अपनी वर्तमान विपत्ति के विषय में बड़े आवेश के साथ वाद-विवाद करने लगे; और राजा को उसका मुख्य कारण ठहराने लगे। अन्त में सब ने इस विपत्ति से छुटकारा पाने का यही एक उपाय ठहराया कि राजा अवश्यमेव पदच्युत किया जाय। सभी इसके लिए अपनी अपनी शक्ति भर प्रयत्न करने की प्रतिज्ञा करने लगे। इसी बीच में एक रविवार के दिन गिरजा में जो भजन गाये गये उनके अर्थों से और उनके स्वरों से भी राजा को स्पष्ट मालूम हो गया कि अब हम पर शीघ्र ही घोर विपत्ति आनेवाली है। इसलिए वह भी अपने को बचाने की तैयारी में लगा। "स्विसगार्ड" नामक उसके पांच सौ हथियार बन्द सिपाही बड़े पुराने विश्वासपात्र थे उनको उसने अपने महल के चारों ओर पहरे रख दिया। इधर शहर में भी उसे पदच्युत करने की बड़े जोर-शोर के साथ तैयारी हो रही थी। अन्त में वह दस तारीख का दिन आ गया। लोग हाथ में बन्दूक, तलवार, सोंटा, लाठी इत्यादि नाना प्रकार के शस्त्र लेकर महल के चारों तरफ जमा होने लगे और जोर जोर से कहने लगे कि आज राजा को गद्दी से उतारे बिना नहीं रहेंगे। यह सब हाल जब रानी ने खिड़की से देखा तब उसे भी अपनी रक्षा के लिए बड़ा आवेश चढ़ा। उसने बाहर के अपने विश्वासपात्र सिपाहियों को खूब धैर्य दिलाया; और राजा के हाथ में एक छोटी सी बन्दूक देकर कहा—"महाराज, यह बन्दूक लीजिये और अपने सिपाहियों के सहित बलवाइयों पर आक्रमण कीजिए। आप शूर हैं और आपको अपना शौर्य दिखलाने का यह खूब मौक़ा मिला है। अतएव जाइये और शत्रुओं का पराभव कीजिये।" परन्तु राजा सोलहवें लुई से यह हो नहीं सकता था। इसका कारण

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

यह नहीं है कि उसमें इतनी शक्ति नहीं थी; किन्तु बात यह थी कि उसका हृदय यह गवाही नहीं देता था कि वह अपनी उस प्रजा पर, जिसे उसने पुत्र के समान छोटे से बड़ा किया हैं, गोलियाँ चलाता। अतएव उसने रानी को समझाकर बंदूक नीचे रख दी। यह बात सच है कि दयालु पिता का हाथ अपने पुत्र पर नहीं चलता, परन्तु विद्वानों ने यह भी कहा है कि यदि पुत्र अपने अनुचित कार्यों से अपने पिता का और दूसरों का भी सर्वनाश करता हो तो पिता को चाहिये कि उसे वह अवश्य दण्ड दे। यह कार्य उसका कभी निर्दयतापूर्ण नहीं कहा जा सकता। प्रत्युत यह भी एक प्रकार की दयालुता है।

राजा का पलायन, भयंकर मार-काट और राक्षसीपन

अस्तु। राजा जब उन बलवाइयों पर हाथ न उठा सका तब वह अपने कुटुम्ब-सहित प्राणों की रक्षा के लिए नियमकर्तृ-सभा के पास जाने को चला। उस जगह पहुँचने में उसे बड़ी-बड़ी कठिनाइयाँ उठानी पड़ीं। रास्ते में बलवाईगण घूम रहे थे अतएव राजा को भय बना ही हुआ था कि वे कहीं एकाएक आक्रमण न कर बैठें। एक जगह लिखा है कि वहाँ जाते समय ये लोग इतने घबड़ाये हुए थे कि मार्ग में रानी की कोई वस्तु भी खो गई। राजा जब सभा में पहुँचा तो वहाँ कुछ कार्यवाही हो रही थी। राजा सभाध्यक्ष के पास जाकर बैठ गया। पहिले तो किसी ने कुछ नहीं कहा; पर अन्त में अध्यक्ष को स्पष्ट कहना पड़ा कि यहाँ से आपके गये बिना हमारा कार्य सुचारु रूप से सम्पन्न नहीं हो सकता। इस पर राजा पीछे के एक कमरे में जाकर बैठ गया, वह कमरा समाचारपत्रों के संवाद दाताओं के लिये हमेशा खाली रक्खा जाता था। राजा तो सकुटुम्ब वहाँ जाकर बैठ गया, इधर राजमहल में बड़ा अनर्थ

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

होने लगा। राजा के चले जाने के थोड़ी देर के बाद वहाँ तीस चालीस हजार मनुष्य एकत्र हो गये और राजमहल पर आक्रमण कर दिया। राजा के स्विसगर्ड सिपाही बड़े शूर और सच्चे स्वामिभक्त थे। उन्होंने बलवाइयों पर शस्त्रों की खूब वर्षा शुरू की। परन्तु उन्हें जल्दी ही चुप हो जाना पड़ा; क्योंकि उनके पास गोला-बारूद बहुत थोड़ी थी। अब तो बलवाइयों को बड़ा जोश आया। वे धड़ाधड़ राजमहल के भीतर घुस गए और जिसको पाया उसी को मारना शुरू किया। फिर क्या पूछना है! वहाँ यमपुरी का दृश्य दिखाई देने लगा। मुर्दों के ढेर लग गये। रक्त की नदियाँ बह निकलीं। मृत्यु के जितने भयंकर स्वरूप कवियों ने वर्णन किये हैं, वे सब के सब यहाँ दृष्टिगोचर होने लगे। इस समय बलवाइयों ने जो क्रूर कर्म किये उनके श्रवण मात्र से शरीर में रोमांच खड़े हो जाते हैं और मनुष्य प्र णा की उस घोर निर्दयता पर बड़ा खेद होता है। यद्यपि संसार के इतिहास में ढूँढ़ने से ऐसे अनेक घोर प्रसंग मिल सकते हैं; परन्तु इस समय की विलक्षणता यह है कि कवियों ने जिनके हृदय की कोमलता को उनके कुसुमसम कोमल गात के तुल्य ही बतलाया है उन्हीं स्त्रियों के हाथ से भी अत्यन्त भयङ्कर और पाषाण-हृदयता के काम हुए। जो स्विसगार्ड सिपाही धरती पर पड़े तड़फड़ा रहे थे उनके गले उन चंडियों ने अपने हाथों से बड़ी निर्दयता पूवक चर्र चर्र काटे, उनके हृदयों को फाड़ा, कलेजे बाहर निकाले उनकी अन्तड़ियाँ लटकाईं और उनके मांस के कुछ पदार्थ बना उनको तलकर खाया! पास ही एक बड़ा तेल का कढ़ाव आग पर चढ़ा था। उसमें जीवित, अर्द्ध-जीवित, मृत्युप्राप्त छोटे बड़े मनुष्य डालकर तल लिये जाते थे और एकत्रित बलवाईगण बाँटकर खा लेते थे! इससे अधिक

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

क्रूरता और क्या हो सकती है ? उस रोज वहाँ और अन्यत्र शहर में पाँच हजार मनुष्यों के प्राण गये। बहुत सी गलियाँ और सड़कें मुर्दों से भर गई थीं। इन मरे हुए लोगों में करीब दो सौ बलवाई भी थे। उन्हें किसी ने मारा नहीं था; किन्तु वे स्वयं मरे थे। वह इस तरह कि राजमहल में बहुत सी शराब उन्हें मिली, सो उन्होंने पीने में हद कर दी और उसके नशे में जो एक वार सोये, फिर उठे ही नहीं ! जहाँ परमेश्वर की भक्ति और सदाचरण का लोप हो जाता है वहाँ ऐसी भयङ्कर घटनाएँ होने में कोई आश्चर्य नहीं।

उस समय के बलवाइयों की एक बड़ी विचित्र बात किताबों में लिखी है ! वह यह कि जब उन्होंने स्विसगार्डों पर बाहर से आक्रमण किया तब उनमें से कुछ सिपाही प्राण बचाने के लिए पास ही एक संगमरमर के मीनार पर चढ़ गये। उनको मारने के लिए बलवाइयों ने नीचे से गोलों की वृष्टि आरम्भ की। इससे नक्काशीदार सुन्दर मीनार फूटने लगा। बलवाइयों को इससे बड़ा दुख हुआ और गोलों की वृष्टि बन्द करके सिपाहियों को नीचे उतारकर उन्होंने मारा ! ऐसे जोश के समय उन क्रूरों का ध्यान मीनार की नक्काशी पर जाना और उसके बच जाने की इच्छा करना बड़े आश्चर्य की बात है।

राजा फिर कैद

ऊपर यह लिखा जा चुका है राजा अपने बाल-बच्चों के साथ नियम निर्धारिणी सभा के कार्यालय के पीछे एक कमरे में जा बैठा था। अब सभा के और राज्यपक्ष का सामने यह विचार उपस्थित हुआ कि राजा का क्या प्रबन्ध किया जाय। इस विषय में बहुत वाद विवाद के अनन्तर अन्त में यह निश्चित हुआ कि राजा को पदच्युत किया जाय। उसके हाथ से सब अधिकार छीन लिये जाँय और वह कुटुम्ब-सहित एक बड़े

सत्यानाश

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

मजबूत मकान में कैद कर दिया जाय। यह बात जब राजा को मालूम हुई तब उसे बड़ा शोक हुआ; और वह धड़ाम से पृथ्वी पर गिरकर दीन वाणी के बोला—"ईश्वर! तेरी महिमा अपार है। हमारी परीक्षा लेने के लिए तूने हमारे ऊपर यह संकट डाला है। पर है यह बड़ा असह्य। जिन हाथों से तूने हमें इतने दिन तक सुख दिया उन्हीं हाथों से अब तू हमारा यह शासन कर रहा है। धन्य है तेरी लीला!" ऐसा कहकर वह फिर धीरज धरकर उठा और अपने लड़के-बच्चों को साथ लेकर नियत किये हुए कैदखाने में जा रहा। फ्रांस का साम्राट कोई साधारण व्यक्ति नहीं। उसकी बराबरी करनेवाले संसार में दो ह एक मिलेंगे। उस पर ऐसा प्रसंग आया! इससे यह बात अच्छी तरह मालूम हो जाती है कि मनुष्य अपनी स्थिति के विषय में कितना पराधीन है।

इस तरह सैकड़ों मनुष्यों के प्राण गये, हजारों सुन्दर और बहुमूल्य वस्तुओं का नाश हुआ; और अत्यन्त दीन-हीन होकर कुटुम्ब सहित राजा भी कैद हुआ! अब अगस्त मास की दसवीं तारीख व्यतीत हुई और ग्यारहवीं आई। उस दिन सुबह ही राजमहल के पास, जहाँ स्विसगार्डों का खून बहा था, हजारों मनुष्य जमा हुए। उनमें बलवाइयों की ही संख्या अधिक थी। उस समय उनके मन की विचित्र दशा हो रही थी। अर्थात् उस समय तक उस जगह जो कुछ घायल अपनी वेदना से कराहते हुए पड़े थे उनकी ओर देख कर कुछ बलवाइयों को दया आई और वे उन घायलों की सहायता करने को बढ़े; परन्तु बाकी उनके साथी और भी अधिक भयङ्कर क्रूर कर्म करने का विचार कर रहे थे। ऐसी कुछ विचित्र दशा उन लोगों की हो रही थी। यह तो प्रायः सभी ने समझ रखा था कि प्रजासत्ताक राज्य स्थापित हुए

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

बिना हमें सुख और शान्ति नहीं मिलेगी; और इसलिए वे ऐसे प्रयत्न में थे कि 'राजा' का नाम और उसकी श्रेष्ठता का भाव ही लोगों के हृदय से मिटा दिया जाय। बस, उन्होंने राजाओं की सारी मूर्तियां तोड़कर उनका विध्वंस कर डाला उनके महल जला दिये, और राज-पक्षपाती लोगों को सताना आरम्भ किया। उन्होंने उनके घर भी जला डाले उनकी सुन्दर और बहुमूल्य वस्तुएँ तोड़ फोड़कर बाहर फेंक दीं; और उनके लोगों को कैद करके जेलखाने में डाल दिया। राज-पक्ष को जड़-मूल से नष्ट कर देने में उन्हें कितना जोश चढ़ा था, इसका वर्णन करना कठिन है। परन्तु एक दृष्टांत से आपको उसका बहुत कुछ अनुमान हो सकता है। जिस समय सुन्दर और बड़ी बड़ी इमारतों तथा बहुमूल्य वस्तुओं की दुर्दशा वे लोग कर रहे थे उस समय उन्हीं में से एक मनुष्य वहाँ से आ निकला। यह सदय और सहृदय था। अतएव वह दुर्दशा देखकर इसे बड़ा खेद हुआ और स्वाभाविक ही उसके मुँह से कुछ ऐसे-वैसे वचन निकल पड़े. बस फिर क्या था, उसी के पक्ष के बीस पचास भालेवाले उस पर टूट पड़े, और छेद-छेदकर उसे मार डाला! सच है, समय प्रतिकूल होने पर सद्गुण भी दुर्गुण हो जाते हैं और उन्हीं से मनुष्य का नाश होता है।

प्रुशिया का धावा, स्वदेशरक्षा के लिए हलचल

उपर्युक्त घटनाएँ होने के पहिले ही प्रुशिया के राजा ने सोलहवें लुई का पक्ष ग्रहण किया था; और उसे पदच्युत करने का जो लोग प्रयत्न कर रहे थे उनको पराजित करने के लिए अपनी सेना भी रवाना कर दी थी। यूरप के अन्य राजाओं की भी इस कार्य में सहायता थी। अगस्त की दस तारीख को बीते अभी दस दिन भी नहीं हुए थे कि प्रुशिया

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

की सेना ने फ्रांस का लांवी नामक कोटदार बड़ा शहर, जो उसकी बिलकुल सीमा ही पर था, ले लिया। वहाँ से कुछ फ्रेंच भागकर, अपना जी बचाते हुए, पेरिस में आये; और उन्होंने सब कथा सुनाई। उन्होंने कहा कि प्रुशिया की सेना असंख्य है; और उसे जीतना कठिन है। वे बेचारे अत्यन्त दुःखित और शिथिल देख पड़ते थे। उनको देखकर प्रत्येक मनुष्य को दया आनी चाहिये थी; परन्तु पेरिस-वासियों को इस बात का ज़रा भी खयाल न हुआ और वे कहने लगे—"मूर्खो, यदि तुम उस सेना को पराजित नहीं कर सके तो तुम्हें मर जाना चाहिये था। यहाँ क्यों स्त्रियों के समान रोते रोते चले आये!" इससे यह अनुमान किया जा सकता है कि प्रजासत्ताक राज्य स्थापित करने वालों का, अपने पक्ष के लोगों के साथ भी, सहानुभूति का बर्ताव न था।

अस्तु। यह समाचार सुनकर कि प्रुशिया ने लांवी नगर ले लिया, पेरिस-वासियों को बड़ा दुःख हुआ और जिन लोगों ने राज्यसूत्र अपने हाथ में ले रक्खा था, वे बहुत डरे। वे अभी इसी फ़िक्र में पड़े थे कि शत्रु को किस तरह पीछे हटाना चाहिए, इतने में खबर मिली कि दूसरा कोटदार शहर वेडूम भी शत्रुओं ने ले लिया। अब तो वे और भी घबड़ाये। वेडूम के किलेदार ने अपनी शक्ति से अधिक क़िले का संरक्षण किया। अन्त में जब उसने देखा कि किसी तरह भी शत्रुओं के हाथ से बचना कठिन है, तब उसने आत्महत्या कर ली। प्रुशियों की अब बन आई। बिना हाथ-पैर हिलाये उन्हें किला मिल गया। पीछे से पेरिस-निवासियों ने उस क़िलेदार की वीरता के स्मारक में पत्थर का एक चबूतरा बनवा कर यह खुदवाया—"इस वीर पुरुष ने ज़ुल्मी राजा का शासन स्वीकार नहीं किया—मृत्यु को स्वीकार किया।" इधर जिस फ्रेंच सरदार की अधीनता से लांवी नगर शत्रुओं के हाथ

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

लगा था, उसकी स्त्री ने एक बड़ी सभा करके एक निबन्ध पढ़ा। उसमें उसने यह दिखलाने का प्रयत्न किया कि मेरे पति की जो हार हुई उसका कारण यह नहीं है कि उसने प्रबन्ध में कमी की या उसमें वीरत्व का अभाव था; किन्तु उसके हारने के दूसरे कई कारण हैं। उस निबन्ध को सुनकर उसी सभा के अध्यक्ष ने उस स्त्री से कहा—'श्रीमती जी, आप अपनी सफाई देने का व्यर्थ कष्ट न उठाइये। आपके पति का सारा हाल लोगों को मालूम हो चुका है। वे सच-झूठ आप तालाश कर लेंगे। जो बात सच होगी वह आप मालूम हो जायगी। यदि आपके पति को फ्रांस देश का सच्चा अभीमान होता तो वह वहीं पर मर गया होता।"

यह मालूम होने पर कि प्रुशियन लोग सीधे पेरिस की ओर बढ़ रहे हैं और कितने ही देशों के लोग उनके सहायक हैं पेरिस, में हलचल मच गई और सब के सब राजधानी की रक्षा करने की तैयारी में लगे। स्थान स्थान पर सभाएँ की गईं और भविष्य की कार्यवाई के विषय में विचार किया गया। अपने देश के गौरव की रक्षा के लिए लोगों में बड़ा आवेश चढ़ आया। पेरिस के चारों तरफ कोट के आसपास एक बड़ी भारी खाई खोदने का निश्चय हुआ और इस कार्य का प्रबन्ध करने के लिये बारह मनुष्यों की एक कमेटी बनाई गई। पुरुष तो देश रक्षा की तैयारी करने ही लगे; पर इस समय स्त्रियों को भी बड़ी स्फूर्ति हुई। वे आप ही आप पहरे का काम करने के लिए तैयार हो गईं। भजन-मन्दिरों के बड़े बड़े घंटे गलाकर उनसे तोपों के गोले और बन्दूकों की गोलियां ढाली गईं। जिधर देखिये उधर ही गली गली में स्वतन्त्रता देवी की स्तुति के गान होने लगे। बड़े बड़े घरों की स्त्रियां गिरजाघर में जाकर बैठने लगीं। सो परमेश्वर की प्रथना और स्तुति के लिये नहीं; किन्तु लड़ाई पर जानेवाले सिपाहियों और अफसरों के लिये कपड़े तैयार करने के लिए।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

इधर तो शत्रुओं के साथ लड़ने के लिए सेना भेजने की पूरी तैयारी हो रही थी, उधर राज पक्षपाती और प्रजासत्ताक राज्य के पक्षपातियों में बड़े बड़े झगड़े पेरिस और अन्य स्थानों में हो ही थे। अधिकांश जनसमुदाय की सहानुभूति प्रजासत्ताक राज्य की ओर थी। अतएव हमेशा यही विचार होता रहता था कि किस उपाय से इन राज पक्षपातियों का समूल नाश हो जाय। डाँटो नामक एक बड़ा उद्योगी पुरुष उस समय था।

प्रजासत्ता राज्य के पक्षपाती डाँटो का उत्तेजना पूर्ण भाषण और राजपक्ष के साथ अनर्थ

यह बड़ा व्याख्याता गम्भीर षडयन्त्री और प्रजासत्ताक राज्य का तो पूर्ण पक्षपाती था। उस समय पेरिस में लोगों के दो दल हो गये थे। एक की राय थी कि शत्रु यहाँ न आने पावे, उस पर अभी से सेना भजी जावे और उसका पराभव किया जावे। दूसरा दल कहता था—नहीं, शत्रु को यहाँ पेरिस तक आने दो। फिर उस पर एकदम आक्रमण करके उसको पीछे हटाते हुये भगा दो। इस विषय को लकर डाँटो ने लोगों की एक बड़ी सभा में भाषण किया। उसका तात्पर्य यह है कि "महाशयो, आप लोगों को मैं क्या बतलाऊँ, आप स्वयं बुद्धिमान हैं। फिर भी मैं इतना कहे बिना नहीं रह सकता कि यदि आप पेरिस को छोड़कर शत्रु के साथ लड़ने को आगे बढ़ेंगे और यदि इधर सूने में शत्रु ने पेरिस पर कब्जा कर लिया तो बस समझिये कि सारा फ्रांस उसके अधीन हो गया। आप लोग पेरिस ही को फ्रांस देश समझिये और यही रहकर उसका संरक्षण कीजिये। पेरिस से निकलकर चलने का विचार मुझे किसी तरह स्वीकार नहीं। दस तारीख के दंगे से लोगों में दो दल हो गये हैं। पहला राजपक्षपाती, दूसरा प्रजा सत्ताक राज्य का पक्षपाती। इनमें पहिले पक्ष की अपेक्षा

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

दूसरे पक्ष के लोग बहुत कम हैं। अर्थात् प्रजासत्ताक राज्य की स्थापना के लिये प्राण देनेवाले बहुत ही थोड़े हैं और उन्हीं पर हमारा सारा दारमदार है। यह बात तो जानी हुई है कि विरुद्ध पक्ष के लोग हमें कभी सहायता देंगे ही नहीं, प्रत्युत वे इस बात का प्रयत्न करेंगे कि हमारे पक्षवालों का सवस्त्र नाश हो जाय। इसके लिए वे जनसाधारण को भड़कावेंगे और न जाने क्या क्या उपाय करेंगे। एक ओर से शत्रु आवेगा और दूसरी ओर ये लोग उभड़ेंगे। ऐसी दशा में हमारे लिए सिवाय मरने के और कोई गति न रहेगी। शत्रुसेना आ रही है, इसमें सन्देह नहीं। यदि उसने हम पर हमला किया और उसकी जीत हुई तो हमारा और हमारे पेरिस का नाश ही समझिये। और यदि सौभाग्य से हमारी जीत भी हो गई तो भी उससे हमें पराजय के समान ही दुःख होगा। क्योंकि युद्ध में अवश्य ही हमारे पक्ष के बड़े बड़े सरदार मरेंगे और हमारा पक्ष, जो पहिले ही निर्बल है, और भी अधिक निर्बल हो जायगा। इधर राजपक्ष में कुछ भी कमी न होगी। फिर बतलाइये, उस हीनावस्था में क्या वे हमको चैन लेने देंगे। कभी नहीं। इसलिए हम लोगों को ऐसा कोई उपाय करना चाहिए जिससे राजपक्ष पर हमारा रोब पूरा पूरा जम जाय और वे हमसे थरथर कांपने लगें।" डांटो के ये वचन सुनते ही, उसका मतलब समझकर, लोग कुछ आपस में कानाफूसी करने लगे, तथा कुछ व्यग्र से होते देख पड़े। इस पर उनकी ओर देखकर डांटो फिर बोला—"नहीं नहीं, इसमें कोई सन्देह नहीं, जब तक आप राजपक्षपातियों में इतनी दहशत न बैठा देवें कि वे आपको देखकर थरथर कांपने लगें, तब तक काम नहीं होगा। यह निश्चय जानिये।" डांटो के भाषण का भयंकर तात्पर्य्य लोग

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

तत्काल ही समझ गये। राजपक्षपातियों पर, और उन पर भी जिनके राजपक्ष में शामिल होने का सन्देह था, एकदम बड़ी भारी आफत आगई। सब पकड़-पकड़कर जेलखाने में ठूंस दिये गये। उनका सारा घर-द्वार लूट लिया गया। साथ ही यह निश्चय किया गया कि इनकी तहकीकात की जायगी और इन्हें उचित दंड दिया जायगा। इस तरह अगस्त मास के अन्तिम तीन दिवसों में करीब पाँच हज़ार मनुष्य, राज-पक्षपाती होने के अभियोग में, हवालात में डाल दिये गये। पेरिस के सारे जेलखाने इन लोगों से भर गये।

इस तरह इधर पेरिस में तो घर-पकड़ का कार्य जारी था,
उस तरफ प्रुशियन सेना धड़ाके के साथ आगे
डांटो के उत्तेजक बढ़ रही थी। उनके साथ लड़ने का भी योग्य
विचार और पक्ष- प्रबन्ध किया जा रहा था। इस समय सारा
पातियों के भयंकर कारबार डांटो के हाथ में था उसी की राय से
वध का प्रारम्भ सब काम होता था। पेरिस में हलचल मच
गई थी और भविष्य के लिए सब डर रहे थे।

इस समय डांटो ने राज्य-प्रबन्ध-कारिणी सभा के सम्मुख इस तरह भाषण किया—'महाशयो, कुछ लोग तो शत्रुओं के साथ मुक़ाबिला करने को देश की सीमा पर चले गये हैं, कुछ लोग शहर के चारों ओर खाई खोदने के कार्य में व्यस्त हैं; और कुछ लोग हाथ में बरछी लेकर शहर के संरक्षण के लिए उद्यत हो रहे हैं। परन्तु इतने ही से क्या होता है! हमें तो समस्त देश पर नज़र रखनी चाहिए। केवल राजधानी की रक्षा कर लेने ही से कार्य सिद्ध नहीं होगा। हमें तो देश के प्रत्येक प्रान्त में कुछ अधिकारियों को भेजकर ऐसी तजवीज करनी चाहिए, जिससे जैसे पेरिसवासियों को आवेश चढ़ा हुआ है, वैसे ही सारा देश आवेशपूर्ण हो जाय। देश का प्रत्येक मनुष्य, अपनो

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

शक्ति के अनुसार, शास्त्रास्त्रों से सुसज्जित होकर शत्रु का मुक़ाबिला करने को तैयार रहे। इस आशय का एक घोषणापत्र भी जारी किया जाय और जो उसका उल्लंघन करे उसे मृत्यु का दंड दिया जाय। जब इस तरह उद्योग होगा तभी कार्य सिद्ध होगा। अन्यथा क़भी होने का नहीं।" डांटो यह कह ही रहा था कि इतने में तोपों की भयंकर गर्जना कानों में पड़ी। फिर वह बोला—"तोपों की इस ध्वनि को सुनकर आप लोग भयभीत न हों। शत्रु के साथ मुक़ाबिला करने को जो सेना सज्जित होकर चलनेवाली थी उसके आगे बढ़ने की सूचना देनेवाली ये तोपें छूट रही हैं। भाइयो! तोपें शत्रु का नाश करने और अपने देश की रक्षा करने के लिये जा रही हैं। बस अब केवल एक बात की जरूरत रह गई कौन-सी, आप जानते हैं? वह है वीरता। बस इसके होने से फ्रांस देश की रक्षा अवश्य होगी। इसमें संदेह नहीं।" यह वक्तृता समाप्त होते ही सभों ने डांटों की तजवीज़ मंजूर की और देश भर में उसका प्रबन्ध करने के लिए बारह मनुष्यों की एक कमेटी बना दी गई। कमेटी को सब प्रकार का अधिकार दे दिया गया और उसका प्रधान डांटो बनाया गया।

इधर तो यह तैयारी हो रही थी, उधर शत्रु पर धावा करने के लिये जानेवाली सेना की तोपों की गड़गड़ाहट और रणवाद्यों की ध्वनि से दशों दिशाएँ गुंजायमान हो गई थीं। पेरिस में स्थान स्थान पर भिन्न भिन्न पक्षों की सभाएं होने लगीं और नाना प्रकार के वाद-विवाद होने लगे। सर्व-सधारण लोग ये सब हलचलें देखकर भयभीत हुए। राजा लुई और उसके कुटुम्बीजनों को भी कम घबड़ाहट न हुई। क्योंकि भावी अनर्थ के विषय में बहुत कुछ अनुमान उन्हें हो गया था। प्रुशियन सेना का पराभव करने के लिए उधर सेना

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

रवाना हुई और इधर नगर का बन्दोबस्त रखने के लिए भयंकर उपायों का प्रारम्भ हुआ। उस दिन सितम्बर महीने की दूसरी तारीख थी। राजपक्षपाती होने के अभियोग पर अगस्त के अन्त में जो हजारों लोग हवालात में डाल दिये गये थे उनकी जाँच करने के लिए एक न्याय सभा हुई और उस सभा के नियत किये हुए दंड को अमल में लाने के लिए तीन सौ हथियारबन्द लोग तैयार हुए। वे साक्षात् यम के स्वरूप थे, और उन्हें इस कार्य के लिए इनाम भी देने का निश्चय किया गया था। यह न्याय का तमाशा जिस जगह होने को था उस जगह प्रजासत्ताक राज्य के पक्षपाती हजारों लोग जमा हुए थे। उनका क्रोध भड़काने के लिए और प्रतिपक्षियों के नाश के लिए उन्हें तैयार करने को अनेक बड़े बड़े वक्ताओं ने वहां भाषण किये। इस कारण उन लोगों को ऐसा जोश आया कि वे भयंकर क्रूर कर्म करने के लिए तैयार हो गये।

दूसरी सितम्बर को तीन बजे रात से इस भयंकर कृत्य का प्रारम्भ हुआ। पेरिस में आवे नाम का एक कैदखाना था। वहां से इस कार्य का श्रीगणेश हुआ। रात के दो-तीन बजे के करीब हजारों लोग वहाँ जमा हो गये और तीन सौ हथियारबन्द मनुष्यों के साथ न्यायाधीस मौलार्ड की सवारी संग में बहुत सी मसालें लिये हुए वहाँ आ पहुँची। न्याया धीश आसन पर विराजमान हुए। उनके सामने मेज पर एक नंगी तलवार रक्खी हुई थी और उनके आसपास हाथ में नंगी तलवारें लिये बहुत से लोग खड़े हुए थे। पहले वहाँ चौबीस धर्माकारी छः गाड़ियों पर बिठाकर लाये गये। इनका अपराध यही था कि वे प्रजासत्ताक राज्य की शपथ न लेने के कारण राजपक्षपाती समझे गये थे। उन पर प्रजासत्ताक

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

राज्य के पक्षपाती लोग इतने क्रुद्ध थे कि उनको उन्होंने न्यायाधीश के सामने जाने का अवसर ही न दिया और बीच ही में उन्हें गाड़ियों से बाहर खींचकर भालों से भोंक भोंककर तथा तलवारों की वारों से मार डाला। बस यहीं से भावी भयंकर कतल का प्रारम्भ हुआ।

क्रूरता और राक्षसी पन के दृष्टान्त

उन धर्माधिकारियों के भयंकर कोलाहल को सुनकर जेल खाने के कैदियों का हृदय कांप उठा; क्योंकि उन्हें मालूम हो गया कि अब हम इस संसार में घड़ी दो घड़ी के मेहमान रह गये हैं। यही नहीं; किन्तु उन्हें यह भी निश्चय हो गया कि हमें भी अब अत्यन्त दुःसह वेदना सहकर मरना पड़ेगा। ऐसा ही हुआ। धर्माधिकारियों के कतल के बाद वे भी वहाँ से बाहर निकाले गये और न्याय का स्वाँग दिखाने के लिए एक एक, दो दो करके न्यायाधीश के सन्मुख लाये गये तथा बात की बात में वहाँ से लौटाये गये; और बकरों की तरह कलेजा चीरकर हलाल कर दिये गये! यही हाल पेरिस के सब कैदखानों में हुआ। वहाँ मुर्दों के ढेर लग गये और रक्त की नदियाँ वह निकलीं। तलवार, बरछी, भाला, कुल्हाड़ी, आदि जितने प्राणघातक अस्त्र हैं, उन सब का उपयोग उस समम उन क्रूरों ने किया। जितने मनुष्य कैद किये गये थे, वे सब के सब राजपक्षपाती नहीं थे। उनमें से बहुतेरे ऐसे थे जो सर्वथा निष्पक्ष थे। इन लोगों ने अपनी निर्दोषिता प्रमाणित करने की बड़ी चेष्टा की। किन्तु जहाँ अन्याय ने अवतार धारण किया था वहां बेचारे सत्य की क्या चल सकती थी! उन बेचारों के कथन पर किसी ने ध्यान नहीं दिया; और उन पोषण हृदय लोगों ने उनको भी तड़फातड़फाकर मार डाला। इन अनर्थ का वर्णन करते हुए बड़े बड़े

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

ग्रन्थकार थक गये हैं, फिर साधारण लिखने वालों की क्या कथा! परन्तु उस समय की स्थिति का अनुमान कराने के लिए दो-एक बातें लिखना आवश्यक है। जब कैदी लोग कैद-खाने से बाहर लाये गये, तब उनमें से कुछ लोग तो यह समझ-कर कि अब हमारे प्राण बचने के नहीं, वहीं पर अधमरे से हो गये। परन्तु शेष धैर्यवान् लोगों में एक मनुष्य बड़ा साहसी और दृढ़ था। उसने आगे बढ़कर अपने साथियों से कहा—"मित्रो! आज मरना तो है ही। फिर देर क्यों करते हो! आओ मरो। देखो, मैं आरम्भ करता हूँ।" यह कहकर वह अकेला हथियारबन्द मनुष्यों की भीड़ में घुस गया। लोगों ने बात की बात में सैकड़ों आक्रमण करके उसे क्षण भर में मार डाला। इस घटना से इस बात का अनुमान किया जा सकता है कि उस समय उन पाँच-छः हजार कैदी मनुष्यों के हृदय की कैसी अवस्था हुई होगी। संसार में जितने दुःख हैं, उन सब से भयानक मृत्यु है। यह जानकर भी जब मनुष्य आप ही आप मृत्यु की गोद में जाने को तैयार हो जावें, तब समझना चाहिये कि वे उससे भी अधिक किसी भयङ्कर दुःख हैं। यह बात तो कैदियों की हुई। अब बाहरी क्रोधान्ध शस्त्र-धारियों का कुछ हाल सुन लीजिए। इन्हें मनुष्यों को मार डालना इतना ही सुलभ जान पड़ता था जितना किसी जूं को मारना! किसी की छाती में भाला भोंककर उसका कलेजा निकालना अथवा किसी के सिर को उड़ाकर उसे भाले की नोक पर नचाते फिरना तो इनके बाँयें हाथ का खेल था। यही नहीं; किन्तु जब पीछे वाले बधिकों ने यह झगड़ा किया कि सिर्फ आगेवा ों को ी अपनी तलवारों से मनुष्य काटने का अवसर मिलता है और हमें बिलकुल नहीं मिलता, तब यह निश्चय हुआ कि आगवाले सिर्फ़ उलटी तलवार से

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

क़ैदियों को एक एक घाव मारकर फिर बाद को पीछेवालों की इच्छा-पूर्ति के लिए उनके सिपुर्द करते जाँय! इस तरह यमराज का दरबार लगा था। वहीं कुछ स्त्रियाँ भी खड़ी हुई थीं। उन्हें कतल का दृश्य साफ़-साफ़ दिखाई नहीं देता था। इसलिए उन्होंने न्यायाधीश से इस बात की शिकायत की। इस पर न्यायाधीश ने उनके बैठने के लिए वध स्थान के निकट कुछ बेंच डलवा दिये; और बध का दृश्य अच्छी तरह दिखाने के लिए और बहुत सी मसालें लगवा दीं। कवि लोग यह कहते हैं कि स्त्रियों का हृदय कुसुम से भी कोमल होता है। यह सिर्फ़ कल्पना मात्र जान पड़ती है। अथवा यों कहिये कि कविता और इतिहास में जो अन्तर बतलाया जाता है, वह यही है!

इस अनर्थ का पूरा पूरा वर्णन करना मनुष्य के लिए कठिन है और उससे कुछ बहुत लाभ भी नहीं। तथापि जिन बातों के मनुष्य प्राणी की विचित्रता और पाषाण हृदयता का पता चलता है उनमें से कुछ बातों का यह बतलाना हमें उचित जान पड़ता है। जेलखाने में जो अभागी मनुष्य कैद किये गये थे, उनमें मोडी मायसेली नाम की अठारह वर्ष की एक परम सुन्दरी भी अपने पिता के साथ क़ैद थी। जब लोग उसके बाप को बाहर लाकर मारने लगे तब वह सुन्दरी दौड़ते दौड़ते आई और पिता की देह पर गिरकर बोली, पहिले मुझे मार डालो, फिर मेरे बाप को मारो। यह देखकर हत्यारे लोग कुछ ठिठक से गये; और परस्पर एक दूसरे का मुँह ताकने लगे। इतने में एक मनुष्य हाथ में रक्त भरा प्याला लेकर आगे आया और उस युवती से बोला—"सुन्दरी, यदि तू इस रक्त को पी ले, तो हम तेरे बाप को जीवदान दें। यह रक्त राजपक्षपाती मनुष्य का है।" यह सुनते ही उस स्त्री ने तुरन्त

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

प्याला हाथ में लेकर रक्त को पी लिया; और इस तरह अपने पिता को बचा लिया.! एरीज के धर्माध्यक्ष को भी इन दुष्टों ने बड़ी निष्ठुरता के साथ मारा। जब यह वधस्थल पर लाया गया, तब उसने कहा—"मैंने आज तक किसी मनुष्य का जी नहीं दुखाया है।" यह सुनते ही एक साथ तलवार के तीन-चार आक्रमण उस पर हुए। एक तलवार तो उसके पेट में ऐसी घुसी कि वह वहीं रह गई, सिर्फ उसकी मूठ सिपाही के हाथ में रही! रोमन और एलेकजेन्ड्री नामक दो राजपक्षपाती धर्माधिकारी भी प्रजासत्ताक पक्ष के साथ मिलकर तत्सम्बन्धी शपथ न लेते थे। इस पर रोमन तो दूसरी तारीख को जीता ही जला दिया गया। उसकी इस दुर्दशा को देखकर एलेक्ज़ेन्ड्री शपथ लेने को तैयार हुआ; पर उसकी किसी ने न सुनी; और वह भी जलती हुई होली में डाल दिया गया। इतना ही करके वे चांडाल सन्तुष्ट नहीं हुए किन्तु जब वह उस जलती हुई आग में हाथ-पैर फटफटाकर कह रहा था कि "मुझे निकालो, मुझे निलालो" तब उसके प्यारे नाती से उस आग में और लकड़ियाँ डलवाई गईं; और फिर भी प्राण निकलने के पूर्व अधमरा उसे बाहर निकालकर उसके मरने तक उसके कष्टों का लोग तमाशा देखते रहे! इस अधमता का भी कहीं ठिकाना है! इसी प्रकार अत्यन्त भयङ्कर रीति से लगभग पाँच हजार मनुष्य प्राणों से हाथ धो बैठे।

राजा पर संकट, राजकुटुम्ब का परस्पर वियोग और

इन अनर्थों का निवारण करने के लिए कितने ही दयालु, विचारवान् और अनुभवी पुरुषों ने कुछ उपाय किये थे; किन्तु उन्हें सरलता प्राप्त नहीं हुई। कारण इसका यह था कि ऐसे मनुष्यों की संख्या बहुत थोड़ी थी। नियमनिर्धारिणी

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

उसकी दुर्दशा सभा ने भी कुछ प्रबन्ध करने का प्रयत्न किया; पर जब उसकी भी किसी ने न सुनी तब वह भी चुप हो गई। इतने मनुष्यों की हत्या हुई, फिर भी लोगों की अशान्ति, अविश्वास, और सब से अधिक राज-द्वेष, ज्यों का त्यों था। जब यह बिलकुल तै हो गया कि नियम-निर्धारिणी सभा से राज-प्रबन्ध नहीं हो सकता तब "नेशनल कन्वेंशन" अर्थात् "राष्ट्रीय परिषद" नामक एक दूसरी नई सार्वजनिक सभा की स्थापना की गई, और उसने राज्य-प्रबन्ध का कार्य अपने हाथ में लिया। विदेश भागने वालों के लिए इस सभा ने सख्त कानून बनाया; और देश में शांति स्थापन करने के अन्य भी बहुत से उपाय किये; पर कुछ नतीजा नहीं निकला। इस समय राजा यद्यपि अपने बाल बच्चों सहित कैद में था और राज-प्रबन्ध में उसका हाथ बिलकुल नहीं था, फिर भी लोग बराबर यही शोर मचा रहे थे कि जब तक उसका नाश नहीं किया जायगा, देश की दुर्दशा नहीं मिटेगी। इङ्गलैंड के राजा पहले चार्ल्स के वध की आख्यायिकाएं लोग यंत्र-तंत्र बड़े चाव से पढ़ते थे।

राजा कैद में था। तथापि घर के सब लोग साथ ही रहने के कारण, उस दुख में भी, वे सब आनन्द मानकर रहते थे। राजमहल के सदृश वहाँ भोग-विलास की सामग्री प्रस्तुत नहीं थी, फिर भी जो कुछ थोड़ी बहुत थी उसी में वे संतुष्ट थे। राजा, रानी और लड़के के साथ बैठकर भोजन करते राजा अवसर पाने पर पुस्तकें पढ़ता, रानी अपनी बड़ी लड़की के साथ सिलाई-बुनाई में अपना समय बिताती; और छोटा लड़का मुसकराता हुआ इधर-उधर फिरता तथा सब के साथ हँसता-खेलता। इससे उन सबको बड़ा आनन्द रहता

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

था; परन्तु इस प्रकार उनका रहना भी विरुद्ध पक्ष वाले देख न सके। थोड़े दिनों के बाद उन्होंने राजा की पुस्तकें रानी और उसकी बेटी के सीने-बुनने की सामग्री उनसे छीन लीं और यह कहला भेजा कि "अब बहुत जल्द तुम सबको अलग अलग जेलखाने में रक्खा जायगा।" यह सुनते ही उनके प्राण सूख गये और सब ने जान लिया कि अब हमारी मृत्यु निकट आ गई।

अब उन्हें अलग अलग कैद कर रखने का समय आ गया वह हुक्म सभा के लोगों ने जिस समय जाकर राजा से बताया उस समय वह अपने बाल-बच्चों सहित भोजन के लिए बैठा था। ये शब्द सुनते ही राजा, रानी और उसकी लड़की के नेत्रों से अविरल अश्रुधाराएँ बह चलीं और जैसे अन्तिम भेट हो, उसी प्रकार अत्यन्त दुःखित हृदय होकर वे सब परस्पर एक दूसरे की ओर करुण भरी दृष्टि से निहारते हुए स्तब्ध रह गये! उनकी उस समय की हृदयद्रावक दशा का वर्णन किया नहीं जा सकता। सब प्रकार से सुख भोगे हुए राजकुल के मनुष्य वे थे। उन पर ऐसा मौका आया। इससे अधिक दुःखदायक बात और क्या हो सकती है? उसमें एक बात यह थी कि छोटे लड़के को राजा के ही पास रखा जाय। इससे राजा को कुछ धीरज हुआ। अस्तु। थोड़ी ही देर में सब अलग अलग कोठरियों में बन्द किये गये। उन पर सख्त पहरा बैठाया गया। उस समय उनके लिए किसी प्रकार के मनोरञ्जन की बात तो जाने ही दीजिये—राजारानी और उनके बच्चे जो कपड़े शरीर पर पहने थे उनको गांठने के लिए सामग्री तक उनके पास न थी। वे बिलकुल फट गये थे और ऐसे मैले हो गये थे कि देखे नहीं जाते थे। फ्रांस के सम्राट की यह दशा! ईश्वर, तेरी लीला नहीं जानी जाती!

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

खैर, कुछ दिन में भोजन के समय परस्पर मिलने की आज्ञा उन्हें हो गई। जब वे एक साथ मिलकर, परस्पर एक दूसरे का आलिंगन करते, तब पास के पहरेदारों का भी कालेजा पसीज उठता और कभी कभी वे आँसू तक बहाने लगते। सच है, ऐसे राजकुलोत्पन्न लोगों की ऐसी दशा देखकर भी जिसका हृदय द्रवित न हो वह मनुष्य नहीं कहा जा सकता।

राजा पर मुक़दमा चलाया गया

अन्त में यह बात तय हुई कि राजा सभा के सन्मुख लाया जाय और उस पर मुकद्दमा चलाया जाय। राजा को इस बात की सूचना देने के लिए एक मनुष्य जेल की कोठरी में गया। उस समय वह अपने छोटे बच्चे को कुछ सिखा रहा था। उस मनुष्य ने जाकर कहा कि सभा के सम्मुख तुम्हारी तहकीकात होगी। तुम्हें उस वक्त वहाँ हाज़िर होना चाहिए। यह सुनते ही राजा ने उसकी ओर देखकर कहा—"अच्छा, अन्त समय में कुछ देर मेरा यह लड़का यदि तुम मेरे पास रहने दोगे तो मैं तुम्हारा बड़ा कृतज्ञ होऊँगा। उस सभा की आज्ञा मानने को मैं तैयार हूँ, पर इससे यह न समझना चाहिए कि मैं उस सभा को नियमानुकूल समझता हूँ। किंतु लाचारी से, विवश होकर, मुझे उसकी आज्ञा माननी पड़ती है।" यह जानकर कि इस प्रकार राजा की तहकीकात होने वाली है, रानी और उसकी बेटी एलिजाबेथ को बहुत ही दुःख हुआ। एलिजाबेथ ने तो साफ़ साफ़ कह दिया कि जो जो संकट आने वाले हों, आने दो। रानी और मैं उन्हें सहने को तैयार हूँ। राजा के साथ ये लोग कैसा बर्ताव करनेवाले हैं; तो सब मुझे स्पष्ट देख पड़ रहा है। वह जब से राजगद्दी पर बैठा है, बराबर रात दिन प्रजा को सुखी रखने का यत्न करता रहा है, तिस

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

पर भी ये चांडाल उसका प्राण ले रहे हैं, खुशी से लेने दो! इन्होंने देश को बिगाड़कर उसका कितना सत्यानाश किया है! राजा धर्मात्मा है और परमेश्वर की दया पर उसका पूर्ण विश्वास है। यही अन्त समय उसके काम आवेगा। अरे क्लेरी, (यह उसका नौकर था) हम सब जाते हैं। मेरे प्यारे छोटे भाई के साथ तू अकेला रहेगा। उसको रख। अब उसको सम्हालने वाला तेरे सिवाय कोई नहीं है।"

दिसम्बर की ग्याहरवीं तारीख तहकीक़ात के लिए नीयत हुई। उस दिन सभा बैठी और उसने राजा को बुलवा भेजा। वह अपने कैदखाने से गाड़ी में बैठकर चला। उसके आगे-पीछे पैदल, सवार और बहुत सी तोपों की गाड़ियाँ चल रही थीं। इस जलूस को देखने के लिए पेरिस के हजारों आदमी एकत्र हुए थे। कितने ही विचारवान् पुरुष नीची गर्दन किये, बहुत दुःखित, जगह जगह खड़े थे। सभा-स्थान में पहुँचते ही राजा को आगे खड़ा किया गया। आस पास हजारो लोग वहाँ खड़े थे। परन्तु किसी के मुँह से बोल न निकलता था। सब चित्र की तरह राजा और सभा की ओर देख रहे थे। राजा को अपने सामने खड़ा देखकर सभापति बारीरी उससे बोला—"लुई! फ्रेंच लोगों ने तुझ पर मुकदमा चलाया है। कौन कौन से अभियोग तुझ पर हैं, अब मैं तुझे बतलाऊँगा। अरे लुई! खड़ा क्यों है! बैठ जा।" यह सुनकर राजा बैठ गया। राजा उस समय बिलकुल शान्त था। तिल भर भी नहीं घबड़ाया था। परमेश्वर की दया और न्याय पर उसे पूरा विश्वास था; और यह उसी के चेहरे पर इतना स्पष्ट झलकता था कि जो उसे सताने के लिए पहले से तैयार थे और जो बहुत शीघ्र उसका शिरच्छेद कराने के लिए प्रयत्न कर रहे थे, उन पाषाण हृदय पुरुषों के

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

नेत्रों से आँसू टपक पड़े।

राजा पर जो अभियोग थे, उसे पढ़कर सुना दिये गये और उससे पूछा गया कि इनके विषय में तुम्हारा क्या कहना है। राजा ने अपनी ओर से बोलने के लिए वकील करने की आज्ञा मांगी। सो उसे मिल गई। इसके बाद २६ दिसम्बर की तारीख बढ़ाकर सभा विसर्जित हुई। राजा फिर कद-खाने में वापस लाया गया। इतने में में किसी ने आकर उससे कहा कि अब यह आज्ञा हुई है कि आगे से तुम्हारे घर के लोग तुमसे न मिलने पावें। यह सुनकर राजा को बड़ा खेद हुआ। वह उसकी ओर देखकर बोला—"अरे और किसी को न सही, तो क्या मेरे छोटे बच्चे को भी मुझसे न मिलने दोगे! अरे अब मेरा बच्चा भी अब मुझे दखने को नहीं मिलेगा! ऐसी निर्दयता! भला उस छोटे बच्चे ने क्या बिगाड़ा है, जो उसे भी मेरी आँखों से ओटकर दिया! बस यही न, कि अब मेरा प्यारा बच्चा भी मुझे देखने को न मिलेगा! अच्छा परमेश्वर की इच्छा!" उस दिन रात को जब साढ़े आठ बजे; और उस लड़के के सोने का समय आया तब राजा पास के लोगों से बोला—"अरे अब क्षण भर देख कर मुझे उसे आशीर्वाद देने दो!" परन्तु जब उसकी यह बात भी किसी ने नहीं सुनी, तब लगभग दो घंटे तक वह अत्यन्त विलाप करता रहा। परन्तु तुरन्त ही फिर अपने को सम्हालकर वह एक धर्म सम्बन्धी पुस्तक पढ़ने लगा, जिससे उसके चित्त को बड़ी शान्ति मिली। यह उसका अन्तिम शोक था। अर्थात् फिर उसने इतना शोक कभी नहीं किया। राजा ने एक बार फिर सभा से प्रार्थना की कि उसे अपने परिवार के मनुष्यों से मिलने का हुक्म दिया जाय। इस पर आज्ञा हुई कि नीरा से अब भेंट न होगी। हाँ; यदि बच्चोंको

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

तुम पास रखना चाहते हो, तो रख सकते हो। सो भी इस शर्त पर कि जब तक तुम्हारी तहक़ीक़ात ख़तम न होगी, वे रानी के पास न जा सकेंगे। इस आज्ञा को सुनकर राजा ने विचार किया कि बच्चों को निकट रखने की जितनी आवश्यकता मुझे है, उतनी ही आवश्यकता रानी को भी है। प्रत्युत. उसको तो कुछ अंशों में और भी अधिक है। इसलिए उसने बच्चों को रानी ही के पास रहने दिया और स्वयं यह समझकर कि परमेश्वर जो कुछ करता है, हमारे भले के लिए करता है, वह दुःसह वियोग, तिलभर भी न डगमगाते हुए, सहन किया।

ऐसे मौक़े में राजा का वकील कौन हो, यह बड़ी मुश्किल आ पड़ी। क्योंकि कोई जान बूझकर राजा का पक्ष लेकर आफत में पड़ना नहीं चाहता था। परन्तु इस बात में सभा की सम्मति थी। इसलिए राजा की वकालत करना कोई डर की बात नहीं थी। यही सोचकर राजा का पुराना मित्र मालजेर्ब वकालत के लिए खड़ा हो गया। यह अत्यन्त वृद्ध था। राजा ने इस पर अनत उपकार किये थे। जब वह राजा से मुलाकात करने गया तब राजा ने उससे चिपटकर हा — "मालजेर्ब, तुम आ गये। देखो तो भाई, प्रजा की भलाई का प्रयत्न मैंने क्या किया, अपने पैर अपने आप कुल्हाड़ी मार ली! यह देखकर मुझे बड़ा आश्चर्य होता है कि तुम मेरे बचाने के लिए अपने प्राणों की परवा नहीं करते। भाई इसके लिए मैं तुम्हारा अत्यन्त कृतज्ञ हूँ। किन्तु देखो मित्र यह सब व्यर्थ का बखेड़ा है। क्योंकि यह निश्चय है कि वे मुझे जान से मार डालेंगे। तो भी, अब यह विचार मन में न लाकर, ऐसा प्रयत्न करना चाहिये कि जिससे काम बने। तुम्हारे प्रयत्न से चाहे और कुछ लाभ मुझे न हो; परन्तु

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

भावी सन्तान को इतना तो अवश्य मालूम हो जायगा कि मैं निर्दोष था।"

मृत्यु दण्ड की आज्ञा

अन्त में वह पेशी का दिन आ पहुँचा। सब तैयारी की गई। सारी सभा एकत्र हुई। राजा के वकील आए। राजा पर जो अभियोग लगाये गये थे वे उसे पढ़कर सुनाये गये। परन्तु वे अभियोग उस पर बिलकुल नहीं आते थे—कोई जुर्म आयद नहीं होता था। इस विषय पर राजा के वकीलों ने बहुत ही अच्छे मार्मिक भाषण किये, जिन्हें सुनकर श्रोतागण क्षण भर के लिए तटस्थ हो गये। बाद को बहुमत के अनुसार मामले का फैसला करने के लिए सम्मतियाँ ली गईं। उनके अनुसार राजा अपराधी निश्चित हुआ। फिर दंड का प्रश्न उपस्थित हुआ। उसमें तीन पर्याय थे। नजरबन्दी, देशनिकाला और मृत्यु। इस यिषय में लोगों की सम्मतियाँ भिन्न भिन्न थीं। मिलान करने पर मृत्यु दंड के विषय में सम्मतियां अधिक पाई गईं। इस पर सभाध्यक्ष खड़ा होकर बोला, "सभ्य जनो, सुनिये। तीन पर्यायों के विषय में भिन्न भिन्न सम्मतियाँ प्राप्त हुई हैं। उसमें राजा को मृत्यु का दण्ड देने के लिये अन्य दो विषयों से छब्बीस सम्मतियां अधिक हैं। इसलिये मैं इस सभा की ओर से प्रकट करता हूँ कि फ्रांस के राजा सोलहवें लुई को, उसके अपराधों के लिये, मृत्यु की सजा दी जाती है।"

यह सजा सुनकर, जो लोग हृदय से राजपक्षपाती थे, उनको उनको अत्यन्त दुःख हुआ और उनके शरीर पर रोंगटे खड़े हो गये। परन्तु राजा तिल भर भी नहीं डगमगाया। वह शान्ति के साथ कुछ मुसकुराकर अपने वकील से बोला—"अजी यह तो मुझे पहिले ही से मालूम था। कोई परवाह नहीं। मित्रो, इस पतित भूमि को त्याग कर मैं अब शीघ्र ही न्याय-लोक में

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

जाऊँगा। वहाँ फिर हम सब लोगों की भेंट होगी और इस संसार में भी हमारे सद्‌गुणों की प्रशंसा हुए बिना न रहेगी।" राजा को अपनी मृत्यु की तो कुछ भी चिन्ता नहीं हुई; किन्तु अपने कुटुम्ब के लिये उसे बड़ा शोक हुआ। वह कातर स्वर से बोला—' न जाने मेरे मरने के बाद मेरे बच्चों की क्या दुर्दशा हो ! अब उनसे अन्तिम विदाई लेने के लिए मुझको वज्र के समान हृदय करके तैयार होना चाहिये। परमात्मा ऐसा करने के लिये तू मुझे शक्ति प्रदान कर। अहा ! मेरे जिन ईमानदार नौकरों ने अभी तक मेरा परित्याग नहीं किया है, और जिनका निर्वाह सर्वथा मुझपर ही अवलम्बित है उनकी क्या दशा होगी ! उनका पालन कौन करेगा ? हाँ ! अब इस देश में खूब उपद्रव मचेगा। बड़े बड़े अन्याय और अत्यचार होंगे। हाय ! उस समय मेरी प्यारी प्रजा की क्या दशा होगी ! परमात्मा, मैंने इतने संकट सहे, इसका परिणाम क्या यही होना था ! जिस प्रजा के सुख के लिये मैंने इतने प्रयत्न किये, उस प्रजा की ऐसी दुर्दशा हो ! क्या किया जाय ! तेरी इच्छा !"

राजा के लिये दण्ड निश्चित हुआ और २० जनवरी सन् १७९३ को सरकारी अधिकारियों ने उसे पढ़

बाल बच्चों से अंतिन सुनाया। राजा ने उस समय उनसे तीन बातों भेंट और मरने के लिए प्रार्थना की। एक तो मरने की तैयारी के लिये तैयारी के लिए तीन दिन का अवकाश दिया जाय। दूसरे, कुटुम्बी जनो से भेंट करने का हुक्म मिले; और तीसरे, एक धर्माध्यक्ष निकट रहने का हुक्म हो। इन विषयों पर सभा में विचार होकर निश्चित हुआ कि पहली प्रार्थना स्वीकार न की जाय; और अन्त की दो स्वीकार की जायँ। इस पर राजा थोड़ी देर तक बिलकुल स्तब्ध हो गया। इतने में संध्याकाल हुआ। राजा रोज की तरह भोजन के लिये

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

बैठा, तो क्या देखता है, आज भोजन के लिए छुरी और कांटे नहीं ! दिये गये इस पर उसने पास के मनुष्यों से कहा—"अरे, क्या वे मुझे इतना नीच समझते हैं कि मैं आत्महत्या करके मर जाऊँगा ! मैं निर्दोष हूँ। मुझे मरने का कुछ भी डर नहीं।" भोजन के बाद करीब साढ़े आठ बजे उसके परिवार को अन्तिम भेंट हुई। वह दृश्य अत्यन्त करुणाजनक और हृदय-वेधक था। राजा विचारों में मग्न, शिर पर हाथ रक्खे, चुपचाप बैठा था। इतने में एकाएक उसकी कोठरी का दरवाजा खुल गया; और रानी तथा बच्चे एकदम भीतर आ गये। उन सब को देखकर राजा उठ खड़ा हुआ; और सब को बड़े प्रेम से हृदय में लगाया। उस समय उन सब की आँखों से अविरल अश्रुधाराएँ बह रही थीं। राजा एक कुर्सी पर बैठ गया। रानी उसकी बाईं ओर बैठी। एक लड़की दाहिनी ओर बैठी। एलिजाबेथ; आगे बैठी; और छोटे बच्चे को राजा ने अपनी गोद में ले लिया। उन सब के चेहरे उतर गये थे। आँखों से आँसू बराबर बह रहे थे। उनके मुख मंडल पर निराशा, और परमात्मा की इच्छा का अवलम्बन—मानो मूर्तिमान झलक रहा था। इस तरह वे सब दो घंटे बैठे रहे। पर किसी के मुख से एक शब्द तक न निकला। साढ़े दस बजे। राजा उठ खड़ा हुआ। और सब लोग भी उसके साथ उठ खड़े हुए इसके बाद राजा और रानी ने छोटे पुत्र के शिर पर हाथ रखकर उसे आशीर्वाद दिया। फिर सब लोग वापस जाने के लिए दरवाजे की ओर बढ़े। उस समय राजकन्या से न रहा गया। राजा की कमर को भुजाओं से वेष्टित कर कर वह फूटफूटकर रोने लगी। किसी तरह वह छोड़ती ही न थी। उस समय के उसके करुणाक्रंदन का वर्णन नहीं किया जा सकता। अस्तु। उस समय राजा ने कहा कि कल सबेरे सात-आठ बजे हम सब की फिर

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

भेंट होगी। तब वे सब आँसू बहाते और अत्यन्त दुःख से रुदन करते हुए वहाँ से चले गये।

जब राजा के घर के लोग चले गये, तब उसकी सूचना के अनुसार एजवर्थ नामक धर्माध्यक्ष उसके कमरे में आया। राजा उससे बोला—"महाराज, इस संसार में आकर मैंने दूसरों पर प्रीति की और दूसरों ने मुझ पर की। पर उसका कुछ फल नहीं हुआ। अभी, आपके आने के पहिले मेरे घर के लोग मुझसे अन्तिम भेंटे करके गये हैं। उस समय मेरे हृदय के सौ सौ टुकड़े हो गये। परन्तु अब उस विषय पर विचार करने से क्या लाभ! अब हमें अपने परलोकसाधन के विचार में लगना चाहिए।" इस प्रकार वह कह रहा था, इतने में रसोइया रात के भोजन का सामान थाली में परोसकर ले आया। पहले तो उसका विचार हुआ कि आज कुछ भी भोजन न करूँ; पर समझ बूझकर उसने कुछ थोड़ा सा खा लिया। इसके बाद नित्य के नियमानुसार बारह बजे रात्रि को वह अत्यन्त शान्त चित्त से सोने के लिए गया। प्रातःकाल के पाँच बजे तक उसे बड़ी गम्भीर निद्रा आई। सबेरे जब वह उठा, उसे मालूम हुआ कि आज मैं अवश्य मरूँगा। इसलिए उसने तुरन्त ही अपने हाथ की अँगूठी, किरीट, और बालों का एक छोटा सा गुच्छा अपने नौकर क्लेरी को देकर कहा—"अरे, यह अँगूठी मेरी प्यारी रानी को देना और कहना कि तुम्हें छोड़कर जाने में मुझे अत्यन्त दुःख हो रहा है। पर किया क्या जाय, लाचारी है। यह बालों का गुच्छा भी उसी को देना और यह किरीट मेरे लड़के को देना उन सबसे मेरा आशीर्वाद कहना और यह जतला देना कि तुम सबको छोड़कर जाने में मुझे जो दुःख हो रहा है, वह कहा नहीं जा सकता।" फ्रान्स में यह चाल थी कि अपराधी का

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

शिरच्छेद करने के पहले उसके बाल काट डाले जाते थे। राजा ने यह सोचकर कि मुझे यह अपमान सहना न पड़े। अपने हाथ से काट डालने के लिये कैंची माँगी। पर वह उसे नहीं दी गई। इसके बाद उसने अपने पास के धर्मोपदेशक का उपदेश ध्यान पूर्वक सुना; और आत्मा के प्रायश्चित्तार्थ जो कुछ संस्कार करने का विधान था, वह सब किया।

राजा का शिरच्छेद !

क़रीब नौ बजे सांटेर नाम का एक अधिकारी राजा के कमरे में आया। राजा ने उससे पूछा—"क्या आप मुझे लेने के लिए आये हैं! अच्छी बात है। मैं तैयार हूँ। कृपया मुझे एक क्षण का अवकाश दीजिए।" यह कहकर राजा ने तुरन्त कपड़े पहन लिये और बाहर चला आया। बाहर बहुत सी सेना एकत्र थी। रास्ते में हजारों मनुष्य खड़े थे। सड़क के दोनों किनारों में हथियार-बन्द सिपाही सिलसिले से खड़े कराये गये थे। राजा अपने कमरे से बाहर निकलकर गाड़ी पर बैठ गया। यह गाड़ी उसके लिए पहले ही खड़ी हुई थी। उसके साथ दो-तीन सैनिक अधिकारी भी देख-भाल के लिए गाड़ी में बैठ गये। जिस समय गाड़ी रास्ते में चली जा रही थी, लाखों मनुष्य उसकी ओर टकटकी लगाये देख रहे थे। नियत स्थान पर पहुँचते ही गाड़ी खड़ी हो गई। राजा ने धीरे से एजवर्थ से पूछा—"क्या यही वह जगह है?" बाद को वह नीचे उतरा। अपने हाथ से सब कपड़े उतारे। फिर वह वध स्तम्भ की ओर चला। उस समय बधिकगण आगे बढ़कर उसके दोनों हाथों को एकत्र कर बाँधने लगे। उस समय राजा अपना क्रोध न सँभाल सका। वह हाथों को पीछे करके बोला—"नहीं, नहीं, यह अपमान मैं कभी नहीं सहूँगा। तुम और चाहे जो करो; पर मैं हाथ कभी नहीं बाँधने दूँगा।" यह सुन

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

कर बधिकों ने और कुछ लोगों को उसके पकड़ने के लिए बुलाया। यह देखकर धर्मोपदेष्टा एजवर्थ, जो निकट ही था, बड़ी गम्भीरता पूर्वक राजा से बोला—"सुनो, सुनो, उनकी बात अवश्य सुनो। जो तानेवाला प्रभु* अब तुम्हें निष्पाप करनेवाला है, उसने भी मरते समय अपमान सहा! यह तुमको मालूम है। तुम भी उसी की तरह करो।" इस पर राजा ने कहा—"प्रभु ने अपमान सहा है। इसी लिए मैं भी सहता हूँ। नहीं तो कभी न सहता। अच्छा, आओ, जो चाहे सो करो।" यह कहकर उसने अपने हाथ बँधवा लिये। इसके बाद वह वधस्तम्भ की ओर गया। वहाँ उसे अन्तिम उपदेश देकर एजवर्थ बोला—'लुई, तू आकाश में जा।" यह सुनकर वह वधस्तम्भ पर चढ़ा। अपना सिर सूली पर रखा। अब चोट करने की तैयारी हुई। राजा बोला—"जो अभियोग मुझ पर लगाये गये हैं, उनमें से एक भी मुझ पर नहीं लगता। मैं बिलकुल निर्दोष मरता हूँ। जिन्होंने मुझे कष्ट दिया, उन्हें मैं क्षमा करता हूँ। परमेश्वर उनके अपराधों को क्षमा करे। इतने पर भी मेरा फ्रांस सुख पावे। अरे दुर्दैवी अभागी लोगो!" यह कह ही रहा था कि ऊपर से कुल्हाड़ी की चोट हुई; और एक बार में उसका सिर धड़ से जुदा हो गया।

इस तरह राजा सोलहवें लुई का अन्त हुआ। जिन लोगों के सुख के लिए वह रात-दिन प्रयत्न करता था, उन्हीं लोगों के अविचार और अनुचित जोश से उसका ऐसा भयंकर अन्त हुआ। यह बड़े दुःख की बात है। एक उत्तम ग्रन्थकार लिखता है—"सोलहवें लुई के वध की याद बहुत दिनों तक रहेगी; और जब तक इस संसार में दया और न्याय रहेगा, तब

---

* ईसा मसीह।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

तक यह मत स्थिर रहेगा कि वह निर्दोष था; और उसको मारनेवाले अपराधी थे।"

सातवां अध्याय

राजा के मरने पर फ्रांस की दशा; मौंटेन दल के नेता

एक बार जो बात मनुष्य के हृदय में समा जाती है उसे करने के लिए वह बड़ा आतुर हो जाता है; और जब तक वह उसे कर नहीं लेता, उसे चैन नहीं पड़ती। वह समझता है कि बस इसके होते ही हमारे सारे मनोरथ सिद्ध हो जाँयगे। पर वास्तव में देखा जाय तो यह उसकी भूल है। मनुष्य एक अपूर्ण प्राणी है—अर्थात् उसका ज्ञान पूर्ण नहीं। अतएव अपूर्ण ज्ञान के अनुमान पर जो मनोरथ अवलम्बित रहते हैं उनका पूर्णतया सिद्ध न होना स्वाभाविक है। यह शान्त और विचारशील मनुष्य की बात हुई। परन्तु फ्रांस देश के लोग, जो अविचार, अनुचित अभिमान, भ्रान्ति और वेजा जोश के कारण बावले से हो रहे थे, उनका अनुमान भ्रान्तिवश मिथ्या निकले, तो इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं। वे लोग बहुत दिन से यही समझते थे कि जब तक सोलहवां लुई राजा मर न जायगा, तब तक देश में शान्ति और सुख नहीं प्राप्त होगा। इसके लिए उन्होंने बड़े प्रयत्न किये। आखिर वह राजा मर गया। प्रजासत्ताक राज्य की दुहाई भी फिर गई और राज्यव्यवस्था भी नये ढंग से होने लगी; पर देश की दुर्दशा समाप्त नहीं हुई। यही नहीं; बल्कि शहर में राजा लुई के वध की खबर फैलते ही सब दुकानें बन्द हो गईं। और लोगों में उदासी छा गई। भूकम्प इत्यादि अनर्थों के कारण

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

जिस प्रकार नगर सुनसान हो जाता है, उसी प्रकार पेरिस के रास्तों में एक भी मनुष्य दिखाई न देने लगा ! पहले लोगों को इस बात का बिलकुल ख्याल न था कि राजा की मृत्यु से लोगों की ऐसी अवस्था होगी। परन्तु उसके मरते ही सब लोग तेजोहत हो गये। उसके जीवन-काल में अनेक दल, परस्पर को नीचा दिखाते हुए, अपनी अपनी श्रेष्ठता स्थापित करने के लिए प्रयत्न करते थे। पर अब उनमें भी वह जागृति और तत्परता नहीं रही। वे एक दूसरे के कट्टर शत्रु बन गये। इससे राज्य-प्रबन्ध की ओर किसी का ध्यान न रहा। इस समय मुख्य दो दल थे। एक का कथन यह था कि लोगों का कुछ भी हो, प्रजासत्ताक राज्य की स्थापना होनी चाहिए। इसके लिए वे चाहे जो करने को तैयार थे। मारो, डांटो और रोबेस्पियर इस दल के नेता थे। इनमें डांटो मिराबो के समान था। अर्थात् इसकी आवाज भी वैसी ही राक्षसी थी; और अपनी वक्तृता के द्वारा लोगों के मन पर प्रभाव डालने की शक्ति इसमें भी थी। यह बड़ा क्रूर था। मनुष्य को मार डालना इसके बांयें हाथ का खेल था। फिर भी उसके हृदय में दया का कुछ अंश था। पिछले अनर्थ के अवसर पर इसकी शरण जिसने ली, उसके प्राण इसने बचाये ! रोबेस्पियर पहले वकील था। कुछ दिन बाद एक जगह न्यायाधीश हो गया। वहाँ उसे एक बार एक अपराधी को फांसी की सजा देने का मौका आया ! परन्तु यह कार्य उसे अत्यन्त क्रूरतापूर्ण ज्ञात हुआ। अतएव उसने इस पद से इस्तीफा दे दिया। परन्तु इस अनर्थ के समय ऐसा देखने में आया कि उसका हृदय पाषाण से भी अधिक कठोर था। फ्रांस की इस राज्यक्रान्ति का इतिहास जब तक इस पृथ्वी पर उपलब्ध रहेगा, तब तक इस पुरुष का नाम पाठकों को बड़ा विचित्र मालूम होगा। यह

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

बड़ा प्रभावशाली वक्ता था। इसने अपने मनोहर व्याख्यानों से फ्रांस के लोगों को मोहित करके उन पर अपना प्रभाव जमा लिया; और फिर उनको खूब नाच नचाया। इसके पक्ष के अन्य लोग बड़े ठाट-बाट से रहते थे; पर स्वयं यह बहुत ही सादे कपड़े पहनता था। कितने ही वर्षों तक लोग इसे "दुर्गुणों के पाश में न फँसनेवाला" कहते थे। सारे फ्रांस का अधिकार इसके हाथ था। फिर भी वह बड़ी सादगी से रहता; और भूतदया, मृत्यु, परमेश्वर, आत्मा का अमरत्व, इत्यादि विषयों पर बड़े जोश से वादविवाद करता। उस समय लोग उसे बड़े महात्मा समझते। परन्तु आगे चलकर जो स्वरूप उसने धारण किया, उससे सारे संसार को यह स्पष्ट मालूम हो गया कि मनुष्य के आचरण और मनुष्य के अन्तःकरण में कितना अन्तर हो सकता है। इसके दल का नाम मौंटेन था।

दूसरा दल जिरांडी. परस्पर द्वेष और जिरांडी पक्ष का नाश

दूसरे प्रबल पक्ष का नाम जिरांडी था। इसमें विचारवान् और धैर्यशाली पुरुषों का समावेश था। मौंटेन पक्ष का व्यर्थ आडम्बर इन्हें नापसन्द था। मारा नामक पुरुष जिसका नाम ऊपर लिया जा चुका है, एक बड़ा भारी ग्रन्थकार था। इसने कुछ पुस्तकें केवल लोगों को उभाड़ने के उद्देश्य से ही लिखी थीं। जिरांडी पक्षवाले इससे बड़े नाराज हुए; और उन्होंने यह हठ पकड़ा कि इसकी तहक़ीक़ात होनी चाहिए। तहक़ीक़ात हुई; पर अपराध प्रमाणित न हो सका। इस लिये मारा बरी हो गया। इस तरह भीतर ही भीतर देश में बड़ी अशान्ति फैली हुई थी। प्रजा की बड़ी दुर्दशा हो रही थी। उस साल वर्षा अच्छी हुई थी। परन्तु प्रबन्ध अच्छा न होने के कारण लोगों

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

ने खेत नहीं बोये थे ! इधर व्यापार भी बन्द था। लोग बिना अन्न के त्राहि त्राहि करने लगे। जिनके पास कुछ अनाज था, वे तिगुने-चौगुने भाव से बेचने लगे। लोगों ने सभा से प्रार्थना की कि इसके लिए क़ानून बना दिया जाय। सभा ने क़ानून बनाकर सब चाजों का निख़ मुक़र्रर कर दिया और सूचना दे दी कि निख़ का उल्लंघन करने वाले को सख्त सज़ा दी जायगी। इसके सिवाय यह भी नियम हुआ कि कोई मनुष्य एक दिन के ख़र्च से अधिक अनाज अपने घर में न रक्खे और सरकारी अधिकारियों के हस्ताक्षर का परवाना दिखाये बिना किसी मनुष्य के हाथ रोटी बेचनेवाले रोटी न बेचें। इस प्रकार का नियम बन जाने से अनाज की दूकानों में बड़ी भीड़ होने लगी इसलिए उनके सामने बड़ी २ जंज़ीरें बँधवा दी गईं; और यह निश्चय किया गया कि जिस क्रम से ग्राहक लोग आवें उसी क्रम के अपनी अपनी जंजीरों को पकड़कर खड़े रहें और उसी क्रम से उन्हें माल मिले। यह भी सख्ती की गई कि बाज़ार-भाव चाहे तेज रहे, अथवा सस्ता, किसानों को अपना अनाज बाज़ार में बेचने के लिए भेजना ही होगा। ऐसे क़ानून मौंटेन और जेकोबिन पक्ष ने बड़े हठ से बनवाये थे। इसलिए जिरांडी पक्षवालों ने यह कहकर, कि ये क़ानून न्यायशास्त्र के मूलतत्त्वों के विरुद्ध हैं, उनका विरोध करना शुरू किया। जन-साधारण को यह बात उल्टी मालूम हुई। इसके सिवाय प्रतिपक्षियों द्वारा वे लोग बहकाये भी खूब गये। अतएव उन्होंने जिरांडी पक्ष को अपना पक्का दुश्मन समझा; और हर तरह से उनके नाश करने का प्रयत्न करने लगे। धीरे धीरे इस द्वेष की मात्रा इतनी बढ़ी कि जून सन् १७९३ की दूसरी तारीख़ को क़रीब बीस हज़ार शस्त्र-धारी मनुष्य राज्य प्रबन्ध-कारिणी सभा के आफ़िस के

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

आसपास एकत्र होकर चिल्लाने लगे कि जिरांडी पक्ष के नेताओं को पहिले दण्ड दिया जावे। उपरोक्त सभा के अध्यक्ष ने यह समझ कर कि ये सब मूर्ख और बलवाई लोग हैं, इनका कहना ठीक नहीं है, कुछ सेना साथ लेकर उन्हें भगाने का प्रयत्न किया। परन्तु दंगेवालों ने जब गोलों की वर्षा की, तब तो उसके पैर उखड़ गये और वह भागकर अपनी कचहरी में घुस गया। वहां उसने बहुमत से निश्चय किया कि जिरांडी पक्ष के बत्तीस नेताओं को गिरफ़्तार करके उनपर मामला चलाया जाय। यह खबर फैलते ही जिरांडी पक्ष के नेतागण भागने लगे; और बहुतेरे भाग भी गये। जो पकड़े गये, उनकी तहक़ीकात अक्टूबर मास में शुरू हुई। जितने लोग पकड़े गये थे, सबके सब बड़े बुद्धिमान् और विद्वान थे। उन्होंने अपनी सफ़ाई में इतनी अच्छी वक्तृताएँ दीं कि उन्हें सुनकर श्रोताओं के हृदय का भाव बदल गया और वे उन्हें निर्दोष मानने के लिए तैयार हो गये। इसलिए सभा ने उनकी बातों का सुनना ही बन्द कर दिया और निश्चय किया कि इन्हें एकदम फांसी दे दी जाय, अथवा इनका सिर तोड़ दिया जाय! यह सुनते ही उन मनुष्यों में से एक ने तो तत्काक ही अपने हृदय में छुरी भोंक कर वहीं कचहरी में अपना प्राण दे दिया! एक और मनुष्य ने सभा को सम्बोधन करके निर्भयतापूर्वक कहा—"इन लोगों की अकल आज मारी गई है ख़ैर, कुछ हर्ज नहीं। आज हम मरते हैं। कल तुम भी मरोगे।" इसके बाद वे लोग क़ैदखाने में भेज दिये गये। वहाँ वे नाना प्रकार की कविताएँ रचकर अपने प्रतिपक्षियों की निन्दा गाते थे और अपना अमूल्य समय वृथा नष्ट करते थे। यह बड़े अश्चर्य की बात है कि यह जानकर भी, कि कल सुबह हमें फांसी होगी, उन्होंने अपना समय इस तरह व्यर्थ गवाँ दिया। दूसरे दिन जब वे

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

वधस्तम्भ के पास लाये गये, तब भी उनका वह क्रम बन्द नहीं था। वहाँ वे बारी बारी से वधस्तम्भ पर चढ़ाकर मार डाले गये। इस तरह जिरांडी पक्ष का समूल नाश हो गया। इस पक्ष के लोग वास्तव में बड़े विद्वान् और बुद्धिमान् थे। इनके बुद्धि-बल और चतुराई से सम्भव था कि राज्यक्रांति के समय उतनी क्रूरता न होने पाती, जितनी हुई। किन्तु उनमें धर्मशीलता नहीं थी। इसी कारण उनकी सारी चतुराई व्यर्थ हुई और स्वयं उन्हीं का नाश हो गया।

मारो का खून और शार्लोट कार्डों को मृत्युदण्ड

जिरांडी पक्ष का नाश हो गया। अब इस विषय में विशेष कुछ कहना बाकी नहीं रहा। परन्तु यह दिखलाने के लिए कि इस पक्ष और मौंटेन पक्ष का वैर कैसा था और सर्वसाधारण पर भी उसका कितना असर था, यहाँ पर एक उदाहरण देना अनुचित न होगा। जिरांडी पक्ष के नेताओं के वध की खबर सुनते ही उस पक्ष के लोगों को बहुत ही दुःख हुआ। इसलिए आवेशपूर्वक उन्होंने प्रतिज्ञा की कि मौंटेन पक्षवालों से हम इसका बदला लिये बिना न रहेंगे, चाहे प्राण भले ही चले जांय। इनमें शार्लोट कार्डो नामक एक युवा स्त्री थी। उसने मन में सोचा कि मौंटेन पक्ष का मुख्य नेता मारो है और जिरांडी पक्ष का जो इतना अपमान और हानि हुई, उसका वही कारण है। अतएव उसकी हत्या करनी चाहिए। वह केन नामक एक गाँव की रहनेवाली थी। वहाँ से चलकर वह पेरिस में पहुँची और एकदम कचहरी में चली गई। परन्तु बीमार होने के कारण मारो उस दिन कचहरी नहीं आया था। फिर वह एक दूकान में गई और वहाँ से उसने एक अच्छा तेज चाकू खरीदा और इस तरह से उसे अपनी जेब में छिपाकर रक्खा कि कोई जान न सके। इस

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

तरह तैयार होकर वह मारो के घर गई। वहाँ उसने कहा कि मैं जिरांडी पक्ष के ऐसे ऐसे रहस्य जानती हूँ जिन्हें सुनकर तुम आश्चर्य करोगे। आजकल वे किस प्रयत्न में लगे हुए हैं, यह जानकर तुम्हें बड़ा लाभ होगा। मारो ने सोचा कि इस जासूस से बड़ा काम निकालेगा। उसने बड़ी उत्कंठापूर्वक उसे अपने कमरे में बुलाया और सारा हाल पूछने लगा। कार्डो ने कई मनुष्यों का नाम बताकर कहा कि ये लोग तुम्हारे घोर शत्रु हैं। मारो उनके नाम नोट करने लगा और बोला कि "कोई हर्ज नहीं। थोड़े ही दिनों में इनका वध किया जायगा।" उसके मुँह से ये शब्द निकल ही रहे थे कि इतने में कार्डो ने जेब से छुरी निकालकर मारो की छाती में भोंक दी। मारो चीख उठा और तलफते तलफते थोड़ी ही देर में मर गया। जिस देश में राजनैतिक द्वेषों का असर स्त्रियों तक में फैला हुआ था, सो भी देहात की स्त्रियों तक में, तब फिर यदि वहाँ के पुरुषों के हाथ से भयानक मारकाट, हत्या और अनर्थ हुए तो इसमें आश्चर्य ही क्या है?

शार्लोट कार्डो के इस भयंकर कृत्य का हाल शहर में फैलते ही उसे मार डालने के लिए हजारों मनुष्य हथियार लेकर दौड़े। क्योंकि वे मारो को अपना परम हितकर्ता समझते थे। परन्तु कार्डो उन्हें नहीं मिली। यदि मिली होती तो वहीं पर उसका बोटी बोटी कर डालते। सिपाहियों ने उसे पहले से पकड़कर क़ैदखाने में डाल दिया था। कुछ दिन के पश्चात् मामले की जाँच के लिए वह सभा के सन्मुख लाई गई। न्यायाध्यक्ष जब उसके अभियोग के विषय में प्रमाण लेने लगा तब कार्डो ने स्वयं आगे बढ़कर कहा—"महाशय! इस विषय में प्रमाण की कोई जरूरत नहीं। मैं स्वयं स्वीकार करती हूँ कि लाखों मनुष्यों के प्राण बचाने के लिए, और देश

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

में शांति स्थापित करने के लिए मैंने उस भयंकर राक्षस को अपने हाथ से खून किया है।" इस प्रकार अपराध स्वीकार कर लेने पर उसे शिरच्छेदन की सजा दी गई। कार्डो ने अन्त समय तक अपना धैर्य नहीं छोड़ा। उसने शांतिपूर्वक अपना सिर सूली पर रख दिया और कुल्हाड़ी पड़ते ही उसका सिर धड़ से जुदा हो गया। इस तरह मारो और शार्लोट कार्डो दोनों का अन्त हो गया। इस तरुणी के विषय में तो हमें कुछ लिखना नहीं है; परन्तु मारो के विषय में कुछ बतलाना चाहिए। इस पुरुष के जीवन के अनेक वर्ष ऐसी पुस्तकों के लिखने में व्यतीत हुए कि जिनसे लोगों की नीति बिगड़ जावे. किंबहुना यह कहने में कोई प्रत्यवाय नहीं की उसने अपना बहुत सा समय लोगों को क्रूरता सिखाने में खर्च किया। वह एक अखबार निकालता था लोगों का कहना है कि इस अखबार का एक एक अक्षर मनुष्य के रक्त से लिखा रहता था। सारांश यही कि उसके लेखों में मार-काट को छोड़कर और कुछ नहीं रहता था। उसका खयाल था कि राज्य की अव्यवस्था दूर करने का यदि कोई साधन है तो वह मार-काट ही है। अवश्य ही उसने अपने जीवन भर मनुष्यों में क्रूरता का बीज बोने में कोई कसर नहीं छोड़ी। और अन्त भी उसका क्रूरता ही से हुआ। यह स्वभाविक था।

नवीन सभाएं और नवीन कानून

इस प्रकार जिरांडी पक्ष का प्रायः बिलकुल नाश हो जाने पर दो नवीन सभाएँ स्थापित हुईं। एक का नाम था "सार्वजनीन रक्षा सभा" और दूसरी का नाम था "राज्यक्रांति-न्यायसभा।" पहली सभा में दस सदस्य थे। सेना के नायक और न्यायाधीश इत्यादि बड़े बड़े राज्याधिकारियों की नियुक्ति करना तथा लोक-सभा के राज्यव्यवस्था-सम्बन्धी कुछ बड़े

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

बड़े प्रस्तावों को कार्यरूप में परिणत करना इस सभा का काम था। दूसरी सभा, अर्थात् राज्यक्रान्ति-सभा; में छै न्यायाधीश और बारह पंच थे। इन पंचों का चुनाव स्थायी रूप से था; और इन्हें पूरा अधिकार था कि चाहे वे किसी मामले में प्रमाण लेवें अथवा बिना प्रमाण लिये ही फैसला कर दें। प्रमाण को संक्षिप्त करने और अभियुक्त की सफ़ाई लेने का भी उन्हें पूर्ण अधिकार था। इस न्यायसभा को जिन विषयों की जाँच करने का अधिकार था उन विषयों की व्याख्या इतनी शिथिल थी कि बिलकुल निरपराधी मनुष्य को भी उसके पंजे से अपना छुटकारा करने में अत्यन्त कठिनाई पड़ती थी। उस समय जो जो अभियोग लगाकर लोगों पर मुकदमे चलाये जाते थे उन सब का पूरा पूरा वर्णन करना तो यहाँ असम्भव है, फिर भी दो-चार उदाहरण देना यहां आवश्यक है। इन्हीं से पाठकगण अन्य बातों का अनुमान कर सकते हैं।

१—प्रजासत्ताक राज्य के विषय में बुरे विचार प्रकट करना अथवा उसके विषय में दुःख प्रदर्शित कर के बुरी खबरें उड़ाना।

२—जिनकी सम्पत्ति सरकार के उपयोग के लिए जबर-दस्ती ले ली गई थी उनके विषय में बातचीत करना अथवा खेद प्रदर्शित करना।

३—प्रजासत्ताक राज्य की स्थिति के विषय में शंका करके भय प्रदर्शित करना।

४—प्रजासत्ताक राज्य के स्थापित करने में जो लोग न सहायता देते थे और न विघ्न डालने थे, ऐसे सर्वथा उदासीन लोगों में सम्मिलित रहने का सन्देह होना।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

इसी प्रकार के अनेक अभियोगों पर वह सभा लोगों को पकड़कर उन पर मुकद्दमा चलाया करती थी। यह क्रम केवल पेरिस में ही जारी नहीं था, किन्तु सारे देश में इसी प्रकार की पचास हजार छोटी छोटी सभाएँ स्थापित की गई थीं। सर्वजनीन रक्षा का प्रबन्ध करनेवाली। जिस सभा का उल्लेख ऊपर हुआ है उसमें डेविड नाम का एक बड़ा बुद्धिमान और विद्वान चित्रकार मुखिया था। जब वह अपना काम करने के लिये सभा में बैठा तब उसने अपने पास के अन्य सभासदों से कहा—"आओ, एक बार हम लोग बहुत से बड़े बड़े लोगों को एकदम कोल्हू में डालकर खूब ही रक्त निचोड़ेंगे।" सब लोगों की रक्षा के लिए जिस सभा की स्थापना की गई थी, उसके मुखिया की ही जब यह दशा थी तब उस सभा के हाथ से लोगों की कितनी रक्षा हो सकती थी, यह बतलाने की आवश्यकता नहीं। जब राजा ही प्रजा पर रूठ जाय, अथवा स्वयं माता ही सपने बच्चे का वध करने लगे, तब आप ही बतलाइये, वह कहाँ जावे और अपनी रक्षा किस तरह करे। इस मौके पर फ्रांस देश में जो जो घटनाएँ घटीं वे सब एक से एक बढ़कर विचित्र हैं, इसमें सन्देह नहीं; परन्तु विशेषतः उस समय वहाँ के लोगों में क्रूरता का जो अतिरेक हो रहा था, उस पर से अधिक आश्चर्य होता है।

नर-पिशाच फूकिया टां-वेल

इस न्याय सभा का कार्य सञ्चालित करने के लिए बहुत से क्रूर-कर्मा नियुक्त किये गये थे। उन सब में फूकिया टांवेल नामक सरकारी वकील एक विलक्षण जन्तु था। इसके स्वभाव और करतूतों का वर्णन ग्रन्थकारों ने सप्रमाण लिख रक्खा है और इसको हुए भी अभी बहुत समय व्यतीत नहीं

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

हुआ है, इससे इसके अस्तित्व में सन्देह नहीं रहता। नहीं तो, यदि उपरोक्त साधन विद्यमान न रहते और इस अनुपमेय प्राणी का वर्णन केवल दन्तकथाओं के सहारे चलता, तो कोई भी इस बात को मानने के लिए तैयार नहीं होता कि ऐसे मनुष्य भी हो सकते हैं। सारांश, वह साक्षात् राक्षस था। उसके अन्तःकरण में दया का लेश तक नहीं था। यह देखकर कि, उन सब मनुष्यों को जिन पर मुकदमा चलाया गया था, मृत्यु की सज़ा हो गई, वह अपने को कृतकृत्य मानता था। वृद्ध, युवा, विद्वान, अविद्वान्, पुरुष, स्त्री, नीतिमान्, अनीतिमान्, सुरूप कुरूप, किसी को भी मृत्यु-दण्ड हो, तमाशा देखने के लिए फूकिया सब से आगे! यदि कोई मनुष्य मरते समय शान्त रहता, परमेश्वर का स्मरण करता तो उसे देख-देखकर इसका शरीर जल-भुन जाता और यदि कोई मरते समय खूब रोता, हाथ-पैर पटकता, छटपटाता, तो बड़ा उसे आनन्द होता! यदि वह कभी काम करते करते थक जाता तो बिना किसी का शिरच्छेद देखे उसकी थकावट नहीं मिटती थी। वह खुल्लमखुल्ला कहता था कि—"किसी के शिरच्छेद का दृश्य देखकर मेरा जितना मनोरञ्जन होता है, उतना और किसी दूसरी बात से नहीं होता!" विचारने की बात है कि यह मनुष्य प्राचीन काल के अज्ञान युग में नहीं हुआ था। इसे हुए अभी थोड़े ही दिन हुए हैं। अर्वाचीन काल की सब विद्याओं का ज्ञान उसे था; और इस समय के सारे सुधारों का सुख वह भोगता था। फिर भी उसका हृदय पत्थर से भी अधिक कठोर था। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि केवल विद्या के योग से ही मनुष्य पूर्णतया सज्जन नहीं हो सकता।

इस राक्षस ने जिन बहुत से मनुष्यों की बलि ली उनमें

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

सोलहवें लुई की रानी एन्टोनेट मुख्य थी। राजा के शिरच्छेद के उपरांत प्रजासत्ताक राज्य के पक्षपातियों ने उसके कुटुम्बी जनों की बड़ी दुर्दशा की। अधिक क्या, उन्हें पेट भर अन्न और देह ढकने के लिए कपड़ा नहीं दिया जाता था। सिवाय इसके ऐसी दुर्दशा, इतना अपमान, किया जाता था कि उसका वर्णन सुनने से शरीर पर रोमांच उठ आते हैं। रानी बड़ी शान्त स्वभाव की थी। उसने यह सब सहन किया। उसने अपने मुँह से अपना दुःख कभी नहीं कहा। वह जन्म ही से उत्तमोत्तम रेशमी और ज़रीदार वस्त्र पहननेवाली, सुन्दर सजे हुए कमरे में कुर्सियों और कोचों की परदार नरम गद्दी पर बैठकर बड़े ऐश-आराम में समय बितानेवाली और नित्य नवीन मिष्ठान्न खानेवाली थी। परन्तु अब उसी का हाल देखिये। वही रानी अब मोटे-झोटे कपड़े का मैला झगा पहनकर, अँधेरी कोठरी में रहकर, ज़मीन पर बैठकर, एक एक घड़ी एक एक युग की तरह बड़े कष्ट से, परन्तु अत्यन्त शान्त वृत्ति से, काटती थी। यह बात उसके शत्रुओं ने भी लिख रखी है। अवश्य ही यह बात उसके लिए, और सारी मानवजाति के लिए, अत्यन्त भूषणप्रद है।

रानी की दुर्दशा और राजकुमार की हृदयद्रावक मृत्यु

रानी को और किसी प्रकार का भी सुख नहीं था। परन्तु अपने पुत्र के मुख को देखकर और इसी में आनन्द मनाकर अपना समय बिताती थी। यह बात उसके विरोधियों से देखी नहीं गई। इसलिये उन्होंने मनमाना सबब बतलाकर पुत्र को उससे जुदा रखने का निश्चय किया। तदनुसार कुछ मनुष्य राजकुमार को ले जाने के लिए रानी के कमरे में आये। उस समय में रानी को यह जानकर, कि बच्चे से अब फिर कभी भेंट न होगी, जो दुःख हुआ उसका वर्णन करना इस लेखनी की

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

शक्ति से बाहर है। उस समय उसकी आँखों से आँसुओं की अविराम धारा बह रही थी और लम्बी उमासें ले रही थी। आखिर जब उससे न रहा गया, दुःख का उद्रेक हृदय से बाहर फूट निकला। वह जोर से चिल्लाकर रोने लगी! राजकुमार भी माँ को इस तरह रोते देखकर सारा हाल समझ गया और वह भी फूट-फूटकर रोने लगा लोग जब उसे वहाँ से ले जाने को तैयार हुये तब वह अपनी माता के गले में लिपट गया और किसी तरह छोड़ने को तैयार नहीं हुआ। उस समय माँ बेटे के के करुण क्रन्दन को सुनकर पत्थर भी पिघल जाता; पर यम-युग के उन क्रूरों को कुछ भी दया नहीं आई। वे लोग राज पुत्र को माँ से जुदा करके ले ही गये।

इसके बाद न्याय-सभा की आज्ञा से राजपुत्र सिमन नामक एक चमार के अधीन कर दिया गया। वह चमार साक्षात् राक्षस ही का अवतार था। उसने पहले राजकुमार के उन सुन्दर केशों को, जो कंधे तक लटक रहे थे, और जिनके योग से वह परम सुन्दर दिखाई देता था, काट डाला। इसके बाद, खाने पीने, कपड़े लत्ते, उठने-बैठने, सोने जागने के लिए शक्ति भर उसे तंग करने लगा। इतना होने पर भी राजकुमार के हृदय में जो पैतृक उदारता भरी हुई थी, वह कम नहीं हुई। इस विषय के अनेक उदाहरण पुस्तकों में लिखे हुए हैं हैं। उनमें से एक इस तरह है —एक दिन सिमन ने उससे पूछा—"क्यों लड़के! यदि तेरे पक्षपातियों के प्रयन्त से तुझे राजगद्दी प्राप्त हो जायगी तो तू मेरे साथ कैसा व्यवहार करेगा'? राजपुत्र ने तत्काल ही उत्तर दिया—"अजी, मैं तुम्हारे सारे अपराध क्षमा कर दुँगा।" कुछ दिनों के बाद सिमन ने सरकार, अर्थात् प्रजा-संरक्षक कहलाने वाली सभा से पूछा कि इस राजकुमार को क्या करूँ। सभा ने इसका स्पष्ट उत्तर कुछ भी नहीं दिया। तब उसने स्पष्ट रीति से पूछा

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

कि "उसे मैं काले पानी भेज दूँ, या कतल करूँ, अथवा विष दे दूँ ?" इस पर जबाब मिला कि "न उसे काले पानी भेज न क़तल कर, न विष दे; पर किसी तरह उसका अस्तित्व इस संसार से मिटा दे !" यह उत्तर पाकर सिमन ने राज-कुमार को एक अँधेरी कोठरी में क़ैद कर दिया। वहाँ उसे साफ़ हवा नहीं मिलती थी, कभी कपड़े बदलने को नहीं दिये जाते थे—और भोजन किसी दिन मिल गया तो मिल गया ! इससे राजकमार बीमार होकर दिन दिन दुर्बल होने लगा और पच-पचकर इस प्रकार मर गया जैसे कोई विना मालिक का दीन हीन कुत्ता ! हा ! शोक ! फ्रांस देश के राजा के प्राण प्रिय पुत्र की क्या इस तरह मृत्यु हो ! विधाता के विचित्र विधानों पर मनुष्य का कुछ वश नहीं। इस लिए मनुष्य को अपनी कुलीनता पर कभी अभिमान न करना चाहिए।

रानी की तहकीकात और मृत्यु दण्ड

राजकुमार की मृत्यु रानी के वध के बहुत दिनों बाद हुई थी। परन्तु ऊपर क्रम पाकर पहले ही इसका वर्णन कर दिया गया। अस्तु। अब रानी का हाल सुनिये। न्यायसभा में बहुत वादविवाद के पश्चात् निश्चय हुआ कि रानी के मामले की भी तहकीकात की जावे। तदनुसार अक्टूबर मास की चौदहवीं तारीख को उसका मुकदमा शुरू हुआ। तमाशा देखने के लिए हजारों मनुष्य एकत्र हुए थे। रानी पर उसके बैरियों ने नाना प्रकार के अभियोग लगाये थे। न्यायाधीश ने जब रानी से उसके अभियोगों के विषय में पूछा, तब उसने मौन धारण कर लिया। इस पर दुष्टों ने भरी सभा में उस पर अनेक हृदयवेधक शब्द-बाण चलाये। तरह तरह से उसका अपमान किया। पर वह कुछ भी न बोली। उस पर एक यह भी अपराध था कि वह अपने लड़के को एक और ही बात करने को

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

सिखला रही थी। इस अभियोग की सफ़ाई देने के लिए सभा के एक न्यायाध्यक्ष ने उससे बहुत आग्रह किया। तब उसने नीचा सिर करके अत्यन्त शांतभाव से उत्तर दिया—'मैं इतनी देर तक नहीं बोली, अब क्यों बोलूं? अब तक नहीं बोली, इसका कारण सिर्फ इतना ही है कि मैंने समझा कि मेरे बिना बोले ही मेरा सब सच्चा हाल लोगों को मालूम हो सकता है। कुछ भी हो, यह अन्तिम अभियोग जो मुझ पर लगाया गया है, उसके विषय में, यहाँ पर जो माताएं उपस्थित हैं, उनसे सिर्फ मेरा इतना ही पूछना है कि क्या कोई भी माता अपने बच्चे को ऐसा करने के लिए सिखला सकती है?" इसी तरह कुछ समय तक कार्यवाही होती रही। अन्त में न्यायसभा ने रानी को अपराधी ठहराया और उसे शिरच्छेद की सज़ा सुनाई। उसे सुनकर तिल भर भी रानी का धैर्य नहीं डिगा। शिरच्छेद के लिए सोलहवीं तारीख नियत की गई थी। उस दिन प्रातःकाल चार बजे उठकर उसने राजा की बहिन एलिज़ाबेथ को एक पत्र लिखा। वह पत्र विचार करने योग्य है। उसका सारांश इस प्रकार है :—

"मेरी प्यारी बहन, यह मेरा अन्तिम पत्र है। मुझे मृत्यु की सज़ा दी गई है। यह मेरे लिए लज्जास्पद नहीं है। लज्जास्पद तो यह उस मनुष्य को है, जिसने कुछ अपराध कर अपने को इस सज़ा के योग्य बनाया हो। सच पूछो तो मुझे तो यह सजा बड़ी प्यारी मालूम हुई है। क्योंकि इससे मैं बहुत शीघ्र तुम्हारे भाई से मुलाकात कर सकूंगी। तुम्हारे भाई जिस तरह बेकसूर थे उसी तरह मैं भी हूँ। इसी लिए जिस तरह उन्होंने अन्त तक धैर्य धारण किया था, उसी तरह मैं भी करती हूँ। इतना होने पर भी जब मुझे अपने प्यारे बच्चों का स्मरण हो आता है तब मैं अपने

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

को नहीं रोक सकती और फूट-फूटकर रोने लगती हूँ। तुमने मेरे बच्चों की बहुत बड़ी सेवा की है। वे यदि अपने सौभाग्य से कभी ऊंचे पद को प्राप्त हो सकेंगे तो वे अवश्य तुम्हारे उपकार का बदला देंगे। उनको आज तक मैं यही शिक्षा देती रही हूँ कि अपना कर्तव्य उचित रीति से करना ही संसार में सुखी रहने का मुख्य साधन है। इसको वे ध्यान में रक्खें। सच्चा स्नेहभाव और परस्पर का विश्वास ही सन्तोष का मुख्य साधन है। राजा ने प्राण त्याग करते समय यह कहा था कि हमारी मृत्यु से प्रजा को दुःख न हो। यही बात आज मैं फिर कहती हूँ और मेरी इच्छा है कि मेरा पुत्र इस कथन पर सदैव ध्यान रक्खे। मेरे पुरखा रोमन कैथलिक धर्म के अनुयायी थे। मैं भी उस धर्म पर पूर्ण विश्वास रखकर मरती हूँ। मैंने अपना धर्म कभी नहीं छोड़ा है। इस समय मेरे चित्त को समाधान करने और परलोक साधन पर उपदेश देने के लिए मेरे पास कोई धर्मोपदेष्टा नहीं है। इसलिए मैं स्वयं परमात्मा से अपने पापों के लिए क्षमा मांगकर अपने चित्त को शान्त करती हूँ। जिन लोगों ने मेरे लिए परिश्रम उठाया है, उनके प्रति मैं कृतज्ञता प्रकट करती हूँ; और क्षमा मांगती हूँ। तुमने भी मेरे लिए बहुत सा कष्ट उठाया है। अतएव तुम भी मुझे क्षमा करो; और यह बात अवश्य ध्यान में रक्खो कि जान-बूझकर मैंने तुमको कोई कष्ट नहीं दिया। मेरे शत्रुओं ने मुझे बहुत सताया है। मैं उन्हें भी क्षमा करती हूँ। मेरे सब सम्बन्धियों से मेरा अन्तिम अभिवादन कहना। भूलना नहीं। मेरे बहुत से मित्र हैं। उन्हें छोड़कर अब मैं जानेवाली हूँ। इसका मुझे बड़ा दुःख हो रहा है। उन सबसे तुम कहना कि अन्त समय में मुझे उनकी याद आई थी। प्यारी बहन! अब मुझे आज्ञा दीजिये; और मेरी याद कभी न भूलिए। तुम्हारा

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

कल्याण हो और मेरे पुत्र का भी कल्याण हो! हे ईश्वर! अपने प्यारों की जुदाई का दुःख कहाँ तक सहूँ! अस्तु। अब मैं अधिक नहीं लिख सकती। मेरा मन अब सांसारिक बन्धनों को तोड़कर परमात्मा की ओर जा रहा है। अब मैं विदा होती हूँ। परमात्मा तुम सब को सुखी रक्खे।" रानी के इस पत्र से पाठक अनुमान करेंगे कि उसके विचार कैसे थे और अन्त समय में उसके हृदय क्या दशा थी।

नियत समय निकट आने लगा और रानी शिरच्छेद की जगह में जाने के लिए तैयार हुई। उस समय उसने अपने बाल अपने हाथ से काटे और कैदखाने की कोठरी से बाहर निकली। सिपाहियों ने तुरन्त ही उसके हाथ पीठ की ओर लाकर बाँध दिये और गाड़ी पर बिठाकर चलते बने। उसके पास एक धर्मोपदेशक बैठाया गया था। सड़क के दोनों ओर तीस चालीस हजार सिपाही हथियारबन्द खड़े थे और उनसे तिगुने-चौगुने मनुष्य तमाशा देखने के लिए आसपास खड़े थे। उन लोगों ने रानी को देखकर बहुत से तिरस्कार-सूचक वाक्य कहे। पर रानी ने एक शब्द भी मुँह से न निकाला। उस भयंकर स्थान पर पहुँचते ही रानी गाड़ी से उतरी और सीधे वधस्तम्भ की ओर चली। उस समय उसका पैर वध करनेवालों में से किसी के लग गया। इस पर वह बोली, "क्षमा करना। मैंने जान-बूझकर पैर नहीं मारा।" गर्दन पर कुल्हाड़ी पड़ने के पहले उसने अन्तिम शब्द इस प्रकार कहे, "परमात्मा! मेरे बैरियों को उनके अपराधों के लिए तू क्षमा कर। अरे बच्चो! मैं अब बिदा होती हूँ और अब मैं शीघ्र ही तुम्हारे पिता से जाकर मिलूँगी।" ये वचन कहते समय उस का मुख परलोक-सुख की आशा से दैदीप्यमान हो रहा था। इतने में उसकी गर्दन पर कुल्हाड़ी पड़ी और राजा सोलहवें

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

लुई की रानी का सिर धड़ से अलग हो गया! इस प्रकार रानी की मृत्यु हुई। उस समय उसकी अवस्था ३९ वर्ष की थी। यह स्त्री बड़ी धर्मात्मा, सच्ची पतिव्रता और अत्यन्त स्नेहवान् माता थी। फ्रांस देश की इस राज्यक्रांति के समय सहस्रों मनुष्यों की मृत्यु हुई। उनमें इस रानी के सदृश बहुत कम लोग थे। ऐसी अच्छी स्त्री का इस भयंकर रीति से मारा जाना अत्यन्त दुख की बात है। परन्तु ऐसे मनुष्यों का अन्त समय का धैर्य्य और ईश्वरविश्वास देखकर चित्त को बड़ा सन्तोष होता है।

शिरच्छेद के कुछ और विचित्र उदाहरण

कुछ दिनों के बाद रोलांड नाम की एक विदुषी स्त्री पर भी ऐसा ही प्रसंग आया। उसके साथ ही लामार्ची नामक एक मनुष्य के वध का भी निश्चय किया गया। दोनों एक साथ ही गाड़ी परबिठाकर वधस्थल पर लाये गये। वहाँ पहुँचने पर रोलांडदेवी ने आग्रह किया कि मेरा शिरच्छेद पहले होना चाहिये। इस तरह उसके आग्रह करने का कारण यह था कि लामार्ची मरने से घबड़ा रहा था। इसलिए वह पहले मरकर यह दिखलाना चाहती थी कि शांत चित्त से किस तरह मरा जाता है। उसकी प्रार्थना स्वीकार की गई। जब वह वधस्तम्भ पर चढ़ने लगी तब पास ही स्थापित की हुई स्वतन्त्रतादेवी की मूर्ति की ओर देखकर वह बोली—"अरी स्वतन्त्रते! तेरे लिए रातदिन कितने अनर्थ होते रहते हैं, सो क्या तुझे मालूम भी है?" इतना कहते ही उसकी गर्दन पर कुल्हाड़ी पड़ी और उसका शिरच्छेद हो गया। इसके बाद लामार्ची मारा गया। देखिये, रोलांडदेवी, केवल यह दिखलाने के लिए ही कि शांत चित्त से कैसे मरा जाता है, उस मनुष्य

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

से पहले मरने को खुशी से तैयार हो गई। मनुष्य का स्वभाव भी एक समुद्र है। उसकी विचित्रता का कोई कभी पार नहीं पा सकता।

इसके पश्चात् और बहुत से मनुष्यों को, जो यथार्थ में बड़े विद्वान् और कुलीन थे मृत्यु-दण्ड दिया गया। बेली नाम का एक बड़ा भारी ज्योतिषी था। यह पहली लोकसभा का प्रेसीडेंट भी रह चुका था। इसने सरकार के बहुत से काम किये थे। पर इसे भी एक तुच्छ कारण के लिए कैद होना पड़ा। पीछे जब इसकी तहकीकात शुरू हुई तब न्यायसभा ने इसे भी मृत्यदण्ड दिया। उस समय यह अत्यन्त वृद्ध था। इसके सब बाल सफेद हो गये थे। यह जब वधस्थल पर लाया गया, तब एकत्रित मनुष्यों ने इस पर धूल और पत्थर बरसाये। उस समय बड़ी ठंड पड़ रही थी। ठंड के कारण वृद्ध खूब कांप रहा था। उसकी यह हालत देखकर एक दर्शक ने कहा—"क्यों रे बेली, तू क्यों कांप रहा है?" बेली ने उत्तर दिया—"भैया, क्या करूं, बड़ी सर्दी मालूम हो रही है।" बस थोड़ी ही देर बाद उसका सिर उड़ा दिया गया। ड्यूक आफ़ आर्लीन्स नामक एक कुलीन मनुष्य की भी यही दशा हुई। लव्वासिए एक बड़ा रसायनशास्त्री था। इसके आविष्कारों से लाभ हुए थे। परन्तु इसे भी एक क्षुद्र कारण के लिए मृत्यु दण्ड देना निश्चय हुआ। इसका अपमान करने के लिए एक मनुष्य ने उसके मुँह पर कहा, "हमारे प्रजासत्ताक राज्य में तत्वज्ञानियों की जरूरत नहीं है।" बार्नाव नामक एक बड़े वक्ता की भी यही दशा हुई। सच पूछिये तो वह मनुष्य प्रजासत्ताक राज्य का पक्षपाती था। पर मतभेद और अविश्वास के कारण उसे भी मृत्युदण्ड दे दिया गया। वह जब वधस्तम्भ पर चढ़ाया गया तब उसने बड़े क्रोध के साथ पांव

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

पटककर कहा—"वाह ! मैंने जो इतना परिश्रम किया, उसका क्या यही पुरस्कार है ?" इसी तरह उस समय की क्रूरता के अनेकों उदाहरण दिये जा सकते हैं। पर अवकाश के अभाव से हम सब का वर्णन नहीं करते। दूसरा कारण वर्णन न करने का यह भी है कि उस अत्याचार और निर्दयता का हाल सुनने से हमारे पाठकों को कोई विशेष लाभ भी नहीं हो सकता। हाँ, यह अवश्य मालूम होता है कि उस समय फ्रान्स में देश की अव्यवस्था के कारण लोगों के प्राणों का कुछ भी मूल्य नहीं था इस सारे अत्याचार और निष्ठुरता का कारण एक धर्मनिष्ठा का अभाव ही समझना चाहिए।

नास्तिकता की पराकाष्ठा

हम ऊपर कह चुके हैं कि फ्रान्स के सर्वसाधारण लोगों के मस्तिष्क में यह बात पूर्ण रूप से भर दी गई थी कि जब तक देश में राजा की सत्ता रहेगी तब तक दुःख का अन्त न होगा। अब लोग इस बात के लिये भड़काये जाने लगे कि ईश्वर और धर्म, ये सब कल्पित ढोंग हैं इनका भी जब तक नाश नहीं होगा तब तक हम अपनी विचारशक्ति और स्वतन्त्रता का उपयोग भली भाँति न कर सकेंगे। लोग खुल्लमखुल्ला कहने लगे कि ईश्वर और धर्म की हमको बिलकुल जरूरत नहीं। कई लोग इस जोश पर आये कि मनुष्य के राजा का अधिकार जिस प्रकार हमने नष्ट कर दिया, उसी प्रकार अब हम परमेश्वर, जो अपने को राजाओं का राजा कहलाता है, उसका भी अधिकार नहीं रक्खेंगे ! राज्य प्रबन्धकर्तृ सभा में ड्यूपांट नामक एक पुरुष था। इसने सबसे पहिले सर्वसाधारण के बीच में कहा कि—"मैं स्पष्ट रीति से स्वीकार करता हूँ कि मैं नास्तिक हूं।" उसकी इस बात को सुनकर लोगों ने उसे बड़ा पराक्रमी समझा; और बहुतेरे उसका अनुकरण

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

करने लगे। अधिक कहाँ तक कहें, धर्मोपदेश करना जिनका मुख्य कर्तव्य था, वे पादरीगण भी अपने परम्परागत धंधे को छोड़ कर खुल्लमखुल्ला नाष्तिकता का प्रचार करने लगे। पेरिस शहर के मुख्य पादरी गोवेट ने इस पन्थ को स्वीकार किया लगे हाथ छोटे-मोटे और बहुत से पादरियों ने भी उसका साथ दिया। वे सब एक साथ मिलकर राज्यप्रबन्धकर्तृ सभा के सन्मुख गये और सब के सामने ईसाई मत का परित्याग कर तत्सम्बन्धी अपने पवित्र झगे फाड़, नास्तिकता को स्वीकार किया और कहा कि अब से हम स्वतन्त्रता और समता के सिवा और किसी पर भक्ति न करेंगे। उनके इस साहस को देखकर सभा को बड़ा आनन्द हुआ। उसने उनका बड़ा मान किया; और इस कोरे ढोंग को छोड़ देने पर उनकी बड़ी प्रशंसा की। बस फिर क्या था, नास्तिकता की हवा चारों ओर बड़े वेग से बहने लगी।

इस नास्तिकता के प्रचार का पहला परिणाम तो यह हुआ कि लोगों ने तमाम गिरजाघरों को लूट लिया। वहाँ के घंटों को निकाल, उन्हें गलाकर, उनसे तोप के गोले बनाये। पवित्र संस्कारों के लिए कुछ सोने-चाँदी के पात्र थे। उन्हें बेचकर रुपया दाखिल-खजाना किया गया। गिरजाघर असबाब रखने और घोड़े बैल बाँधने के काम में आने लगे। मुर्दा गाड़ने के लिए जो सार्वजनिक स्थान नियत थे उनके दरवाजों पर बड़े बड़े अक्षरों में लिखा गया—"मृत्यु अनन्तकाल की निद्रा है।" पवित्रता की हँसी उड़ाई गई। वधस्तम्भ को पवित्रता का स्वरूप दिया गया। काल-गणना का नियम जो क्राइष्ट के समय से था, बन्द कर दिया गया। सम्पूर्ण पंचांग बदल दिया गया; और राज्यक्रान्ति के आरम्भ से नवीन संवत् शुरू किया गया। इस नये पंचांग में मारो का साधु बतलाया गया

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

था। पर यथार्थ में वह साक्षात् पाप की मूर्त्ति था। कहाँ तक कहें, मारो के नाम पर बहुतेरों ने स्तोत्र तक बनाये थे. जिन्हें लोग बड़े प्रेम से पढ़ा करते थे। लोगों में यह विचार फैलाया फैलाया गया कि 'विवाह' केवल व्यावहारिक सम्बन्ध है। इसमें धर्म का लेशमात्र भो नहीं। स्त्री-पुरुष को जब तक सुभीता बैठे, इस सम्बन्ध को स्थिर रखें, बाद को तोड़ डालें। इस मत के प्रचार होने पर, सारे फ्रांस की बात जाने दीजिए. अकेले पेरिस शहर में तीन मास में पांच सौ बासठ स्त्री-पुरुषों का विवाह-सम्बन्ध टूट गया। इधर नास्तिकगण केवल गिरजाघर ही लूटकर चुप नहीं हुए, बल्कि उनसे सम्बन्ध रखनेवाले मनुष्यों की वे बड़ी विटम्बना करने लगे। उपदेश देते समय पहनने के लिए उपदेशकों के जो बड़े बड़े झगे थे, उन्हीं की झूलें गधों पर डालकर उनका जलूस निकाला गया; और रोमन कैथोलिक सम्प्रदाय की पुस्तकें उन्हीं पशुओं के पैरों तले डालकर फड़वा डाली गईं। कहते हैं कि उनमें बहुत सी धर्म की पवित्र पुस्तकें थीं।

यहीं तक नास्तिकता का अन्त नहीं हुआ। एक दिन बहुत सी स्त्रियाँ एक जगह जमा हुईं और शामेट और हावर्ट नामक दो पुरुषों को अपना मुखिया बनाकर राज्य-व्यवस्थापक सभा की ओर चलीं। दोनों मुखिया आगे चल रहे थे। उनके पीछे सब युवा स्त्रियों का दल था और इन सब के पीछे एक और युवा स्त्री विचित्र वेष धारण किये चल रही थी। धीरे धीरे यह जलूस सभा भवन में जा पहुँचा। वहाँ शामेट ने आगे बढ़ कर सभा को सम्बोधन करके कहा—"सभासद महाशयो! कहा जाता है कि देवी देवता को कोई नहीं देख सकता, और न किसी ने देखा है, यह सब झूठ है—कपोल कल्पित है। भाइयो! अब इस भ्रान्ति को दूर करो। और यह

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

"विचार शक्ति-देवी" जो हम लाये हैं इसका दर्शन करो। यह कहकर उसने उस स्त्री का बुरका खींच लिया और उसके विचित्र स्वरूप का सब को दर्शन करा दिया। वह स्त्री मामारो नाम के एक पुस्तकविक्रेता की स्त्री थी। उसे यदि पाप की साक्षात् मूर्ति कहा जाय, तो कोई हानि नहीं। परन्तु समय का चमत्कार देखिये कि उस स्त्री का सभा ने बड़ा मान किया और उसे एक सुसज्जित स्थान पर ले जाकर बड़ा उत्सव मनाया। उस समय सर्व सम्मति ने निश्चय हुआ कि इसका नाम स्वतंत्रता-देवी रक्खा जावे और सब लोग इसकी आराधना करें। परन्तु उसी समय वहाँ पर जो भोज दिया गया, उसमें लोगों ने इतनी शराब पी ली कि वहाँ फिर मर्यादा और बड़प्पन की एक बात न रह गई। इस प्रकार उस समय फ्रांस देश में नीति और धर्म का कितना आभाव हो गया था, इसका वर्णन नहीं हो सकता।

देश की दुर्दशा

यह बात अनेक युगों से सिद्ध है कि सारे ऐहिक सुख धर्म और नीति की बुनियाद पर खड़े हैं। जहां ये दोनों नहीं रहते वहाँ अनेक प्रकार की विपत्तियाँ आ खड़ी होती हैं। इसका सब से अच्छा उदाहरण इस समय फ्रांस देश की दुर्दशा से मिल गया। लोगों में ईश्वर और धर्म-विषयक नास्तिकता उत्पन्न होते ही वहाँ से सत्य का डेरा उठ गया। विश्वास और परोपकार का सर्वथा नाश हो गया। कौन मनुष्य क्या कहेगा और क्या करेगा, इसका कुछ पता ही नहीं चलता था। झूठों की तो खूब बन आई। दरिद्रों को अपने प्राण बचाने की चिन्ता पड़ गई। देश में अन्न का अभाव हो गया। इसलिये दिन-दहाड़े लोग लूटे जाने लगे। व्यापारियों ने व्यापार छोड़ दिया बाजार में कोई चीज बिकने को नहीं आती थी। लोग बिना

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

अन्न के, भूखों के मारे, मरने लगे। अन्न के लिए ऐसी लूट-मार, झगडे बखेड़े मचे कि उनका निवारण करना सरकार के लिए दुष्कर हो गया। सन् १७९३ ई० के जुलाई महीने की २६-वीं तारीख को राज्य व्यवस्थापक-सभा ने अनाज इत्यादि सामग्री के विषय में एक कानून बनाया कि जो लोग बिना सरकार को सूचना दिये अनाज इत्यादि सामग्री अपने घर में रख छोड़ें उन्हें मृत्यु-दण्ड दिया जायगा। लाचार होकर व्यापारी लोग अपना माल बाजार में लाने और बँधे हुए निर्ख के अनुसार बेचने लगे। इस बिक्री में बदमाश लोग उन्हें बहुत तङ्ग करते थे। यही उनका मुनाफा था। इस तरह देश का सारा माल खतम हो गया और बाहर का माल, देश की अशान्ति के कारण, पहले ही से आना बन्द था। इससे देश की जो दुर्दशा हुई उसका वर्णन करना कठिन है। अधिक क्या कहें, माँ को अपना बच्चा भार स्वरूप जान पड़ने लगा।

सर फ्रान्स देश की ऐसी ही दुर्दशा होने के कारण देश भर के कोठीवाल, व्यापारी, सरदार, रईस, जागीरदार, धर्मोपदेशक इत्यादि सब दरजे के लोग, अपना सर्वस्व खोकर, केवल पेट भरने के निमित्त पेरिस में आकर रहने लगे। इससे शहर में और भी अधिक कोलाहल मच गया। इस समय इन बाहर से आये हुए महात्माओं और खास पेरिस-निवासियों की नैतिक भ्रष्टता इतनी बढ़ी हुई थी कि उसका यथार्थ वर्णन भी लोग सत्य न मानेंगे। व्यभिचार की तो इस समय पराकाष्ठा हो गई थी। बड़े बड़े राज कर्म्मचारीगण अपनी निज की स्त्रियों को छोड़कर वेश्याओं को रक्खे हुए थे और अपना सारा समय उन्हीं की आराधना में व्यतीत करते थे। इस समय वेश्याओं की बड़ी प्रतिष्ठा थी। उनके प्रिथयम राज-कर्मचारी उनकी मुट्ठियों में थे। इसलिए स्वार्थ-साधक लोग

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

उनकी चाटुकारी करके खूब अपना मतलब गाँठते। बहुतेरे ऐसे विचारवान् पुरुष भी थे जो इस बात को कभी कभी सोचते थे कि इस तरह इन नीच स्त्रियों की सङ्गति में समय व्यतीत करना अत्यन्त बुरी बात है। परन्तु इतना जान-बूझकर भी वे अपने बाल-बच्चों के साथ सदाचरण पूर्वक नहीं रह सकते थे। क्योंकि उन्हें डर था कि इस तरह रहने से हम राजपक्षपाती और पूरे धार्मिक समझे जायँगे और न जाने हमारी क्या दुर्दशा होगी। जिन मनुष्यों की यह हालत है कि वे सुख के लिए दुराचरण को स्वीकार करते हैं, और यह जानकर कि सदाचरण-पूर्वक चलने में दुःख भोगना पड़ेगा—उससे दूर रहते हैं, उनकी दशा बड़ी अनुकम्पनीय समझना चाहिए।

यह तो हुई लोगों के आचरण की दशा। अब यदि देश के प्रबन्ध की ओर देखा जाय तो उसकी और भी बुरी हालत थी। जिस समय जिरांडी पक्ष का नाश हुआ उस समय पेरिस के जेलखानों में ११५० कैदी थे। धीरे धीरे चार-पाँच महीने में इनकी संख्या बढ़ते बढ़ते साथ-आठ हज़ार तक पहुँच गई। इसका कारण शायद कोई यह बतलावे कि जो एक बार पकड़े गये. फिर छूटने नहीं थे, इसी कारण इतने कैदी एकत्र हो गये, सो नहीं। प्रति दिन दस-दस, बीस-बीस मनुष्य सूली पर चढ़ाये ही जाते थे। आगे चलकर यह संख्या इतनी बढ़ी कि प्रतिदिन सत्तर-अस्सी मनुष्य तक वधस्तम्भ पर चढ़ाकर मारे जाने लगे!

फ्रान्स की राज्य प्रबन्ध-कारिणी सभा को यह पूर्ण रूप से मालूम था कि देश के बाहर प्रायः सब देशों में हमारे विरुद्ध बड़ी तैयारी हो रही है। इसलिए उसने भी अपनी सेना को तैयार करना शुरू किया। परन्तु युद्ध की सामग्री उस समय उसके

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

पास बिलकुल न थी। उसे एकत्र करने के लिए उसने एक सभा स्थापित की। इस सभा को यह अधिकार दिया गया कि कृषि और अन्य आवश्यक कारखानों में काम आने वाले जानवरा और सामग्रियों को छोड़कर शेष लोगों के जो उपयुक्त सामान मिले, सब जप्त कर ले। जवाहिरात और सोने-चाँदी के कारखाने एकदम बन्द कर दिये गये और उनमें काम करनेवाले मनुष्य हथियार बनाने के कारखानों में लगा दिये गये। रोज वहाँ हजारों बन्दूकें तैयार होने लगीं। इस कार्य के लिए जो सभा स्थापित की गई थी, उसके मातहत दस हजार कर्म्मचारी थे। उन्हें वेतन देना सरकार के लिए एक नया खर्च हो गया। परन्तु खज़ाने में उतना धन नहीं था। इसलिए प्रजा पर इसका सारा बोझ पड़ा। इससे प्रजा बहुत पीड़ित हुई।

देश में अत्याचार होने के कारण बहुत से किसान अपना कार्य छोड़कर घर बैठ रहे। इधर बाहर का माल देश में न आने से देश का अनाज खतम होने लगा। यद्यपि लोगों की प्राण रक्षा के लिए विलक्षण कायदे बनाये गए थे; पर उनसे कुछ लाभ न हुआ। और जगह की बात तो जाने ही दीजिये, खास पेरिस शहर का व्यापार बन्द हो गया। जिस स्थान पर काम-धन्धे के लिए रोज हजारों मनुष्य एकत्र होते थे वहाँ एक पक्षी भी दृष्टि न पड़ने लगा। सन्ध्या समय जो बाजार जनपूर्ण रहते थे, वहाँ एक भी दुकान खुई हुई दिखाई न देने लगी। जिस स्थान पर प्रतिदिन हजारों दीपक लगाये जाते थे, वहां उजेले के लिए एक मिट्टी के तेल का दिया भी नहीं जलता था। क़ानून की सख़्ती के कारण घर में कोई अनाज़ संग्रह नहीं कर सकता था और बाहर से भी अनाज नहीं आता था। सब लोग इस चिन्ता में ग्रस्त थे कि देखिये अब प्राण कैसे बचते हैं। इस तरह फ्रांस देश की सब तरह

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

से दुर्दशा हो रही थी। इसका सम्पूर्ण वर्णन करने के लिए एक अलग ग्रन्थ चाहिये।

आठवां अध्याय

प्रशिया और आष्ट्रिया की निष्फलता

यह बात पहले ही लिखी जा चुकी है कि राजा सोलहवें लुई के जीवनकाल में जब प्रजासत्ताक राज्य स्थापित करने का प्रयत्न हो रहा था, बहुतेरे छोटे और बड़े मनुष्यों ने तङ्ग होकर, फ्रांस देश का रहना छोड़ विदेश की राह ली थी। साथ ही यह भी लिख आये हैं कि इन्हीं विदेश प्रवासी फ्रेंचों के उकसाने से फ्रांस देश की सीमा-रहित उन्मत्तता और उच्छृङ्खलता को नाश करने के लिए प्रुशिया और आष्ट्रिया की सेना फ्रांस की ओर रवाना हुई और उनका लांवी और बेड्रम नामक स्थान भी ले लिये, जिसकी खबर पेरिस पहुँची। यद्यपि वे स्थान प्रुशियनों ने बड़ी मेहनत से लिये थे, फिर भी वे उन्हें अपने अधिकार में बहुत दिनों तक रखने में समर्थ न हो सके। इसका कारण यह हुआ कि उन्होंने उन स्थानों की रक्षा का अच्छा प्रबन्ध नहीं किया था। इससे डूमोरिज नामक फ्रेंच सरदार ने बड़ा पराक्रम करके शत्रुओं को देश से निकाल बाहर किया। जिस समय लांवी और बड्रम पहले पहल प्रुशियनों के हाथ में आये, उस समय उक्त दोनों स्थानों के निवासियों ने बड़ी खुशियाँ मनाईं। उन्होंने समझा कि हम लोग अब फ्रेंच सरकार के झगड़ों और अत्याचारों से मुक्त हुए। उस समय उन्होंने प्रुशियनों का बड़ा आदर-सत्कार किया तथा उनके प्रति बड़ी कृतज्ञता प्रकट की। परन्तु फिर जब

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

फ्रेंचों ने उक्त दोनों स्थानों पर फिर से अधिकार कर लिया और उन्हें जब वहाँ के निवासियों के इस देशद्रोह का हाल मालूम हुआ, तब तो उन्होंने वहाँ के निवासियों से खूब बदला लिया। उन्होंने उन पर क्या क्या अत्याचार किये, उन सब का वर्णन करने के लिए यहाँ अवकाश नहीं; किन्तु पाठकों के अनुमान के लिए इतना लिख देना आवश्यक है कि जिन छै युवा स्त्रियों ने प्रुशिया के राजा को फूलों के हारों से सम्मानित किया था, उन सब को इन फ्रेंचों ने जान से मार डाला। अस्तु। इधर आस्ट्रियनों ने भी त्यांवील और मेटज नामक दो मजबूत किलों पर अधिकार जमाने की बड़ी कोशिश की, पर वे भी सफल नहीं हुए। त्यांवील के रहनेवाले प्रजासत्ताक राज्य के पक्षपाती थे। उन लोगों ने इस मौके पर जरा भी घबराहट नहीं दिखाई; बल्कि वे भीतर ही से आस्ट्रियनों की नाना प्रकार से हँसी उड़ाते रहे। उन्होंने लड़की के एक घोड़े के मुँह पर थोड़ी सी घास बांधी और एक कागज पर लिखा, "जब मैं सब घास खा लूँगा तब तुम्हें किला प्राप्त होगा"; और फिर उस घोड़े को, उस कागज के साथ, किले पर से बाहर छोड़ दिया। उसे देखकर आस्ट्रियनों को कितना बुरा मालूम हुआ होगा, इसका अनुमान पाठक सहज ही में कर सकते हैं। लैलै नामक एक दूसरे शहर के निवासियों ने भी ऐसी ही वीरता दिखलाई। उन्होंने आस्ट्रियनों पर लोहे के तप्त गोले, बड़े बड़े पत्थर और उबलते हुए तेल, इत्यादि की खूब वर्षा करके उन्हें मार भगाया। ये सब घटनाएँ सोलहवें लुई की मृत्यु के पहले हुई थीं।

सोलहवें लुई का जब तक बध नहीं हुआ था, यूरोप के बहुतेरे राष्ट्र समझते थे कि फ्रांस देश से फ्रांस के विरुद्ध हमारा कुछ संबन्ध नहीं है. अतएव वहाँ कुछ

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

इङ्गलैण्ड तथा अन्य राष्ट्र

भी हो, हमें दस्तन्दाजी करने की जरूरत नहीं। परन्तु सोलहवें लुई के वध के उपरान्त फ्रेंचों का प्राबल्य बहुत बढ़ा। वे प्रजासत्ताक राज्य की स्थापना करते हुए बड़े बड़े अत्याचार करने लगे तथा अपने ही देश के सदृश अन्य देशों को भी उसकाने लगे कि वे भी प्रजासत्ताक राज्य की स्थापना के लिए प्रयत्न करें। अब तो यूरुप के अन्य राष्ट्रों की भी आँखें खुलीं और वे अपनी रक्षा के प्रयत्न में लगे। रूस, स्पेन, आष्ट्रिया, सार्डिनिया, नेपल्स और ग्रेट ब्रिटेन ने आपस में एका करके निश्चय किया कि फ्रांस देश में प्रजासत्ताक राज्य के लिये जो अत्याचार हो रहे हैं उन्हें बन्द करना चाहिए। इस तरह फ्रांस और यूरप के अन्य राष्ट्रों के बीच युद्ध आरम्भ हो गया। इस लड़ाई में करोड़ों रुपये खर्च हो गये और हजारों आदमियों के प्राण गये। आखिर वाटरलू के क्षेत्र में इस युद्ध का फैसला हुआ बहुतेरे विद्वानों का कथन है कि यूरप के अन्य राष्ट्रों ने अपनी ओर से फ्रांस से लड़ाई ठानी, यह ठीक नहीं किया। परन्तु यदि शान्त चित्त से इस विषय पर विचार किया जाय तो ज्ञात होता है कि यूरप के अन्य राष्ट्रों ने इस मौके पर उचित ही किया। क्योंकि यदि वे ऐसा न करते तो उनके देश की बहुत बड़ी हानि होती। इसका कारण यह है कि उस समय फ्रांस निवासी बड़े उन्मत्त हो गये थे और वे आस-पास के देशों पर अधिकार करने का विचार कर रहे थे। फिर वे लोग कोई साधारण दरजे के मनुष्य न थे; प्रत्युत जो सभा सारे फ्रांस देश का राज्य शासन करती थी उसी ने स्वयं सारे संसार के लिए यह घोषणा कर दी थी कि जो लोग राजसत्ता के कष्ट से छूटकर प्रजासत्ताक राज्य स्थापित करने के लिए तैयार हों; उनकी सहायता हम तन मन धन से

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

करेंगे। इस घोषणा पत्र का अनुवाद प्रायः सब भाषाओं में किया गया था और इसकी लाखों कापियां प्रकाशित करके संसार भर में बांटी गई थीं। साथ ही फ्रेंच सेना के सरदारों को हुक्म दे दिया गया था कि जिस प्रान्त पर तुम अधिकार करो, वहाँ के निवासियों को घोषणा पत्रों के द्वारा पहले सूचित करो कि हमारा यह सारा प्रयत्न सर्व साधारण को राजा बनाकर उन्हें सुखी रखने के लिए है। सारांश, प्रजा-सत्ताक राज्य स्थापित करने का जोश फैलाने के विषय में उन्होंने अपने प्रयत्नों की पराकाष्ठा कर दिखलाई और उनके पास सेना भी बहुत सी एकत्र हो गई। ऐसी दशा में यदि यूरप के अन्य राजाओं ने अपने स्वार्थ की रक्षा के लिए फ्रान्स के विरुद्ध तलवार उठाई तो यह उनके लिए उचित ही था।

फ्रांस से लड़ने के लिए बहुत से राष्ट्र तैयार हुए थे। उनमें सबका अगुआ इंगलेंड था। इसे जितना जोश चढ़ा हुआ था, उतना अन्य राष्ट्रों को नहीं। सच पूछिये तो जब फ्रांस के पहले पहल प्रजासत्ताक राज्य की स्थापना की तैयारी होने लगी तो वह इङ्गलेंड निवासियों को बड़ी अच्छी मालूम हुई और उन्हें आशा हुई कि फ्रांस के इस प्रयत्न से बहुत से सुधार होंगे। परन्तु जब उन्होंने देखा कि प्रजासत्ताक की आड़ में फ्रांस में बहुत से अत्याचार हो रहे हैं तब तो उन्हें बड़ा क्रोध हुआ और वे फ्रेंचों के प्रति अत्यन्त द्वेषभाव प्रकट करने लगे। उस समय पिट साहब इङ्गलेंड के दरबार के प्रधान मंत्री थे। ये महाशय बड़े राजनीतिज्ञ, बुद्धिमान और दूरदर्शी थे। इनका विचार पहिले फ्रांस के मामले में हाथ डालने का बिलकुल नहीं था। जिस समय इन्होंने राज्य की बागडोर अपने हाथ में ली थी, राज्य की आमदनी बहुत कम थी;

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

पर इन्होंने अपने बुद्धिबल से उसे खूब बढ़ाया था। इसलिए इनका यह इरादा नहीं होता था कि फ्रान्स के साथ युद्ध करके लाखों रुपये बरबाद कर दिये जायँ। यही कारण है कि वे युद्ध का मौका न आने देने का प्रयत्न करते थे। परन्तु आखिर में इनका सारा प्रयत्न व्यर्थ हुआ। एक छोटी सी जगह में जहाज चलाने का विषय लेकर फ्रान्स और इङ्गलेंड में झगड़ा हो गया और फ्रान्स ने इङ्गलेंड के साथ लड़ना निश्चय किया। तब लाचार होकर इङ्गलेंड को भी शस्त्र ग्रहण करना पड़ा।

समस्त यूरप को अपने विरुद्ध देखकर फ्रान्स ने भी अपनी रक्षा की तैयारी शुरू की। इस तैयारी का

युद्ध के लिए फ्रांस की तैयारी तथा विलक्षण कानून

पूरा पूरा बयान करने के लिए यहाँ स्थल नहीं है। इसलिए कुछ संक्षेप से यहाँ बतलाते हैं। उस समय फ्रांस देश की राज्य-प्रबन्ध-कारिणी सभा ने स्वदेशरक्षा के लिए एक नया कानून बनाया। उसका तात्पर्य यह था कि फ्रान्स देश में जितने मनुष्य हैं—क्या स्त्री, क्या पुरुष. क्या बुड्ढे, क्या युवा, और क्या बालक, सब इस विपत्ति के समय देश की सेवा करने के लिए तैयार हों—नवयुवक पुरुष अपनी कमर कसकर युद्ध क्षेत्र में जाने के लिए सज्जित रहें, स्त्रियां सिपाहियों की पोशाकें और तम्बू सीकर तैयार करें बालक कपड़ों का पट्टियाँ फाड़कर उनकी घड़ी करके घायल सिपाहियों के जख्म बांधने के लिए तैयार रहें, और बुड्ढे लोग अपनी शूरता के बातें सिपाहियों को सुनाकर उन्हें युद्ध के लिए उत्तेजित करें इस कानून को सबने सहर्ष स्वीकार किया। बन्दूकें तैयार करने के लिए पेरिस की बड़ी बड़ी सड़कों के किनारे दो तीन सौ कारखाने खोले गये और वहाँ रात दिन काम

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

होने लगा। गोला बारूद का सामान देश के हर एक प्रान्त से मंगाया जाने लगा। उस समय बारूद बनाने के लिए शोरे की बड़ी कमी पड़ी और यह पदार्थ बाहर से आ नहीं सकता था। अतः फ्रेंच सरकार ने एक विद्वान रसायनशास्त्री को हुक्म दिया कि वह शोरे के बदले इस काम के लिए; और किसी पदार्थ का आविष्कार करे। वह रसायनशास्त्री इस समय हवालात में क्षुद्र कारण से बन्द था। उसकी तहक़ीक़ात होने को थी। अस्तु। उसने सरकार को उत्तर दिया कि शोरे के बदले तहखानों की बहुत पुरानी मिट्टी खूब काम आवेगी। बस फिर क्या था, हज़ारों मनुष्य फावड़ा कुदाल लेकर तहखानों को खोदने लगे। इस समय सरकारी खजाने में नकदी रुपयों की बड़ी कमी पड़ी। इस पर सरकार ने कागज़ के नोट चलाकर और प्रजासत्ताक राज्य के विरोधियों के घर लूटकर इस कमी को पूरा लिया। सैनिकों को जिन चीजों की जरूरत पड़ती थी, वे रैयत से मार-कूटकर ली जाती थीं। उदाहरणार्थ, उस समय सरकार को दस हज़ार जोड़े जूतों की ज़रूरत पड़ी। उसने एक प्रान्त के अधिकारी को तत्काल ही उतने जोड़े उपस्थित करने का हुक्म दिया। उस अधिकारी ने अपने प्रांत के छोटे-बड़े सब के घरों से जूते ढुँढवाकर तथा लोगों के पैरों से जूते उतरवाकर उस काम को पूरा किया। इस बात से अनुमान कर लेना चाहिये कि वहाँ की सरकार उस समय अपनी प्रजा के सुख और स्वतन्त्रता पर कितना ख्याल करती थी। जिन इमारतों में किसी दिन पाठ-शालाएँ लगती थीं, उनमें गोला-बारूद भरा गया। सारांश सारा फ्रांस देश उस समय किसी बड़ी सेना की विस्तृत छावनी के समान बन रहा था। यह सैन्य सज्जित करने का सारा काम कार्नो नामक एक कुशल सेनापति को सौंपा गया

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

था। यह पुरुष बड़ा बुद्धिमान था और उसकी युद्धप्रणाली पहले की अपेक्षा बड़ी सरल और शीघ्र गति वाली थी। उस प्रणाली को यूरप के सब राष्ट्रों ने पसन्द किया और तभी से उन्होंने उसे ग्रहण किया। कहते हैं कि जिस युद्धप्रणाली से आगे चलकर नेपोलियन बोनापर्ट सारे जगत् में विख्यात हुआ, वह इसी पुरुष की निकाली हुई थी। उसके नियमो में एक नियम यह भी था कि जो मनुष्य अपनी शूरता से कोई बड़ा पराक्रम का कार्य करेगा, उसे उसके कुल शील इत्यादि पर ध्यान न देकर, एकदम किसी भारी दरजे की जगह दी जायगी। यह नियम राजसत्ता के समय में न था। उस समय बड़ी जगह मिलने के लिए बड़े कुल में जन्म लेना पड़ता था। अतएव ग़रीब लोगों के शौर्य की कोई कीमत न समझी जाती थी। परन्तु अब उन्होंने देखा कि वह अड़-चन दूर हो गई। इसलिए सब प्रकार के सिपाहियों में बिजली सी दौड़ गई, तथा सब लोग अपनी वीरता दिख-लाने के लिए उत्साहित हुए।

एक तो फ्रन्स में योंही अन्न का भारी कष्ट था, दूसरे फिर पद पद पर किसी क्षुद्र कारण पर भी, मृत्यु दण्ड का भय—ऐसी दशा में लोगों ने समझा कि सेना में भरती हो जाना ही सब से उत्तम है। इससे एक तो पेट भर खाने को मिलेगा, दूसरे यदि भाग्यवशात् कोई वीरत्व का काम बन पड़ा तो कोई ऊँचा पद प्राप्त हो जायगा। ऐसा निश्चय करके बहुत लोग सेना में भरती होने लगे। फिर भी उनका मृत्युदण्ड का भय दूर नहीं हुआ। कारण, प्रत्येक पलटन के साथ साथ एक एक वधस्तम्भ भी चलता था। ऐसे सिपाहियों को जो प्रजा-तंत्र के प्रतिकूल या राजतंत्र के अनुकूल थोड़ा भी कार्य करते, उन्हें तुरन्त वधस्तम्भ पर चढ़ा कर मार डालते। इतना

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

ही नहीं, किन्तु यदि किसी सैनिक ने शत्रु का पराजय किया, और वह उसी खुशी में भूला रह कर जय प्राप्ति का और अधिक कार्य न कर सका, तो वह तत्काल उस पर चढ़ा दिया जाता था। मतलब यह कि उस समय शत्रु के साथ जी होम कर लड़ना भी कई अंशों में अपराध ही समझा जाता था क्योंकि अधूरी जीत होने पर भी शिरच्छेद के लिए शिर बढ़ाना पड़ता था। प्रायः सद्गुण के अल्प होने पर लोग उसे सद्गुण मानने को तैयार नहीं होते पर अल्प सद्गुण को भारी अपराध मान लेना फ्रेंच सेना ही में देखा गया।

वेंडी प्रान्त की दशा, उसका सत्यानाश

फ्रांस की इस सेना को केवल यूरप के अन्य राष्ट्रों से ही लड़ना नहीं था; किन्तु उनमें एक ऐसी बुराई पैदा हो गई कि जिसके कारण उन्हें आपस में ही लड़ना पड़ा। पेरिस के नैऋत्य कोण की ओर फ्रांस की सीमा पर वेंडी नामक एक प्रान्त है। वहाँ सब किसान ही किसान रहते थे। ये बड़े सीधे सादे निरुपद्रवी और परमात्मा का भय माननेवाले थे। उन्हें इस नवीन प्रजा-तन्त्र राज्य की रीति बिलकुल पसन्द नहीं थी और देश में चारों ओर जो नास्तिकता फैल रही थी उसको देखकर उन्हें बड़ा खेद होता था। उस प्रान्त में राज्यक्रान्ति के बहुत थोड़े कारण उत्पन्न हुए थे। वहाँ के किसानों और रईसों में बड़ा सख्यभाव था। वे परस्पर खूब मिल जुलकर रहते थे। जमीदार लोग अपनी प्रजा के बीच में जाकर रहते थे और उन्हें हर तरह से मदद किया करते थे। इसलिए प्रजा भी उनके पसीने की जगह अपना खून बहाने को तैयार थी। इससे एक यह बात सिद्ध होती है कि जिस जगह के किसान और उनके जमींदार अथवा उनसे लगान लेनेवाले,

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

एकप्राण होकर रहते हैं वहाँ के लोगों को राज्यक्रांति की इच्छा स्वप्न में भी नहीं होती। वेंडी के धर्मोपतेशक वास्तव में धार्मिक थे। फ्रांस के अन्य स्थानों के धर्मोपदेशकों के समान उनमें नास्तिकता नही फैली हुई थी। वे लोगों से मिल-जुलकर रहते थे। उन्हें सदुपदेश देते थे। संकट के समय उन्हें उचित सलाह देते थे। उनके सुख में सुख मानते थे ौर उनके दुख में आप भी दुःखी होते थे। वेंडी के लोग भी अत्यन्त सरल और सात्विक थे। उनके विषय में बहुत सी बातें पुस्तकों में लिखी हैं। प्रजासत्ताक राज्य के पक्षपातियों और उनसे जो लड़ाइयाँ हुई उनमें एक बार ऐसा हुआ कि इन्होंने प्रतिपक्षियों का एक शहर अपने अधिकार में कर लिया; और थोड़ी देर के बाद इन सिपाहियों ने अपने अफसर के पास जाकर तपाखू पीने को माँगी। इस पर उस अफसर ने पूछा—"क्यों शहर की दुकानों में तमाखू नहीं है जो मुझसे मांगने आये हो ?" सिपाहियों ने उत्तर दिया—'हुजूर, दुकानों में तो खूब है; पर हमारे पास उसे मोल लेने के लिए पैसा नहीं।" इससे स्पष्ट ज्ञात होता है कि वेंडी के इन सिपाहियों के मन में अपने जीते हुए शहर की दुकानों और घरों के लूटने का विचार बिलकुल नहीं था।

इस प्रकार वेंडी प्रान्त के निवासियों और पेरिस के प्रजासत्ताकवादियों में ठन रही थी। उनके इस विगाड़ के अनेक कारण थे। उनमें एक मुख्य तात्कालिक कारण यह था कि प्रजातन्त्र राज्य के अधिकारियों ने वेंडी प्रान्त के निवासियों से सेना में भरती करने के लिए एक दम तीन हजार जवान सख्ती के साथ माँगे। वहाँ की प्रजा ने उतने लोग देने से इन्कार किया। इससे झगड़ा बहुत बढ़ा और कई महीने तक

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

दोनों पक्षों में युद्ध होता रहा। यद्यपि वेंडी प्रान्त बहुत भारी नहीं था, फिर भी वहाँ के निवासियों ने प्रजासत्ताक पक्ष की सेना को जर्जर कर डाला। वेंडी प्रान्त पहाड़ी है। उसमें जंगल बहुत है। नदियाँ बड़ी बड़ी हैं। दरी-खोरी बहुत गहरी और भयङ्कर हैं। उन सब की पूरी पूरी जानकारी सिर्फ वहीं के लोगों को थी और वे तैरने के काम में बड़े होशियार थे। उनसे लड़ने के लिए पेरिस के पनटनों पर पलटनें आती थीं; पर अपरिचित प्रदेश होने के कारण वे किसी दरी-खोरी में फँस जाते और फिर वेंडी के लोग उन्हें खूब पीट लेते। उस समय पेरिस की सेना ऐसी नाश होती कि उसकी दुर्दशा का हाल सुनाने के लिए कोई भी मनुष्य पेरिस नहीं लौट पाता फ्रांस की सरकार ने जब यह देखा कि ऐसी साधारण लड़ाइयों से वे लोग नहीं मानते तब उसने वेंडी प्रान्त का सत्यानाश कर डालने के लिए एक नई सेना तैयार की और उसका आधिपत्य यूगो नामक एक सरदार के हाथ में दिया। उन यमदूतों ने वहाँ जाकर जो जो अत्याचार किये, उनका वर्णन करना कठिन है। एक महाशय ने अपनी आँखों देखा थोड़ा सा हाल लिख रखा है। उसका सारांश इस प्रकार है— सेंटे हारमंड और चांटोनो नामक शहरों में उन्होंने एक पुरुष भी जीता नहीं छोड़ा था। सिर्फ कुछ थोड़ी सी स्त्रियाँ बच गई थीं। बड़ी बड़ी इमारतें, घर, झोपड़ियाँ तथा खलियान इत्यादि सब में एकदम आग लगा दी गई थी। संध्या के समय जब भेड़-बकरियों के झुंड जंगल से चर कर अपने बाड़ों में आये तब उन्होंने देखा कि उनकी जगहें धांय धांय जल रही हैं और चारों ओर धुआं छा रहा है। सारे जानवर धुएं से घबड़ाकर इधर-उधर दौड़ने लगे। वे सब करुण स्वर से चिल्ला रहे थे। मुर्दा खाने के लिए गिद्ध भी

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

आकाश से उतर आये और कुछ अन्य पशु भी भयानक शब्द करते हुए मांस-भक्षण के लिए वहाँ आ पहुँचे। इन सब बातों से वहाँ इतनी भयंकरता हो गई थी कि जिसकी याद आते ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं।" इस तरह जब वेंडी प्रान्त के लोग अत्यन्त त्रस्त और निरुपाय हो गये, तब उन्होंने अपना सारा अभिमान त्याग कर प्रजासत्ताक राज्य की विजयी सेना की शरण ली। पक्ष कितना ही सत्यपूर्ण क्यों न हो। और अभिमान चाहे जितना बड़ा हो; पर अत्याचार के आगे उसकी कुछ नहीं चलती। यह सच है कि कई बार अन्याय से डर कर न्याय को पीछे हटाना पड़ता है, पर अन्त में सत्पक्ष की ही जय होती है। इस समय उपर्युक्त रीति से वेंडी प्रान्त शरण आ गया, यह सही है; पर इससे यह न समझना चाहिए कि उन दोनों का झगड़ा सब तय हो गया। वास्तव में यह शत्रुता भीतर ही भीतर सुलगती रही, जो आगे चलकर फिर उभड़ उठी। समय आने पर इस विषय में लिखा जायगा।

शहरों और मनुष्यों का भयंकर विध्वंस

फ्रांस देश में परस्पर का झगड़ा सिर्फ वेंडी ही से नहीं हुआ प्रत्युत मार्सेलिस, टुलोन और लिआन्स में भी यही हाल हुआ था। पर इसका कारण कुछ दूसरा ही था। जिरांडी पक्ष का वर्णन पहले हो चुका है। इसी पक्ष की ओर उक्त शहरों के लोगों का झुकाव था। इसलिए जब उक्त पक्ष का नाश हो गया तब उसके प्रतिपक्षियों के प्राबल्य का नाश करने के लिए इन शहरों के लोगों ने शस्त्र ग्रहण किया। उन्होंने अपनी ओर से अनेक प्रयत्न कर देखे; परन्तु प्रजातन्त्र की सेना के आगे उनकी एक न चली। अन्त में एक के बाद एक तीनों शहरों को शरण में आना पड़ा। इन

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

तीनों स्थानों में बहुत से क्रूरता और शूरता के कार्य हुए, और लिओन्स में तो उनकी पराकाष्ठा हो गई। साठ हज़ार मनुष्यों ने एक दम शहर को घेर लिया और एक साथ गोला, पत्थर, तप्त तेल, बाण इत्यादि की वहां वृष्टि की। इससे हज़ारों मनुष्यों के प्राण गये और सैकड़ों इमारतें जलकर खाक हो गईं। इतना होने पर भी शहर के शूरवीर लोगों ने कुछ भी परवा न की। परन्तु अन्न के बिना जब वे भूखों मरने लगे तब तो उनकी आशा भंग हो गई और वे आप ही आप विरोधियों के शरण आये। पेरिस की राज्य-प्रबन्ध-कारणी सभा को इस बात पर बड़ा क्रोध हुआ कि इस शहर के लिये उसे बड़ी तकलीफ उठानी पड़ी। अन्त में उसने उस शहर से पूरा बदला लेने का विचार किया बाहर की विजयी सेना जब जयजयकार शब्द करती हुई भीतर घुसी; उस समय उसने जो भयानक कृत्य किये उनके स्मरण मात्र से रोमांच हो आता है। यहां पर यह प्रश्न उठ सकता है कि ऐसी दुःखदायी घटना के वर्णन करने की जरूरत क्या है; इस पर निवेदन यह है कि प्रस्तुत पुस्तक इतिहास की है। यह वह शास्त्र है, जिससे मनुष्य के स्वभाव का पूर्ण ज्ञान प्राप्त होता है। अतएव इसमें उन करतूतों का अवश्य दिग्दर्शन कराना चाहिये, जिनमें क्रूरता की परमावधि हो गई थी। शहर पर अधिकार हो जाने के पश्चात पेरिस की सरकार ने दो मनुष्यों को इस कार्य पर नियत किया कि वे अपराधियों को खोजकर उचित दंड दें। इन दोनों मनुष्यों में एक का नाम कोथान और दूसरे का नाम हर बाइस था। इनमें कोथान अर्धाङ्गवायु रोग से पीड़ित था। इस रोग के कारण वह अपनी जगह से हिल तक नहीं सकता था। अतएव उसे जब दूसरे स्थान पर जाने की जरूरत पड़ी थी, तब लोग उसे उठाकर ले चलते थे। देखने में और वार्तालाप

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

करने में वह अत्यन्त सीधा सादा और दयालु जान पड़ता था पर यथार्थ में वह इतना क्रूर था कि उसकी अपेक्षा सिंह, व्याघ्र आदि हिंसक पशु भी विशेष दयालु कहे जा सकते हैं। वह लिआन्स में दिन भर घूमता और उसके साथ हजारों मनुष्य फावड़ा कुदाल लेकर घूमते थे। वह जिस घर के सामने जाकर खड़ा होता और कह देता कि—'यह घर बलवाई का है। अतएव मेरे हुक्म से यह दण्ड का पात्र है—" इस पर तत्काल ही उसके मनुष्य उस घर को फावड़ों से गिराकर धूल में मिला देते! इस तरह उसने सारा शहर का शहर नाश कर दिया। यह राक्षस केवल घरों का ही नाश कर सन्तुष्ट नहीं हुआ, किन्तु इस कार्य के बाद उसने शहर के मनुष्यों की जांच करने का आरम्भ किया। परन्तु बलिहारी है उसके न्याय और जाँच की! पुरुष, स्त्री बच्चा कोई भी हो सामने पकड़ कर लाया जाता और दो एक प्रश्न करने के बाद हुक्म दे दिया जाता कि बस इसे वधस्तम्भ पर चढ़ा दो। इस तरह लाखों मनुष्यों के प्राण लिये गये। अपराधियों से सारे कैदखाने भर गये थे। वहां उनकी जो दुर्दशा की जाती, वह मृत्यु से भी बढ़कर भयङ्कर थी। किसी किसी अपराधी ने दुःख के उद्रेक में आकर कुछ उद्गार उस क़ैदखाने की दीवाल पर लिखे थे। उनमें से एक इस तरह है—"अब दो-तीन घन्टे के बाद मैं नहीं रहूँगा! मुझे मृत्यु आवेगी। उस मृत्यु को धन्य है; क्योंकि उससे मुझे विश्रांति मिलेगी।.........अरे अधम न्यायधीशो! तुमने मुझे मृत्यु दण्ड देकर अच्छा धोखा खाया! क्या तुम्हें नहीं मालूम कि मेरे जीवन के साथ मेरे दुःखों का भी अन्त हो जायगा! ठीक है, तुम मेरे परम शुभाकांक्षी मित्र हो!..... ...अहाहा! एक दो घड़ी में अब मैं इस संसार से उठ जाऊंगा और तमाम झगड़ों से पाक होकर अब मुझे शान्ति

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

मिलेगी !" इससे मालूम हो जायगा कि उन क़ैदियों के मन की दशा कैसी थी। इनमें से बहुतेरे तो आत्म-हत्या के लिये उत्सुक रहते थे; पर उन्हें उसका कोई साधन नहीं मिलता था। तो भी कितनों ही ने, किसी न किसी युक्ति से बधस्तम्भ पर चढ़ने के पहिले, आत्म-हत्या कर ही ली। एक मनुष्य को जब कोई उपाय सूझ न पड़ा। तब उसने कांच के टुकड़े से ही अपने शरीर की सब नसों को एक दूसरे से अलग कर दिया। उसके शरीर से रक्त बह रहा था। इतने में सिपाहियों ने उसे वैसा ही उठाकर वधस्तम्भ पर चढ़ा दिया; और उसका शिर काट कर उसे मार डाला।

इस तरह प्रति दिन तीस-चालिस और पचास मनुष्यों तक की हत्या की जाती थी। परन्तु फूशे नामक एक मनुष्य को यह संख्या कम मालूम हुई और उसने लिखा कि—"शहर के नाश और मनुष्यों के वध का कार्य बड़ी ढिलाई से हो रहा है। प्रजातंत्र राज्य की धाक बैठाने के लिये यह कार्य बड़ी शीघ्रता से होना चाहिये।" शिरच्छेद करने वाले जल्लादों ने एक बार अत्यन्त थक कर हरबाईस से प्रार्थना की—"महराज, हम लोग अत्यन्त थककर मृतप्राय हो रहे हैं।" इस पर उसने उत्तर दिया—"अरे क्या तुम नहीं देखते कि मैं कितना काम करता हूँ। इसी प्रकार यदि हम लोग अपना कार्य नहीं करेंगे दो हम लोगों का यह प्रजा सत्ताक चलेगा कैसे? मेरे परिश्रम की ओर देखो। इससे तुम में नवीन उत्साह का सञ्चार होगा।" अस्तु. जब देखा गया कि मृत्युदण्ड का कार्य शीघ्रता से नहीं होता तब मनुष्य-वध की एक युक्ति निकाली गई यह इस प्रकार थी—पुरुष, स्त्री, बच्चे मिलाकर सौ दो सौ मनुष्य दो पंक्तियों में बांधकर एक खाई के दोनों ओर बैठाये जाते और दोनों ओर से दो तोपों के गोलों से एकदम उड़ा दिये जाते। इस युक्ति से हजारों मनुष्य घंटे दो घंटे

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

में ही मार डाले जाते थे। इसका एक उदाहरण यहाँ पर देते हैं। एक दिन दो सिपाही कैदियों को तोप से उड़ा देने के लिए एकत्र कर रहे थे और उन्हें रस्सी से बाँध रहे थे कि इतने में तोप में बत्ती दे दी गई। यह देखकर दोनों सिपाही चिल्लाने लगे—"ठहरो, ठहरो, हम सरकारी सिपाही हैं। अपराधी नहीं हैं।" यह आवाज हरबाईम के कान में गई, तब उसने कहा—"उंः! दो अधिक मर जायँगे तो इसमें कौन बड़ी बात है। एक न एक दिन तो मरना ही है। आज मर जायगे तो फिर कल न मरना पड़ेगा।" इसी राक्षस के समान एक और राक्षस नांट के लोगों का सत्यानाश कर रहा था। उसने मनुष्य को जल्द मार डालने की एक युक्ति और निकाली थी वह यह कि हाथ-पांव बांधकर कैदी लोग एक जहाज में भर दिये जाते और जहाज ल्वार नदी के मध्य भाग में ले जाकर एकदम डुबा दिया जाता। इस तरह एक बार में तीन-चार सौ मनुष्यों के प्राण यह ले लेता था। नदी में यत्र-तत्र मुर्दे ही मुर्दे दिखलाई देने लगे। वे सड़कर इतने विषैले हो गये कि उनका मांस खाकर नदी की सारी मछलियां रोग-ग्रसित हो गई; और उन मछलियों को खानेवाले मनुष्य भी रोगी होने लगे। इस पर यह निश्चय हुआ कि इन मछलियों की बिक्री बन्द कर दी जाय।

डांटो का अन्त

इस तरह समस्त फ्रांस देश में धर पकड़ और भयंकर मनुष्यवध जारी था और उधर प्रजातन्त्र-राज्य के दरबार में रोबेस्पियर का माहात्म्य बढ़ रहा था। वह जो कहता, उसी को सब मानते। उसके विरुद्ध बोलने का किसी को साहस न होता। उसके इस प्रभाव को देख कर अन्य पक्षों के लोग उससे मन ही मन जलते थे; पर सामने कुछ कहने की उन्हें भी हिम्मत न थी। रोबेस्पिर वास्तव में बड़ा निर्दयी और धूर्त था। वह इस बात को अच्छी

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

तरह जानता था कि उसके पक्ष के कौन कौन लोग उससे द्वेष रखते हैं। इसलिए वह बड़ी युक्ति के साथ ऐसे मनुष्य को एक एक करके वधस्तम्भ पर चढ़वा रहा था। मि० हावर्ट और पेरिस के भूतपूर्व धर्मोपदेशक गावेल की उसने ऐसी ही दुर्दशा की। साधारण मनुष्यों की कौन कहे, डांटो, जो राज्य क्रांति कराने में एक बड़ा मुखिया था; और जिसकी कारतूत से हजारों मनुष्यों के प्राण गये, तथा रक्त की नदियां बहीं, उस पर भी वहीं मौक़ा आया! मुख्य कारण यही था कि राज्यप्रबन्ध के मामले में रोबेस्पियर से उसका मतभेद हो गया और इसी से उनमें वैमनस्य बढ़ गया। अपने अपने मतों के समथम में इन दोनों पराक्रमी पुरुषों ने एक दूसरे के अनेक पाप-कर्म प्रकट करके प्रभावशाली भाषण दिये। रोबेस्पियर के भाषण का प्रभाव लोगों पर अच्छा पड़ा और डांटो अपराधी जान पड़ा। फिर क्या था, वह तुरन्त ही पकड़कर जेल में डाल दिया गया और उस पर मुकदमा चलाने की ठहरी। नियत दिन आने पर उसकी जाँच शुरू हुई। न्यायसभा के सामने पहले पहल जब उसका नाम-ग्राम पूछा गया तब उसने उत्तर दिया, "मेरा नाम डांटो है। मैं अब इस संसार से जल्दी ही उठ जाऊंगा; परन्तु इतहासरूपी देवालय में मेरा नाम निरन्तर विराजमान रहेगा।" यह कहकर उसने अपने को निरपराध साबित करने के लिए बड़ा अच्छा भाषण किया। परन्तु पहले तो वह निरापराध न था; और दूसरे यदि वह वैसा होता, तो भी न्याय कुछ उसके हाथ में न था। इन कारणों से वह अपराधी प्रमाणित हुआ और न्यायधीश ने उसे मृत्यु का दण्ड सुनाया। दण्डाज्ञा सुनकर उसने कहा—"कोई चिन्ता नहीं। मैं तो अब मरूंगा ही; पर जिन्होंने मेरा नाश किया है वे भी अब बहुत समय तक सुख से न रह सकेंगे; और रोबेस्पियर तो मेरे पीछे पीछे वधस्तम्भ पर अवश्य ही

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

चढ़ेगा।" उसका यह कथन सत्य हुआ। डांटो स्वभाव से तो क्रूर था; पर जब वह वधस्तम्भ के पास लाया गया तब वह अत्यन्त घबड़ाकर आँखों में आँसू भरकर बोला—"हाय! मेरी प्यारी स्त्री और मेरे प्राणप्रिय बच्चे अब मुझे देखने को न मिलेंगे। हाय! मैं अब क्या करूँ!" इतना कहने के बाद वह फिर कुछ सावधान सा होकर अपने आप बोला—"अरे डांटो, घबड़ाता क्यों है! आगे बढ़। तेरी इस कायरता को देख लोग क्या कहेंगे?" इतना कहकर वह बड़ी गम्भीर चेष्टा से वधस्तम्भ के पास गया और उस पर चढ़ा। उसके वध करने वाले का नाम सामसन था। उससे उसने कहा—"सुन, जब मेरा सिर कटकर गिर जावे तब तू उसे उठाकर लोगों को दिखलाना। क्योंकि यह मस्तक वास्तव में बड़े महत्व का है!" इतना उसने कहा कि तुरन्त ही कुल्हाड़ी उसकी गर्दन पर गिरी और उसका सिर धड़ से जुदा होकर जमीन पर गिर पड़ा। इस भयङ्कर रीति से डांटो का अन्त हुआ। उसके साथ ही साथ उसके जो कुछ अन्य अनुयायी थे, वे भी मार डाले गये। यह घटना सन् १७९४ ई० के एप्रिल मास में हुई। फ्रांस देश में उस भयङ्कर मौके पर राज्य-कार्य में हाथ डालने वाले जो बड़े बड़े मुखिया थे उनमें डांटो सब से आगे था। इसके भक्त बहुत थे। कुछ दिनों तक इसका यह हाल था कि जो बात यह मन में लाता वही कर दिखाता। ऐसे पुरुष की जब इस प्रकार मृत्यु हुई तब उसके पक्ष के लोगों को बड़ा दुःख हुआ और अपने प्राण बचाने के लिए छोटे बड़े सब लोगों के मन में बड़ी चिन्ता पैदा हुई। तथापि डांटो ने अपने जीवन में जो भयङ्कर अत्यार किये थे उनको देखते हुए उसका अन्त इससे भी अधिक भयङ्कर होना चाहिए था। जो हो, "जैसी करनी वैसी पार उतरनी" के अनुसार अनेक उदाहरण इस राज्यक्रांति

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

में देखे गये। उनमें यह एक मुख्य था।

लेवां का अत्याचार

और राजा की बहन का वध

केवल पेरिस ही में ये अनर्थ नहीं हो रहे थे; किन्तु 'जेकोबिन' पक्ष के दो-तीन हज़ार मनुष्य, प्रबन्ध के बहाने से, समस्त देश में नाना प्रकार के भयङ्कर कृत्य कर रहे थे। उन में लेवां नामक एक और मनुष्य-रूप-धारी राक्षस था। उसके सम्पूर्ण क्रूर कर्मों का वृतांत लिखने के लिए सौ उत्तम ग्रन्थकारों को कम से कम सौ ही वर्ष चाहिए! उसके हृदय में दया का लेशमात्र भी न था। अनाथों की मृत्यु-वेदना और उनके शिरच्छेद को देखकर उसे जितना आनन्द होता था उतना और किसी बात से नहीं! लोग उसे साक्षात् मृत्यु से भी अधिक डरते थे। बस्ती में उसके आते ही लोग अपने घर-द्वार और बाल-बच्चे छोड़ प्राण बचाकर भाग जाते थे। उसके अत्याचार से तङ्ग आकर उत्तर प्रान्त के निवासियों ने सरकार के यहाँ प्रार्थना-पत्र भेजे थे पर उनसे कुछ नहीं हुआ इसका कारण यही था कि रोबेस्पियर की उस पर बड़ी कृपा थी; और वह जो कुछ करता, उसे बहुत ही भाता था। सच है जिनके हाथ में शासन की बागडोर रहती है वही जब प्रजा को पीड़ित करने लगें तब वह बेचारी किसकी शरण जाय!

उसी समय के लगभग पेरिस में एक और बड़े मनुष्य को प्रजासत्ताकवादियों ने मार डाला। वह राजा सोलहवें लुई की बहिन एलिजाबेथ थी। इसके मामले की भी जांच न्यायसभा के सामने हुई उस समय अपने भाई और भौजाई के समान इसने भी न्याय-सभा के प्रश्नों का उत्तर बड़ी शान्ति और चतुरता के साथ दिया। उस पर यह अपराध लगाया गया था कि पहले के किसी गड़बड़ में इसने कुछ घायल

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

सिपाहियों को सहायता दी। इस विषय में जब उससे पूछा गया तब उसने उत्तर दिया कि उनकी हालत पर तरस खाकर मैंने उन्हें सहायता दी थी। इसके सिवा मेरा और कुछ भी उद्देश्य न था।" इसके बाद सभा ने पूछा—"तुझे इस बात की आशा थी या नहीं कि तेरे भाई की गद्दी उसके लड़के को मिलेगी" ? इस पर उसने गम्भीरता के साथ उत्तर दिया—"यह बात दूसरी है। पर जब उसके मां बाप मर गये तब मेरा कर्तव्य था कि मैं उसका लालन-पालन करूं।" फिर उससे पूछा गया —"तू अपने भाई को सहायता देती थी या नहीं ?" उसने उत्तर दिया—"हां मेरी इच्छा थी कि मेरा भाई राजा रहे। तुम मेरे भाई को जुलमी राजा कहते हो; पर यथार्थ में यदि वह जुलमी होता, तो तुम्हे यह स्थिति प्राप्त न होती; और न मेरी यह दशा होती।" इस प्रकार प्रश्नोत्तर होने के बाद फैसला हुआ कि इसे भी मृत्यु दण्ड दिया जाय। अन्त में जब वह बधस्तम्भ पर चढ़ाई गई; और उसकी गर्दन सूली पर रखी गई, तब जल्लाद ने उसकी विटम्बना करने के लिए उसकी कुरती के बटन खोल दिये, जिससे उसका वक्षस्थल लोगों को देख पड़ने लगे। तब तो वह बेचारी बहुत दुःखित होकर निकट के एक मनुष्य से अत्यन्त दीनवाणी से बोली—"भाई ! मेरा शरीर आप कृपा कर कपड़े से ढ़ाक दीजिए। हाय, मरते मरते मुझ दीन स्त्री की लज्जा क्यों हरण की जाती है ?" इतना ही वह बोल पाई थी कि उसका सिर धड़ से अलग कर दिया गया। इस तरह फ्रांस देश के राजा की बहिन एलिजाबेथ का अन्त हो गया। उसकी मृत्यु के समय वहाँ हजारों मनुष्य एकत्र थे। उसका सौन्दर्य और उसकी शान्ति देखकर बहुत से लोगों को आश्चर्य।

पेरिस तथा अन्य स्थानों में इतने अनर्थ हो रहे थे; और

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

देश की सामाजिक राजनैतिक दुर्दशा

देश में अशान्ति फैली हुई थी; फिर भी फ्रेंच लोगों की चैनबाजी कम नहीं। सिर्फ पेरिस शहर में लग-भग पौन सौ नृत्य-शाला और खेलन के सैकड़ों स्थान संध्या समय लोगों से भरे हुए दिखाई देते थे। इनके सिवाय कुछ नाटकशालायें भी वहाँ थीं। यथार्थ में नाटक का मतलब यह है कि लोग उससे शिक्षा ग्रहण कर अपनी रीति-नीति सुधारें और कुकर्म का त्याग कर सुनीति-पथ पर चलें। किन्तु फ्रांस देश में जब सभी की खराबी हो रही थी तब यह उत्तम उद्देश्य भी कैसे बच सकता था। उस समय उन नाटकगृहों में खेल भी बड़े विलक्षण हुआ करते थे। उनसे लोगों को शिक्षा मिलनी तो दूर रही; किन्तु उनकी चित्तवृत्ति पाप की ओर दौड़ती थी। ऐसे सब खेलों के नाम देने की यहाँ जरूरत नहीं। केवल दो-तीन नाम लिखे जाते हैं। जैसे—"राजनीतिज्ञ लोगों के अपराध"; ',राजाओं के अपराध"; "पूर्ण समदृष्टि"; "मारो की मृत्यु" इत्यादि। इससे अनुमान कर लेना चाहिए कि वे खेल किस प्रकार के थे। वास्तव में यह बड़ी विलक्षण बात है कि देश की ऐसी अशांत अवस्था होते हुए नाच-कूद, खेल, नाटक, तमाशों में लोगों का मन रमा हुआ था!

कई मनुष्यों को इससे बड़ा विस्मय होगा कि लोग इतने होशियार और चालाक होने पर भी, थोड़े से राज्यकर्त्ताओं के अधीन होकर कैसे रहते थे। परन्तु थोड़ा सा विचार करने से यह बात समझ में आ सकती है। अर्थात् जिन लोगों के हाथ में राज्यसूत्र था, उनकी संख्या बहुत थोड़ी अवश्य थी; पर उनमें इतना अधिक सामर्थ्य थी कि उनके डर से सारा देश थरथर काँपता था। उनकी इच्छा की ज़रा सी भी अव-हेलना करते ही मृत्यु की सजा मिलती थी! ऐसी हालत में

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

भला उन्हें कौन न डरे ! एक फ्रेंच ग्रन्थकार ने उस समय के पेरिस शहर का जो वर्णन किया है उसका तात्पर्य इस प्रकार है—"पेरिस की अत्यन्त भयानक स्थिति हो गई थी। लोगों के रीति-रवाज बदलकर बिलकुल नवीन हो गये थे। और वे परस्पर बहुत बचकर, सावधानी से, सन्देह के साथ और डरकर बर्ताव करते थे। प्रत्येक मनुष्य इस बात से बहुत डरता था कि रास्ते में चलते हुए देखकर लोग यह न समझ लें कि यह बड़ा सुखी है। लोग अपनी दरिद्रता दिखाने के लिए फटे हुए कपड़ों को पहन कर बाहर निकलते थे। पर इस से भी उनका बचाव न होता था। इस प्रकार की कड़ी आज्ञा थी कि प्रत्येक घर का मालिक अपना और अपने प्रत्येक कुटुम्बी का नाम दरवाजे पर लिख रक्खे। घर में शान्ति नाम को न थी। घर के मालिक को सदैव सावधान रहना पड़ता था। दरवाजे पर यदि कुछ भी शोर, गुल हुआ तो लोग यह समझ कर घबड़ा उठते कि बस अब हमारे घर पर धावा हो गया !" लोगों का तेज बिलकुल उतर सा गया था। रईस, गरीब, विद्वान्, मूर्ख, सद्गुणी, किसी में कुछ भी भेद नहीं रहा था और दुर्भाग्य की बारी आने पर सबको एक साथ वधस्तम्भ पर चढ़ना पड़ता था। राज प्रबन्ध-कारिणी सभा की सख्ती इतनी बढ़ी-चढ़ी थी कि एक बार की बात है, उसके कुछ सभासद कहीं भोज में गये थे; पर संयोगवश वहां उनका मुन्शी ठीक समय पर हाजिर न हो सका। बस इसी पर उन्होंने उसे पकड़कर क़ैदखाने में डाल दिया। एक बार एक मनुष्य ने बहुत सी जाली हुंडियां बनाईं और उन्हें साहूकारों के पास ले गया। बारह बड़े बड़े साहूकारों ने ऐसी हुँडियों को सरकार ने इसे इनकार कर दिया। इस पर उन्हें भी जेलखाने की हवा खानी पड़ी। सैकड़ों माँ-बापों के लड़के उन्हें मार

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

स्वरूप हो गये थे और उन्होंने उसे छोड़ दिया था। इस समय किसी वक्ता ने फ्रांस की स्थिति पर व्याख्यान दिया था उसका कुछ अंश इस प्रकार है—'रोम शहर में तो केवल एक ही ब्रूटश ❀ था, लेकिन हमारे पेरिस में तो हज़ारों ब्रूटश मौजूद हैं। महाशयो, यहां पर क्या कोई ऐसा एक भी मनुष्य है जो बाप को बड़े जोश के साथ अपने लड़कों से बदला लेते हुए देखकर खुश न होता हो ?" इससे हमारे चतुर पाठक सहज ही में यह अनुमान कर सकते हैं कि उस समय फ्रेंच लोगों में गुण-अवगुण का भेद कितना था। आश्चर्य की बात तो यह है कि इतना होने पर भी फ्रेंच लोग यही समझे बैठे थे कि हमारी हालत बहुत अच्छी है। इसका प्रमाण यह है कि राज्य-प्रबन्ध कारिणी सभा ने एक वक्ता की सूचना पर पेरिस के बाजारों का नाम "दयाबाजार" "औदार्य बाजार" "शांति बाजार" इत्यादि रक्खा था। इससे बढ़कर और क्या मूर्खता होगी !

राजनैतिक मामलों में धर-पकड़ बड़े ज़ोर-शोर से हो रही थी। फ्रांस में पन्द्रह-सोलह बड़े बड़े क़ैदखाने थे। उनसे भी अब काम नहीं चलता था। उनमें से पेरिस के जेलखाने में जो भयंकर घटनाएँ हो रही थी, उनका वर्णन पढ़ने से शरीर पर रोमांच खड़े हो जाते हैं। तो भी शहर में नाच तमाशे हो ही रहे थे। शहर और जेलखानों के मनुष्य भी खूब निर्लज्ज और लापरवाह हो रहे थे। इस विषय में एक उदाहरण लीजिये—लक्ज़मबर्ग के कारागृह में बहुत सी स्त्रियाँ भी कैद

❀ यह पुरुष रोम के इतिहास में बड़ा प्रसिद्ध है। इसने अनेक बड़े बड़े कार्य किये थे। परन्तु यह बड़ा क्रूर था और इसके कारण से मनुष्यों को अत्यन्त दुःख भोगना पड़ा था।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

थीं। वे प्राणों की चिन्ता एक ओर रखकर, जेल में ही, बाहर की भयङ्कर घटनाओं के स्वांग खेला करती थीं। अर्थात् कोई न्यायधीश बनतीं, कोई सिपाही, कोई मुलजिम; और उनका मुकदमा होकर मुलज़िम को बनावटी वधस्तम्भ पर चढ़ाती थीं; और फिर वह ऊपर जाकर ऐसी मालूम हो जैसे सचमुच ही मरने के लिए तैयार हो! फिर आसपास की अन्य स्त्रियाँ उसे प्रेम और अदब से सलाम करती थीं। इससे सच्चे वधस्तम्भ का भय उनसे बहुत कुछ दूर हो गया। कुछ दिनों बाद उनमें से कुछ स्त्रियाँ जब सचमुच ही शिरच्छेद के लिए वधस्तम्भ के निकट लाई गईं तब वे जरा भी न घबड़ाईं और लोगों ने देखा कि वे बड़ी शूरता से मरीं। राज्य-प्रबन्ध-कारिणी सभा ने देखा कि इस तरह से तो सभी लोग मृत्यु से न डरेंगे और तब हमारी सत्ता स्थापित होने में बड़ी अड़चन होगी। इस लिए उसने हुक्म दिया कि वधस्तम्भ पर चढ़ाये जाने के पहले अपराधियों के हाथ-पैर और शरीर की सारी नसें काट कर उनका रक्त निकाल कर उन्हें अधमरा कर दिया जाय और तब उन्हें वध की जगह पर लाया जाय! ऐसा ही होने लगा। मतलब यह कि इस राजक्रान्ति के समय ऐसा कोई भी क्रूरकार्य नहीं बचा जिसे फ्रेंचों ने न किया हो। एक बार एक बहरे को न्यायसभा के सामने लाकर मृत्युदण्ड सुनाया गया। वह बेचारा यही चिल्लाते चिल्लाते थक गया कि "मैंने कौन सा अपराध किया है, मैंने कौनसा अपराध किया है?" पर किसी ने उसको उत्तर नहीं दिया और वह मार डाला गया! इससे अधिक अन्धेर और क्या हो सकती है?

देश में फैली हुई इस गड़बड़ी के कारण व्यापार बिल्कुल बन्द हो गया था। सरकार की आमदनी का कोई जरिया नहीं रहा था; और राज्य कार्य चलाने के लिए कम से कम

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

बारह करोड़ रुपयों की प्रति मास जरूरत पड़ती थी। इतना रुपया एकत्र करने के लिए अनेक उपायों की योजना की गई थी। उनमें प्रतिपक्षियों की जायदाद ज़ब्त करके नीलाम करना और नया सरकारी कागज़ का सिक्का चलाना ये दो उपाय मुख्य थे। इस कागज के सिक्के का प्रचार सरकार ने खूब किया। जहाँ देखो वहाँ इसे छोड़ और कुछ दिखाई न देने लगा। परिणाम इसका यह हुआ कि अधिक प्रचार के कारण इसकी क़ीमत उतर गई और सहसा इसे कोई लेने को तैयार न होने लगा। अब लेन-देन में बड़ी अड़चन पड़ने लगी इसलिए सब लोगों के सुभीते के लिए सरकार ने यह नियम बनाया कि रोटी, मांस, ईंधन इत्यादि निर्वाह के आवश्यक पदार्थ दूकानदार लोग अमुक नियमित निर्ख से बेचें और कीमत में सरकारी कागज़ का सिक्का लें। यह कानून जब जारी किया गया तब लोगों ने ऊपर से तो इसे पसन्द कर लिया; परन्तु यथार्थ में यह अन्यायपूर्ण क़ायदा किसी को भी पसन्द न था। इसलिए बहुतेरों ने भीतर ही भीतर, गुप्त रीति से अपना लेन देन अपने अपने सुभीते के अनुसार प्रारम्भ किया। इससे लोगों की विपत्ति ही बढ़ी। अर्थात् भीतर ही भीतर गुप्तरूप से मनमानी क़ीमत लेकर दूकानदार लोग अच्छा माल धनवानों को देने लगे। और सड़ा-गला माल दूकानों में रखकर नियत किये हुए भाव से गरीबों को बेचने लगे। सरकार ने इसका बहुत कुछ प्रबन्ध करना चाहा; पर सफलता नहीं हुई। फिर कुछ दिन तक तो यह कायदा रहा कि अमुक मनुष्यों के कुटुम्ब के लिए प्रतिदिन अमुक प्रकार का अन्न अमुक सेर से ज्यादा न दिया जावे और वह भी कब? जब वे परवाना दिखावें तब; और जो माल दूकानदारों के हाथ से मिले वह ग्राहकों के आगमन के क्रम के अनुसार मिले।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

इसका फल यह हुआ कि दूकान में पहले से आये हुए निर्बल ग्राहकों को पीछे से आए हुए बलवान ग्राहक नीचे ढकेलकर उनसे पहले स्वयं माल खरीद लेने का प्रयत्न करते थे। इससे खूब झगड़े बखेड़े होते। परमात्मा ने मनुष्य के सुख के लिए शांति, प्रीति, दया के जो नियम बाँध दिये हैं उनकी अवहेलना कर फ्रांस के बुद्धिमान लोगों ने अपनी बुद्धिचातुर्य से नये नियम बनाकर प्रजा को सुखी रखने का बहुत प्रयत्न किया; पर उनसे सुख तो किसी को हुआ नहीं—हाँ, बड़े बड़े दुःख अवश्य सब लोगों को भोगने पड़े।

रोबेस्पियर की अन्तिम दशा और उसका वध

इस प्रकार की भयानक घटनाएँ खास पेरिस शहर में तथा देश के अन्य सब प्रान्तों में हो रही थीं और इधर राज्य-प्रबन्ध करने वाले लोगों में रोबेस्पियर का गौरव खूब बढ़ा हुआ था। यहाँ तक कि एक बार जो उसके मुँह से निकल जाता, तत्काल ही उसकी पूर्ति होती। उससे सारे लोग थरथर कांपते थे। वह बड़ा चालबाज़ और उत्तम वक्ता था। वह यह अच्छी तरह जानता था कि किस मौक़े पर कैसा बर्ताव करना चाहिये और लोगों का मन अपनी ओर आकर्षित करने के लिए कैसा भाषण करना चाहिये। इस लिए लोगों को अपनी ओर मिलाने में उसे कुछ भी विलम्ब न लगता था। उस पर मान और पदवियों की बड़ी वर्षा होती थी; पर वह गम्भीरता का ढोंग दिखलाने के लिए सदैव उन्हें अस्वीकार करता रहता था। इतना होने पर भी उसे इस बात का डर निरन्तर लगा रहता था कि कोई मनुष्य कभी मुझे मार न डाले। इसलिए वह हमेशा अपने साथ हथियारबन्द सिपाहियों का पहरा रखता था। उसके द्वारा लाखों मनुष्यों का शिरच्छेद हुआ था। ऐसी दशा में उसका

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

यह डर उचित ही था। सरकार के बहुत से कर्मचारी और अधिकांश प्रजा यद्यपि नास्तिक हो गई थी; और उन सब का आचरण बहुत ख़राब हो गया था, तथापि बहुत सा रक्त-पात और भयंकर कर्म होने पर कुछ लोगों में अपनी स्थिति के विषय में संशय उत्पन्न हुआ। यह बात रोबेस्पियर ने ताड़ ली; और उसने राज्य-प्रबन्ध-कारिणी सभा को सूचित किया कि एक नियम ऐसा बनाया जाय कि जिससे "ईश्वर का अस्तित्व और आत्मा की अमरता" ये बातें सब लोगों को माननी पड़ें। उनके अनुसार तुरन्त ही एक नियम जारी किया गया। फ्रांस की राज्यक्रांति के अनर्थ-रूपी समुद्र में एक के ऊपर एक जो भयंकर लहरें उठ रही थीं उनका क्रम होना यहीं से प्रारम्भ हुआ। रोबेस्पियर के हाथ में ज्यों ज्यों अधिकाधिक शक्ति आती गई, त्यों त्यों वह अधिक उन्मत्त होता गया। किसी मनुष्य की हत्या करना उसके बायें हाथ का खेल था। कहते हैं, जिन लोगों की हत्या करनी होती, उनकी एक सूची सदैव उसकी जेब में रहती। हज़ारों साधा-रण लोगों का जब तक उसने सिर कटवाया, तब तक तो उसकी क्रूरता के विषय में किसी ने कुछ ध्यान नहीं दिया। लेकिन कुछ समय से अब उसकी टेढ़ी नज़र राज्य-प्रबन्ध-कारणी सभा के कतिपय सदस्यों पर पड़ी थी। यह उसके मन का भाव कभी कभी कुछ बाहर झलकता था। परन्तु एक दिन उनमें से कुछ लोगों के नाम की सूची एक मनुष्य को मिल गई और वह प्रकट भी हो गई। इससे उसकी क्रूरता के विषय में चारों ओर चर्चा फैल गई और लोग कहने लगे कि पहले उसको पकड़कर इसकी तहक़ीक़ात करनी चाहिए। उसके अनेक शत्रुओं को यह अच्छा मौका हाथ लगा। सैकड़ों लोग, जिनको उसने सताया था, उसके विरुद्ध उठ खड़े हुये।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

राज्य करने वाली सभा के अनेक सदस्यों ने उनका साथ दिया। अतएव यह निश्चय हुआ कि रोबेस्पियर को पकड़ कर उसके अपराधों की जांच की जाय और उसे उचित दण्ड दिया जाय। इसके अनुसार रोबेस्पियर पकड़कर जेल में डाल दिया गया। अब तो उसके पक्ष के लोगों ने बड़ा दंगा मचाया और उसे जेल से बाहर निकालकर उसका बड़ा गौरव करने लगे। यह बात जब राज्य करने वाली सभा को मालूम हुई तब उसे बड़ा क्रोध आया। और उसने फिर उसे पकड़कर जेल में बन्द कर दिया। अब की बार उसे पकड़ते समय परस्पर-विरुद्ध दोनों पक्षों में खूब मार-काट हुई। इसी गड़बड़ में रोबेस्पियर के जबड़े के पास पिस्तौल की एक गोली बड़े जोर से लगी, जिससे वह इतना व्याकुल हुआ कि सरकारी सिपाहियों ने समझा अब यह मरा, इसलिए किसी मरे हुए पशु की तरह घसीट कर वे लोग उसे राज्य-कर्तृ सभा के आफ़िस के सामने ले आये। वहां जब कुछ देर बाद उसे होश आया तब उसके जबड़े में पट्टी इत्यादि बाँध कर फिर उसे जेलखाने ले गये।

इसके बाद न्याय-सभा के सामने रोबेस्पियर की जाँच हुई। साथ ही उसके बहुत से अनुयायी भी थे। वे सबके सब अपराधी ठहराये गये और उन्हें मृत्यु-दण्ड का हुक्म हुआ। उनका शिरच्छेद करने के लिए सन् १७९४ ई० के जुलाई मास की २९ वीं तारीख नियत हुई। उस दिन सबेरे चार बजे से ही सब लोग आनन्दित होकर रोबेस्पियर और उसके अनुयायियो के शिरच्छेद का तमाशा देखने के लिए तैयार होने लगे। जिस स्थान पर राजा और रानी का वध किया गया था, वहीं इनका भी वध होने वाला था। जेल से निकाल कर रोबेस्पियर और उसके अनुयायियों को वधस्तम्भ की ओर

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

ले चले। उस समय रास्ते में इतनी भीड़ एकत्र हुई थी कि कहीं तिल धरने का भी ठौर नहीं था। सब कैदियों के मुश्कें बाँधकर गाड़ियों पर बैठाया था। उस समय रोबेस्पियर की दशा बहुत ही अनुकम्पनीय थी। उसकी कनपटी पर जो पट्टी बँधी हुई थी वह रक्त से सराबोर थी और उससे रक्त टपकता था कष्ट उसे बहुत हो रहा था; पर वह उसे प्रकट नहीं होने देता था। वह मुँह बन्द किये हुए, सिर नीचा किये हुए और आँखें बन्द किये हुए चुपचाप बैठा था। जैसा ऊपर कहा गया है, उस समय उसकी दशा दया के योग्य थी; परन्तु उसके हाथ से लोग बहुत सताये गये थे, इस लिए उसे देखकर लोग बड़े आनन्द से हँसते थे और स्पष्ट-रूप से कहते थे कि इसे और भी अधिक दण्ड देना चाहिये। इसी समय उस भीड़ से एक स्त्री गाड़ी के निकट जाकर रोबेस्पियर से बोली—"अरे दुष्ट, चांडाल! तेरी इस दुर्दशा को देकर मुझे बड़ा आनन्द हो रहा है। फ्रांस की समस्त माताओं का शाप यह आज तुझे फला है। अब तू यहाँ से बिदा हो, और खुशी से बिदा हो, और वहाँ जाकर अक्षय यमयातना भोग!" वधस्थल पर पहुँचने पर; उसके सामने, पहले उसके बीस अनुयायियों का शिरच्छेद किया गया, जिसे वह चुपचाप बैठा देखता रहा। अब उसकी बारी आई और वह भी वध-स्तम्भ पर चढ़ाया गया। उस समय जल्लाद ने उसके जख्म पर बँधी हुई पट्टी को झटककर तोड़ दिया, जिससे तत्काल ही उसका नीचे का जबड़ा टूटकर उसके शरीर पर गिर पड़ा उस समय रक्त का प्रवाह उसके मस्तक से बहने लगा। इससे उसका स्वरूप बड़ा भयानक मालूम होने लगा। साथ ही उसने एक भयङ्कर चीत्कार भी किया! इन सब बातों से देखने वालों के रोएं खड़े हो गये। हजारों मनुष्यों के जमाव

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

का कोलाहल वहाँ मचा हुआ था। वह एक दम बन्द होकर क्षण भर के लिए वहां निस्तब्धता छा गई। इसके बाद उसे खड़ा करके सूली पर बांधा गया और दो पल भी न बीतने पाये थे कि उसकी गर्दन पर कुल्हाड़ी पड़ी और एक ही बार में उसका सिर धड़ से जुदा होकर पृथ्वी पर लोटने लगा! उस समय सब लोगों को बड़ा आनन्द हुआ। उन लोगों ने समझा कि मानों आज हम सब लोग सिंह के जबड़े से छूट गये। बड़े आनन्द से परस्पर सब लोगों ने एक दूसरे को आलिङ्गन किया। उसका धड़ और सिर वधस्तम्भ के पास रक्त से सना हुआ पड़ा था। इतने में एक सीधासादा मनुष्य उसके पास आकर कहता है—"भैया रोबेस्पियर! अब तो तुझे मालूम हुआ कि परमात्मा है ;" रोबेस्पियर के मरने के दूसरे ही दिन उसके पक्ष के बहत्तर मनुष्य और सूली पर चढ़ाये गये। इस तरह जो रोबेस्पियर कुछ दिन तक सिंह के समान समस्त फ्रांस में गर्जता था, अपने अनुयायियों सहित, तड़फ-तड़फ कर कुत्ते की मौत मरा! इतिहास ऐसे लोग नहीं मिलेंगे जो लोगों को कष्ट देकर भी स्वयं सुख से मरे हों। परमात्मा के यहाँ तो यह नियम है कि इस हाथ दे, उस हाथ ले। यह सच है कि इस लोक के पापकर्मों का दण्ड परलोक में भोगना पड़ता है; परन्तु परमेश्वर मनुष्यों की आंखें-खोलने के लिये उसका कुछ अंश पापियों को यहां भी भुगवता है। रोबेस्पियर का अन्त इसका ज्वलन्त उदाहरण है।

कई ग्रन्थकारों ने कहा है कि रोबेस्पियर की समाप्ति के साथ ही साथ फ्रांस के भयंकर अन्यायी यम-युग की भी समाप्ति हो गई, यह ठीक है। इस यमयुग में जो घटनाएँ हुई उनके विषय में सर जेम्स माकिंटाश नामक एक इतिहासकार

राज्य-क्रांति का अन्त

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

ने इस तरह लिखा है - "भयङ्कर बातों को खूब बढ़ाकर बतलाने और लिखने की चाल प्रायः लोगों में देखी जाती है ! परन्तु फ्रांस की राज्य-क्रांति की घटनाओं का तो पूरा पूरा वर्णन भी कोई नहीं कर सकता—फिर बढ़ाने की तो बात ही जाने दीजिये !" इसके पहले किसी देश में राज्यक्रांति नहीं हुई, सो नहीं। हुई थी; और कई देशों हुई थी; पर इतने अल्प काल में फ्रांस देश में जितने, और जैसे, कृत्य हुये उतने और वैसे भयंकर कृत्य उतने ही थोड़े समय में और कहीं नहीं देखे गये। राजा और रानी का शिरच्छेद हुआ, अन्य लाखों मनुष्यों के प्राण गये, गिरजा घरों के घुड़साल बने, रईसों के घर धूल में मिले, सरदारों को देश त्याग करना पड़ा, धर्मोपदेशकों को कारागृहवास, अपमान करके मृत्यु प्राप्त हुई सारी प्रजा दुःखसागर में डूब गई; और जा ईश्वर इतना बड़ा ब्रह्माण्ड अपनी इच्छा मात्र से रचकर उसका पालन कर रहा है,

उसका अपमान हुआ,—लोगों ने मदांध होकर यह भी मान लिया कि वह बिलकुल है ही नहीं—अब बतलाइये, इससे भी अधिक अनर्थ और क्या बाकी रहा।

हम कह चुके हैं कि कई ग्रन्थाकार रोबेस्पियर की समाप्ति के साथ ही फ्रांस की राज्यक्रान्ति के इतिहास की समाप्ति मानते हैं; और यह अधिकांश में ठीक भी है। परन्तु इस मत का अनुकरण करना हमें उचित नहीं जान पड़ता। क्योंकि ऐसा करने से हमारे पाठकों का यह कौतूहल बना ही रहेगा कि देश में जो अशांति फैली हुई थी उसका दमन फिर किस तरह हुआ। इस लिए अगले अध्याय में हम संक्षेप में इसका कुछ वर्णन कर के इस ग्रन्थ को समाप्त करेंगे।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

नवां अध्याय

देश दशा और राज्यव्यवस्था में परिवर्तन

पन्द्रहवें लुई के राजत्वकाल से फ्रांस-निवासियों को यह धुन समाई हुई थी कि देश का सारा अधिकार एकमात्र राजा के हाथ में होने से हमें जो निःसीम दुःख भोगना पड़ता है, वह तव तक दूर न होगा जब तक प्रजातंत्र राज्य की स्थापना न होगी; और एक बार जहाँ प्रजातंत्र राज्य स्थापित हो गया कि फिर किसी प्रकार की कमी न रहेगी। तदनुसार उन्होंने खूब प्रयत्न करके, राजा को मार कर प्रजासत्ताक राज्य की स्थापना की। परन्तु दुःख की निवृति और सुख की समृद्धि के विषय में उन्होंने जो आशा लगाई थी वह पूरी नहीं हुई। बल्कि उन्हें ऐसे ऐसे दुःख भोगने पड़े, जिनकी उन्हें स्वप्न में भी कल्पना नहीं थी। लाखों लोगों के प्राण गये, रक्त की नदियाँ बहीं, अस्थियों के पर्वत जमा हुए; और बचे हुए लोगों को भूखों मरने की नौबत आई। सारे देश का सत्यानाश हो गया। रोबेस्पियर के समय में फ्रान्स की जो हालत हो गई थी उसका वर्णन पिछले अध्याय में हो चुका है। प्राणरक्षा के विषय में संशय, जुल्म रक्तपात, अन्याय और नास्तिकता से लोगों को बिलकुल घृणा हो गई थी। उन्हें अब यह निश्चय हो चुका था कि इस तरह की अवस्था से हमारे देश को कभी सुख न होगा। किन्तु रोबेस्पियर के सामने किसी की कुछ न चलेगी, यह समझकर बुद्धिमान लोग चुप थे। अब उसके शिरच्छेद की खबर सुनते ही सारे देश में आनन्द छा गया। क्रूरता भी कम होने लगी लोगों की आँखें अब खुल गईं और उन्हें यह मालूम हो गया

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

कि जो कुछ आज तक हुआ, मूर्खता से खाली न था। रक्तपात का आवेश, जो पहिले बहुत बढ़ा हुआ था, अब बहुत कुछ दूर होने लगा। सिर्फ सन्देह ही से पकड़ कर जो लाखों आदमी कारागृह में डाले गये थे, अब छोड़ दिये गये। राज्य-क्रान्ति में क्रूरता दिखलाने वाली जेकोबिन मण्डली मुखिया थी। उसे अब देश का परित्याग करना पड़ा। राज्य-प्रबन्ध-कारिणी सभा को भी अब उस भयंकर दशा से बड़ी घृणा हो गई और उसने समझा कि अब किसी न किसी तरह एक बार देश की राज्यव्यवस्था ठीक हो जाय तो अच्छा हो। इसलिए उस सभा ने भी अब अपना कार्यक्रम बदल दिया। अतएव अब फ्रान्स देश में नीति, दया, गम्भीरता, श्रेष्ठता आदि सद्गुण कुछ कुछ दिखाई देने लगे।

तथापि उस सभा को जो लोग बहुत क्रूर समझते थे, वे उसे बहुत शीघ्र नष्ट कर डालना चाहते थे। इसलिए एक बार करीब चालीस हजार लोग हथियारबन्द होकर सभा के ऊपर चढ़ धाये। सभा की सेना और इन विरोधी लोगों में लड़ाई। अन्त में सभा के विरुद्ध पक्ष का पराजय हुआ और वे लोग भाग निकले। सभा की सेना को सफलता प्राप्त हुई। इसका मुख्य कारण उस सेना का बहादुर सरदार नेपोलियन बोनापार्ट था। जीत तो हुई; परन्तु सभा को यह बात अच्छी तरह मालूम हो चुकी थी कि उस पर अब लोगों की श्रद्धा नहीं रही है। इसलिए नवीन राज्यव्यवस्था जारी करना पहिले ही निश्चित हो चुका था। तदनुसार उसने अपने दो-तिहाई लोगों को नवीन बननेवाली राज्यकर्तृ सभा में रख कर सन् १७९५ के अक्टूबर मास की छब्बीसवीं तारीख को अपना काम तमाम किया। इस प्रकार "कन्वेशन" सभा की समाप्ति हुई।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

नूतन राज्यव्यवस्था के लिए मुख्य अधिकारिणी सभाएँ दो नियत की गईं। उनमें से पहली में ढाई सौ और दूसरी में पाँच सौ सभासद रखना निश्चत हुआ। राज्य का कार-बार चलाने के लिए पाँच अनुभवी विद्वानों की एक मण्डली अलग बनाई गई। उनका चुनाव करने में उन्होंने एक यह भी नियम रक्खा था कि सोलहवें लुई को मार डालने के विषय में जिन्होंने सम्मति दी थी, उनको छोड़कर और कोई मनुष्य इसमें नहीं लिया जायगा। तदनुसार बारस, रूबेल, लीपाक्स, लीलार्नर और कार्नो ये पाँच महाशय नियत किये गये। इस समय फ्रांस का राज्यकार्य स्वीकार करना बहुत कठिन था। क्योंकि देश में अब कुछ भी सत्व नहीं रह गया था। पेरिस और अन्य प्रान्तों के निवासीगण इतने संतप्त थे कि वे किसी की कुछ न सुनते। दुष्काल अलग ही लोगों को पीड़ित कर रहा था। खजाने में द्रव्य का पूर्णतया अभाव था। सेना में रसद, कपड़ा दाना-चारा और घोड़ों की बहुत कमी हो गई थी और इसी समय राइन नदी के तीर पर फ्रेंच सेना के पराजित होने का समाचार आया था। अस्तु। पाँच महाशय राज्यकार्य चलाने के लिए नियुक्त हुए उनको डाइरेक्टर की पदवी दी गई। लक्जम्बर्ग का राजमहल उनको आफ़िस के लिए दिया गया। वहाँ जब वे लोग अपनी पहली बैठक के लिए गये; तब क्या जाकर देखा कि उनके बैठने के लिए वहाँ एक कुर्सी तक नहीं है। और कहाँ तक कहें, वे लोग अपनी सभा के स्थापित होने की सूचना देना चाहते थे, उसे लिख कर जारी करने के लिए कागज़, कलम और दावात तक नहीं मिली। इससे उस समय की दरिद्रता और देशदशा का अनुमान कर लेना चाहिये।

ऐसी हालत होने पर भी उन लोगों ने बड़े धैर्य और

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

नेपोलियनका उदय और कई लड़ाई में सफलता

बड़ी युक्ति के साथ अपना कार्य आरम्भ किया। देश में शान्ति स्थापित करने के सिवाय बाहर के विघ्नों की ओर भी उन्हें ध्यान देना था। अर्थात् यूरप के अन्य राष्ट्र, जो फ्रांस पर चढ़ाई कर रहे थे, उनसे सामना करने की तैयारी करनी थी। इन बाहरी शत्रुओं में आस्ट्रियन लोग बड़े प्रबल थे। अतएव निश्चय हुआ कि उनका मुक़ाबला करने के लिए किसी अच्छे वीर को भेजे बिना काम नहीं चलेगा। इस-लिए उन्होंने यह कार्य नेपोलियन बोनापार्ट को सौंपा। एक तो पहली राजकर्तृ सभा के विरुद्ध जो बड़ा भारी बलवा हुआ था, उसे अभी हाल ही में नेपोलियन ने बड़े पराक्रम से शान्त किया था; और दूसरे उसने एक बड़े प्रसिद्ध पुरुष की जोजे-फाइन नामक विधवा स्त्री से विवाह किया था। इन दो कारणों से लोगों में उसका गौर बहुत बढ़ गया था इस लिय नेपोलियन बोनापार्ट को ही सन् १७९६ के मार्च महीने में एक बड़ी सेना देकर आष्ट्रियनों से युद्ध करने के लिए भेजा गया वह अपनी सेना के साथ बड़े आवेशपूर्वक फ्रांस से चला। आष्ट्रियन सेना से साथ उसकी पहली मुठभेड़ इटली देश के मांटीनोटी नामक स्थान पर हुई। उस समय आष्ट्रियन लोग यद्यपि बड़ी शूरता से लड़े तथापि जीत फ्रेंचों की हुई। इससे नेपोलियन की बड़ी वाहवाही हुई। इस समय यह केवल सत्ताइस वर्ष का था।

तदनन्तर मई मास की दसवी तारीख को उसने इटली देश के लोडी नामक स्थान में एक भारी युद्ध करके फिर आष्ट्रियनों को पराजित किया। इस बार दो हज़ार आष्ट्रियन समर में मारे गये और उनकी बीस तोपें फ्रेंचों के हाथ लगीं। इसमें शक नहीं कि फ्रेंचों के भी बहुत से सिपाहियों का नाश हुआ; पर जीत

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

उन्हीं की हुई, इससे उन्होंने उस हानि की कुछ परवा न की। कहते हैं कि इस युद्ध में जीतने के कुछ दिनों बाद नेपोलियन ने इस प्रकार कहा था—"मांटीनोटी में हमारी जीत अवश्य हुई; पर उससे मुझे यह नहीं मालूम हुआ कि मैं अन्य मनुष्यों से श्रेष्ठ हूँ। परन्तु जब लोडी के मुकाम पर मेरी जीत हुई तब मेरे मन में आया कि मैंअवश्य कोई कर्मवीर पुरुष हूँ; और यदि मैंने चाहा तो राज्य शासन में भी मैं अपनी तेजस्विता प्रकट कर सकूँगा। बस उसी समय से मेरे हृदय में एक बड़ी भारी महत्वाकांक्षा उत्पन्न हो गई।" लोडी की इस जीत का समाचार सुनकर राज्यकर्त्ताओं को बड़ी प्रसन्नता हुई। नेपोलियन को उत्साहित करने के लिए उन्होंने बड़ी प्रशंसा की तथा उसकी सहायता के लिए और सेना भेजकर अगले कार्य-क्रम की सूचना दी।

इसके बाद नेपोलियन बोनापार्ट ने अनेक लड़ाइयाँ मारी इटली की बहुत सी रियासतों को अपने अधिकार में कर के आस्ट्रियन सेना को बिलकुल जर्जर कर डाला। तब आस्ट्रियनों ने हार मानकर संधि कर ली। उस समय नेपोलियन वीना राजधानी से करीब पन्द्रह कोस पर था। इस तरह इधर से छुट्टी पाने पर फ्रेंच सरकार ने इजिप्ट को जीतने के लिए ४०,००० जहाजी सेना देकर उसे रवाना किया यह सेना सन् १७९८ के कई मास में रवाना हुई। जाते जाते रास्ते में उसने माल्टा द्वीप ले लिया। फिर इजिप्ट देश में प्रवेश करके, कैरो में छावनी डाल, उसने पहिली मिली हुई जीत के लिये बड़ा उत्साह किया। इसके थोड़े ही समय के पश्चात् सर सिडनी स्मिथ नामक एक विख्यात अंगरेज सरदार से, जो थोड़ी सी सेना के साथ वहाँ रहता था, उसे लड़ना पड़ा। इसमें फ्रेंचों की बड़ी हार हुई। इसके सिवाय रास्ते में उन्हें बड़े कष्ट झेलने पड़े। इस तरह इजिप्ट में नेपो-

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

लियन को बड़ी निराशा हुई। किन्तु फ्रांस में उसके शौर्य की बड़ी प्रशंसा हो रही थी। लोग यह समझ रहे थे कि इसमें यदि कोई वीर पुरुष है तो बस यही है। इधर नेपोलियन को यह मालूम था कि राज्य-प्रबन्ध के लिए जो नवीन कमेटी नियत की गई है उससे भी लोगों को सुख नहीं है और पहले की तरह अप्रबन्ध तथा स्वेच्छाचारिता से अब भी लोग पीड़ित हैं। उसे यह भी मालूम हो गया कि लोग बड़ी उत्सुकता से मेरी मार्ग प्रतीक्षा कर रहे हैं। इसलिए वह इजिप्ट की अपनी सारी सेना जनरल क्लेवर के अधीन करके स्वयं फ्रांस की ओर चल पड़ा। इस बार वह अपने कुछ मनमिलाऊ मित्र और अपने साथ लाया।

नेपोलियन बोनापार्ट के इजिप्ट देश से चल पड़ने पर अन्य राष्ट्रों की सेनाओं के साथ फ्रेंचों की कई लड़ाइयाँ हुईं। उनमें में से मुख्य मुख्य पहले यहाँ बतलाकर फिर फ्रांस देश की घटनाओं का वर्णन करेंगे। हालेंड में ड्यूक आफ यार्क नामक अंगरेज सेनापति के मातहत बहुत सी सेना थी। उसका पराभव ब्रून नामक फ्रेंच सरदार ने किया। टाक्सेल में अंगरेजी जल सेना ने डच जलसेना को पराजित करके उसे अपने अधिकार में कर लिया। स्विटज़रलेंड के जूरीच नामक स्थान पर कोरसाको नामक रूसी सेनापति के अधिकार में बहुत सी सेना थी। उसे मासेना नामक फ्रेंच सरदार ने पराजित किया। एक और स्वौरो नाम का रूसी सरदार था। उसका पराभव कन्स्टन्थल नामक स्थान पर हुआ। उसको उस समय ऐसा जान पड़ा कि जिन आस्ट्रियनों की सहायता के लिए हमारी सरकार ने हमें भेजा था उन्हीं आस्ट्रियनों के विश्वासघात के कारण हमारी ऐसी मानहानि हुई। इसलिए उसने अत्यन्त क्रोधित होकर अपनी तलवार जमीन पर पटककर तोड़ डाली

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

और निश्चय किया कि अब आगे से फिर कभी राजपक्ष की सेना को सहायता करने का कार्य स्वीकार न करूँगा।

देश के बाहर तो यह हाल था; और इधर फ्रांस-निवासियों को रात-दिन यह चिन्ता लगी रहती थी शासक मंडली की कि यूरप के सारे राष्ट्र न जाने कब एक साथ शिथिलता और चढ़ाई करके देश को सत्यानाश कर डालें।

नेपोलियन मुख्य राज्यकर्त्ता

साथ ही साथ उन्हें यह भी निश्चय हो गया था कि नेपोलियन बोनापार्ट के सिवाय और कोई इस अरिष्ट से बचा भी नहीं सकता। इसलिये वे बड़ी उत्सुकता के साथ उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। इतने में नेपोलियन सन् १७९९ के अक्टूबर मास में फ्रांस देश के दक्षिणी किनारे पर फ्रीजस बन्दर पर उतरा और पेरिस के लिए रवाना हुआ। रास्ते में उसे देश की दुर्दशा देखने में आई। आम सड़क पर चोरों के झुंड के झुंड घूम रहे थे। अच्छे अच्छे लोगों को भी अपने प्राण बचाने के लिए उन झुंडों में शामिल होना पड़ता था। धनवानों की संख्या कम और गरीबों की संख्या अधिक थी। वे गरीब लोग एकत्र होकर धनवानों का घर-द्वार लूट लेते और उन्हें नाना प्रकार की हानि पहुँचाते थे। सुप्रबन्ध कहीं भी दृष्टिगोचर न होता था। उस समय के राज्य-प्रबन्धकर्त्ता लोग राज्यकार्य करने में अत्यन्त असमर्थ हो रहे थे। इसलिए सब लोगों के मन में यही समा रहा था कि कब नवीन राज्यव्यवस्था हो; और हमें सुख मिले। अधिक कहाँ तक कहें, राज्य-प्रबन्ध करने वाले कई महाशय स्वयं कहा करते थे कि हम से अब यह कारबार नहीं चल सकता। अतएव किसी योग्य महापुरुष को इस कार्य के लिए नियुक्त करना चाहिये। उनमें सायस नाम का एक व्यक्ति बड़ा स्पष्टवक्ता था। वह खुल्लमखुल्लम कहा

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

करता कि इस राज्यव्यवस्था के लिए कोई एक शासक चाहिए। कहते हैं कि यह पुरुष यद्यपि बाहर से प्रजासत्ताक राज्य का मुखिया और समर्थक था, तथापि इसका विश्वास था कि बिना राजा के राज्य नहीं चल सकता; और इसी लिए वह अत्यन्त गुप्त रीति से किसी राजपुत्र को फ्रांस की गद्दी पर बैठाने के विचार में रहा करता था। इसके लिए कोई विशेष आधार तो नहीं, पर यह विश्वास उसे अवश्य था कि फ्रान्स में प्रजासत्ताक राज्य चल नहीं सकता।

अपना मनोरथ सिद्ध करने के लिए फ्रान्स देश की यह स्थिति नेपोलियन के लिए बड़ा अनुकूल थी। पेरिस पहुँचने पर वह बड़ी सादगी के साथ एक साधारण घर में रहने लगा। उसने यह प्रकट किया कि इजिप्ट से जो मैं वापस लौट आया हूं सो सिर्फ फ्रान्स देश की प्रजा का दुःख दूर करने के लिए! उसके आने का समाचार पाकर सब लोगों को बड़ा आनन्द हुआ। उसके घर पर छोटे-बड़े सब प्रकार के राज्य-कर्मचारियों की इतनी भीड़ होने लगी कि उसका दर्शन तक मिलना कठिन होने लगा। उस समय भी फ्रान्स के राज्यकर्त्ता लोगों में भीतर ही भीतर इतनी दलबन्दियाँ हो रही थीं कि उनका वर्णन करना कठिन है। उनकी संख्या अधिक होने के कारण किसी का संगठन ठीक नहीं था। किसी दल में भी सामर्थ्य नहीं था। प्रत्येक दल के लोग अपना बल बढ़ाने के लिए नेपोलियन बोनापार्ट को अपनी ओर मिलाने का प्रयत्न कर रहे थे। परन्तु वह गम्भीर चाणाक्ष पुरुष सभी को अलग अलग दम-दिलासा देकर बड़े डौल से यह देख रहा था कि किसमें कितना बल है। उस समय प्रत्येक दल के लोग यही समझते थे कि बस अब नेपोलियन हमारे दल में मिलता है; पर वह चाणाक्ष वास्तव में किसी दल के अनुकूल न था; और

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

न किसी को अपना भेद देता था। खूब टटोल लेने पर ज्योंही उसे यह मालूम हुआ कि किसी में भी कुछ सामर्थ्य नहीं रहा है, त्योंही उसने पहले तो पेरिस की सारी सेना अपने हाथ में कर ली; और फिर उसके आतंक से सब दलों के लोगों को जहाँ का तहाँ ठंडा करके स्वयं "फर्स्ट कांसल" का पदवी स्वीकार करके सम्पूर्ण राज्य का प्रबन्ध अपने हाथ में ले लिया! इस प्रकार सब दल हतवीर्य हो गये और नेपोलियन बोनापार्ट अकेला सारे फ्रांस का राज्यकर्त्ता बन गया! यह घटना सन् १८०० ई० की है।

आष्ट्रिया पर नेपोलियन की विजय

इस प्रकार प्रायः सभी राज्यसूत्रों को अपने हाथ में लेने के बाद नेपोलियन ने पहले देश में कुछ शांति और अपना आतंक स्थापित किया; और फिर बाहरी शत्रुओं को पराजित करने का विचार किया। उसने अपनी सेना तैयार करके उसके दो भाग किये। पहले भाग को उसने मोरो नामक सेनापति के आधिपत्य में देकर राइन नदी की ओर भेजा। दूसरे भाग का अधिकार उसने स्वयं अपने हाथ में लेकर आल्प्स पर्वत की ओर जाने का निश्चय किया। उस समय प्रायः समस्त इटली देश में करीब १,३०,००० आष्ट्रियन फैले हुये थे। उनका मुख्य सरदार मिलास था। सिर्फ जिनोआ नगर और उसके आसपास का कुछ प्रदेश फ्रेंचों के हाथ में था। इनका मुख्य अधिकारी मासेना था। वह अपने स्थान पर बड़े प्रबन्ध के साथ रहता। नेपोलियन का सारा रुख उपरोक्त आष्ट्रियन सेना की ओर था। वह सन् १८०० के मई मास की छठवीं तारीख को ४०,००० सेना लेकर पेरिस से निकला। उसकी सेना, बड़ा कष्ट सहकर मौंट सेंट बर्नार्ड पर्वत से नीचे उतरकर, डोरा और पो नदियों के

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

किनारे मिलान और पाविया प्रान्तों में जा पहुँची। अर्थात् आष्ट्रियन सेना के पार्श्व भाग की ओर नेपोलियन की सेना जा डँटी।

अब तो समस्त आष्ट्रियन लोगों को इस बात पर बड़ा आश्चर्य हुआ कि नेपोलियन आल्प्स पर्वत के अत्यन्त कठिन भाग से अपनी इतनी बड़ी सेना लेकर एकदम इटली देश में कैसे आ गया। आस्ट्रियनों का सेनापति मिलास बड़ा शूर-वीर था। वह बड़े बन्दोबस्त के साथ अपनी छावनी में रहता था; और नेपोलियन की ओर अपना ध्यान भी खूब रक्खा था। ज्योंही उसे मालूम हुआ कि नेपोलियन हमारे पास ही आ रहा है; त्योंही उसका सामना करने के लिये उसने अपनी सेना सज्जित की। जून मास की चौदहवीं तारीख को मारेंगो नामक स्थान पर नेपोलियन उससे जा भिड़ा। वहां दोनों दलों का घोर संग्राम हुआ, जिसमें मिलास पूर्ण रीति से पराजित हुआ, और फ्रेंच सेना को सफलता प्राप्त हुई। इस जीत से सारा इटली देश नेपोलियन के अधिकार में आ गया, इस पर आस्ट्रियनों और फ्रेंचों में कुछ समय के लिए सुलह हो गई।

मारेंगों की भारी जीत की खबर जब पेरिस शहर पहुँची तब सब लोगों को बड़ा आनन्द हुआ। उनके हृदय में यह बात अच्छी तरह बैठ गई कि नेपोलियन अवश्य ही कोई महान् पराक्रमी पुरुष है। इतने में नेपोलियन खुद पेरिस आन पहुंचा। तब तो सारे राष्ट्र ने उसे एक ही दृष्टि से, बड़े आदर के साथ, देखा। अर्थात् सब लोगों का मन, जैसा वह अपने विषय में चाहता था, वैसा ही उसने पाया। जिस दिन से राज्यक्रांति का आरम्भ हुआ था उसी दिन से सोते-जागते फ्रेंचों के हृदय में "स्वतन्त्रता" का शब्द गूँज रहा था। वे सम-

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

समझते थे कि हम जो कुछ भी कर रहे हैं, सब इसी के लिए कर रहे हैं। अब आज उन्होंने नेपोलियन को सद्यात् स्वतन्त्रता का अवतार माना। सच पूछिये तो यह उनकी बड़ी भारी भूल थी। क्योंकि नेपोलियन यथार्थ में सब लोगों के मन को अपने वश में करके संपूर्ण देश का स्वयं एकमात्र स्वामी बनना चाहता था। अर्थात् सब की स्वतन्त्रता का नाश करना चाहता था। ठीक है, किसी मनुष्य का भाग्य जागने में जैसे उसकी चतुरता काम देती है वैसे ही दूसरों का अज्ञान भी उसके लिए बहुत उपयोगी होता है।

मिलास और बोनापार्ट की सुलह का उल्लेख ऊपर हो चुका है। नेपोलियन चाहता था कि यह सन्धि पक्की हो, जो निरन्तर स्थिर रहे। यह बात उसने अष्ट्रियन सरकार से प्रकट की; पर आष्ट्रियन सरकार ने इसे बिल्कुल पसन्द नहीं किया। परन्तु उद्दण्डता के साथ वह नेपोलियन का कहना नहीं टाल सकती थी। इसलिए उसने बड़े ढोल से नेपोलियन को लिखा कि इंग्लिश सरकार के साथ जो सुलह पहले हमारी हो गई है, उसके अनुसार चलने के लिए हम बाध्य हैं। इसलिए हम आपके साथ ऐसी सुलह न कर सकेंगे। यह उत्तर देकर आष्ट्रियन सरकार फिर बड़े वेग के साथ युद्ध की तैयारी करने लगी। इटली में उसका पराजय अभी हाल ही में हो चुका था। इसलिए अबकी बार उसने जर्मनी की ओर अपनी सेना का मोर्चा फेर दिया।

इस बार उसने अपनी सेना का अधिकार आर्च ड्यूक जान नामक पुरुष को दिया था। इसने बाहर निकलते ही ने नामक फ्रेंच सरदार की सेना पर हमला किया। फ्रेंच लोग इस हमले को न सहकर भागने लगे। इससे ड्यूक जान को और भी जोश चढ़ा। अब वह जर्मनी के दक्षिण में इन्न और

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

इज़र नामक नदियों के मध्य होहेनलिन्डन में जा पहुँचा। वहां मोरिया नामक फ्रेंच सरदार अपनी विस्तृत सेना के साथ छावनी डाले हुये था। उसी स्थान में सन् १८०० के दिसम्बर मास की तीसरी तारीख को दोनों सेनाओं का तुमुल युद्ध हुआ। उस समर में उभय पक्ष के वीरों ने अत्यन्त शूरता दिखलाई। उस समय बर्फ इतनी अधिक गिर रही थी कि पास के मनुष्य को भी पहचानना कठिन हो गया था। तथापि उसकी पर्वा न करके वीरों ने अपना कर्तव्य पालन किया। अन्त में आष्ट्रियन पराजित हुए। फ्रेंचों ने उनके आठ हज़ार सिपाहियों को कैद कर लिया और बहुत सा सामान भी उनके हाथ लगा। इस युद्ध में फ्रेंचों के तीन हज़ार और आष्ट्रियनों के छै-सात हज़ार सिपाही खेत रहे। एक तो मारेंगो की जीत से ही यूरोप में फ्रेंच लोगों की धाक बैठ गई थी, अब इस जीत से उसमें और भी अधिकता हो गई।

होहेनलिन्डन की हार के पश्चात् आष्ट्रियन और उनके राजा फ्रान्सिस फ्रेंचों से बहुत डरने लगे। उन्हें निश्चय हो गया कि इनसे युद्ध करके हम कभी पार न पा सकेंगे। इस लिए उन्होंने सन् १८०१ के फरवरी मास की तीसरी तारीख को फ्रांस में लूनवील नामक स्थान पर संधि कर ली। यह संधि उन्होंने सिर्फ अपने ही लिए नहीं की; किन्तु जर्मनी की अन्य रियासतों के सद्व्यवहार की भी अपने ऊपर जिम्मेदारी ले ली। यह बात उन जर्मन रियासतों को पसन्द नहीं आई। इस संधि से बेलजियम और राइन नदी की बाईं ओर का सारा देश फ्रेंचों को मिला। लाम्बर्डी नामक रियासत स्वतंत्र कर दी गई, और एडिज उसकी तथा आष्ट्रियन राज्य की सीमा नियत हुई। इसी प्रकार की और भी कितनी ही शर्तें उसमें थीं।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

इस प्रकार आष्ट्रियनों के संधि कर लेने पर थोड़े ही दिनों बाद रूस, पोर्तगाल, प्रुशिया आदि राज्यों ने

इंग्लैंड से छेड़-छाड़

भी, लाचार होकर कहिये अथवा अपनी इच्छा से—फ्रेंचों के साथ संधि करके युद्ध के झगड़े से अपनी जान बचाई। अब फ्रेंचों का दुश्मन एक इंगलैण्ड ही बचा। इसलिए इंग्लिश सरकार ने बड़े धड़ाके के साथ नेपोलिन से युद्ध करने की तैयारी शुरू की। इधर रूस-साम्राट और नेपोलियन एकमत होकर इंग्लैण्ड के विरुद्ध सलाह करने लगे। इस सलाह का मुख्य हेतु यही था कि समुद्र पर अगरेज़ों का जो इतना अधिकार है, सो न रहने पावे। इस सलाह में डेन्स लोग भी शामिल थे। उक्त सलाह के अनुसार अगरेज़ों से मुक़ाबिला करने के लिए डेन्स जलसेना तैयार हुई। इधर अँगरेज़ी जलसेना भी तैयार थी। इसका मुख्य सेनापति नेल्सन था। सन् १८०१ के अप्रैल मास के आरम्भ में, कोपेनहेगन शहर के निकट के बन्दर में, दोनों सेनाओं की बड़ी भारी लड़ाई हुई। उसमें डेन्स सेना का पराभव होकर नेल्सन की जीत हुई। इस युद्ध में अँगरेज़ों के १,२०० मनुष्य काम आये, और दूसरी ओर के लगभग छै हज़ार मनुष्य हताहत हुए। इस लड़ाई के बाद अँगरेज़ों ने माल्टा द्वीप ले लिया। इसी समय के लगभग रूस-सम्राट पाल की एकाएक मृत्यु हो गई, जिससे नेपोलियन की उपर्युक्त सलाह बेकाम हो गई। ऐसी दशा में कुछ काल तक लड़ाई बन्द रही। इतने में थोड़ा सा अवकाश निकालकर नेपोलियन ने फ्रांस देश के राज्य की दशा सुधारने का प्रयत्न किया। देश में जो अशान्ति और नादिरशाही मची हुई थी, उसे दूर करके शांति स्थापन करने के लिए वह अत्यन्त उद्योग करता था। इस काम में उसके अनुयायी उसकी सहायता

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

करते थे; और सारे फ्रेंच लोग ऊपर ऊपर उसे बहुत मानते थे। परन्तु उनमें कितने ही लोग उसकी जान के भी ग्राहक थे। एक बार पेरिस में, जब उसके विजयी होने के उपलक्ष में बड़ा भारी उत्सव मनाया जा रहा था, उसे मरवा डालने के लिये षड्यन्त्र रचा गया था; परन्तु तत्काल ही भेद खुल जाने के कारण नेपोलियन बच गया। इसी तरह एक बार वह गाड़ी पर बैठा हुआ रास्ते में चला जा रहा था कि एक जगह उसकी गाड़ी थोड़ी ही दूर आगे बढ़ी थी कि उसके पीछे सुरंग से बारूद का एक ऐसा धड़ाका हुआ कि जिससे कई मनुष्यों के प्राण गये! उस समय नेपोलियन की गाड़ी यदि जरा भी पीछे रहती तो उसके मर जाने में कुछ भी सन्देह न था। किसी कवि ने क्या ही अच्छा कहा है:— "जाको राखे साइयाँ, मारि न सकिहै कोय। बाल न बाँका करि सकै, जो जग वैरी होय।" नेपोलियन यद्यपि यह अच्छी तरह जानता था कि कुछ लोग उसकी जान लेने के लिए तैयार हो गये हैं, तथापि वह तिल भर भी नहीं घबड़ाया। यही नहीं; किन्तु ऐसे विघ्नों से वह अपने उद्योग में और भी दृढ़ हो गया।

इधर फ्रांस देश का तो यह हाल था, उधर इजिप्ट में फ्रेंचों और अंगरेजों की लड़ाइयाँ हो ही रही थीं। उनमें से एक लड़ाई में अंगरेजों का एक मुख्य जनरल आबरक्रांबी गोली खाकर मृत्युप्राय हो गया। फिर भी जीत अंगरेजों की ही हुई, फ्रेंच लोग पराजित हो गये और उन्हें बड़ी हानि उठानी पड़ी। इधर से इस प्रकार निराश हो जाने पर नेपोलियन ने बोलोन से बड़ी युक्ति के साथ समुद्र पार करके इंगलैंड पर हमला करने का प्रयत्न किया; परन्तु नेलसन ने उसको पराजित कर उसे सफल-मनोरथ नहीं होने दिया।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

तदनन्तर सन् १८०२ के मार्च मास में आमिया के मुकाम पर अंगरेज़ और फ्रेंचों की संधि हो गई। उसमें यह निश्चय हुआ कि ट्रिनिडाड, केप आफ़ गुड होप और माल्टा अंगरेज़ फ्रेंचों को दे; और इसके बदले फ्रेंच लोग इटली का दक्षिण भाग छोड़ दें। यह संधि बहुत दिनों तक नहीं टिकी। क्योंकि इससे अंगरेज़ों को कुछ भी लाभ न था। किन्तु इस संधि का समाचार पाकर फ्रान्स और इँगलैंड दोनों देशों के लोगों को अत्यन्त सन्तोष हुआ।

नेपोलियन की महत्वकांक्षा

आमिया की संधि के पाश्चात् नेपोलियन को फिर थोड़ा सा अवकाश मिला। इस अवसर में उसने दो बड़े काम किये। एक तो उसने फ्रान्स में रोमन कैथलिक धर्म को फिर से स्थापन किया और दूसरा यह कि पहले की गड़बड़ी के समय दरबार के जो रईस और सरदार बरखास्त कर दिये गये थे, उनकी जगह पर नये रईस और सरदार मुकर्रर किये। साथ ही उनकी पदवी के अनुसार जागीरें भी नियत कर दीं। देश में धर्म के बिलकुल न रहने से जो धार्मिक और प्रतिष्ठित लोग खिन्न और निराश हो बैठे थे उनको इस नवीन धर्म-स्थापना से बड़ी प्रसन्नता हुई और वे सब नेपोलियन की आज्ञा मानने को तैयार हुए। नवीन सरदार भी बड़े प्रसन्न हुए। सब लोग नेपोलियन के ऐसे भक्त बन गये कि उसकी जान के लिए अपनी जान देने को सदा तैयार रहते। उपरोक्त दोनों प्रकार के मनुष्यों की संख्या बहुत अधिक थी। इन सब का बल नेपोलियन को पूरा पूरा मिल गया। अब उसका माहात्म्य दिन पर दिन बढ़ने लगा। उसे विश्वास हो गया कि अब मेरा मनोरथ शीघ्र ही सफल होगा। जब से उसने राज्यसूत्र अपने हाथ में लिया था तभी से उसने लोगों की जान-माल

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

और व्यापार व्यवसाय की रक्षा का अच्छा प्रबन्ध किया था। लोगों की दाद फिर्याद का भी अच्छा बन्दोबस्त किया था उधर धर्मस्थापना तथा रईस-सरदारों की प्रतिष्ठा भी फिर से क़ायम की थी। इन सब कार्यों से वह इतना लोकप्रिय हो गया कि सब के मुँह से यही निकलता था कि नेपोलियन के समान दूसरा फ्रांस भर में नहीं। अब उसकी स्वतन्त्र सम्राट होने की इच्छा कुछ कुछ बाहर झलकने लगी। यह उसकी पत्नी जोजेफाइन, और उसके दूसरे कई सच्चे मित्रों को अच्छी नहीं लगी। उन लोगों ने उसे बहुतेरा समझाया कि राजवंश के किसी पुरुष को गद्दी पर बैठाकर, स्वयं मन्त्री-पद ग्रहण करके, राज्य-कार्य कीजिए। यही ठीक होगा। स्वंय राजा बनने में कोई लाभ नहीं। परन्तु विलक्षण महत्वाकांक्षी नेपोलियन भला ऐसी सलाह क्यों पसन्द करने लगा! लोगों ने "फर्स्ट कान्सल" के पद पर उसे दस वर्ष के लिये नियत किया था। यह अवधि सन् १८०२ के मई मास में दस वर्ष के लिये और बढ़ा दी गई, तथा अगस्त की दूसरी तारीख को तो जीवन पर्यन्त के लिए उसे उस पदवी पर स्थिर कर के सारे राज्य सूत्र उसके हाथ में दे दिये गये! इस समय नेपोलियम बोनापार्ट को 'सम्राट" कहलाने के अतिरिक्त, और बाकी सम्राट के सब अधिकार मिल गये।

फिर युद्ध की छेड़-छाड़

ऊपर जिस आमिया की संधि का उल्लेख हो चुका है वह बहुत दिनों तक नहीं टिकी। हेलविशियन प्रजातंत्र राज्य में नेपोलियन बोनापार्ट कुछ हस्ताक्षेप करने लगा; और ऐसा मालूम होने लगा कि वह इजिप्ट में फिर कुछ न कुछ गड़बड़ मचावेगा। यह बात इंगलिस सरकार को अच्छी नहीं लगी। इधर इंगलैंड के अखबार भी नेपोलियन बोनापार्ट पर

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

अत्यन्त द्वेषपूर्ण लेख प्रकाशित किया करते थे; और वहाँ की सरकार ने फ्रांस के राजकुल के कुछ मनुष्यों को आश्रय देकर अपने देश में रक्खा था। इन कारणों से नेपोलियन इंगलैंड के नाम से बहुत जलता था। अन्त में बात यहाँ तक बढ़ी कि सन् १८०३ में दोनों देशों में फिर युद्ध की तैयारी होने लगी। नेपोलियन ने अपनी सेना के दो भाग करके एक उत्तर की ओर और दूसरे को दक्षिण की ओर भेजा। हालैंड के राजा ने उसके साथ सन्धि की थी। इस लिये उसकी सेना हानोवर पर गई, और उसे उसने ले भी लिया। इस जीत से पहले तो अन्य राष्ट्रों को ऐसा जान पड़ा कि प्रुशिया भी कहीं भयभीत होकर इस षड्यन्त्र में न मिल जाय। परन्तु वैसा नहीं हुआ। उसे नेपोलियन से कुछ मिलने की आशा थी; पर उसे छोड़कर उसने अंगरेजों का पक्ष स्वीकार किया। इधर रूस-सम्राट अलेक्ज़ेंडर ने जब देखा बाल्टिक समुद्र में फ्रेंच बढ़े जाते हैं तब उससे भी न रहा गया; और अंग्रेजों से नवीन सन्धि करके, फ्रांस से की हुई पहली सन्धि उसने भंग कर दी। इस प्रकार इंगलैंड प्रुशिया और रूस ये तीनों राष्ट्र एकमत होकर नेपोलियन से युद्ध करने के लिये तैयार हो गये।

इसके बाद थोड़े ही दिनों में नेपोलियन ने इंगलैंड पर चढ़ाई करने की तैयारी की; परन्तु उसको परजित करने के लिये सारा इंगलैंड बड़े जोश के साथ एक दम तैयार हो गया। इस कारण उसके सारे विचार जहाँ के तहाँ रह गये। इसी समय के लगभग नेपोलियन को मार डालने के लिए पेरिस में एक षड्यन्त्र रचा गया था। चार बड़े बड़े लोग इसके अगुआ थे। परन्तु किसी विषय पर उन चारों में मतभेद हो गया; और सारा भेद प्रकट हो गया। उन सब लोगों को पकड़कर मुकदमा चलाया गया और अपराध सिद्ध होने

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

पर सबको उचित दण्ड दिया गया। इसके बाद नेपोलियन ने राजवंशी पुरुष को, बिना कारण, मरवा डाला। उसका यह कार्य निन्दनीय समझा जाता है।

नेपोलियन फ्रांस का सम्राट

धर्मस्थापना, नवीन सरदारों की नियुक्ति और सर्व-साधारण प्रबन्ध, इत्यादि बातों से नेपोलियन बोनापार्ट ने फ्रांस की प्रायः सम्पूर्ण प्रजा को अपने वश में कर लिया था। अब उसने सैनिकों के अनुकूल बहुत से नये कायदे बनाये। बुलोन में उसकी बड़ी छावनी थी। वहाँ जाकर उसने उनकी स्वयं क़वायद देखी और बड़ा सन्तोष प्रकट किया। नये कायदे सैनिकों को बड़े सुखदायक मालूम हुए। नेपोलियन ने उनकी क़वायद देखकर संतोष प्रकट किया था। इस पर भी वे बड़े प्रसन्न हुए। इस प्रकार प्रजा और सैन्य दोनों को वशीभूत करके, उनकी सहायता से, नेपोलियन ने सन् १८०४ के मई मास की आठवीं तारीख को अपने को सब लोगों से फ्रांस देश का सम्राट कहलाया। इसके बाद उसी वर्ष के दिसम्बर महीने की दूसरी तारीख को उसका यथाविधि राज्याभिषेक हुआ। उस समय बड़ा उत्सव मनाया गया। इटली का पोप भी उस उत्सव में सम्मिलित होने के लिए आया था। बड़े बड़े रईस सरदारों ने, धर्माधिकारियों ने और सम्पूर्ण प्रजा ने आनन्दपूर्वक स्वीकार किया कि नेपोलियन बोनापार्ट हमारा सम्राट है। इस प्रकार नेपोलियन बोनापार्ट, जो एक बिलकुल साधारण मनुष्य था, केवल अपने पराक्रम से, फ्रांस देश का सम्राट बन गया। हमारे देश के इतिहास में छत्रपति शिवाजी महाराज का उदाहरण नेपोलियन से मिलता है। इन दोनों महापुरुषों ने अपने ही चातुर्य और पराक्रम से राजपद प्राप्त किया।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

इंगलैंड पर चढ़ाई करने के विषय में नेपोलियन के विचार और उसकी निष्फलता

जैसा कि ऊपर कह चुके हैं, योरप के बड़े बड़े राष्ट्र नेपोलियन से युद्ध करने की तैयारी कर रहे थे; और इधर नेपोलियन अपने नवीन प्राप्त किये हुए अधिकार को दृढ़ बनाने और सेना को सज्जित करने में लगा हुआ था। पहिले वह मिलान नामक स्थान में गया; और वहाँ यह घोषणा की कि इटली का मैं सम्राट हूँ इसके बाद मारेंगो में उसने अपनी समस्त सेना की कवायद देखी। फिर उसने जिनोवा शहर लिया; और उसे फ्रांस के राज्य में मिलाकर बुलोन वापस आया; और फिर इंगलैंड पर चढ़ाई करने की तैयारी करने लगा। पर यथार्थ में उस समय उसका विचार इंगलैण्ड पर चढ़ाई करने का नहीं था। इस विषय में एक महाशय से बातचीत करते समय उसने कहा था—"लोग यह समझते हैं कि मैं इंगलैण्ड पर चढ़ाई करने वाला हूँ। यह केवल भ्रम है। आज दिन मैं एक लाख सेना लेकर इंगलैण्ड पर चढ़ाई करने की सामर्थ्य रखता हूँ; और मुझे यह भी विश्वास है कि अंगरेज़ों से जो मेरी पहली लड़ाई होगी, उसमें मैं जीतूंगा। परन्तु इस लड़ाई में मेरे ३०,००० सिपाही निस्सन्देह मारे जाएँगे। इसके बाद फिर लंदन पर चढ़ाई करके जब मुझे विजय प्राप्त हो, तब कहीं मेरा उद्देश्य पूरा हो। परन्तु इतने में मेरी तीन-चतुर्थांश सेना नाश हो जायगी और कुल एक चतुर्थांश मेरे पास रहेगी; और फिर फ्रांस से सेना ले जाने को नहीं मिलेगी। इस प्रकार की चढ़ाई यदि मैंने की, तो लोग मुझे पागल कहेंगे। सच तो यह है कि जब तक हमारी सेना अच्छी न हो, हम इंगलैण्ड को हरा नहीं सकते। इस समय मैंने अपनी सेना सज्जित की है इसका उद्देश्य कुछ और ही है। बात तो यह

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

है कि मेरा राज्य या तो सारे योरप में सब से श्रेष्ठ होना चाहिए, अथवा फिर नष्ट ही होना चाहिये। अन्य गति नहीं।" उस समय सेना तैयार करने का उसका मुख्य उद्देश्य यह था कि जर्मनी का सम्पूर्ण राज्य जीत कर फ्रांस में मिला लिया जाय। परन्तु जब रूस आष्ट्रिया और इंगलैण्ड एकमत होकर उससे लड़ने की तैयारी करने लगे तब उसका यह उद्देश्य पूर्ण नहीं हुआ। उसने रूस और आष्ट्रिया को अपनी ओर मिलाने का बड़ा प्रयत्न किया; पर सब व्यर्थ हुआ। तब उसने राइन नदी के उस पार का कुछ प्रदेश देना स्वीकार करके बवेरिया राज्य से संधि की। इसके बाद इंगलैण्ड पर हमला करने का विचार उसने विलकुल ही छोड़ दिया। यह बात सन् १८०५ ई० की है।

तदनन्तर सब से पहले फ्रेंच और आष्ट्रियनों की ठनी। आष्ट्रियनों का मेक नामक एक बड़ा सरदार अल्म नामक स्थान पर बड़ी भारी सेना के साथ, बड़े प्रबन्ध से रहता था। उस पर फ्रेंचों ने हमला किया। वहाँ उभय पक्ष का तुमल युद्ध हुआ। इस युद्ध में आष्ट्रियनों को बड़ी हानि हुई और वे पूर्णतया पराजित हुए। उनके सेनापति मेल को फ्रेंचों ने कैद कर लिया। इस विजय से नेपोलियन को बड़ा आनन्द हुआ। सबने यही समझा कि उसकी सेना अजित है। नेपोलियन अहंकार से फूल उठा। परन्तु तुरन्त ही, दूसरे दिन, अक्टूबर मास की २१वीं तारीख को ट्राफलगार में अँगरेज और फ्रेंचों में भयानक जल-युद्ध हुआ। इस में फ्रेंच सेना विलकुल हार गई और अँगरेजों की जीत हुई। इस बार अँगरेजी जलसेना का अध्यक्ष नेलसन था। वह बड़ा शूर और देशाभिमानी पुरुष था। उसको पराजित करने के लिये फ्रेंच सेनापति वीलनूव और स्पेनिस सेनापति ग्रेविना ने ब।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

प्रयत्न किया; पर सफलता नहीं हुई।

इस युद्ध में जीत तो अँगरेजों की हुई; पर हमारी समझ में यह जीत अत्यन्त महँगी पड़ी। क्योंकि जिस समय दोनों पक्षों में भयानक युद्ध हो रहा था, एक गोली सनसनाती हुई आकर नेल्सन के ऐसी लगी कि वह अत्यन्त व्याकुल होकर गिर पड़ा। निकट के मनुष्यों ने तत्काल ही उसे उठाकर सावधान किया। परन्तु उसके बचने की आशा बिलकुल नहीं रही। उसको बड़ा कष्ट हो रहा था। फिर भी स्वदेश हित की ओर से उसका ध्यान नहीं हटा था। वह वैसा ही पड़ा हुआ अपने सिपाहियों को लड़ने के लिए उत्साहित कर रहा था। अंत में जब उसे मालूम हुआ कि फ्रेंचों के बहुत से जहाज हमारी सेना ने पकड़ लिए हैं, और वे पूर्णतया पराजित हो गये हैं, तब उसे, अन्त की उस कष्टदायक अवस्था में भी, बड़ा आनन्द हुआ। वह बोला—"भगवन्! तू धन्य है। तेरी ही कृपा से मैं आज अपने कर्तव्य को पूर्ण करके आनंदपूर्वक मरता हूँ।" यह कहकर उसने बड़ी शान्ति के साथ प्राण त्याग किये। ट्राफलगार की विजय में इंगलैण्ड का इतना बड़ा शूर वीर और देशाभिमानी पुरुष चल बसा इसी लिए वास्तव में उनकी यह जीत बड़ी मँहगी बतलाई गई है। इङ्गलैण्ड की उन्नति होने में जिन महापुरुषों के पराक्रम ने कुछ काम किया है, उनमें नेल्सन की गणना प्रमुखता से की जाती है। धन्य हैं वे पुरुष, जो अपनी मातृभूमि के लिए अपने प्राण अर्पण करते हैं।

आष्ट्रिया, रूस और जर्मनी

इसके बाद शीघ्र ही नेपोलियन बोनापार्ट ने बड़ी भारी सेना लेकर आष्ट्रिया पर चढ़ाई की और १५ नवम्बर को वीना शहर ले लिया उधर रूसी सेनापति कुटुसाफ बड़ी भारी सेना के

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

को हराया

साथ आष्ट्रियनों की सहायता के लिये आ रहा था। मार्ग में वीना राजधानी के पतन का समाचार पाकर वह वैसा ही वापस लौट पड़ा। परन्तु मुराट नाम फ्रेंच सेनापति ने वहीं उस पर अचानक हमला कर दिया। रूसी लोग बिलकुल पराजित हो गये। इस पर उन दोनों सेनापतियों ने परस्पर संधि कर ली। इधर आष्ट्रिया का सम्राट डरकर भागा; और ब्रन्न में रूस सम्राट से जाकर मिला। नेपोलियन अभी उसकी सेना का पीछा कर ही रहा था। अन्त में दो दिसम्बर को ब्रन्न नदी के किनारे बड़ा भारी संग्राम हुआ। यह युद्ध इतिहास में आस्ट्रेलिटज़ युद्ध के नाम से प्रसिद्ध है। इस युद्ध में रूस और आष्ट्रिया की कुल सेना ८०,००० थी। इसमें १०,००० मनुष्य धराशायी हुए; और बहुत से लोग प्राण बचाकर भाग गये। उनकी ८०,००० सेना में से लगभग ४०,००० सेना नष्ट हो गई। इस प्रकार पराभव होने पर अपनी अवशिष्ट सेना के साथ रूस का सम्राट तो अपने देश को चला गया; और आष्ट्रिया के सम्राट ने जब देखा कि हमारा कोई उपाय नहीं चलता तब उसने नेपोलियन बोनापार्ट से संधि कर ली। इसमें उसे बड़ी हानि सहनी पड़ी। इसी समय के लगभग नेपोलियन ने अपने एक भाई को नेपल्स का राजा बनाया; और अपने नातेदारों तथा अन्य इष्ट मित्रों को बड़ी बड़ी पदवियां दीं। रूस और आष्ट्रिया की दुर्दशा देखकर प्रुशिया के सम्राट ने भी उससे सुलह कर ली।

अब जर्मनी की सारी रियायतें नेपोलियन से डर गईं। उनमें से चौदह रियासतों ने उसे अपना राजा मान लिया; और उसके आज्ञानुसार चलने का वचन दिया। यह बात प्रुशिया के सम्राट को पसन्द न आई। इसलिए फ्रेंचों के

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

साथ फिर उसे युद्ध करने का मौका आया; और १४ अक्टूबर को जेना में यह लड़ाई हुई। उनमें प्रुशियन लोग फिर पूर्णतया पराजित हुए। इस पर उनके सम्राट ने नेपोलियन से संधि करनी चाही; पर उसने स्वीकार नहीं किया। इसके कुछ ही काल बाद फ्रांस का सम्राट विजयघोषणा करता हुआ बर्लिन राजधानी में पहुँचा! उस समय उसे असीम आनन्द हुआ; और वह इस नवीन जीते हुए राज्य का ठीक प्रबन्ध करने के उद्योग में लगा। उस आनन्द की पहली ही उमंग में उसने इङ्गलैंड के विषय में एक घोषणापत्र निकाला। उसका तात्पर्य यह था कि जो अंगरेज लोग पराये देश में मिलेंगे वे सब कैदी समझे जायँगे; उनकी सम्पति जब्त कर ली जायगी; उनके जहाज किसी बन्दर में न लगने पावेंगे; और यदि लगेंगे तो उनका सारा माल जब्त कर लिया जायगा इस घोषणा से उसकी सारी प्रजा—अर्थात् फ्रेंच लोगों को बहुत कष्ट होने लगा; क्योंकि इङ्गलैंड से आने वाली ऐशआराम की चीजें उन्हें न मिलने लगीं। शक्कर पांच रुपये सेर हो गई।

सन् १८०७ तक नेपोलियन बोनापार्ट प्रुशिया के सम्राट और रूस की सेना का पीछा करता रहा। उस समय रूस सम्राट तुर्क लोगों से लड़ता था। तो भी उसने नेपोलियन से लड़ने की खूब तैयारी कर रक्खी थी; क्योंकि उसका बल और साहस वह अच्छी तरह जानता था। प्रुशिया के ऐला नामक स्थान में दोनों दलों की बड़ी भारी लड़ाई हुई। उसमें प्रत्येक दल के बीस बीस हजार से अधिक मनुष्य काम आये। इसके बाद कुछ और छोटी-मोटी लड़ाइयां हुई और अन्त में नेपोलियन बोनापार्ट और रूस सम्राट; दोनों ने प्रत्यक्ष मिलकर संधि कर ली। यह संधि इतिहास में टिलसिट की संधि के नाम से प्रसिद्ध है। इस सुलह से फ्रेंचों

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

और रूसियों को तो लाभ था—हानि सिर्फ प्रुशिया की थी। यह संधि सन् १८०७ में हुई।

स्पेन पर अधिकार और वाग्राम के संग्राम में आष्ट्रिया का पूर्ण पराजय

इस समय स्पेन में चार्ल्स नाम का राजा राज्य करता था। वह स्वयं तो बड़ा मूर्ख था; और अपने झूंठे तथा नीच मंत्रियों की सलाह से चला करता था। उसके देश की दशा बड़ी ख़राब थी। दरबार में फूट फैली हुई थी और कई दल हो गये थे। यहाँ तक कि राजा और उसके पुत्र फेर्डिनंड में घोर वैमनस्य था। नेपोलियन ने यह अवसर अच्छा देखा और स्पेन पर हमला करके उसके मुख्य मुख्य किले ले लिये। तब तो चार्ल्स भयभीत होकर भागा और अपनी गद्दी ही छोड़ दी। उस समय स्पेनिशों को सहायता देने के लिए सर जान मूर नामक अंगरेज सेनापति अपनी बड़ी भारी सेना लेकर आया। पर उससे कुछ लाभ न हुआ। वह सेनापति एक लड़ाई में गोली लगने से मर गया।

आष्ट्रियन लोगों ने जब देखा कि नेपोलियन की सेना स्पेन में लड़ रही है, तब उन्होंने एक बार फिर सिर उठाया। यह सुनते ही नेपोलियन बड़े वेग के साथ पेरिस से चला और एकदम वीना राजधानी में ही पहुँचा। १८०९ की पाँचवीं जुलाई को वाग्राम में दोनों दलों का भयंकर संग्राम हुआ। इस बार आष्ट्रियन लोग ऐसी बुरी तरह से हारे कि यदि नेपोलियन संधि करना स्वीकार न करता तो उनकी सेना का एक भी मनुष्य जीता न बचता। इसी समय नेपोलियन ने अपनी पहली स्त्री जोजेफाइन को तलाक़ देकर आष्ट्रियन सम्राट की लड़की से विवाह किया। यह घटना अप्रेल सन् १८१० की है। इसके अगले वर्ष ही लार्ड वेलिंग्टन ने

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

फ्रेंचों को पोर्तगाल से निकाल बाहर किया।

नेपोलियन की उतरती कला, रूस में उसकी दुर्दशा

रूस-सम्राट अलेक्जेंडर ने जब सुना कि नेपोलियन ने आष्ट्रिया की सम्राट की पुत्री से विवाह किया है, तब उसने समझा कि अब नेपोलियन से टिलसिट की सन्धि का ठीक ठीक पालन न हो सकेगा; और वह हमें तंग करेगा। इधर फ्रेंच सम्राट ने अंगरेजी माल के व्यापार के विषय में जो नियम बनाया था, वह रूसियों के लिए भी कष्टदायक था। इसलिए वे उसमें परिवर्तन कराने के लिए अपने सम्राट के पीछे लगे हुए थे। उनका कथन अलकजेंडर को सच मालूम हुआ और उसने इस विषय में नेपोलियन को लिखा; पर नेपोलियन ने उसे स्वीकार नहीं किया। इससे फ्रेंचों और रूसियों में फिर वैमनस्य हो गया। इस समय नेपोलियन ने अंगरेजों को अपनी ओर मिला लेने का प्रयत्न किया परन्तु वह स्वयं स्पेन की गद्दी वहाँ के राजवंश को वापस देने के लिए तैयार नहीं था और अपनी सेना को आष्ट्रिया से बुलाना नहीं चाहता था। इसलिए इंगलैंड-सरकार ने भी उसका कहना स्वीकार नहीं किया।

अब रूस के सम्राट ने स्वीडन और इंगलैंड की सरकारों से सन्धि करके, उनकी सहायता से, फ्रेंचों के साथ लड़ने की तैयारी शुरू की। इधर नेपोलियन ने भी तैयारी की और अपनी प्रचंड सेना साथ लेकर बड़ी धूमधाम से सीधे रूस की ओर चला। इधर रूसी सेना भी सुसज्जित होकर आई। दोनों दालों में अनेक लड़ाइयाँ हुईं। जिनमें से कौनो की लड़ाई में रूसी सेना बिलकुल पराजित हो गई। परन्तु अभी हाल ही में रूस और तुर्कितस्तान के राज्यकर्त्ताओं में एक सन्धि हुई थी। इस कारण इस पराजय का रूसी लोगों पर कोई विशेष

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

प्रभाव नहीं पड़ा। अब फ्रेंचों ने ठीक मास्को शहर की ओर अपना मोर्चा फिराया और उसी ओर बढ़े। मार्ग में परस्पर अनेक छोटी-मोटी लड़ाइयाँ हुईं; परन्तु उन सबसे बड़ी लड़ाई स्मालेन्सको में हुई यह नगर मास्को के कुछ कुछ पश्चिम में है। इस युद्ध में दोनों दलों की बड़ी हानि हुई। पर अन्त में विजय-लक्ष्मी फ्रेंचों के ही अनुकूल रही। इसके बाद रूसी सेनापति कुटुसाफ ने मास्को शहर के संरक्षणार्थ बोर्डिनिओ में फ्रेंचों से एक बड़ा युद्ध किया। इस समर में दोनों पक्ष के मिलकर लगभग ७०,००० सिपाही धराशायी हुए। दोनों पक्षों के वीरों ने बड़े जोश के साथ संग्राम किया; पर स्पष्ट जीत किसी की नहीं हुई, तथापि रूसीयों को पीछे हटना पड़ा और नेपोलियन जयघोष मचाता हुआ मास्को शहर में पहुँचा और उस पर अपना अधिकार कर लिया। इस नगर को रूसी लोग बड़ा पवित्र मानते रहे हैं और बड़ी भक्ति के साथ उसे 'मास्को माता' कहते रहे हैं। इस नगर में नेपोलियन का प्रवेश होते ही वहाँ के निवासियों ने अपने घरों में आग लगा दी और क्षणभर में ही सारे नगर को भस्म कर दिया। अब नेपोलियन बड़े संकट में पड़ा। जाड़े का मौसिम आने वाला था; और नेपोलियन यह मौसिम वहीं काटना चाहता था; पर शहर के जल जाने से उसकी सेना के के लिए कोई आश्रम नहीं रहा। इधर खाने को अन्न न मिलने लगा। सर्दी कड़ाके की पड़ने लगी। कष्ट असह्य होने लगा। तब नेपोलियन अपनी सेना को लेकर वहाँ से स्वदेश के लिए चल पड़ा। वहाँ से चल कर वह कुछ काल स्मालेन्सको में ठहरना चाहता था; परन्तु जब तक वहाँ पहुँचे, कठिनाइयाँ बहुत बढ़ गईं; और इधर रूसी लोग उसका पीछा भी कर रहे थे। इन कारणों से उसे बड़ा कष्ट भोगना पड़ा। इस भग-

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

युद्ध में फ्रेंच सेना की क़वायद काम न आई। बीच में उसे बर्सिना नदी पार करनी पड़ी। उस समय रूसी तोपखानों से गोलों की भयंकर वृष्टि हुई। उसने नेपोलियन के ८००० मनुष्य मारे गये! अन्त में शत्रुओं से पीछा छुड़ाने के लिए नेपोलियन ने जल्दी में नदी पुल गिरवाकर जलवा डाला। इससे, उसकी सेना के हज़ारों लोग पीछे रह गये थे, उनको रूसियों ने खूब क़त्ल किया। नेपोलियन ने देखा कि अब यहाँ कुशल नहीं। इसलिए वह, अपनी सेना को पीछे छोड़कर, स्वयं भागते हुए पेरिस में आया।

फिर नेपोलियन का पराजय ड्यूक-आफ्वेलिंगटन का सामना

यद्यपि फ्रेंच सम्राट का इतना पराजय हुआ, तथापि उस के विषय में फ्रेंच लोगों की श्रद्धा घटी नहीं। उसने फ्रांस की राज्य व्यवस्था का ठीक ठीक प्रबन्ध करके फिर बड़ी भारी सेना जमा की और योरप के उत्तर प्रदेश का मार्ग पकड़ा। प्रुशिया के राजा ने अपनी सेना नेपोलियन की सहायता के लिये भेजी थी; पर विवश होकर। परन्तु जब उसने देखा कि रूसी लोग फ्रेंचों का पीछा करते हुये आगे बढ़ आये हैं, तब उसने रूस के सम्राट अलेकज़ेंडर से संधि कर ली। इधर नेपोलियन युद्ध के लिये फिर चल पड़ा था। इस बीच में अनेक लड़ाइयाँ हुईं; पर जीत किसी की निश्चित नहीं रही। हां फ्रेंचों की कुछ विशेषता थी। परन्तु नेपोलियन ने देखा कि इससे कुछ फैसला नहीं होगा, अतएव उसने कुछ समय के लिए सुलह करनी चाही। प्रतिपक्षियों ने इसे स्वीकार कर लिया। यह मौका अच्छा देखकर इङ्गलैंड सरकार प्रुशिया, रूस, स्वीडन और आष्ट्रिया से सन्धि करके नेपोलियन से लड़ने की ठानी। नेपोलियन ने जब देखा

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

कि योरप के बड़े बड़े राष्ट्र एकत्र होकर हमारे ऊपर आ रहे हैं तब उसने भी अपनी सारी सेना सन्नद्ध कर के उनसे टक्कर लगाने के लिए कमर कसी। इस प्रकार एक बड़ा भारी युद्ध होने के लक्षण दिखाई देने लगे।

नेपोलियन ने जर्मनी के ड्रेसडन नामक स्थान पर अपनी सेना की मुख्य छावनी डाली; और वहीं से सेनाएँ भेजकर अपने भिन्न भिन्न शत्रुओं से युद्ध करना शुरू किया। पहले पहल तो कई जगह उसकी जीत हुई; पर सन् १८१३ के अक्टूबर मास की १८ वीं तारीख को लेपजिक शहर के पास जो युद्ध हुआ, उसमें नेपोलियन की सेना बुरी तरह हारी और उसके बहुत से सहायक उसे छोड़ गये। इसी लड़ाई ने जर्मनी को फ्रांस के पंजे से छुड़ाया। यही नहीं; बल्कि और भी जो कुछ छोटे छोटे राष्ट्र नेपोलियन के डर से दबे हुये थे, वे कुछ जागृत होकर स्वतन्त्रता का तेज दिखलाने लगे।

उधर बिटोरिया में अङ्गरेज सेनापति ड्यूक-आफ़ वेलिंगटन ने सन् १८१३ के जून मास के अन्त में बड़ी शूरता के साथ लड़कर फ्रेंचों को पूर्ण पराजित किया। इस युद्ध में फ्रेंच सेना का अधिपत्य नेपोलियन के भाई जोसेफ बोनापार्ट के हाथ में था। इस युद्ध में फ्रेंचों की बड़ी हानि हुई यह समाचार पाते ही नेपोलियन ने सूल्ट नामक अपने एक शूरवीर सेनापति को बहुत सी सेना के साथ स्पेन भेजा। परन्तु अङ्गरेजी सेना के सामने उसकी भी कुछ न चली। उस की सेना भयभीत होकर चारों ओर भाग गई; और अङ्गरेज लोग फ्रांस पर चढ़ाई करने की तैयारी करने लगे।

सन् १८१४ के आरम्भ में ही फ्रांस पर चढ़ाई शुरू हो गई। रूस, आष्ट्रिया और प्रुशिया की सेनाएं पूर्व की ओर और अङ्गरेज सेनापति ड्यूक-आफ़ वेलिङ्गटन पश्चिम की ओर से

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

चढ़ धाया। नेपोलियन ने इन सब के साथ अलग अलग लड़ने का प्रबन्ध किया। इस तरह कुछ लड़ाइयाँ हुईं; पर उन में कोई खास बात नहीं हुई। अब फ्रांस पर चढ़ाई करनेवाले राष्ट्रों ने समझा कि नेपोलियन से इस अलग अलग लड़ने की अपेक्षा यदि एक ही साथ मिल कर लड़ा जाय तो अच्छा होगा। उन चढ़ाई करनेवालों में बर्नाडाटी नामक स्वीडन का युवराज भी था। उसने बड़ा पराक्रम दिखलाकर जर्मनी के उत्तर भाग से फ्रेंचों को निकाल बाहर किया।

नेपोलियन बोनापार्ट ने जब यह सुना कि ड्यूक आफ-वेलिंगटन वायव्य की ओर से आ रहा है तब वह बहुत डरा। इतने में वह अँगरेज सेनापति आडर नदी उतर कर इस पार आ गया; और बायां किले को उसने घेर लिया। वह ज्यों ज्यों फ्रांस की राजधानी की ओर आगे बढ़ने लगा, त्यों त्यों पहले के राजपक्ष के लोग उससे मिलते गये। उधर नेपल्स का राजा आष्ट्रियन लोगों से मिल गया और फ्रेंच लोगों को इटली से भगा देने में उन्हें सहायता दी।

नेपोलियन का राज-पद-त्याग, अठारहवाँ लुई

ब्लुचर नामक प्रुशियन सेनापति और स्वाटजेम्बर्ग नामक आष्ट्रियन सेनापति ने बड़ी बड़ी सेनाओं के साथ बड़े जोर से एकदम पेरिस पर हमला कर दिया कुछ देर तक तो फ्रेंच सेनापतियों ने उनकी परवा नहीं की। पर जब उन दोनों शूर सेनापतियों ने पेरिस के बाहर का भाग तोपों से उड़ाना शुरू किया तब तो वे लाचार हो गये। अब पेरिस के लोगों ने, अपनी जान-माल बचाने के लिये, उनको आत्म-समर्पण कर दिया। फिर क्या था, फ्रेड्रिक और अलेक्जेंडर दोनों सम्राटों ने खूब जयघोष मचाते हुए ३१ मार्च को पेरिस में प्रवेश किया। लोगों ने उनका बड़ा आदर-सत्कार

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

किया; और इस बात पर संतोष प्रकट किया कि क्षणिक बुद्धि वाले राजा के पंजे से अब छुटकारा मिल गया। यह समाचार जब नेपोलियन बोनापार्ट को मिला, तब तो वह बड़ी फुर्ती से पेरिस के लिए रवाना हुआ। पर उसकी कुछ भी परवा न करते हुए पेरिस में नवीन राज्य-व्यवस्था स्थापित हो गई। २ अप्रैल सन् १८१४ को उसके मुखियों ने यह प्रकट कर दिया कि नेपोलियन बोनापार्ट ने अपनी खुशी से राज्य छोड़ दिया। उसी महीने की छठवीं तारीख को, सिंहासनारूढ़ होने के लिए राजा सोलहवें लुई के भाई अठारहवें लुई को, जो अँगरेजी सरकार के आश्रय से इङ्गलैण्ड में रहता था, बुलवा भेजा। तत्काल ही फ्रेंच लोगों की जान-माल की रक्षा के विषय में भी एक घोषणा-पत्र पेरिस में प्रकाशित हुआ। उसमें यह भी था कि नेपोलियन को एल्बा द्वीप का स्वामित्व और कुछ पेंशन भी दी जायगी। इधर यह प्रबन्ध हो रहा था और उधर टुलोस नामक स्थान पर फ्रेंच सरदार सूल्ट और वेलिंगटन में एक बड़ी लड़ाई हो गई, जिसमें फ्रेंच पराजित हुये। उन दोनों सेनापतियों को यदि पेरिस का समाचार शीघ्र मालूम हो गया होता तो यह लड़ाई अवश्य ही न होती। इस लड़ाई में जो व्यर्थ की प्राणहानि हुई, उस पर ड्यूक आफ वेलिंगटन को बड़ा खेद हुआ।

सन् १८१४ के मई माश की तीसरी तारीख को अठारहवां लुई फ्रांस लौट आया और तत्काल ही सिंहासन पर बैठाल दिया गया। अपने पुराने राजवंश को फिर सिंहासनारूढ़ देखकर लोगों को बड़ा आनन्द हुआ। उसी समय योरप की शांति रक्षा के उपायों पर कुछ प्रस्ताव होने के बाद यह निश्चय हुआ कि शेष बातें वीना में कुछ दिनों बाद होने वाली सभा में निश्चित की जायँ। फ्रांस के राज्य का प्रबन्ध हो गया।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

और अठारहवाँ लुई राज्य कर लगा। लोगों को आशा थी कि यह राजा बड़ लोक प्रिय होगा; पर वैसा नहीं हुआ; क्यों कि अठारहवें लुई ने समाचार पत्रों की स्वतंत्रता हरण कर ली, धर्माधिकारी लोगों को बहुत से अधिकार दिये; और सोलहवें लुई के जो आश्रित राज्यक्रांति के समय भाग गये थे, उनको बुलाकर जागीरें इत्यादि देना शुरू किया। लोगों को यह बिलकुल पसन्द नहीं आया। अब लोग इस विषय में अप्रसन्नता प्रकट करने लगे। नेपोलियन के मित्रों ने यह अच्छा मौका देखा और वे फिर से नवीन षड्यंत्र रचने की सलह करने लगे।

नेपोलियन फिर आया, सेना जमा की, लुई का पलायन, फिर युद्ध

नेपोलियन बोनापार्ट लाचार होकर एल्बा द्वीप में जाकर रहा था। पर उसका चित्त शांत न था; क्योंकि वह समझता था कि वीना की शान्ति सभा हमें यहाँ न रहने देगी। कहीं न कहीं दूर, कष्टदायक स्थल में, जाने के लिए कहेगी। इधर उसके मित्रों ने, अपने अगले विचारों के सहित, उस पर यह भी प्रकट कर दिया था कि फ्रांस के लोग अठाहरवें लुई से सन्तुष्ट नहीं हैं। इससे उस महत्वाकांक्षी पुरुष को फ्रांस की गद्दी के लिए फिर एक बार प्रयत्न करने की इच्छा उत्पन्न हुई। तदनुसार वह बड़ी गुप्त रीति से १,१०० मनुष्यों को अपने साथ लेकर एल्बा टापू से चल पड़ा और सन् १८१५ के मार्च मास की पहली तारीख को फ्रांस देश में आ पहुँचा। पहले वह फ्रीजज बन्दर पर उतरा। वहाँ उसके अनुयायीगण उससे आ मिले; और फिर वह बड़े प्रबन्ध के साथ पेरिस के लिए रवाना हुआ। बीच में लिआंस नामक स्थान पर पहले उसने एक दरबार किया और अपने को फिर एक बार फ्रांस देश का सम्राट कहलाया।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

यह सुनते ही अठारहवें लुई ने अपनी सेना के मुख्य अधिकारियों से अपनी रक्षा के लिए प्रार्थना की। परन्तु उनमें से 'ने' नामक एक बड़ा सेनाधिकारी अपने सैनिकों के साथ नेपोलियन से जा मिला। बाकी अन्य सेनाधिकारियों ने भी प्रायः इसी मार्ग का अवलम्बन किया। तब तो बेचारा अठारहवाँ लुई अपना राज्य छोड़कर बेलजियम के जेंट नामक स्थान में जा रहा।

फ्रांस का यह समाचार सुनकर वीना की शान्ति-सभा ने तुरन्त ही एक घोषणापत्र निकाला कि नेपोलियन बोनापार्ट सम्पूर्ण योरप का बड़ा भारी शत्रु है; और न सिर्फ फ्रांस के राज्य के, बल्कि योरप के किसी भी राज्य से; इसका कुछ भी सम्बन्ध नहीं रहना चाहिये। इस सभा ने यह भी प्रस्ताव किया कि रूस, आस्ट्रिया, प्रुशिया और इङ्गलैंड, ये सब राष्ट्र मिलकर १,५०,००० सेना एकत्र करें; और नेपोलियन जब तक पूर्ण पराजित न हो जाय तब तक उसका पीछा न छोड़ें। इस प्रस्ताव के अनुसार प्रुशिया और इङ्गलैंड की सेनाएँ फ्रांस की उत्तरी सीमा पर जमा होने लगीं।

नेपोलियन बोनापार्ट ने योरप के राष्ट्रों को अपनी ओर झुकाने का इस समय बड़ा प्रयत्न किया; पर उसे सफलता प्राप्त नहीं हुई। अन्त में उसे सिर्फ पेरिस के लोगों का ही आधार रहा। अनेक उपायों से उसने उन्हें प्रसन्न किया और उनका मन अपने वश में कर लिया। इसके बाद उसने अपनी सेना में नवीन लोगों को भरती किया और उस सम्पूर्ण सेना को थोड़े ही काल में उसने शत्रुओं से लड़ने के लिए तैयार किया। फिर उसने अपनी ओर से ही कलह का प्रारम्भ किया। पहला धावा उसका प्रुशियन सेना पर हुआ; और वह पराजित होकर पीछे हटी। प्रुशियन सेनापति ब्लुचर ने लिगनाय

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

नामक स्थान पर फिर अपनी सेना जमा की। इधर ड्यूक आफ़ वेलिंगटन, अपनी और अपने, सहायकों की सेना के साथ, क्वाट्रिब्रास नामक स्थान पर आ जमा। नेपोलियन की सेना ने प्रुशियन सेना पर हमला किया; और ब्लुचर को जून की सोलहवीं तारीख को वहाँ से भगा दिया। परन्तु वह बहुत चतुर सेनापति था। उसने अपनी सेना में किसी तरह की अव्यवस्था न होने दी और उसे फिर लड़ने के लिए तैयार किया। इधर क्वाट्रिब्रास में अंगरेज़ी सेना ने फ्रेंचों को पराजित तो किया; पर उसे वह जगह छोड़ देनी पड़ी और प्रुशियन सेना की चाल के अनुरोध से उसे लौटने के लिये बाध्य होना पड़ा। इसके बाद ड्यूक आफ़ वेलिङ्गटन अपनी सेना वाटर्लू की ओर ले गया।

वाटर्लू के युद्ध में नेपोलियन की अन्तिम हार

प्रुशियन सेना को हराकर नेपोलियन को बड़ा गर्व हो गया था और उसे बड़ी आशा थी कि आगे की लड़ाइयों में भी अवश्य मेरी जीत होगी। इस कारण वह इस बार बड़े ज़ोर-शोर से तैयारी करता था। अन्त में उसने जून मास की अठारहवीं तारीख को अंगरेज़ी सेना के सम्मुख आकर उस पर हमला किया। इस युद्ध में अंगरेज़ों का सर टामस पिक्टन नामक सेनापति मारा गया; परन्तु जीत उन्हीं की हुई और फ्रेंचों को भागना पड़ा। इसके बाद वाटर्लू के मैदान में दोनों दलों का सामना हुआ। अंगरेज़ और उनके सहायकों की सेना में ४९,६०८ पैदल, १२,४०२ सवार, ५,६४५ गोलंदाज और १५६ तोपें थीं। फ्रेंचों की ओर ४८,९५० पैदल १५,७६५ सवार, ७२३० गोलंदाज और २४६ तोपें थीं। दोनों ओर के वीरों की भुजाएँ फड़क रही थीं। अन्त में वे एक दूसरे का पराभव करने के लिए प्राणपण से

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

लड़ने लगे। कुछ देर तक दोनों दलों की बराबरी रही; परन्तु जब जान पर खेलने की नौबत आ गई तब अंगरेज़ी सेना के समान फ्रेंचों की कुछ भी नहीं चली। वह जो एक बार आगे बढ़ी, फिर फ्रेंचों को भगाये बिना पीछे नहीं लौटी। फ्रेंच लोग हार मानकर इधर-उधर भागने लगे। तो भी नेपोलियन का चिल्लाना बन्द नहीं हुआ था। वह गला फाड़-फाड़कर चिल्ला रहा था—"अरे धीरज धरो! वीरो, आगे बढ़ो! मारो मारो शत्रुओं को!" परन्तु उसकी किसी ने नहीं सुनी। अब अपनी अपनी जान लेकर भगे। यह युद्ध बहुत भारी हुआ। इसमें फ्रेंचों के चालीस पैंतालीस हज़ार लोग खेत रहे। दूसरी ओर के भी करीब बीस-बाईस हजार मनुष्य काम आये। यह युद्ध नेपोलियन का अन्तिम युद्ध था। ड्यूक आफ वेलिंगटन ने प्रशियन लोगों की सहायता से इस बार नेपोलियन को बिलकुल ही पराजित कर दिया। इससे सारा योरप निर्भय हो गया।

बन्दी नेपोलियन, और सेन्ट हेलीना में उसका अन्त

वाटर्लू में सेना की दुर्दशा होने पर नेपोलियन बोनापार्ट भागते भागते और लुकते छिपते पेरिस की ओर आया। वहाँ उसने देखा कि उसका अधिकार बिलकुल नष्ट हो गया है, और नवीन राज्यव्यवस्था स्थापित हो रही है। इसमें उसे अत्यन्त खेद हुआ। उसे बड़ी आशा थी कि पेरिस के लोग, जो उसके वश में थे, उसकी सहायता करेंगे; पर यह आशा आज निराशा के रूप में परिणित हो गई। क्योंकि उसका पक्ष लेनेवाला एक भी पुरुष वहाँ उसे नहीं मिला। इस लिए उसने स्वयं फ्रांस की गद्दी से त्यागपत्र दे दिया और साथ ही राज्यकर्त्ताओं से प्रार्थना की कि उसके लड़के को दूसरे नेपोलियन के नाम से राजगद्दी पर

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

बैठा दिया जाय। इस पर उसका त्यागपत्र तो तुरन्त ही स्वीकार कर लिया गया; पर उसकी प्रार्थना पर कुछ भी ध्यान नहीं दिया गया। इससे उसके लड़के को तो फ्रांस देश की गद्दी मिलने से रही; प्रत्युत नेपोलियन को वहाँ से अपने छुटकारे की ही कठिनाई देख पड़ने लगी। जब उसने देखा कि अब कोई उपाय नहीं है तब उसने स्वयं एक अँगरेजी युद्धपोत के अधिकारी की शरण ले ली। नेपोलियन अँगरेजों का बड़ा भारी विरोधी था; परन्तु तो भी वह सदैव उनके विषय में कहा करता था "अँगरेज हमारे कट्टर शत्रु हैं; पर उनका हृदय विशाल है।" शत्रु के दुर्गुणों को तो मनुष्य सहज में और जल्दी जान लेता है; पर उसके सद्गुणों को जानने—और उन्हें स्वीकार करने में बड़े विवेक और बड़ी सरलता की जरूरत होती है। इसके लिए हृदय की उदारता चाहिये। वह विवेक और वह उदारता नेपोलियन बोनापार्ट में थी। यह बात उसके उपर्युक्त कथन से मालूम होती है।

अस्तु। नेपोलियन बोनापार्ट जब अँगरेजों के हाथ में आ गया तब यह विचार उपस्थित हुआ कि इसे कहाँ और किस तरह रक्खा जाय। अन्त में यह निश्चित हुआ कि उसके रहने और खाने पीने इत्यादि का बन्दोबस्त करके अटलांटिक महासागर के सेंट हलीना टापू में उसे क़ैद कर दिया जाय। तदनुसार उसे, उसके कुछ मित्र के साथ, बड़े प्रबन्ध से वहाँ भेज दिया। यह फ्रांस से उसकी अन्तिम बिदाई थी; और इस समय से राजनैतिक विषयों से उसका सम्बन्ध बिलकुल छूट गया। इसलिए अब हम यहाँ उसके विषय में कुछ संक्षेप से ही लिखकर आगे बढ़ेंगे। १३ अक्टूबर सन् १८१५ में वह सेंट हेलेना पहुँचा। वहाँ उसे नाना प्रकार के संकटों में बहुत दिन काटने पड़े। अपनी पूर्व और वर्तमान दशा को

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

सोच सोचकर वह बड़ा दुःखी हुआ करता था। इस प्रकार पच-पचकर सन् १८२१ के मई मास में उसका देहान्त हो गया। प्रिय पाठको! नेपोलियन बोनापार्ट जो अपने ही पराक्रम के द्वारा एक छोटे से आदमी से बड़ा भारी सम्राट हो गया था और जिससे सारा योरप थरथर काँपता था, उसका इस प्रकार अन्त हुआ! उसकी मृत्यु का समाचार सुनकर फ्रांस के लोगों ने कुछ भी अनुभव नहीं किया—न हर्ष न विस्मय!

नेपोलियन कैसा था

नेपोलियन बोनापार्ट के प्रायः सब बड़े बड़े कार्यों का इस पुस्तक में हमने वर्णन कर दिया है। ऐसी दशा में, अब यह बतलाने की विशेष आवश्यकता नहीं रही कि यह मनुष्य कैसा था। वास्तव में वह बड़ी विलक्षण बुद्धि का मनुष्य था। लोगों को अपने वश में करना—लोकसंग्रह करना—उसे अच्छी तरह मालूम था। साहस की वह साक्षात् मूर्ति था। उसमें यह खूबी थी कि जिस कार्य को वह हाथ में लेता था उसमें फिर चाहे जितने विघ्न आवें, उन विघ्नों को चूर-चूर करते हुए वह अपने कार्य को पूरा करके ही छोड़ता। वह प्रायः विषयी नहीं था। उसके धार्मिक मन्तव्य बहुत अच्छे नहीं थे; पर उसका विश्वास था कि बिना धर्म के लोकव्यवहार ठीक ठीक नहीं चल सकता—फिर वह धर्म चाहे जैसा हो। शूरता की कीर्ति उसे और सब बातों से अधिक प्रिय थी। योरप के बड़े बड़े राष्ट्रों ने मिलकर उसे दुर्बल कर दिया; और अन्त में ड्यूक आफ वेलिंगटन के समान शूरवीर से उसका सामना हो गया, यह अच्छा ही हुआ—यह सारे संसार का और खासकर सारे योरप का, सौभाग्य समझना चाहिए! अन्यथा फ्रेंचों का प्रभाव सारी पृथ्वी के अधिकांश राष्ट्रों में बढ़ जाने की

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

सम्भावना थी। नेपोलियन बोनापार्ट ने इस विषय में बहुत कुछ सोच रक्खा था; पर "नर चेती होती नहीं, प्रभु चेती तत्काल" की कहावत चरितार्थ हुई। अस्तु। अब यह देखना चाहिये कि नेपोलियन के चले जाने पर पेरिस में क्या क्या हाल हुआ।

पेरिस से नेपोलियन के चले जाने पर रूस, आष्ट्रिया,
प्रुशिया, बेलजियम और इङ्गलैएड की सेनाओं
पेरिस की दशा, ने नगर पर पूरा अधिकार कर लिया। उस
लुई को फिर गद्दी समय जिस फ्रेंच सेना को उनका यह कार्य
नहीं रुचा, वह लाचार होकर बाहर निकल
गई। इस समय फ्रेंच लोग बिलकुल दीन-हीन और विवश हो गये थे। यदि बाहर की सेनाओं ने, उनके पहले से क्रूर-कर्मों का स्मरण करके; उन्हें कष्ट दिया होता तो वह चुपचाप उन्हें सहना पड़ता। पर उनके सेनाधिकारियों ने वैसा नहीं होने दिया। यह उनकी बड़ी भारी उदारता समझनी चाहिए। नेपोलियन बोनापार्ट और फ्रेंच लोगों के द्वारा उन राष्ट्रों को समय समय पर बहुत संकट भोगने पड़े थे। अतएव इस समय उनका बदला न लेकर उन्होंने जो क्षमा दिखलाई वह उनके गौरव को बढ़ाने वाली हुई। इस प्रकार के उदाहरण इतिहास में बहुत कम मिलते हैं।

नेपोलियन के कैदी हो जाने पर उक्त राष्ट्रों ने, पेरिस के सिंहासन पर बैठाने के लिए अठारहवें लुई को फिर बुलाया ५ जुलाई सन् १८१५ को वह पेरिस आ गया। ९ तारीख को उसे राजसिंहासन पर बैठाकर उसके नाम ढिंढोरा पिटवा दिया गया। इस प्रकार फ्रांस के प्राचीन राजकुल में राजसत्ता फिर एक बार गई और राज्य का नवीन प्रबन्ध जारी हुआ। अस्तु। इस अध्याय के साथ इस पुस्तक का विषय समाप्त

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

होता है। इसलिए उपसंहार में इससे सम्बन्ध रखनेवाली कुछ व्यवहारिक और नैतिक बातों को बतलाकर हम इस पुस्तक का समाप्त करेंगे।

उपसंहार

फ्रांस की राजक्रान्ति के इस इतिहास से पहले पहल एक बात बहुत स्पष्ट रीति से दिखलाई देती है; और वह यह कि यद्यपि स्वतन्त्रता बड़ी अच्छी चीज है; और मनुष्य के लिए उसकी इच्छा होना स्वाभाविक है, पर यदि उसका उपयोग करने की योग्यता मनुष्य में नहीं है तो उससे मनुष्य के कल्याण की अपेक्षा अकल्याण होने की ही सम्भावना अधिक रहती है। हमारे कहने का मतलब यह है कि स्वतंत्रता की केवल इच्छा होने से ही काम नहीं चल सकता; किन्तु उसका पालन करने की शक्ति मनुष्य में होनी चाहिए। यही बात सम्पूर्ण राष्ट्र के विषय में भी कही जा सकती है। यदि फ्रेंच लोग अत्याचार और स्वेच्छाचार के बुरे परिणामों पर ध्यान रखकर बर्ताव करते तो उनके देश को उन संकटों का सामना न करना पड़ता जिनका इस पुस्तक में वर्णन हुआ है। यह निर्विवाद सत्य है कि किसी देश के लोगों में जब तक स्वार्थ, अज्ञानता, मूर्खता, पारस्परिक राग-द्वेष, ईर्षा, फूट-वैर-विवाद इत्यादि अवगुणों का साम्राज्य है तब तक उन्हें स्वतंत्रता मिल नहीं सकती; और यदि कदाचित् मिल भी गई तो सुख पूर्वक उसका उपभोग नहीं कर सकते। दूसरी बात इस इतिहास से यह मालूम होती है कि देशोद्धार के कार्य में बहुत उतावली करना ठीक नहीं। फ्रांस के लोगों ने बहुत उतावली की; और विचारशील पुरुषों की सम्मतियों से काम नहीं लिया। जो कार्य एक वर्ष में होना चाहिए उसे उन्होंने दस दिन में ही कर डालने का प्रयत्न किया; और इस कारण उन्हें अनेक अनर्थों

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

से सामना करना पड़ा। तीसरी बात यह है कि फ्रांस में कई पीढ़ियों से राजा अत्याचारी होते रहे, वे प्रजा को संतुष्ट न रखकर उसे पीड़ित कर रहे थे। इसका परिणाम यह हुआ कि सोलहवाँ लुई यद्यपि अच्छा राजा था तथापि वहाँ के लोगों को 'राजा' नाम से ही द्वेष हो गया और उन्होंने राजा का बध करने प्रजासत्ताक राज्य स्थापित किया; पर दुराचार, क्रूरता, इत्यादि अवगुणों के कारण वे स्वतंत्रता का सुख नहीं भोग सके। स्वतंत्रता ईश्वरी वरदान है। प्रत्येक को उसके लिए प्रयत्न करना चाहिये। पर देशकाल-व्यवहार की ओर अवश्य ध्यान रखना चाहिए। चौथी बात यह है कि बहुत से लोग देशहित की ओट में स्वार्थ-साधन करने के लिए वर्तमान राज्य के विषय में लोगों को भड़काया करते हैं। फ्रांस में यह भी देखा गया। इन लोगों के कहने में न भूलना चाहिए। अपने देश का सच्चा हित जिस बात में हो उसी को विचार पूर्वक करना चाहिए।

यह व्यवहार नीति की बात हुई। अब धर्म-नीति के सम्बन्ध में कुछ बतलाना आवश्यक जान पड़ता है। इस राज्यक्रांति के पहले जो बादशाह फ्रांस की गद्दी पर बैठे थे उनके शासनकाल में अन्याय, दुराचार, अप्रबन्ध नास्तिकता इत्यादि की पराकाष्ठा हो गई थी। अधिक क्या कहा जाय, ईश्वर तक की लोग विडम्बना करने लगे थे। इसी का बुरा फल समस्त देश को चखना पड़ा। उस समय लोगों का यह विचार था नीति के लिए धर्म की कोई आवश्यकता नहीं; और ऐसी शुष्क नीति से लोगों का कल्याण भी हो सकता है। अब भी बहुत से लोगों का ऐसा ही ख्याल पाया जाता है। पर इस राज्यक्रांति से यह मालूम हो जाता है धर्मविहीन नीति से शान्ति नहीं हो सकती। नीति और धर्म क ासम्बन्ध

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

शरीर और आत्मा के समान है जैसे आत्मा के बिना शरीर नहीं चल सकता उसी प्रकार धर्म के बिना नीति लँगड़ी है। इस लिए नीति और धर्म को अलग अलग करने का प्रयत्न न करना चाहिए।

राजाओं के जुल्म और अत्याचार से प्रजा का उभाड़ना, प्रजा के उभड़ने से राजाओं की दुर्दशा, पारमेश्वर का डर उठ जाने से लोगों के हाथ के भयंकर कर्मों का होना, थोड़े से संसर्ग से मनुष्य-स्वाभाव का बिगड़ना और उसके द्वारा क्रूरता और रक्तपात का होना, क्रूरता और नाष्तिकता के बढ़ने से मनुष्यों का एक दूसरे के लिए नाश का करण बनना, राष्ट्र में पाप के बढ़ जाने पर ईश्वर का फिर प्रकोप, उसके द्वारा उचित दण्ड का मिलना, अन्त में फिर शान्ति का स्थापित होना; और उसके द्वारा राष्ट्र का फिर सच्चे मार्ग पर आना, इत्यादि अनेक बातें इस इतिहास से मालूम होती हैं। ऐसी ही घटनाएँ संसार के प्रत्येक राष्ट्र में, कुछ फेरफार से, सदैव होती रही है, होती रहती है, और होती रहेंगी। इसी को विद्वान लोग "इतिहास की पुनरावृत्ति" कहते हैं। इन घटनाओं से उचित शिक्षा ग्रहण करके असन्मार्ग का त्याग करना और सन्मार्ग पर चलना मनुष्यमात्र का कर्तव्य है।

SRI JAGADGURU VISHWARADHY
JNANA SIMHASAN JNANAMANDI
LIBRARY,
Jangamwadi Math, VARANAS
Acc. No. 3267
2663

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi, An eGangotri Initiative

साहित्य सीकर

[लेखक—आचार्य पं० महावीर प्रसाद जी द्विवेदी]

इस ग्रंथ में साहित्य महारथी आचार्य द्विवेदी जी ने अपने लिखे हुए बीसियों साहित्यक निबन्धों का ग्रन्थन किया है। संस्कृत और हिन्दी साहित्य का रहस्य जानने के लिये इस ग्रंथ के निबन्ध बहुत ही उपयोगी हैं। सम्पादकीय योग्यता, हिन्दी साहित्य का वर्तमान स्वरूप आदि पर आलोचनात्मक लेख भी हैं। हिन्दी व्याकरण के कई जटिल प्रश्नों पर भी प्रकाश डाला गया है। द्विवेदी जी की मार्मिक लेखन शैली का परिचय पाने के लिए साहित्य रसिकों को यह ग्रन्थ अवश्य पढ़ना चाहिए सुन्दर गेट अप मूल्य सिर्फ प्रचार के लिए २) मात्र है।

मिलने का पता—

तरुण भारत ग्रन्थावली

दारागंज प्रयाग।

मुद्रक—संगमलाल जायसवाल, संगम प्रेस, कीटगंज, इलाहाबाद।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative